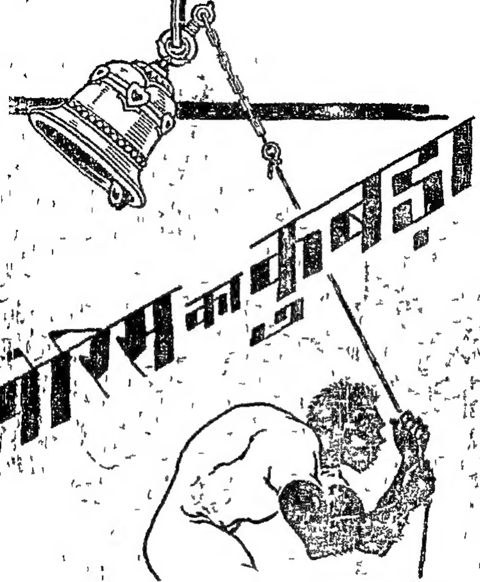
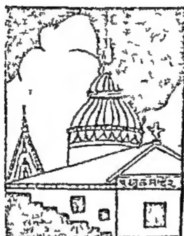


मूल लेखक —

विनोद - सीरीज़ —— ६



सम्पादक

शिवपूजनसहाय

प्रथम संस्करण



मूल्य तीन रुपये

मुद्रक— [illegible] मालवीय, सरस्वती प्रेस, काशी।

सम्पादकीय वक्तव्य

जब इस पुस्तक के करीब पाँच फार्म (८० पेज) छप चुके थे—जिसकी कापी भाई वाचस्पति पाठक ने सशोधित की थी और प्रूफ शोधा था भाई प्रवासीलाल वर्मा ने—तब इसकी कापी और प्रूफ के शोधने का भार मुझे मिला। मैं दोनों सज्जनों का परिश्रम देख चुका था, इसलिये मुझे बड़ी हिचक हुई। किन्तु "पुस्तक-मन्दिर" के सचालक भाई विनोद शकर व्यास के आग्रह से मैं इस काम मे पिल पड़ा। मूल-पुस्तक मुझे मिली ही नहीं, इसलिये मैं केवल सुयोग्य अनुवादक के साथ साथ चलता रहा। मैंने मूल-पुस्तक की कभी सूरत भी नहीं देखी और उसके अनुवाद का सम्पादक बन बैठा! वास्तव मे मैं केवल अनुवाद का सशोधक मात्र हूँ। ठोंक-पीट कर सम्पादक बनाने का दोष 'पुस्तक मन्दिर' के सचालक भाई व्यासजी पर है।

अनुवाद का सशोधन करते समय मैंने विद्वान अनुवादक का भाषा-स्वराज्य नहीं नष्ट किया है—उनकी लेखन-शैली के साथ अनावश्यक अथवा अनुचित छेड़-छाड़ करने की धृष्टता भी नहीं की है, उसकी स्वाभाविक गति मे उत्तेजन के सिवा कोई बाधा नहीं दी है। जब मैंने मूल-पुस्तक देखी ही नहीं, तब अनुवाद की सफलता के विषय मे क्या कहूँ? जो मूल पुस्तक पढ़ चुके हैं,

ये ही इसके जज बन सकते हैं। मुझे तो मालूम हुआ कि विदेशी नामों वाला कोई मौलिक उपन्यास ही पढ रहा हूँ।

पुस्तक बडी शीघ्रता से छपा है। एक फार्म रोज छपता रहा। उसी गति से कापी और प्रूफ के संशोधन का क्रम भी चलता रहा। यथाशक्ति, यथाबुद्धि, यथासम्भव मैंने चेष्टा की है कि इसमें अशुद्धियाँ न रहें। घटना या वर्णन के क्रम मे अथवा पात्रों और स्थानों के नाम मे किसी प्रकार की अशुद्धि हो, तो मेरा कोई दोष नहीं, क्योंकि अनुवादक महाशय अँगरेजी के अच्छे विद्वान् हैं और मैं अँगरेजी का एक साधारण विद्यार्थी हूँ। भय है कि सम्पादक समझ कर आपकी धारणा कहीं भ्रान्त न हो।

इस पुस्तक के साथ जो मुझे लगातार परिश्रम करना पडा, वह खला नहीं। पुस्तक की रोचकता में यथेष्ट आकर्षण है। पग पग पर उत्सुकता बढती ही जाती है। इसके वर्णन-प्रवाह मे जो कोई पडेगा, बेक़ाबू हो जायगा।

इस उपन्यास का मूल लेखक विश्वविख्यात साहित्यसेवी है। उसका यह उपन्यास भी जगत्प्रसिद्ध ही है। इसलिये मैं इस पर कुछ कहने का अधिकारी नहीं हूँ। बस।

पुस्तक मन्दिर काशी	विजया-दशमी १९८८	शिवपूजन सहाय ('गङ्गा'-सम्पादक)

विक्टर ह्यूगो

हिन्दी-संसार के उपन्यास-पाठक, जगत्प्रसिद्ध फ्रेंच औपन्यासिक सम्राट् विक्टर ह्यूगो की कृतियों से अपरिचित नहीं हैं। स्वर्गीय 'प्रताप'-सम्पादक श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने 'बलिदान' नाम से उनके 'नाइंटी थ्री' (Ninety Three) उपन्यास का अनुवाद हिन्दी की सेवा में अर्पित किया है। ह्यूगो की पुस्तकों के अनुवादों की माँग संसार की प्रत्येक सभ्य भाषा में है। अँगरेजी में तो ह्यूगो की पुस्तकों के कई अनुवाद हैं। इस 'नाट्र-डेम-डी-पेरी' के ही कई अनुवाद हैं।

विक्टर ह्यूगो का जन्म सन् १८०२ ई० की २६ वीं फरवरी को फ्रांस के 'बेसँको' नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता नेपोलियन की अजेय सेना में काम कर चुके थे। नेपोलियन के पतन के पहिले ही वे स्पेन के राज-दरबार की शोभा बढ़ाने लगे थे। इसके बाद वे फ्रांस के उस समय के बादशाहों के यहाँ सम्मान पूर्वक रहने लगे। इसी से उनकी असाधारण चतुरता प्रकट होती है।

ह्यूगो की प्रथम प्रवृत्ति कविता की ओर झुकी। बारह वर्ष की अवस्था में ही वे 'स्वांत सुखाय' दुःखान्त कविताएँ लिखने लगे। उनकी सत्रह वर्ष की अवस्था में उनकी कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित हुआ। उस समय तक वे कवि सम्मेलनों में तीन बार पुरस्कृत हो चुके थे। उन्होंने अपने जीवन को साहित्य सेवा में

मिताने का निश्चय कर लिया था। उनकी प्रकृति बड़ी गम्भीर थी—उसमें कार्य-सलग्नता की मात्रा विशेष हो चली थी। उन्होंने अपने को साहित्य का धुरन्धर विद्वान् बनाने की ठान ली। इस बात से उनके पिता बहुत अप्रसन्न हुए, क्योंकि वे पुत्र को सेना में भर्ती करना चाहते थे। इसलिये ह्यूगो को बिना पैतृक संस्कार वा धन-साहाय्य के ही साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होना पड़ा। साहित्य-सेवा की प्रारम्भिक अवस्था में ही उनकी पूजनीया माता का देहावसान हो गया। इस प्रकार वे सर्वथा एकाकी और असहाय हो गये।

जीविकोपार्जन की कठिनाइयों से युद्ध करते हुए युवक ह्यूगो विवाह कर पेरिस में आ बसे। उस समय वे पेरिस के युवकों में सब से सुन्दर थे। फ्रांस के सुप्रसिद्ध कवि तथा ह्यूगो के शिष्य 'गातियर' ने लिखा है—"उनका ललाट उनके गम्भीर चेहरे पर सगमरमर की मूर्त्ति की तरह देदीप्यमान हो रहा है।"

उस समय फ्रेंच-साहित्य में ह्यूगो द्वारा रोमांटिक आन्दोलन का जन्म हुआ। इसलिये ह्यूगो की साहित्यिक-मडली बहुत ही प्रसिद्ध हो चली। उस मडली में फ्रेंच-भाषा के धुरन्धर कवि तथा उपन्यासकार थे। 'डुमास' तथा 'बालजक'-सरीखे प्रतिभा-शाली लेखकों को भी ह्यूगो की शिष्यता में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसी मडली ने फ्रेंच-भाषा का निर्माण किया है। ससार का प्रसिद्ध उपन्यासकार बालजक सत्य ही लिख गया है कि "वे ही लोग खुद उन्नीसवीं शताब्दी थे और उन्हीं ने उस सदी का आविष्कार किया।"

मित्रों की सहायता तथा प्रोत्साहन से ह्यूगो ने रंगमंच की पुरानी रूढियों को छिन्न-भिन्न करने की ठानी। इसलिये, उस समय के फ्रांस के सब से बड़े नट 'टालमा' से उन्होंने परिचय प्राप्त किया। ह्यूगो ने आठ-दस नाटक भी लिखे हैं। उनका नाटक, जो पहिले पहिल रंगमंच पर खेला गया था, बहुत ही सफल रहा। पेरिस की जनता ने बड़े चाव से उसका स्वागत किया। उस नाटक का नाम 'हरनेनी' था। उसकी कथा बड़ी ही मनोरंजक है। जब 'हरननी' समाप्त हो चुका, ह्यूगो ने अपने मित्रों को उसका पाठ सुनाने के लिये निमंत्रित किया, किन्तु पाठ प्रारम्भ करने से पहिले ही एक काले कोटवाले भद्र पुरुष ने कमरे में घुस कर उनके हाथ से उस हस्तलिखित पुस्तक को छीन लिया और कहा—"पाठ की क्या आवश्यकता है? मैं बिना देखे इसे स्वीकार करने को तैयार हूँ।" इसके बाद अपनी पाकेट से एक पेनसिल निकाल कर उसने लिख दिया—"ओडियो नाट्यशाला के लिये स्वीकृत।" फलत इस नाटक की सफलता के कारण ह्यूगो के घर पर प्रशंसकों की बड़ी भीड़ जुटने लगी। उस चहल-पहल के कारण घर की मालकिन ने, जो बहुत वृद्धा थीं, ह्यूगो को अपने घर से बाहर कर दिया! अच्छा पुरस्कार मिला!

अब ह्यूगो पेरिस में एक बड़ा सुन्दर महल लेकर रहने लगे। उस समय वे रोमाटिक आन्दोलन के बादशाह थे। उसी समय उन्होंने अपना यह प्रथम महान उपन्यास 'नाट्रेडेम' (पेरिस का कुबड़ा) लिखा।

हुए कवि के रूप में दिखाई देते हैं। वास्तव मे उनके व्यक्तित्व की महत्ता इन पुस्तको में स्पष्ट झलकती है।

उस प्रान्त के लोग उन्हे 'लुई नेपोलियन' का प्रतिद्वन्द्वी समझते थे—उनका विश्वास था कि फ्रास की राजगद्दी ह्यूगो-द्वारा धोखे से छीनी गई है। एक दिन ह्यूगो का हजाम बहुत विश्वास भरे स्वर से कह उठा—"मेरा विश्वास है कि जब आप राजगद्दी पर बैठेंगे, तब दिन में दो बार हजामत बनवायेंगे।"

कुछ काल बाद ह्यूगो को उस अपरिचित प्रदेश के मल्लाहों और कृषको के प्रति बड़ी सहानुभूति होने लगी। वे उनकी हर तरह से सहायता करने लगे। युवकों को जीवन युद्ध के लिये रुपये-पैसे और रोगियों को दवाएँ देने लगे। वे गृह हीन, आश्रय-हीन, अवलम्ब हीन अनाथो के पिता बन गये। उस अवस्था में उन्होंने जो कुछ किया, वह उनके स्वभाव का हिस्सा था, वे आत्मश्लाघा के लिये वैसा नहीं करते थे। उनके दरवाजे से कोई भूका या नगा विमुख नहीं लौटा। अपनी गरीबी की हालत मे भी उन्होंने जनता की गरीबी को दूर करने का जो प्रयत्न किया, वह अत्यन्त प्रशसनीय है।

नेपोलियन ने सन् १८५९ मे सभी राजनीतिक अपराधियो को क्षमा दान दिया। किन्तु ह्यूगो फिर भी निर्वासित ही रहे। वे कहते थे—जब फ्रास में स्वतत्रता लौटेगी, तो मैं भी लौटूँगा।

जब सन् १८७० में जर्मनी द्वारा फ्रास हराया गया, और नेपोलियन का पतन हुआ, तब ह्यूगो बेलजियम के रास्ते पेरिस

लौटे। स्वदेश की हार का तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ, किन्तु वे कहते थे कि फ्रांस ने यह प्रायश्चित्त किया है।

ह्यूगो जिस समय पेरिस में पहुँचे, उस समय जर्मनी की सेना पेरिस पर धावा करने के लिये वहाँ आ रही थी। फिर भी पेरिस-वालों ने उनका धूमधाम से स्वागत किया। लोग उनकी गाड़ी में भिड़ गये, व्याख्यान देने के लिये उन्हें बाध्य किया। किन्तु, ह्यूगो बहुत परिश्रम करके भी पेरिस को नहीं बचा सके। अन्त में पेरिस जर्मन सेना के हवाले कर दिया गया।

ह्यूगो जातीय पार्लामेंट के मेम्बर चुने गये, मगर मेम्बरों से न पटने के कारण वे 'ग्रुमेल' में फिर जा बसे। पुनः फ्रांस में तृतीय प्रजातन्त्र की स्थापना होने पर वे लौटे और शेष जीवन फ्रांस के प्रजातन्त्र के अलक्ष स्वामी की तरह बिताने लगे। उस समय तक उनके भाषण की कटुता जाती रही थी, उनके हृदय का ज्वाला-मुखी शान्त हो चला था। उसी समय उन्होंने एक विनोदपूर्ण कविता लिखी थी, जिसका नाम 'बाबा होने की कला' रक्खा था। ह्यूगो 'फ्रांस के पितामह' के स्थान को सुशोभित करने लगे।

ह्यूगो का राजनीतिक जीवन चाहे कितना भी नाटकपूर्ण क्यों न हो, उनका साहित्यिक जीवन सर्वथा ऊँचा रहा है। फ्रांस के साहित्यिक जीव उनके पैरों पर लोटते थे। ह्यूगो उन्हें 'स्वतन्त्रता तथा साहित्य के पुजारी' की हैसियत से शिक्षा देते थे। योरप उनकी ओर 'साहित्य के पिता' की दृष्टि से देखता था। उस समय साहित्य साम्राज्य में उनका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं था। उनके लिये

कोई भी प्रशस्ति अतिशयोक्ति पूर्ण न थी। जिस समय उनकी अस्सी वर्ष की वर्ष-गाँठ मनाई गई, उस समय फ्रांस ने जैसा महोत्सव किया, वैसा कभी किसी बादशाह के लिये भी नहीं किया था।

ह्यूगो ८३ वर्ष की अवस्था में इस असार संसार से विदा हुए।

ह्यूगो ने फ्रेंच-साहित्य के लिये जो कुछ किया है, उससे वे उस शताब्दी के साहित्य-सम्राट रहे। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव योरप के साहित्य पर पड़ा है। उनकी मृत्यु के पश्चात् भी वह प्रभाव बढ़ता ही गया। अँगरेजी का सुप्रसिद्ध कवि—इंगलैंड का जयदेव—'स्वीनबर्न' ह्यूगो के मन्दिर का पुजारी था।

ह्यूगो विश्व साहित्य के कवि तथा उपन्यासकार हैं। उनकी कविता और उनके उपन्यास विश्व-साहित्योद्यान में अपनी सुगंध फैला रहे हैं।

उनका चरित्र बड़ा विचित्र था। उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा के सभी क़ायल थे। उनकी लेखन शैली संगीतमयी है। उनका वर्णन ज़ोरदार और प्रभावपूर्ण है। उनकी कविता में उनका कवि-कौशल देखने ही योग्य है। उनका विषय वर्णन सचमुच बेजोड़ है। छोटी से-छोटी वस्तु का वर्णन स्पष्ट चित्र की तरह किया है। गद्य-नाटक लिखने में ह्यूगो को अभी तक किसी ने पार नहीं किया है।

किन्तु, उनमें दोष भी हैं—वर्णन विस्तार तथा पात्रों के विचित्र नाम। परन्तु उनके ये दोष उनके गुणों की खान में छिप जाते हैं।

ह्यूगो निस्सन्देह उपन्यास-साम्राज्य के सम्राट हैं। कर-कंगन को आरसी क्या ?

—अनुवादक

पहला भाग

हॉल

सन् १४८२ की छठवीं जनवरी को चौक, विश्वविद्यालय तथा नगर के सारे घंटों की तुमुल ध्वनि के कारण पेरिस के निवासी जाग पड़े। फिर भी वह १४८२ की छठवीं जनवरी, कोई ऐसा असाधारण दिन नहीं था, जिसका उल्लेख इतिहास में हो। उस घटना में, जिसके कारण नगर के सारे घंटे बज उठे तथा पेरिस के नागरिक सवेरे ही से चहल-पहल मचाने लगे थे, कोई विचित्रता नहीं थी। उस दिन न किसी शत्रु की चढ़ाई थी, न कोई धार्मिक जलूस था, न विद्यार्थियों की भ्रान्ति थी, न हमारे भयोत्पादक बादशाह का प्रवेश था और न चोरों के किसी गिरोह का 'न्याय भवन' के सम्मुख कत्लेआम ही था। बात यह थी, कि दो दिन पहिले फ्लैंडर्स के राजदूत, फ्रांस के डाफिन —राजकुमार—

तथा फ्लैंडर की मार्गरेट के विवाह-सम्बन्ध की रस्म अदा करने आये थे और बादशाह को प्रसन्न रखने के लिये, कार्डिनल बो-र्बोन—पोप के बाद के बड़े अधिकारी—को अपनी इच्छा के विरुद्ध, उन फ्लैंडर के देहाती राजदूत पर अपनी मुस्कराहट बिखेरने को विवश होना पड़ा था। उन्हीं के मनोरञ्जन के लिये कार्डिनल ने उस महान न्याय-भवन में 'सदाचार तथा हास्य' के खेल का प्रबन्ध किया था।

पेरिस के निवासियों की भावोत्तेजना का कारण और भी कुछ था। उस दिन 'ईसा-अवतार' तथा 'बेवकूफों का भोज' नामक दो-दो उत्सव भी थे।

उस दिन ग्रेव-स्क्वायर—नगर के छोटे मैदान—में होलिका दहन, ब्रेक-चर्च में 'मेपोल' का उत्सव तथा न्याय-भवन में आश्चर्योत्पादक 'रहस्य' नाम का नाटक होनेवाला था। इन सब बातों की घोषणा नगराधिपति-द्वारा ढोल बजाकर पहले ही कर दी गई थी, इसलिये चारों दिशाओं से पेरिस के नागरिक अपनी पत्नियों तथा पुत्रियों के साथ प्रातःकाल ही से उपर्युक्त स्थानों पर जुटने लगे थे।

न्याय-भवन के समीप लोगों की भीड़ बढ़ती ही जाती थी, क्योंकि वहाँ फ्लैंडर के राजदूत 'रहस्य' नाटक को देखने के लिये आनेवाले थे तथा उसी दिन, उस बड़े हॉल में 'अव्यवस्था के लार्ड' (Lord of Misrule) का भी चुनाव होनेवाला था।

उस दिन न्याय-भवन में—जो संसार का सबसे बड़ा 'हॉल'

समझा जाता था—स्थान पाना साधारण बात नहीं थी। पाँच-छः गलियों से जन-समूह इस प्रकार उस भवन में उमड़ता आ रहा था, जैसे नदियों से जल की धाराएँ समुद्र में आकर मिल रही हों। इस भवन की ऊँची सीढ़ियों से लोग धारा-वाहिक रूप से उसके आँगन में आ रहे थे, जैसे जल-प्रपात झील में अध पतित हो रहा हो। चिल्लाहट, हँसी तथा पैरों की खट खट ध्वनि के कारण आकाश गूँज रहा था। जन-समूह धक्का खाकर लहरों की नाईं आगे-पीछे हो रहा था। कहीं सेना के सिपाही ने किसी को एक चपत रसीद की, कहीं घुड़सवार पुलिस ने शान्ति स्थापित करने के लिये हन्टर फटकार दिया। यह पैत्रिक सम्पत्ति पुश्त दर-पुश्त होकर हमारी वर्तमान पुलिस को मिली है।

दरवाजे, खिड़कियाँ, छत तथा झरोखे लोगों की भीड़ के कारण फटे पड़ते थे। ये नागरिक कितने शान्त और ईमानदार थे, जो कभी भवन की ओर, कभी भीड़ की ओर दृष्टि डालकर चकित हो देख लेते थे। इससे अधिक उनको और कुछ नहीं चाहिये था। पेरिस के निवासी दूसरों को देखकर सन्तोष करने में एक ही हैं।

यदि हम—इस नवयुग के वासी—कल्पना से उस १४८२ के पेरिस की भीड़ में मिल सकते और उनके साथ धक्का खाते, कुहनियों की चोट सहते, उस हॉल में पहुँच जाँय, जो छठवीं जनवरी को छोटा-सा दीख रहा था, तो वह दृश्य हमारे लिये भी बड़ा आकर्षक हो जायगा और हमारे चारों ओर इतनी पुरानी वस्तुएँ होंगी, जो बिल्कुल नवीन जान पड़ेंगी।

पाठकों की सम्मति के साथ, हम थोडे मे वहाँ के सौ दर्य की कल्पना करना चाहते हैं। हमारे कर्ण-कुहरों में ध्वनि का और हमारी आँखों में धुँधलेपन का प्रवेश हो रहा है। हमारे सिर के ऊपर छत थी, जिसमें नुकीली मेहराबें थीं। छत बेल-बूटों से शोभित शहतीरों पर सोयी-सी जान पडती थी। उसमें नीले रंग की रंगसाजी थी, जिसमें इधर-उधर सुनहरी पत्तियाँ अपनी अपूर्व छटा दिखा रही थीं। पैरों के नीचे की सतह मे काले और सफेद सगमरमर के शिलाखण्ड एक-एक के अन्तर मे लगे थे। हाल में सात बडे-बडे खम्भे थे। द्वार के तीन खम्भों के बीच कुछ पुरानी बेन्चें पडी थीं, जो मुवक्किलो के पाजामों तथा वकीलों के गाउन की रगड से पालिश की हुई-सो चिकनी और चमकदार होगई थीं। हॉल की ऊँची दीवारों से सटकर, दरवाजों के बीच, खम्भों के बीच तथा झरोखों के ऊर्ध्वांश में फ्रास के बादशाहो की मूर्तियाँ बनी थीं। मूर्तियों मे किसी की आँखें नीचे देख रही थीं, किसी की शूर-बीर की तरह स्वर्ग की ओर दृष्टि फेंक रही थी। खिडकियों के रग-बिरंगे शीशों और दरवाजो के पचीकारी की शोभा अकथनीय थी और यह सम्पूर्ण भवन अपनी छतों, खम्भों, दीवारों, कारनिसों, दरवाजों तथा मूर्तियों के साथ, रगहीन होकर इस घटना के थोडे ही दिन बाद धूल तथा मकडियों के जालों से आवरित हो गया था।

यह अडाकार हॉल उस दिन, जनवरी के दिवस के प्रकाश मे, खिल उठा था। उसमें बहुरगी भीड की छटा थी, जो खम्भे से दीवार तथा दीवार से दरवाजों की ओर घूम रही थी।

हॉल के कोने में एक प्रसिद्ध सगमरमर का मेज पड़ा था। वह इतना वृहदाकार था, और लोग कहते थे, कि इतना बड़ा सगमरमर का दूसरा टुकड़ा इस ससार मे नहीं है। दूसरे कोने में एक दूसरा सगमरमर का मेज था, जहाँ ग्यारहवें लुई—उस समय के बादशाह—की मूर्ति कुमारी मेरी के सम्मुख घुटने टेक कर प्रार्थना कर रही थी। यह पूजा का स्थान अभी नवीन सा दीख पड़ता था। उसका स्थापत्य कोमल तथा अलौकिक था।

हाल के मध्य मे, बडे दरवाजे के सामने, दीवार मे सट कर एक छोटा-सा मच बनाया गया था, जो सुनहली जाजिम से आच्छादित हो रहा था। वह मच फर्नेंडर के आगन्तुक मेहमानों तथा निमत्रित-जनों के लिये ही बनाया गया था। उसका सम्बन्ध स्वागत भवन से एक विशेष द्वार से कर लिया गया था।

मरिंग के नियम के अनुसार 'रहस्य' उस उपर्युक्त सगमरमर के मेज पर ही खेला जाने वाला था। इसके लिये सबेरे ही प्रबन्ध हो गया था। वकीलों के जूतों की कीलो से निछत्र सगमरमर, एक लकडी के पीजडे के समान फ्रेम पर रखा गया था। एक सुन्दर जाजिम मे ढका हुआ मेज का ऊपरी भाग रगभूमि के काम म लाया जाने वाला था, और उसके नीचे का भाग—जिसको जाजिम ने ढक लिया था—ऐक्टरों के 'ग्रीन' कमरे के काम में आने वाला था। रगभूमि पर आने और जाने के लिये एक लकडी की मामूली सीढी रक्खो हुई थी। कोई भी ऐसा अचानक आनेवाला पात्र या परिवर्तन न था, जिसे उस सीढी से न देखा जा सकता

हो। कला और मच-निर्माण का वह अभी बाल्यकाल था।

उस रग-भूमि की रक्षा के लिये न्याय-भवन के चार सिपाही चारो कोनो पर नियुक्त थे।

खेल बारह बजे से प्रारम्भ होने वाला था। निस्सन्देह प्रारम्भ का समय देर कर के रक्खा गया था, क्योंकि इस विषय मे राजदूतो की सुविधा का ध्यान अनिवार्य था।

जनता सवेरे ही मे प्रतीक्षा कर रही थी। स्थान पाने और पहले ही से अपने स्थान को रक्षित कर लेने के लिये बहुतों ने तो अपनी रात भी वहीं बिताई थी। प्रतिक्षण भीड बढती जाती थी। इसलिये जिसने जहाँ तनिक-सा सहारा पाया, दीवारो, खिड़कियों तथा स्तम्भो के बाहर निकले हुए हिस्सों पर चढ बैठा। जनता प्रतीक्षा करते-करते, धक्के खाते खाते, कुहनियो की चोट सहते-सहते भीड की गर्मी से व्याकुल होने लगी। जहाँ-तहाँ लोग फर्नेंडर के राजदूतो तथा कार्डिनल बोर्बोन को गालियाँ देते हुए सुनाई पडने लगे। भीड की इस घबराहट ने विद्यार्थियो के समूहों को—जो जहाँ-तहाँ बिखरे हुए अपनी हरकतो से जनता की क्रोधाग्नि मे आहुति डाल रहे थे—बडा आनन्द दिया।

विद्यार्थियों का एक समूह एक खिड़की के शीशे को तोड कर आनन्द से बैठा हुआ कभी हाल के लोगो की ओर, कभी आँगन में खड़े व्यक्तियो की ओर देख कर, मुँह बना कर, दृष्टिपात करता हुआ अपने अमूल्य हास्य को बिखेर रहा था। उनकी भाव-भगी तथा हाथापाई को देखने से यह स्पष्ट ज्ञात हो जाता था, कि विद्यार्थी-

समाज दर्शकों की तरह थकावट तथा व्याकुलता का अनुभव नहीं कर रहा है। वह आप तो आनन्द मग्न था ही, उनके आनन्द के कारण उनके निकटस्थ व्यक्ति भी अपनी थकावट को भूला कर 'रहस्य' के अभिनय की प्रतीक्षा में खड़े थे।

मेरे सिर की कसम, जोने फ्रोलो टी मार्लेटिनो! यह तुम हो?—खिड़की पर बैठे एक युवक ने दूसरे युवक की ओर देख कर कहा। दूसरा युवक खम्भे के निकले हुए हिस्से पर बैठा था। वह एक सुन्दर छोटा-सा 'शैतान' था। उसका मुखमण्डल पवित्रता से दूर जान पड़ता था।—लोग तुम्हें ठीक ही जेहन डी मोकिन कहते हैं, क्योंकि तुम्हारे दोनों हाथ-पैर हवा में चार पालों की तरह हिल रहे हैं। तुम वहाँ कब से बैठे हो?

दुष्ट शैतान की कसम—जेहन ने उत्तर दिया—मुझे यहाँ आये चार घंटे से अधिक हो गये। मुझे पूरी आशा है कि इतना समय हमारे वैतरणी के पार करने में से घटा दिया जायेगा। मैंने 'होली चैपेल'—पवित्र गिरजा—में सात बजे सिसली के बादशाह के गानेवालों का 'मास' गाना सुना था।

क्या ही भले गानेवाले हैं!—दूसरे ने तपाक से जवाब दिया—उनका स्वर उनकी टोपी की नोक से भी पैना है। सेंट जान के लिये इन गानेवालों का प्रबन्ध करने से पहले बादशाह को इसकी जाँच करा लेनी चाहिये थी, कि सेंट जान को इन दक्षिणियों द्वारा गाया हुआ गाना पसन्द है या नहीं।

उसने केवल इन गायकों को काम देने के लिये ऐसा किया

है ।—भीड़ में खिड़की के नीचे खड़ी एक बुढ़िया ने कहा—जरा सोचो तो, एक 'मास' के लिये पेरिस का एक हजार पाउण्ड ! और वह भी पेरिस के मछुआ बाजार में वसूल हो !

चुप बुड्ढी !—एक गंभीर व्यक्ति ने जो अपनी नाक पकड़े वृद्धा के समीप खड़ा था, कहा—बादशाह को एक 'मास' का प्रबन्ध करना ही था । यह तो बादशाह के आरोग्य-लाभ के लिये सभी को उचित जान पड़ेगा । तू क्या चाहती है ?

खूब कहा, मास्टर गिले लिकोर्नो, क्यों न हो ! आखिर तो बादशाह ही के दर्जी न ठहरे !—खम्भे पर से जेहन ने उच्च स्वर में कहा ।

लिकोर्नो ! गिले लिकोर्नो !!—सब चिल्ला पड़े ।

तुम लोग उन पर क्यों हँस रहे हो ? लिकोर्नो एक ईमानदार आदमी है ।—जेहन ने इतना कह कर उसके कई पुश्त का नाम ले डाला और कहा—इनमें हरएक, पिता से पुत्र तक विवाहित हैं ।

हँसी का वेग बढ़ता गया । मोटा दर्जी एक शब्द भी न बोला, और दूसरों की आँखों से बचने के लिये उसने अपने चेहरे को निकटस्थ व्यक्तियों के कन्धों में छिपा लिया । उसका शरीर पसीने में भीगा और चेहरा क्रोध में लाल हो रहा था ।

एक दूसरे मोटे आदमी ने उसकी सहायता करने के लिये कहना प्रारम्भ किया—यह कितना घृणास्पद है ! क्या विद्यार्थियों को नागरिकों से इसी प्रकार पेश आना चाहिये ? हमारे समय में इनकी मौज छड़ी के द्वारा की जाती, और वही छड़ी उनकी चिता में भी सहायक होती ।

सारा गिरोह हँस पड़ा।

ओ हो! यह कौन सा गीत है? अपशकुन की यह कौन चिड़िया है?

ठहरो, उन्हें मैं जानता हूँ। यह मास्टर मुन्शी हैं।—एक ने कहा।

ये विश्वविद्यालय मे लाइसेन्स प्राप्त चार नक़ल नवीसों में एक हैं।—दूसरे ने कहा।

उस विश्वविद्यालय में हर एक चीज चार ही हैं! चार जातियाँ, चार विभाग, चार बड़ी छुट्टियाँ, चार नियत मास्टर और चार नक़ल नवीस।

अच्छा! तब तो हम लोगों को भी चार ही की संख्या में उनके साथ शैतानी करनी चाहिये।—जेहन ने कहा।

मुन्शीजी! हम लोग आपकी किताबें जलावेंगे।

मुन्शीजी! हम आपके नौकर की हजामत बनावेंगे।

मुन्शीजी! हम आपकी स्त्री के सम्मुख 'हिन्स हिन्स' करेंगे।

जो बड़ी मोटी विधवा की तरह नवीन दीख पड़ती हैं?—चौथे ने पूछा।

शैतान तुम से समझे!—मुन्शी ने धीरे से कहा।

मुन्शी चुप रहो—जेहन ने ऊपर से कहा—चुप रहो, नहीं तो मैं तुम्हारे सिर पर गिरना चाहता हूँ।

मुन्शी ने ऊपर देखा। क्षण-भर मालूम हुआ कि मुन्शी स्तम्भ की ऊँचाई तथा उस शैतान के वजन का अनुमान कर गति के वर्ग से गुणा कर रहे हैं। वे चुप रहे।

सारा जन-समूह एक बार ही चिल्ला उठा—प्रारम्भ करो।

विद्यार्थी चुप थे। फिर वहाँ पैरों की रगड़ तथा सिरों के हिलने के कारण कुछ जीवन आया। सब लोग गला बजाने लगे। सबने अपने को हिलाया और वस्त्र ठीक कर अँगूठे के बल खड़े हो गये। फिर गम्भीर शान्ति हुई, और सबकी गर्दन आगे निकल आई। सबकी आँखें एक टक मरमरमर की मेज पर लगी थीं। केवल मेज के रक्षक चारों सिपाही मूर्ति की तरह खड़े थे। सब की आँखें राजदूतों के मच की ओर मुड़ गईं, मगर वह अभी खाली था। जनता सवेरे से तीन चीजों की प्रतीक्षा कर रही थी—मध्याह्न, फ्लैण्डर का राजदूत-मण्डल तथा 'रहस्य'—इनमे केवल मध्याह्न ही ठीक समय पर आया।

सचमुच यह बुरा था।

दर्शक-मण्डली ने एक, दो, तीन, चार, पाँच यहाँ तक कि पैंतालीस मिनिट तक और प्रतीक्षा की, किन्तु कुछ न हुआ। मच अब भी रिक्त था रगभूमि मौन। लोगों ने क्रोध से पैरों को ठोंककर शोर मचाना प्रारम्भ किया। 'रहस्य'! 'रहस्य'!! —क्रोध-भरी धीमी आवाजें मे निकलने लगा। सबके मस्तिष्क मे एक आँधी-सी उठ रही थी। जेहन ने बिजली की प्रथम कौंध पैदा की।

'रहस्य'! फ्लैण्डर-वासियों को जहन्नुम में भेजने को।—उसने अपने स्थान से सर्प की तरह खम्भे को जकड़ते हुए कहा।

भीड़ ने करतल-ध्वनि से उसका अनुमोदन किया।—रहस्य! जनता ने दुहराया, और कहा—राजदूतों से शैतान समझे।

रहस्य तुरन्त खेला जाय, हमारी यही माँग है, अन्यथा हमारी राय है कि न्याय-भवन के बेलिफ—एक अफसर—को फाँसी पर लटका दिया जाय।—विद्यार्थियों ने कहा।

खूब कही!—जनता ने उत्तर दिया—सिपाहियों से ही श्री-गणेश होना चाहिए।

फिर विकट हँसी हुई। चारों सिपाही पीले पड़ गये। भीड़ उनकी ओर बढ़ी। लकड़ी का घेरा 'चर-चर' कर के धराशायी हो गया।

नह बेढब क्षण था।

उसी समय 'ग्रीन-रूम' का परदा उठा। उसमें से एक आदमी निकला, जिसकी उपस्थिति ने जादू के असर की तरह क्रोध को जिज्ञासा के रूप में परिणत कर दिया।

चुप रहो। चुप रहो।

वह व्यक्ति काँपता हुआ, झुक कर सलाम करता हुआ। मेज के किनारे आ पहुँचा। धीरे धीरे शान्ति स्थापित हुई।

नागरिक महाशयो! तथा सुन्दरी नगर निवासिनियो!! आज पवित्र कार्डिनल के समक्ष, एक अत्यन्त सुन्दर 'सदाचार' जिसका नाम 'कुमारी मेरी का उचित फैसला' है, खेलने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। मेरा जुपिटर का पार्ट है। हिज एमिनेन्स इस समय माननीय राजदूतों की अगवानी कर रहे हैं। जैसे ही वे यहाँ पधारेंगे, वैसे ही हम लोग प्रारम्भ कर देंगे।

यह बात स्पष्ट थी, कि बिना जुपिटर के बीच में पड़े सिपाहियों

कार्डिनल का भी कम भय न था—इधर कुआ था, उधर खाई थी।

अहोभाग्य से, एक दूसरा आदमी, जुपिटर को इस दुविधा से बचाने के लिये आगे बढा।

वह व्यक्ति रगभूमि के समीप ही खडा था। मगर किसीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उसका दुबला-पतला शरीर उस खम्भे की आड में छिप गया था, जिससे सटकर वह खडा था। उसका शरीर लम्बा, दुबला तथा पीला और उसके केश सुन्दर थे। यद्यपि उसके मस्तक तथा गालों पर झुर्रियाँ पडी थीं, तथापि वह नवयुवक था। उसके नेत्र चमकीले थे और चेहरा हँसता-सा जान पडता था। उसका सर्ज का काला कोट अनेक मौसिमों से युद्ध करने के कारण जीर्ण-शीर्ण होगया था। मेज के समीप आकर उसने जुपिटर से कुछ सकेत किया, किन्तु जुपिटर भय से सिकुड रहा था। वह उसे देख न पाया।

जुपिटर! मेरे प्यारे जुपिटर!'—आगतुक ने कहा।

जुपिटर ने फिर नहीं सुना।

उस त्यागी सुन्दर बालवाले युवक ने घबराकर उसके कान म कहा—माइकेल गिलबोर्ने!

किसने मुझे पुकारा?—चौंक कर जुपिटर ने पूछा।

मैंने!—उस काले कोट वाले युवक ने कहा।

ओह!—जुपिटर ने साँस ली।

शुरू करो! अभी शुरू करो'। जनता असतुष्ट हो रही है'। मे

बेलिक को समझा दूँगा और ने कार्डिनल को।

जुपिटर ने फिर साँस ली, अपने को स्वस्थ किया और साहस के साथ कहा—

उपस्थित सज्जनो, आप—अधीर न हों, हम लोग अभी शुरू करते हैं।

जनता ने हर्ष-ध्वनि की। करतलध्वनि से हॉल गूँज उठा। जुपिटर के चले जाने पर भी प्रशंसा की बौछारें होती रहीं।

किन्तु वह अज्ञात पुरुष, जिसने आँधी को मन्द पवन बना दिया था, फिर अपने खम्भे की ओट में जा छिपा। निश्चय ही वह वहाँ अदृश्य, अचल और मूक बनकर खड़ा रहता, मगर दो युवतियों ने, जिन्होंने 'गिलनोर्ने'—जुपिटर—के साथ उसकी बातों को सुना था, उसे अपनी ओर आकर्षित किया।

मास्टर!—उनमें से एकने उसे समीप आने का इशारा करके कहा।

चुप रहो प्यारी लियनार्डी—उसकी साथिन ने कहा—वह कोई विद्वान नहीं, एक साधारण आदमी है। उसे 'मास्टर' न कहो, बल्कि 'महाशय' कहो।

महाशय!—लियनार्डी ने फिर उसे पुकारा।

अज्ञात व्यक्ति उनके निकट गया।

कहिए, क्या आज्ञा है, आपने मुझे किस लिये याद किया है?—उसने जिज्ञासा-भरी आवाज से पूछा।

कुछ नहीं—लियनार्डी ने घबराकर कहा—ये, मेरी सखी गिमक्ती-ला-गेनशियने आपसे कुछ कहना चाहती हैं।

नहीं महाशय,—गिसकेती ने कहा—लियनारडी ने आपको 'मास्टर' कह कर पुकारा, तो मैंने कहा कि 'महाशय' कहो।

दोनों युवतियों ने अपनी आँखें नीची कर लीं। युवक ने मुस्कुराकर उनकी ओर देखा।

तब आपको कुछ नहीं कहना है ?

नहीं, कुछ नहीं—गिसकेती ने उत्तर दिया

युवक पीछे हटा, किन्तु उन सुन्दरियो ने इस सुअवसर को अपने मनोविनोद के लिये छोडना न चाहा।

महाशय!—गिसकेतीने बडी फुर्ती से पूछा—जान पडता है कि आप उस सिपाही को जानते हैं, जो नाटक मे 'कुमारी मेरी' का पार्ट करनेवाला है।

आपका मतलब जुपिटर के पार्ट मे है ?—युवकने पूछा।

हाँ-हाँ—लियनारडी ने कहा—तो आप जुपिटर को जानते हैं ?

हाँ, मैं जानता हूँ।—युवक ने कहा।

उसकी दाढी बडी सुन्दर है—लियनारडी ने कहा।

यह 'रहस्य' जो खेला जायगा, मनोरजक होगा ?—गिसकेती ने शर्माते हुए पूछा।

बहुत ही सुन्दर—अज्ञात व्यक्ति ने बिना सकोच के कहा।

इसका प्लाट क्या है ?—लियनारडी ने पूछा।

नाटक का नाम 'कुमारी मेरी का उचित फैसला' है, यह एक सदाचार-पूर्ण नाटक है।

यह दूसरी बात है।—लियनारडी ने कहा।

थोड़ी देर शान्ति रही। युवक ने फिर शान्ति भंग की, कहा—यह बिलकुल नया खेल है। अभीतक कहीं भी नहीं खेला गया।

गिसकेती ने पूछा—यह वह नहीं है, जो दो वर्ष पहले खेला गया था और जिसमें तीन सुन्दर लड़कियों ने .

लियनारडी ने कहा—साइरेन का पार्ट खेला था।

युवक ने कहा—और सब नंगी थीं।

युवतियों ने आँखें नीची कर ली।

वह बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। मगर यह नाटक फलैंडर की राजकुमारी के लिये लिखा गया है।—युवक ने बतलाया।

क्या वे देहाती गाने भी गायेंगे?—गिसकेती ने पूछा।

छि! ऐसे नाटक में? इसमे भिन्न भिन्न शैलियों का समावेश नहीं होता। हाँ, कॉमिक—हास्यमय—नाटकों की बात और है।

दोनों युवतियों ने अपने देखे हुए नाटकों के लड़ाई तथा अन्य दृश्यों की तारीफों का पुल बाँध दिया। उनके उत्साह का क्या कहना, एक दूसरे से बढ़ जाना चाहती थीं।

अपने नाटक की प्रशंसा करते हुए गिसकेती ने कहा—लियनारडी! वह कितना सुन्दर था!

आज उससे भी सुन्दर होगा।—उस युवक ने युवतियों की बातों को सुनने का बहाना करते हुए कहा।

आप विश्वास दिलाते हैं कि यह नाटक अच्छा होगा?

निश्चयही अच्छा होगा,—फिर कुछ जोर देकर उसने कहा—मैं ही इसका लेखक हूँ।

सचमुच ?—उन युवतियों ने आश्चर्य मे पूछा ।

सचमुच !—उस कवि ने कुछ तन कर कहा—मेरा नाम पियरे ग्रींगोयरे है ।

पाठकों को स्पष्ट विदित हो गया होगा कि जुपिटर के जाने और नाटक-लेखक के अचानक प्रकट हो जाने से कुछ समय व्यतीत हो गया था । जो जनता थोड़ी देर पहले इतना कोलाहल कर रही थी, वही ऐक्टर की प्रतिज्ञा-पूर्त्ति की आशा में चुपचाप प्रतीक्षा भी कर रही थी । दर्शकों से सन्तोषपूर्वक प्रतीक्षा कराने का सरल उपाय है, बस कहते जाइए—अभी शुरू करते हैं ।

किन्तु जेहन सोया न था । उसने शान्ति भग करते हुए कहा—ओह, जुपिटर ! क्या तुम हमसे दिल्लगी करते हो ? अभी यह खेल शुरू करो, नहीं तो अच्छा न होगा !

इतना पर्याप्त था ।

बाजे बज उठे । चार पात्र मेज के नीचे से निकले और सीढ़ी से मेज पर आकर, दर्शकों को सलाम करने लगे । तालियाँ बज उठीं । पात्रों ने अपना काम शुरू कर दिया । दर्शक बहुधा अभिनेताओं के भाषणों से अधिक उनके वस्त्राभूषणों से मनोरंजन करते हैं । वे चारों अभिनेता सफेद तथा पीले रग के कपडे पहने थे । एक के हाथ मे तलवार, दूसरे के हाथ में दो सोने की कुंजियाँ, तीसरे के हाथ में तराजू तथा चौथे के हाथ मे एक फरसा था । उनके वस्त्रों पर कारचोबी का काम किया हुआ था, जिन पर लिखा

था, 'मैं कुलीनता हूँ' 'मैं धर्म हूँ' 'मैं वाणिज्य' और 'मैं परिश्रम' हूँ। उनके वस्त्रों से उनका लिंग-भेद स्पष्ट हो जाता था।

ये दोनों जोड़ियाँ संसार मे परिभ्रमण कर रही थीं, ताकि वे 'डाफिन' को संसार की सब मे सुन्दरी स्त्री दे सकें। वे संसार की यात्रा से क्लान्त होकर न्याय-भवन की संगमरमर की मेज पर पहुँची थीं।

यह सब बहुत अच्छा था।

मगर उस भीड मे पियरे ग्रींगोयरे के समान एकाग्रचित्त होकर उसे देखने वाला दूसरा कोई न था। जो कवि अपना नाम बताने की प्रसन्नता को दो मिनट पहले छिपा न सका था, वह अपनी गर्दन को बढा कर ध्यान-पूर्वक क्यों न सुने। वह अपने खम्भे की बगल में आ गया था। प्रारम्भ-काल की करतल-ध्वनि अब भी उसके कानो मे गूँज रही थी। वह उस आनन्द में निमग्न हो रहा था जिसमें हरएक लेखक अपनी कीर्ति को रंगभूमि मे देखकर डूब जाता है। धन्य है पियरे ग्रींगोयरे!

दुःख के साथ कहना पड़ता है कि कवि का वह नैसर्गिक आनन्द क्षणिक था। अपनी विजय तथा आनन्द का प्याला ज्यों ही ग्रींगोयरे ने अपने होंठ से लगाया, त्योंही उसमें एक कड़वी बूँद आ गिरी।

एक फटे कपडेवाले भिखमगे ने भीड़ में कुछ पा न सकने के कारण, किसी ऐसे स्थान मे बैठने का विचार किया, जहाँ से वह सबकी आँखों को आकर्षित कर सके, इसलिये नाटक के प्रारम्भ

ही में वह रगमच के समीप आ बैठा। अपने गूदड़ तथा बाँह की चोट के द्वारा वह सब के ध्यान को आकर्षित करके भिक्षा याचना करने लगा। वह एक शब्द भी न बोला।

उसकी उपस्थिति से वहाँ नाटक मे कुछ भी बाधा न पड़ती, कुछ भी अशान्ति न होती, यदि जेहन अपने ऊँचे स्थान से उस भिक्षुक को देख न लेता। उस शैतान को हँसने का रोग था। उसने तनिक भी न विचारा कि वह नाटक के रग को भग कर रहा है। रग-भग का जरा भी खयाल न करके उसने प्रसन्नता मे चिल्ला कर कहा—

जरा उस धोकेबाज भिक्षुक को तो देखो।

जिसने कभी तालाब मे पत्थर फेंका है, या पक्षियो के झुण्ड पर फैर किया है, वह सहज ही उस ध्यान मग्न दर्शक-मण्डली पर पैदा किए इन असगत शब्दों के प्रभाव का अनुमान कर सकता है। ग्रींगोयरे काँप उठा, मानो उसे बिजली का धक्का लगा हो। हर एक सिर उस भिक्षुक की ओर घूम गया। उसको इसकी कुछ भी चिन्ता न हुई। इस अवसर को भीख माँगने का अच्छा समय जानकर, अपनी आँखों को आधा बन्द कर, दर्द-भरी आवाज मे उसने कहा—दयालु सज्जनो! दया करो।

अपने सर की कसम!—जेहन कहता रहा—यह तो क्लोपिन ट्रोलेफो है। क्यों मित्र! पैर का घाव क्या असुविधा-जनक था, जो तुमने उसे अपनी बाँह के हवाले कर दिया।—

इतना कहते हुए उसने एक चाँदी के सिक्के को भिखमगे की

टोपी मे फेंक दिया, जिसे वह अपने घायल हाथ मे लेकर खड़ा था। भिक्षुक ने उसको भीख तथा कटाक्ष को चुपचाप स्वीकार कर लिया। उसने दर्द-भरी आवाज़ मे फिर कहा—दया करो सज्जनो!

इस घटना ने सबके ध्यान को खींच लिया। रात्रिन पोमेनिन आदि विद्यार्थियो ने तालियाँ बजाकर प्रसन्नता पूर्वक इसका स्वागत किया।

मींगोयरे क्षुब्ध हो उठा। अपने को सँभालते हुए उसने रंगभूमि के ऐक्टरों से चिल्ला कर कहा,—तुम लोग अपना काम करो।—उसने शोर करनेवालो की ओर घृणा की दृष्टि से भी देखना उचित न समझा।

उसी समय किसी ने उसकी आस्तीन को पकड़कर खींचा। मींगोयरे कठिनाई से मुस्कुरा सका। वह गिसकेती का सुन्दर हाथ था, जिसने उसे अपनी ओर खींचा था।

महाशयजी! क्या वे आगे ही बढते रहेंगे?

चोट खाये हुए कवि ने कहा—निश्चय!

क्या आप समझाने की कृपा करेगे?

जो कुछ वे कहते जा रहे हैं?—कवि ने बीच ही मे पूछा।

नहीं, जो कुछ वे कह चुके हैं।—गिसकेती ने कहा

कवि अचानक चकित हो गया।—इस मूर्ख छोकरी को प्लेग उठा ले जाय।—उसने उससे जलकर धीरे से कहा।

उस समय से उसकी आँखो में गिसकेती का कुछ भी मूल्य न रह गया।

एक्टरों ने उनकी आज्ञा को मान लिया था। धीरे-धीरे शान्ति स्थापित हुई। खेल आगे बढ़ा।

सचमुच नाटक अच्छा था। जो आज भी आवश्यक परिवर्तनों के साथ खेला जा सकता है। उसमें 'डाफिन'* शब्द यमक था, जिससे फलैण्डर के प्रेमी डाफिन की ओर इशारा भी किया गया था।

जिस समय 'वाणिज्य' तथा 'कुलीनता' के झगड़े में 'परिश्रम' अपना फैसला सुना रहा था—जंगल में कोई दूसरा ऐसा सुन्दर जन्तु न था—उसी समय मंच के समीप का द्वार खुला और नकीब ने अपने कर्कश स्वर में घोषणा की—हिज एमिनेन्स कार्डिनल बोर्बोन।

---

* फ्रेंच में डोलफिन (एक प्रकार की ह्वेल मछली) और 'डाफिन' एक तरह लिखे जाते हैं।

कार्डिनल

गरीब ग्रींगोयरे को एक नकीब के मुँह से निकला हुआ—'हिज़ एमिनेंस कार्डिनल बोर्बोन'—शब्द उस नाटक के विशेष आनन्द दायक क्षण में जितना कटु मालूम हुआ, उतना शायद तोपों का घोर गर्जन भी उसके कर्ण कुहरों में कभी कठोर न लगा था।

इसलिए नहीं कि ग्रींगोयरे कार्डिनल से भय खाता था, या उसकी अवहेलना करता था, न वह इतना कमजोर था, न उसमें इतनी अहम्मन्यता ही थी। वह उन दृढ और ऊँचे, शान्त एवं सौजन्यपूर्ण जीवों में था, जो सर्वदा मध्यमार्ग का ही अनुसरण करते हैं और साधारण समझ एवं उदार फिलासफी जिनकी निजी सम्पत्ति है। ऐसा जान पड़ता है कि बुद्धि ने, इस अमूल्य एवं अमर दार्शनिकों की जाति को, वह पथ प्रदर्शक ज्योति प्रदान की है, जिसके सहारे वह मनुष्य-रूपी इमारत की भूल भुलैया को पार करती आ रही है। वह प्रत्येक काल में एक-सी पाई जाती है, अर्थात्—सर्वदा समाज से उसका सामंजस्य रहता है। कहना न होगा कि यदि हम ठीक तौर से उसके चरित्र चित्रण में पूर्ण सफल हों, तो हमारा पियरे ग्रींगोयरे पन्द्रहवीं शताब्दी में उस दार्शनिक जाति का प्रतिनिधि कहला सकता है।

इसलिये कार्डिनल के कारण ग्रींगोयरे पर जो अवाद-

वे कार्डिनल की प्रतिष्ठा करने को तय्यार न थे; किन्तु पेरिस के निवासी अपनी ईर्ष्या को देर तक नहीं रखते, तिस पर कार्डिनल के आने के पहिले ही उन्होंने खेल शुरू करा कर अपने अधिकार का परिचय दिया था। इतनी विजय उनके लिये पर्याप्त थी। इसके अतिरिक्त कार्डिनल सुन्दर व्यक्ति था और उसकी लाल पोशाक उसे खूब फब रही थी। इसका अर्थ यह था, कि दर्शक-मण्डली का एक पक्ष (Better-half) उसी के पक्ष में था, इसलिये केवल देर हो जाने के कारण कार्डिनल को कुछ बुरा कहना ठीक न था, और तब, जब कि वह इतना सुन्दर था और अपनी लाल पोशाक ठाट से पहने हुए था।

उसने आते ही मुस्कुराते हुए सिर झुकाकर सबको अभिवादन किया और धीरे से अपनी लाल मखमल से सुसज्जित कुर्सी की ओर बढ़ा। उसका विशपों का दरबार भी वहीं मञ्च पर यत्र-तत्र बैठ गया। सब लोग उसका नाम ले-लेकर उसको पहिचानने का प्रयत्न करने लगे। आपस में दर्शकों ने उसकी खूब चर्चा की। उस चर्चा का स्वरूप भी उस दिन की स्वतन्त्रता के योग्य ही था। जेहन ने कार्डिनल ही को अपना शिकार बनाया।

कार्डिनल विचार में मग्न हो रहा था, इसलिये नहीं कि वह राजनीतिज्ञ था, या आनेवाली शादी का फल सोच रहा था, बल्कि जैसा कि पहिले कहा जा चुका है, उसे बाध्य होकर राजदूतों का स्वागत करना पड़ा था। कहाँ वह फ्रांस का वासी, और उसको उन जौ की शराब पीनेवालों से हाथ मिलाना पड़ा। तिस पर

सबके सामने। राजा को प्रसन्न रखने के लिये उसे यह सबसे बड़ा अप्रिय नाटक खेलना पड़ा।

जब नकोध ने राजदूतों के आने की सूचना दी, वह मुस्कराते हुए द्वार की ओर घूम गया। दो-दो करके आस्ट्रिया के ४८ राजदूत, जो बहुधा घेंट नगर की म्युनिसीपैलिटी के सदस्य या क्लर्क थे, आने लगे। उनके नाम भी विकट थे।

किन्तु उनमें एक व्यक्ति जिसका नाम 'गिलोमें रीम' था, बड़ा ही चतुर, सयाना, सतर्क जान पड़ता था। उसके चेहरे में बन्दर और कूटनीति-विशारद के चेहरे का सम्मिश्रण था। उससे मिलने के लिये कार्डिनल तीन पग आगे बढ़ गया।

भीड़ में ऐसे लोग कम थे, जो गिलोमें रीम को अच्छी तरह जानते हों। रीम वह महान व्यक्ति था, जो क्रान्ति के समय सब से आगे होता, किन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में वह गुप्त षड्यन्त्रों का विधाता था। वह ग्यारहवें लुई के साथ मजे से षड्यन्त्र रचता और उसकी गुप्त आवश्यकताओं को वह खूब जानता था।

मास्टर जेकू कोपेनोले

जिस समय मंच पर अभिवादन का हेर-फेर हो रहा था, उस समय गिलोमे रीम के पीछे से एक व्यक्ति ने अपने सिर को ऊँचा किये हुए प्रवेश किया। उसको देखते ही लोमड़ी के पीछे दौड़नेवाले कुत्ते का ध्यान हो आता था। उसकी फेल्ट-टोपी तथा चमड़े की जाकेट उसके मखमल तथा रेशमी कपड़े के बीच बहुत कुत्सित दिखाई दे रही थी। द्वारपाल ने उसे एक मामूली सईस जान कर रोका—

मेरे मित्र! इधर जाने का रास्ता नहीं है।

आगन्तुक ने अपने कन्धे के जरा से धक्के से द्वारपाल को दूर कर दिया—तुम्हारा क्या मतलब है? क्या तुम्हें आँख नहीं है? नहीं देखते, कि मैं भी दूत-मण्डल ही का आदमी हूँ?

उसके विचित्र स्वर के कारण सम्पूर्ण हॉल की जनता उसके आने को जान गई।

आपका नाम?—द्वारपाल ने पूछा।

जेकू कोपेनोले।

आपकी तारीफ?

घेंट नगर का मोजे का व्यापारी।

द्वारपाल पीछे खिसक गया। उसने म्युनिसिपैलिटी के सदस्य

के नामों की घोषणा तो किसी प्रकार कर दी थी, मगर अब मोजे-वाले के नाम की भी घोषणा करनी पड़ेगी! सचमुच यह कठिन था। कार्डिनल को काँटा चुभने का-सा अनुभव हुआ। मगर रीम ने हँसते हुए झुककर द्वारपाल से कहा—मास्टर जेक्रू कोपेनोले घेंट नगर के एल्डर मेन के क्लर्क के आगमन की सूचना दो।—कार्डिनल ने भी इन्हीं शब्दों के दोहराने के लिये द्वारपाल को आज्ञा दी।

कार्डिनल की गलती थी। कोपेनोले ने उसे सुन लिया।

क्रास की कसम!—जेक्रू कोपेनोले मोजेवाला!—सुन रहे हो द्वारपाल? मुझे इससे अधिक कुछ न चाहिये। मोजेवाला मेरे लिये पर्याप्त है। आस्ट्रिया के राजा ने मेरे मोजों के बीच अपने 'गेंट'[1] को खोजा है।

सब लोग हँस पड़े। चारों ओर से करतल-ध्वनि हुई। शब्दों के दो अर्थ पेरिस में तुरन्त प्रशंसा पाते हैं और फल-स्वरूप तालीयाँ उठती हैं।

कोपेनोले जनता का आदमी था और उस हाल में जनता भरी हुई थी। उसने उनमें बीच बिजली की गति-से सहानुभूति पैदा कर दी। उस पन्द्रहवीं शताब्दी में भी उस मोजेवाले की दर्प-पूर्ण बातों ने साधारण जनता में एक सम्मान के सोते हुए भाव को जगा दिया। जिस मोजेवाले ने कार्डिनल को मुँह-तोड़ उत्तर दिया था, वह अब उन्हीं के समान था।

[1] "गेंट (दस्ताना) शब्द पर श्लेष है, जो घेंट (नगर का नाम) की तरह लिखा जाता है।

कोपेनोले ने दर्प के साथ कार्डिनल को अभिवादन किया। कार्डिनल ने उत्तर दिया, क्योंकि उससे लुई भी डरता था। सब लोगों ने अपना-अपना स्थान ग्रहण किया। कार्डिनल के चेहरे से ज्ञात होता था, कि वह जैसे व्यग्र हो रहा था। कोपेनोले शान्त तथा तन कर बैठा था। वह सोच रहा था, कि 'मोजेवाला' बुरा नाम नहीं है। बादशाह इससे जितना डरते हैं, शायद उतना कार्डिनल से नहीं।

यहीं तक कोई बात न थी। अभी तो कार्डिनल को उस समाज में और भी कटु घूँट पीनी थी।

पाठकों को याद होगा, कि नाटक के प्रारम्भ में मच के समीप एक भिक्षुक आकर बैठ गया था। मेहमानों के आगमन के कारण उसे कुछ भी असुविधा नहीं हुई और न उनके कारण उसने मच के रेलिंग से हाथ ही हटाया। मच पर स्थानाभाव से, राजदूत सिकुड़कर बैठे थे और वह भिक्षुक आराम से अपने पैरों को सीढ़ियों पर फैला कर बैठा था। ऐसी गुस्ताखी असाधारण थी, किन्तु उस समय किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। वह हॉल की चीजों को देख नहीं रहा था, कभी-कभी वह अपना सिर हिला देता और हॉल के बीच में कभी-कभी उसके कण्ठ से—दया करो सज्जनो, की आवाज अपने आप ही निकल कर गूँज जाती थी। उस जन समुदाय में वही एक था, जिसने द्वारपाल तथा कोपेनोले के बीच की कौतुक-पूर्ण बातों को सुनने के लिये अपने सिर के घुमाने की आवश्यकता नहीं समझी। उसके सौभाग्य या दुर्भाग्य से घेंट का मोजेवाला, जिसके साथ सारी जनता सहानुभूति करने लगी थी

और जो सबका दृश्य पदार्थ हो रहा था, ठीक उस चीथड़ेवाले भिक्षुक के सिर के ऊपर वाली पहली ही लाइन में आ बैठा। जनता को यह देखकर, कि वह राजदूत उस दुष्ट भिक्षुक के मस्तक पर मित्रता की थपकी दे रहा है, कम आश्चर्य न हुआ। भिक्षुक घूमा, उन दोनों के चेहरे पर आश्चर्य, पारस्परिक परिचय के भाव तथा प्रसन्नता दृष्टिगोचर हो रही थी। दूसरों की कुछ भी परवा न करके, वे एक दूसरे से हाथ मिलाकर धीरे-धीरे बातचीत करने लगे। क्लोपिन ट्रोलेफो के चीथड़े मच की सुनहली जाजिम पर इस प्रकार शोभा पाने लगे, जैसे ताजी नारंगी पर कोई जन्तु।

इस विचित्र दृश्यकी औपन्यासिकता ने हॉल को हँसी के फौवारों से भर दिया। कार्डिनल ने तुरन्त इसे देखा, मगर अपने स्थान से उसने ट्रोलेफो के चिथड़ों के अतिरिक्त कुछ अधिक न देख पाया। उसने समझा—भिखमगा कुछ माँग रहा है। उसके इस दुस्साहस से क्रोधित होकर न्याय-भवन के इन्सपेक्टर से उसने कहा—इस दुष्ट को बाहर कर दो।

भिक्षुक का हाथ पकड़े हुए कोपेनोले ने कहा—ईश्वर की शपथ माननीय कार्डिनल! यह हमारा मित्र है।

शाबाश!—भीड़ ने हर्ष-ध्वनि की।

उसी समय से कोपेनोले पेरिस की जनता के हृदय का सम्राट् हो गया, जैसा कि वह घेंट के निवासियों के हृदय का था। उसकी श्रेणी के लोग सर्वदा जनता की आँखों में रहते हैं, विशेष कर जब वे इस प्रकार की सभ्यता की परवाह नहीं करते।

माई लार्ड ! हम लोगों को संतोष है कि आधे नाटक से हम लोगों की जान बच गई । यह कोई कम लाभ है ?—गिलोमे गीम ने उत्तर दिया ।

बेलिफ ने कार्डिनल से पूछा—नाटक हो ?

होने दो ! हमसे इससे क्या मतलब ? मैं तबतक अपनी धर्म चर्या पढ़ूँगा ।—कार्डिनल ने कहा ।

बेलिफ मंच पर खड़ा होकर कहने लगा—नागरिको ! उन लोगों के लिए, जिन्हें खेल को फिर से देखने की इच्छा है और जो उसे अन्त तक देखना चाहते हैं—अर्थात सब के संतोष के लिए—कार्डिनल की आज्ञा है कि खेल हो ।

दोनो दलों को बाध्य होकर मानना पड़ा ।

रंगभूमि के एक्टर अपने काम में लग गये । ग्रींगोयरे की आशा पुनर्जाग्रत हुई कि उसका नाटक ध्यान से देखा सुना जायगा, मगर यह मृगमरीचिका थी । उसी समय मंच पर फ्रांस के बादशाह के दरबारी धीरे-धीरे टपकने लगे । द्वारपाल को काम मिला । उसकी सूचना से मालूम हुआ कि कोई सरकारी वकील है, कोई शहर का कोतवाल, कोई जंगल का रक्षक, कोई राज-भवन का प्रबन्धक तो कोई अन्धों के अनाथालय का मैनेजर ।

यह उसे असह्य था ।

ग्रींगोयरे के क्रोध की सीमा न रही । उसने देखा था, कि दर्शकों का ध्यान नाटक की ओर आकर्षित हो रहा है । उसके नाटक की पूर्ण सफलता दर्शकों का देखना ही था । उसका नाटक

बड़े ही आकर्षक स्थान पर पहुँच गया था। वेनस (सौंदर्य की देवी रति—रंगभूमि में आकर डालफिन (मछली) को माँग रही थी, क्योंकि वह संसार की श्रेष्ठ सुन्दरी को दिया जाने वाला था। जूपिटर नीचे ही से उसकी माग का अनुमोदन कर रहा था। देवी की विजय होने ही वाली थी, अर्थात्—वह 'डाफिन' को, सीधी-सादी भाषा में पति-रूप में प्राप्त ही करने वाली थी, कि वहाँ एक सुन्दर बालिका—फ्लैंडर की मार्गरेट—उसकी प्रतिद्वन्दिनी बन कर आ गई। कैसा नाट्य-प्रभाव है, और कितना सुन्दर परिवर्तन! सबने इस मामले को कुमारी मेरी के सामने फैसले के लिए उपस्थित करने को कहा।

किन्तु यह सब कुछ व्यर्थ था। नये आगन्तुकों ने दर्शकों के ध्यान को अपनी ओर खींच लिया। दर्शकों का मन नाटक में नहीं लग रहा था। निश्चय ही यह हृदय को विदीर्ण कर देने वाली बात थी। गिसकेती, लियनारडो तथा उस मोटे व्यक्ति के सिवा, जो ग्रींगोयरे के कहने पर कभी-कभी रंगभूमि की ओर देख लेता था, और किसी ने उस नाटक को देखने की कृपा न की। ग्रींगोयरे को दर्शकों की पीठ के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

कवि ने जब अपने नाटक का यह अपमान देखा, तब उसके हृदय में तीर-सा चुभने लगा। थोड़ी देर पहले यही दर्शक उसके नाटक को देखने के लिये विप्लव के मार्ग पर दौड़ पड़े थे। अब, जब वह उनके सामने है, तब कोई उसकी ओर आँख उठा कर नहीं देखता!—आह! वाहरे जनता की कृपा के ज्वार भाटे!

माई लार्ड ! हम लोगों को संतोष है कि आधे नाटक में हम लोगों की जान बच गई। यह कोई कम लाभ है ?—गिलोमेगीम ने उत्तर दिया।

बेलिफ ने कार्डिनल से पूछा—नाटक हो ?

होने दो ! हमसे इससे क्या मतलब ? मैं तबतक धर्म चर्चा पढ़ूँगा।—कार्डिनल ने कहा।

बेलिफ मंच पर खड़ा होकर कहने लगा—नागरिको ! लोगों के लिए, जिन्हें खेल को फिर से देखने की इच्छा है जो उसे अन्त तक देखना चाहते हैं—अर्थात् सब के संतोष लिए—कार्डिनल की आज्ञा है कि खेल हो।

दोनों दलों को बाध्य होकर मानना पड़ा।

रंगभूमि के एक्टर अपने काम में लग गये। ग्रींगोयरे आशा पुनर्जाग्रत हुई कि उसका नाटक ध्यान से दे... जायगा, मगर यह मृगमरीचिका थी। उसी समय मंच फ्रांस के बादशाह के दरबारी धीरे-धीरे टपकने लगे। द्वारपाल काम मिला। उसकी सूचना से मालूम हुआ कि कोई सरका... वकील है, कोई शहर का कोतवाल, कोई जंगल का रक्षक, राज-भवन का प्रबन्धक तो कोई अन्धों के अनाथालय का मैनेजर यह उसे असह्य था।

ग्रींगोयरे के क्रोध की सीमा न रही। उसने देखा था, दर्शकों का ध्यान नाटक की ओर आकर्षित हो रहा है। नाटक की पूर्ण सफलता दर्शकों का देखना ही था। उसका नाट...

बड़े ही आकर्षक स्थान पर पहुँच गया था। वेनस (सौंदर्य की देवी रति—रंगभूमि में आकर डालफिन (मछली) को माँग रही थी, क्योंकि वह संसार की श्रेष्ठ सुन्दरी को दिया जाने वाला था। जूपिटर नीचे ही से उसकी माग का अनुमोदन कर रहा था। देवी की विजय होने ही वाली थी, अर्थात्—वह 'डाफिन' को, सीधी-सादी भाषा में पति-रूप में प्राप्त ही करने वाली थी, कि वहाँ एक सुन्दर बालिका—फ्लैंडर की मार्गरेट—उसकी प्रतिद्वन्द्विनी बन कर आ गई। कैसा नाट्य-प्रभाव है, और कितना सुन्दर परिवर्तन! सबने इस मामले को कुमारी मेरी के सामने फैसले के लिए उपस्थित करने को कहा।

किन्तु यह सब कुछ व्यर्थ था। नये आगन्तुकों ने दर्शकों के ध्यान को अपनी ओर खींच लिया। दर्शकों का मन नाटक में नहीं लग रहा था। निश्चय ही यह हृदय को विदीर्ण कर देने वाली बात थी। गिसकेती, लियनारडी तथा उस मोटे व्यक्ति के सिवा, जो ग्रींगोयरे के कहने पर कभी कभी रंगभूमि की ओर देख लेता था, और किसी ने उस नाटक को देखने की कृपा न की। ग्रींगोयरे को दर्शकों की पीठ के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

कवि ने जब अपने नाटक का यह अपमान देखा, तब उसके हृदय में तीर-सा चुभने लगा। थोड़ी देर पहले यही दर्शक उसके नाटक को देखने के लिये विप्लव के मार्ग पर दौड पड़े थे। अब, जब वह उनके सामने है, तब कोई उसकी ओर आँख उठा कर नहीं देखता!—आह! बाहरे जनता की कृपा के ज्वारभाटे!

माई लार्ड! हम लोगों को सतोष है कि आधे नाटक से हम लोगों की जान बच गई। यह कोई कम लाभ है?—गिलोमे-गीम ने उत्तर दिया।

बेलिफ ने कार्डिनल से पूछा—नाटक हो?

होने दो! हमसे इससे क्या मतलब? मैं तबतक अपनी धर्म-चर्या पढ़ूँगा।—कार्डिनल ने कहा।

बेलिफ मच पर खड़ा होकर कहने लगा—नागरिको! उन लोगों के लिए, जिन्हें खेल को फिर से देखने की इच्छा है और जो उसे अन्त तक देखना चाहते हैं—अर्थात् मत्र के सतोष के लिए—कार्डिनल की आज्ञा है कि खेल हो।

दोनों दलों को बाध्य होकर मानना पड़ा।

रगभूमि के एक्टर अपने काम में लग गये। ग्रींगोयरे की आशा पुनर्जागृत हुई कि उसका नाटक ध्यान से देखा सुना जायगा, मगर यह मृगमरीचिका थी। उसी समय मच पर फ्रास के बादशाह के दरबारी धीरे-धीरे टपकने लगे। द्वारपाल को काम मिला। उसकी सूचना से मालूम हुआ कि कोई सरकारी वकील है, कोई शहर का कोतवाल, कोई जगल का रक्षक, कोई राज-भवन का प्रबन्धक, तो कोई अन्धों के अनाथालय का मैनेजर।

यह उसे असह्य था।

ग्रींगोयरे के क्रोध की सीमा न रही। उसने देखा था, कि दर्शकों का ध्यान नाटक की ओर आकर्षित हो रहा है। उसके नाटक की पूर्ण सफलता दर्शकों का देखना ही था। उसका नाटक

ही आकर्षक स्थान पर पहुँच गया था। वेनस (सौंदर्य की रति—रगभूमि मे आकर डालफिन (मछली) को माँग थी, क्योंकि वह ससार की श्रेष्ठ सुन्दरी को दिया जाने वाला जूपिटर नीचे ही से उसकी माग का अनुमोदन कर रहा देवी की विजय होने ही वाली थी; अर्थात्—वह 'डाफिन' सीधी-सादी भाषा मे पति रूप में प्राप्त ही करने वाली थी, वहाँ एक सुन्दर बालिका—फ्लैंडर की मार्गरेट—उसकी द्वन्दिनी बन कर आ गई। कैसा नाट्य-प्रभाव है, और कितना र परिवर्तन। मैंने इस मामले को कुमारी मेरी के सामने ले के लिए उपस्थित करने को कहा।

किन्तु यह सब कुछ व्यर्थ था। नये आगन्तुकों ने दर्शकों के न को अपनी ओर खींच लिया। दर्शकों का मन नाटक में नहीं रहा था। निश्चय ही यह हृदय को विदीर्ण कर देने वाली बात गिसकेती, लियनारडी तथा उस मोटे व्यक्ति के सिवा, जो ग्रिंगोयरे के कहने पर कभी-कभी रगभूमि की ओर देख लेता और किसी ने उस नाटक को देखने की कृपा न की। ग्रिंगोयरे दर्शकों की पीठ के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

कवि ने जब अपने नाटक का यह अपमान देखा, तब उसके मे तीर सा चुभने लगा। थोड़ी देर पहले यही दर्शक उसके क को देखने के लिये विप्लव के मार्ग पर दौड़ पड़े थे। अब, यह उनके सामने है, तब कोई उसकी ओर आँख उठा कर देखता!—आह! बाहरे जनता की कृपा के ज्वारभाटे!

माई लार्ड ! हम लोगों को सतोष है कि आधे नाटक में हम लोगो की जान बच गई। यह कोई कम लाभ है ?—गिलोमे रीम ने उत्तर दिया।

वेलिफ ने कार्डिनल से पूछा—नाटक हो ?

होने दो ! हमसे इससे क्या मतलब ? मै तबतक अपनी धर्म-चर्या पढ़ूँगा।—कार्डिनल ने कहा।

वेलिफ मच पर खड़ा होकर कहने लगा—नागरिको ! उन लोगों के लिए, जिन्हें खेल को फिर से देखने की इच्छा है और जो उसे अन्त तक देखना चाहते हैं—अर्थात् सब के सतोष के लिए—कार्डिनल की आज्ञा है कि खेल हो।

दोनो दलो को बाध्य होकर मानना पड़ा।

रगभूमि के एक्टर अपने काम में लग गये। ग्रींगोयरे को आशा पुनर्जागृत हुई कि उसका नाटक ध्यान से देखा सुना जायगा, मगर यह मृगमरीचिका थी। उसी समय मच पर फ्रास के बादशाह के दरबारी धीरे-धीरे टपकने लगे। द्वारपाल को काम मिला। उसकी सूचना से मालूम हुआ कि कोई सरकारी वकील है, कोई शहर का कोतवाल, कोई जंगल का रक्षक, कोई राज-भवन का प्रबन्धक तो कोई अन्धो के अनाथालय का मैनेजर।

यह उसे असह्य था।

ग्रींगोयरे के क्रोध की सीमा न रही। उसने देखा था, कि दर्शकों का ध्यान नाटक की ओर आकर्षित हो रहा है। उसके नाटक की पूर्ण सफलता दर्शकों का देखना ही था। उसका नाटक

बड़े ही आकर्षक स्थान पर पहुँच गया था। वेनस (सौंदर्य की देवी रति—रंगभूमि में आकर डालफिन (मछली) को माँग रही थी, क्योंकि वह संसार की श्रेष्ठ सुन्दरी को दिया जाने वाला था। जूपिटर नीचे ही से उसकी माग का अनुमोदन कर रहा था। देवी की विजय होने ही वाली थी, अर्थात्—वह 'डाफिन' को, सीधी-सादी भाषा में पति रूप में प्राप्त ही करने वाली थी, कि वहाँ एक सुन्दर बालिका—फ्लैंडर की मार्गरेट—उसकी प्रतिद्वन्द्विनी बन कर आ गई। कैसा नाट्य-प्रभाव है, और कितना सुन्दर परिवर्तन! सबने इस मामले को कुमारी मेरी के सामने कैमरो के लिए उपस्थित करने को कहा।

किन्तु यह सब कुछ व्यर्थ था। नये आगन्तुकों ने दर्शकों के ध्यान को अपनी ओर खींच लिया। दर्शकों का मन नाटक में नहीं लग रहा था। निश्चय ही यह हृदय को विदीर्ण कर देने वाली बात थी। गिसकेती, लियनारडी तथा उस मोटे व्यक्ति के सिवा, जो ग्रंगोयरे के कहने पर कभी-कभी रंगभूमि की ओर देख लेता था, और किसी ने उस नाटक को देखने की कृपा न की। ग्रींगोयरे को दर्शकों की पीठ के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

कवि ने जब अपने नाटक का यह अपमान देखा, तब उसके हृदय में तीर-सा चुभने लगा। थोड़ी देर पहले यही दर्शक उसके नाटक को देखने के लिये विद्रूप के मार्ग पर दौड़ पड़े थे! अब, जब वह उनके सामने है, तब कोई उसकी ओर आँख उठा कर नहीं देखता!—आह! वाह रे जनता की कृपा के ज्वार भाटे!

माई लार्ड ! हम लोगों को संतोष है कि आधे नाटक से हम लोगों की जान बच गई। यह कोई कम लाभ है ?—गिलोमे रीम ने उत्तर दिया।

बेलिफ ने कार्डिनल से पूछा—नाटक हो ?

होने दो ! हमसे इससे क्या मतलब ? मैं तबतक अपनी धर्म चर्या पढ़ूँगा।—कार्डिनल ने कहा।

बेलिफ मंच पर खड़ा होकर कहने लगा—नागरिको ! उन लोगों के लिए, जिन्हें खेल को फिर से देखने की इच्छा है और जो उसे अन्त तक देखना चाहते हैं—अर्थात् सब के संतोष के लिए—कार्डिनल की आज्ञा है कि खेल हो।

दोनो दलो को बाध्य होकर मानना पड़ा।

रंगभूमि के एक्टर अपने काम में लग गये। ग्रींगोयरे की आशा पुनर्जागृत हुई कि उसका नाटक ध्यान से देखा सुना जायगा, मगर यह मृगमरीचिका थी। उसी समय मंच पर फ्रांस के बादशाह के दरबारी धीरे-धीरे टपकने लगे। द्वारपाल को काम मिला। उसकी सूचना से मालूम हुआ कि कोई सरकारी वकील है, कोई शहर का कोतवाल, कोई जंगल का रक्षक, कोई राज-भवन का प्रबन्धक, तो कोई अन्धों के अनाथालय का मैनेजर।

यह उसे असह्य था।

ग्रींगोयरे के क्रोध की सीमा न रही। उसने देखा था, कि दर्शकों का ध्यान नाटक की ओर आकर्षित हो रहा है। उसके नाटक की पूर्ण सफलता दर्शकों का देखना ही था। उसका नाटक

बड़े ही आकर्षक स्थान पर पहुँच गया था। वेनस (सौंदर्य की देवी रति—रंगभूमि में आकर डालफिन (मछली) को माँग रही थी, क्योंकि वह संसार की श्रेष्ठ सुन्दरी को दिया जाने वाला था। जूपिटर नीचे ही से उसकी माग का अनुमोदन कर रहा था। देवी की विजय होने ही वाली थी, अर्थात्—वह 'डाफिन' को, सीधी-सादी भाषा में पति रूप में प्राप्त ही करने वाली थी, कि वहाँ एक सुन्दर बालिका—फ्लैंडर की मार्गरेट—उसकी प्रतिद्वन्द्विनी बन कर आ गई। कैसा नाट्य-प्रभाव है, और कितना सुन्दर परिवर्तन! सबने इस मामले को कुमारी मेरी के सामने फैसले के लिए उपस्थित करने को कहा।

किन्तु यह सब कुछ व्यर्थ था। नये आगन्तुकों ने दर्शकों के ध्यान को अपनी ओर खींच लिया। दर्शकों का मन नाटक में नहीं लग रहा था। निश्चय ही यह हृदय को विदीर्ण कर देने वाली बात थी। गिसकेती, लियनारडो तथा उस मोटे व्यक्ति के सिवा, जो ग्रींगोयरे के कहने पर कभी-कभी रंगभूमि की ओर देख लेता था, और किसी ने उस नाटक को देखने की कृपा न की। ग्रींगोयरे को दर्शकों की पीठ के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता था।

कवि ने जब अपने नाटक का यह अपमान देखा, तब उसके हृदय में तीर-सा चुभने लगा। थोड़ी देर पहले यही दर्शक उसके नाटक को देखने के लिये विप्लव के मार्ग पर दौड़ पड़े थे। अब, जब वह उनके सामने है, तब कोई उसकी ओर आँख उठा कर नहीं देखता!—आह! वाहरे जनता की कृपा के ज्वार भाटे!

फिर शान्ति हुई। नाटक का खेल चलने लगा। उसी क्षण ग्रांगोयरे ने देखा, कि मास्टर कोपेनोले ने अपनी जगह से उठ कर एक अप्रीति-जनक व्याख्यान देना शुरू कर दिया—

'नागरिको तथा पेरिस के शूरवीरो, मैं नहीं समझता कि हम लोग यहाँ क्या कर रहे हैं। मैं यह अवश्य देख रहा हूँ कि उस मेज —रंगभूमि—पर कुछ लोग लड़ने की-सी मुद्रा कर रहे हैं। मैं नहीं समझता कि आप लोग इस 'रहस्य' को नाटक क्यों कहते हैं। उसमें मनोरंजन की मात्रा तो तनिक भी नहीं है। और उन एक्टरों को भी एक दूसरे को गाली देने के अतिरिक्त कुछ नहीं आता। मुझे आशा दिलाई गई थी, कि यहाँ 'मूर्खों का भोज' तथा 'अव्यवस्था के शासक' का चुनाव देखने को मिलेंगे। घेंट में भी हम लोग 'अव्यवस्था के शासक' का चुनाव करते हैं और ईश्वर की साक्षी करके कहता हूँ कि हम लोग इस मामले में आप से पीछे नहीं हैं, मगर उसको हम लोग इस प्रकार करते हैं—हम लोग भी इकट्ठे होते हैं—जैसे आप लोग हुए हैं—फिर, हर एक आदमी क्रम-क्रम से एक छिद्र में अपने सिर को डालकर दूसरों का मुँह बनाता है। जो सब से कुरूप मुँह बनाता है, वही 'पोप' चुना जाता है। क्या आप भी हम लोगों की तरह अपने 'पोप' को चुनेंगे? कम-से-कम वह इन दाँत बजाने वालों से तो अधिक आकर्षक होगा। नागरिक महाशयो, आप लोगों की सम्मति है? यहाँ पर कुरूप स्त्री-पुरुषों का पूरा जमघट है, और मुझे आशा है कि हम लोगों को कोई बहुत अच्छा—सब से कुरूप—दाँत निपोरनेवाला मिल जायगा।

ग्रींगोयरे उत्तर देना चाहता था, किन्तु आश्चर्य तथा क्रोध ने आकर उसका गला दबा लिया। उसके अतिरिक्त वहाँ पेरिस के शूरवीरों ने उस मोजेवाले की बात पर हर्ष-ध्वनि करके अपनी सम्मति प्रकट कर दी थी। ग्रींगोयरे ने अपने हाथों से अपने चेहरे को ढक लिया। दुर्भाग्य वश उसके पास कोई लबादा नहीं था।

एक औरत ने कोपेनोले को समझाया, कि कासीमोडो बहरा है।

बहरा !—हँसते हुए उसने कहा—वह पूरा 'पोप' है।

जेहन अपने स्थान से यह कहता हुआ उतरा—यह तो कासीमोडो है। मेरे भाई का घंटा बजानेवाला। गुडबाई कासीमोडो !—

यह कितना शैतान है !—राबिन दर्द से कराहते हुए उसके कितने ही दोषों को गिनाने लगा।

जब उसकी इच्छा होती है, तो वह बोलता भी है, घंटा बजाने से वह बहरा हो गया है। वह गूँगा नहीं है।—एक बुड्ढा ने कहा।

इसी की कमी है।—जेहन ने रिमार्क दिया।

इसकी एक आँख बड़ी तेज है।—राबिन ने कहा।

कभी नहीं, काना आदमी अन्धे से अपूर्ण होता है, क्योंकि वह अपनी कमी को जानता है।—जेहन ने जज की तरह फैसला दिया।

बहुत से लोग दौड़ कर 'पोप' की पोशाक ले आये। कासीमोडो ने उसके पहनने में विवाद नहीं किया। वह कुछ दर्प का अनुभव कर रहा था। उसको एक खुले विमान पर बिठाकर मूर्ख-समाज के गण्य-मान्य सज्जनों ने अपने कन्धे पर उसे उठा लिया। कासीमोडो के चेहरे पर एक तीक्ष्ण प्रसन्नता की छाया थी।

इज़मेरल्डा

मुझे पाठकों को यह बतलाने में बड़ा आनन्द मिल रहा है, कि इन सब विघ्न-बाधाओं के रहते हुए भी ग्रींगोयरे निराश नहीं हुआ। वह अभी तक अभिनेताओं को प्रोत्साहित कर रहा था, इसीलिये थोड़ा-बहुत नाटक चलता रहा। कासीमोडो, कोपेनोल तथा शोर मचानेवालों को हॉल छोड़ते देखकर ग्रींगोयरे के हृदय में आशा की किरण झलक उठी। उसने सोचा—अब सारे शोर मचानेवालों से पीछा छूटा। दुर्भाग्य-वश 'सारे शोर मचानेवाला' का अर्थ होता था, सारी दर्शक-मण्डली। पलक मारते वह बड़ा हॉल खाली हो गया।

अभी थोड़े-से दर्शक इधर-उधर बच गये थे। स्त्रियाँ, वृद्ध तथा बालक, जो जलूस के साथ बाहर न जा सके, अभी वहीं खड़े थे। खिड़की पर कुछ विद्यार्थी अभी बैठे थे। वे आँगन की ओर देख रहे थे।

ग्रींगोयरे ने विचारा—हमारे नाटक का अन्त देखने के लिये अभी पर्याप्त दर्शक हैं और खुशी की बात है, कि वे शिक्षित और समझदार जीव हैं।

ग्रींगोयरे को पता लगा, कि उसके गाने-बजानेवाले भी 'अव्यवस्था के शासक' के जलूस के साथ चले गये, किन्तु उसने

धैर्य धरकर अभिनेताओं से कहा—मित्रो, अभी समय है।

ग्रॅंगोयरे ने सोचा—अच्छा, दूसरे तो ध्यान से सुन रहे हैं।

खिडकी पर से एक ने चिल्लाकर कहा—मित्रो ! इजमेरल्डा ! इजमेरल्डा आँगन मे है।

इस बात ने जादू जैसा असर किया। हाल का प्रत्येक व्यक्ति 'इजमेरल्डा' 'इजमेरल्डा' पुकार उठा। उसे देखने के लिये भीड खिडकी की ओर झुक रही थी।

उसी समय बाहर से तालियो की आवाज आई।

इजमेरल्डा से उनका क्या मतलब है ?—निराश ग्रॅंगोयरे क्रोध से चिल्ला उठा—ओह ! अब खिडकियों का भाग्योदय हुआ !

उसने देखा, कि रगभूमि पर नाटक बन्द हो गया है। जुपिटर के प्रवेश का वह समय था, किन्तु वह रगभूमि के नीचे चुपचाप खडा था।

माइकेल गिलनोर्न क्या कर रहे हो ?—क्रोध से ग्रॅंगोयरे ने कहा—मेरी आज्ञा है, ऊपर जाओ।

अफसोस—जुपिटर ने ही उत्तर दिया—एक विद्यार्थी सीढी ले कर भाग गया।

ग्रॅंगोयरे ने देखा कि अब रगभूमि तक आना-जाना कठिन है।—ओह ! उसने सीढी क्यों उठा ली ?

जुपिटर ने धीरे से जवाब दिया—इजमेरल्डा को देखने के लिये। उसने कहा कि यह सिढ़ी यहाँ व्यर्थ पडी है और वह उसे लेकर चलता बना।

यह अन्तिम चोट थी। ग्रींगीयरे ने उसे विवश हो सह लिया।

यदि मुझे कुछ मिला, तो तुम्हे भी मिलेगा।—अभिनेताओं से उसने दर्दभरी आवाज़ में कहा।

सबके पीछे वह अपना सिर नीचे लटकाकर, हारे हुए, किन्तु दिल तोडकर लडनेवाले सिपाही की तरह, हॉल से बाहर हुआ। वह सोचने लगा—पेरिस के निवासी कैसे गधे हैं। वे नाटक देखने के लिये तो आये, मगर किसी ने उधर ध्यान नहीं दिया। उनका ध्यान व्यर्थ चीज़ो को ही देखने की ओर लगा था, कभी क्लोपीन ट्रोलेफो, कभी कार्डिनल, कभी कोपेनोले और कभी कासीमोडो की ओर, किन्तु कुमारी मेरी की ओर किसी ने आँख तक नहीं उठाई। मैं दर्शकों का मुँह देखने के लिये आया था, किन्तु क्या देखा?—उनकी पीठ। सच है, होमर ग्रीस के गावों में भीख माँगता था। इस्मेरल्डा से उनका क्या मतलब है? यह किस भाषा का शब्द है?

दूसरा भाग

आँधी से आग में

जनवरी के महीने मे रात्रि शीघ्रता से बढती है। ग्रींगोयरे ने जिस समय न्याय-भवन को छोड़ा, उससे पहले ही पेरिस की गलियाँ तिमिराछन्न हो गई थी। निशा के आगमन से कवि को एक अपूर्व आनन्द मिला। उसके हृदय मे एक प्रबल इच्छा जाग उठी थी कि वह किसी अधकारमय एकान्त स्थान मे चल कर विश्राम करे और उसे इसकी अत्यन्त आवश्यकता भी थी। नाटक के इस प्रकार असफल होने पर, वह अपने किराये के वास स्थान पर जाने का साहस न कर सका। उसका वास-स्थान घासमंडी के समीप था और कमरे का किराया (नाटक से जो आय होने वाली थी, उसके अतिरिक्त) १२ पेंस बाकी लग गया था। कवि की सारी सम्पत्ति (उसके पाजामा, कमीज और हैट को लेकर)

थे, बाकी किराया बारह गुना था। उसे रात्रि कहीं सुरक्षित स्थान में बिताने की चिन्ता प्रबल हो उठी। पेरिस की सड़कें उसकी सेवा में अपने हृदय को खोले पड़ी थीं। उसकी स्मृति ने सहायता दी और उसे स्मरण आया कि एक सप्ताह पहले उसने पार्लमेंट के एक मेम्बर के द्वार पर, खच्चर पर चढ़ने के लिये एक पत्थर पड़ा हुआ देखा था। उसने सोचा—वह पत्थर, समय पर, किसी भी भिक्षु या कवि के लिये कोमल तकिये का काम दे सकता है। सहसा ऐसे अच्छे विचार के स्मरण कराने के लिये उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया, किन्तु ज्योंहीं अभीष्ट स्थान पर जाने के लिये वह एक गली की ओर मुड़ा, उसी समय 'अव्यवस्था के शासक' का जलूस उधर से आ निकला। जलूस बाजे के साथ उधर ही जा रहा था। उसके मनोभाव को इस दृश्य से असह्य ठोकर लगी, वह भाग चला। उसके चोट खाये हुए हृदय पर इस जलूस ने नमक छिड़क दिया।

वह सेंट माइकेल के पुल की ओर जाना चाहता था, मगर उधर लड़के आतिशबाजी छोड़ रहे थे।

आतिशबाजी का नाश हो—ग्रींगोयरे ने दूसरी ओर मुड़ते हुए क्रोध से चिल्लाकर कहा, किन्तु उधर भी प्रत्येक घरों पर बत्तियाँ जलाकर अपनी शोभा से आकाश के नक्षत्रों को लज्जित कर रही थीं। छतों पर फ्रांस के बादशाह, राजकुमार और फ्लैंडर की मार्गरेट के सम्मान में ध्वजा-पताकाएँ उड़ रही थीं। सड़कों पर कोलाहल का आधिपत्य था।

दूसरा भाग

आँधी से आग में

जनवरी के महीने मे रात्रि शीघ्रता से बढती है। ग्रींगोयरे ने जिस समय न्याय-भवन को छोड़ा, उससे पहले ही पेरिस की गलियाँ तिमिराछन्न हो गई थीं। निशा के आगमन से कवि को एक अपूर्व आनन्द मिला। उसके हृदय मे एक प्रबल इच्छा जाग उठी थी कि वह किसी अंधकारमय एकान्त स्थान में चल कर विश्राम करे और उसे इसकी अत्यन्त आवश्यकता भी थी। नाटक के इस प्रकार असफल होने पर, वह अपने किराये के वास स्थान पर जाने का साहस न कर सका। उसका वास-स्थान घासमंडी के समीप था और कमरे का किराया (नाटक से जो आय होने वाली थी, उसके अतिरिक्त) १२ पेंस बाकी लग गया था। कवि की सारी सम्पत्ति (उसके पाजामा, कमीज और हैट को लेकर)

से, बाकी किराया बारह गुना था। उसे रात्रि कहीं सुरक्षित स्थान में बिताने की चिन्ता प्रबल हो उठी। पेरिस की सड़कें उसकी सेवा में अपने हृदय को खोले पड़ी थीं। उसकी स्मृति ने सहायता दी और उसे स्मरण आया कि एक सप्ताह पहले उसने पार्लमेंट के एक मेम्बर के द्वार पर, खच्चर पर चढ़ने के लिये एक पत्थर पड़ा हुआ देखा था। उसने सोचा—वह पत्थर, समय पर, किसी भी भिक्षु या कवि के लिये कोमल तकिये का काम दे सकता है। सहसा ऐसे अच्छे विचार के स्मरण कराने के लिये उसने परमेश्वर को धन्यवाद दिया, किन्तु ज्योंही अभीष्ट स्थान पर जाने के लिये वह एक गली की ओर मुड़ा, उसी समय 'अव्यवस्था के शासक' का जलूस उधर से आ निकला। जलूस बाजे के साथ उधर ही जा रहा था। उसके मनोभाव को इस दृश्य से असह्य ठोकर लगी, वह भाग चला। उसके चोट खाये हुए हृदय पर इस जलूस ने नमक छिड़क दिया।

वह सेंट माइकेल के पुल की ओर जाना चाहता था, मगर उधर लड़के आतिशबाजी छोड़ रहे थे।

आतिशबाजी का नाश हो—ग्रँगोयरे ने दूसरी ओर मुड़ते हुए क्रोध से चिल्लाकर कहा, किन्तु उधर भी प्रत्येक घरों पर बत्तियाँ जलकर अपनी शोभा से आकाश के नक्षत्रों को लज्जित कर रही थीं। छतों पर फ्रांस के बादशाह, राजकुमार और फ्लेंडर की मार्गरेट के सम्मान में ध्वजा-पताकाएँ उड़ रही थीं। सड़कों पर कोलाहल का आधिपत्य था।

कवि ग्रींगोयरे ध्वजा-पताकाओं और उनके शिल्पी की सराहना करता हुआ एकदम लौट पड़ा। दूसरी ओर एक गली सुनसान दिखाई दी, उसने सोचा, शायद इस गली में उत्सव की प्रतिध्वनि और छाया से मेरी जान बचे, इसलिए वह उसीमें घुस पड़ा। थोड़ा ही दूर जाने पर उसे ठोकर लगी और वह गिर गया। उसने अपने को काँटेदार झाड़ी के एक झखाड़ पर पड़ा देखा, जो पार्लामेंट के अध्यक्ष के द्वार पर उस दिन उत्सव में पेरिस के भलमानसों-द्वारा रक्खा गया था। ग्रींगोयरे उठा और नदी की ओर बढ़ चला। राजोद्यान के समीप से होते हुए, घुटनों तक कीचड़ से होकर वह नगर के अतिमछोर पर पहुँच गया। नदी अधकार में सोई-सी जान पड़ती थी। उसके सामने नदी में एक छोटा-सा द्वीप था। उस द्वीप में एक मल्लाह की, मधु के छत्ते जैसी छोटी झोपड़ी दिखलाई पड़ती थी। उस झोपड़ी से दीपक का धीमा प्रकाश निकलकर अधकार में झाँक रहा था।

भाग्यशाली नाविक—ग्रींगोयरे ने सोचा—तुम कभी यश की, महत्ता की, कामना नहीं करते, न तुम उत्सवों के गीत ही लिखते हो। राजाओं के विवाहोत्सवों से तुम्हारा कोई मतलब नहीं। मैं कवि होकर भी अपमानित हूँ। जाड़े से यहाँ काँप रहा हूँ और १२ पेंस का ऋणी हूँ। मेरे जूते के तले घिस कर इतने पतले हो गये हैं कि तुम उन्हें अपनी लालटेन के शीशे के काम में ला सकते हो। नाविक तुम्हारी पर्णकुटी इस समय मेरे नेत्रों को कितना विश्राम दे रही है। इसके सामने मैं पेरिस को भूल गया हूँ।

उसी समय उस झोंपड़ी से एक आतिशबाजी छूटी, जिसने उसको उस काव्यानन्द के स्वप्न से जगा दिया। नाविक भी उस उत्सव का अपना हिस्सा पूरा कर रहा था।

आतिशबाजी को देख कर ग्रींगोयरे दाँत पीस उठा।

ओह! शैतानों के उत्सव—उसने चिल्ला कर कहा—क्या तुम मेरा पीछा करते ही रहोगे? इस नाविक के घर में भी तुम्हारा हाथ पहुँच चुका है।

उसने अपने पैरों तले 'सेन' को देखा और उसके हृदय मे एक भयानक लालच जाग पड़ा।

उसने कहा—आह! यदि 'सेन' का जल इतना शीतल न होता, तो मैं किस प्रसन्नता के साथ अपने प्राण इस में विसर्जन कर देता। फिर शीघ्र ही दूसरा विचार उसके मस्तिष्क मे उठा। उसने सोचा कि जब मैं यहाँ तक भाग कर भी इस उत्सव की छाया से अपने को न बचा सका, तो क्यों न अब मैं उत्सव में साहस-पूर्वक सम्मिलित हो जाऊँ?—वह फिर ग्रेव-स्क्वायर की ओर चल पड़ा। उसने सोचा—वहाँ होलिका दहन की आग से अपने को शीत से भी बचा लूँगा और भोज के टुकड़ो से क्षुधा की तृप्ति हो जायगी।

दर्शन

जिस समय ग्रींगोयरे ग्रेव-स्क्वायर मे पहुँचा, उस समय वह शीत के मारे ठिठुर रहा था। भीड से बचने के लिये वह 'पन चक्कियो के पुल' से होकर आया था। उन पनचक्कियों के फुहारों म उडे हुए जलकणों ने उसका कोट भिगो दिया था। इसके अतिरिक्त नाटक की असफलता के कारण जाडे की कठोरता उसे अत्यधिक जान पडती थी। वह स्क्वायर के बीच प्रज्ज्वलित अग्नि की ओर तेजी से बढने लगा, किन्तु उस अग्निराशि के चारो ओर एक दुर्भेद्य नर-दुर्ग बना हुआ था।

नीच पेरिस के वासी!—उसने मन-ही-मन कहा—मेरे रास्ते को रोके पडे हैं। मुझे गर्मी की कितनी आवश्यकता है, चक्कियों ने मुझे भिगो दिया। पेरिस के बिशप तथा चक्कियों से शैतान समझे! क्या बिशप मिलर—पनचक्कीवाला—बनना चाहता है। मैं उसे शाप देता हूँ!—देखूँ, शायद कोई मेरे लिये जगह दे दे। लोग आग तापते हुए खूब आनन्द ले रहे हैं।

ध्यान से देखने पर उसे मालूम हुआ, कि लोग अग्नि से बहुत दूर घेरा बनाये बैठे हैं और वे केवल अग्नि के लिये ही वहाँ नहीं हैं।

जन-समुदाय एवं अग्नि के बीच के मैदान में एक युवती नाच रही थी।

इस दृश्य ने कवि को इस प्रकार आकर्षित किया और वह यह नहीं सोच सका, कि जिस युवती को वह देख रहा है, वह कोई परी, या स्वर्गीय बाला है।

वह लम्बी नहीं थी, मगर अपने पतले शरीर को वह इस प्रकार सीधा किये थी, कि उसके लम्बे होने का भान हो जाता था। उसका रंग सोने के प्रकाश की तरह सुन्दर था। उसके छोटे पाँव, उसकी सुन्दर जूतियों में और सुन्दर दीख रहे थे। वह नाचती थी, चक्कर में घूमती थी, अपने अंगों को भाव-भंगियों के साथ सिकोड़ लेती थी और जिस ओर उसका प्रकाशमान मुख-मण्डल मुड़ जाता था, उधर उसके कजरारे-रतनारे नेत्रों से एक विद्युत-द्युति निकल पड़ती थी।

सब आँखें उसी पर लगी थीं। सब मुख खुले पड़े थे। वह एक खजड़ी बजाकर नाच रही थी। उसकी पतली गोल भुजाएँ मधु-मक्खी की भाँति चक्कर काट रही थीं। उसकी कुर्ती सुनहरे रंग की थी, जो उसके शरीर से चिपटी हुई थी और उसका घाँघरा रंग बिरंगा था। उसके खुले स्कन्ध प्रदेश, काले केश और प्रकाशमय नेत्रों को देखने से वह सचमुच इस लोक की वासिनी नहीं जान पड़ती थी।

ग्रींगोयरे ने सोचा—सचमुच यह कोई स्वर्गीय देवी है।

उसी समय उसके केशपाश खुल पड़े और उसमें से एक पीतल का टुकड़ा नीचे गिर पड़ा।

आह!—उसने कहा—नहीं, यह तो जिप्सी कन्या है। उसका भ्रम जाता रहा।

वह फिर नाचने लगी। उसके मुखमण्डल पर अग्नि-सा प्रकाश अठखेलियाँ कर रहा था। ग्रॉंगोयरे को वह सुन्दर लग रही थी और उसका नृत्य उसे और भी अपनी ओर खींच रहा था।

उस जन-समुदाय मे एक और पुरुष था, जिसकी आखें औरे से अधिक ध्यान पूर्वक उस नाचने वाली की ओर देख रही थीं वह स्वभावात कर्कश, शान्त एव रजीदा दीख रहा था। वह उम्र में पैंतीस वर्ष से अधिक का नही जान पड़ता था, तो भी उसकी खोपड़ी खल्वाट थी। और उसकी कनपटी पर थोड़े से सफेद बाल थे। उसके ऊँचे ललाट पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं, किन्तु उसके नेत्रों से यौवन की असाधारण मदिरा, जीवन का प्रेम और एक गहरी लालसा चमक रही थी। उसके नेत्र निर्निमेष भाव से उस नाचने वाली पर टिक रहे थे। जनता नाच से प्रसन्न हो रही थी, किन्तु उसकी उदासीनता बढती ही जाती थी। समय-समय पर उसके होठो पर मुस्कराहट एव 'आह' दीखाई देती थी, परन्तु उसकी मुस्कराहट मे उसकी आह से अधिक उदासीनता भरी थी।

उसका नृत्य खतम होते ही लोग करतल-ध्वनि करने लगे। वह उत्सुक नेत्रों से चारों ओर देख रही थी।

दजाली!—जिप्सी कन्या ने पुकारा। अब उसे विश्राम की आवश्यकता थी।

ग्रॉंगोयरे ने देखा कि उसके पुकारने पर एक सुन्दर सफेद रग की बकरी आगे बढ़ी। उसके सींग तथा खुर मढे हुए थे। अब तक उसने उसे नहीं देखा था।

नर्तकी ने कहा—दजाली, अब तुम्हारी बारी है।

नर्तकी ने बैठ कर उस बकरी के सामने अपनी खँजड़ी रख दी और उससे पूछा—दजाली, इस वर्ष का यह कौन-सा महीना है?

बकरी ने अपने खुर को उठा कर खँजड़ी पर एक चोट मार दी। सचमुच साल का वह पहला महीना था। चारों ओर तालियाँ बज उठीं।

दजाली, महीने का यह कौन सा दिन है?

बकरी ने अपने खुर से खँजड़ी पर छ चोटें मार दीं।

दजाली, इस समय कितने बजे हैं?

दजाली ने सात चोटें मारीं, और उसी समय समीप के 'स्तम्भ भवन' की घड़ी में 'टन-टन' सात बजे।

जनता आश्चर्य्य में डूब गई।

इसमें अवश्य जादू है—भीड़ में से एक ने चिल्लाकर कहा। यह आवाज उस खल्वाट पुरुष की थी, जो अब भी उस नाचने वाली की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देख रहा था।

वह काँप उठी, और उस आदमी की ओर देखने लगी, मगर उसी समय तालियाँ बज उठीं।

इसके बाद उसने बकरी से नगर-कोतवाल के चलने तथा सरकारी वकील के बहस करने की भाव भंगियों की नकल उतरवाई।

जनता हँसी के मारे लोट-पोट हो रही थी।

असभ्यता! अधर्म!—उस खल्वाट पुरुष की आवाज समस्त शक्ति को अतिक्रमण करके हो रही थी।

जिप्सी बालिका उसकी ओर मुड़ कर देखने लगी। देखते ही उसने कहा—आह! यह तो वही कुरूप मनुष्य है!—उसका चेहरा विकृत हो उठा। वह हट कर अपनी खँजड़ी में भीख बटोरने लगी।

चाँदी और ताँबे के सिक्कों की वर्षा-सी होने लगी। एका एक वह ग्रींगोयरे के पास आ उपस्थित हुई। उसने अपना हाथ जेब में इस तरह डाला कि वह आशा से उसके सामने रुक गई। दुर्दैव!—उसने अपना मुँह बना कर कहा, क्योंकि उसके जेब में कुछ भी नहीं था। वह सुन्दर बालिका अपनी खँजड़ी बढ़ाये उसकी ओर देख रही थी। ग्रींगोयरे का हृदय टूक-टूक होने लगा।

कवि के भाग्य से वहाँ दूसरा ही रंग खिला।

तू यहाँ से दूर न होगी?—स्क्वायर के एक अँधेरे कोने से एक ने कर्कश स्वर में कहा।

युवती भय से घूम पड़ी। यह आवाज़ उस खल्वाट पुरुष की नहीं थी। वह स्त्री का स्वर था, जो धार्मिक ईर्ष्या से जल रही थी।

जिस स्वर से युवती काँप उठी, उसी से लड़के प्रसन्नता पूर्वक उछल पड़े।

यह तो वह एकान्त वासिनी विरागिनी है—उन लड़कों ने हँस कर कहा—वह उसे डाट रही है, मेज पर से इसे कुछ खाने को दे दो—कहकर सब 'स्तम्भ-भवन' की ओर दौड़ पड़े।

उसी समय ग्रींगोयरे वहाँ से, चल खड़ा हुआ। लड़कों की चिल्लाहट से उसे याद आई कि उसने भी कुछ भोजन नहीं किया

है, इसलिये वह भोज-मेजों की ओर घूम पड़ा। मगर लड़कों के पग उससे तेज थे, उन सब ने मेज को पहलेही साफ कर दिया था।

बिना भोजन किये सोना कठिन होता है, मगर भूखे रहकर बिस्तर का न पाना उससे कहीं और कठिन है। ग्रींगोयर को न भोजन मिला, न बिस्तर का ठिकाना था। उसको पहले ही मालूम हो गया था कि महान पुरुषों के जीवन में भाग्य उनकी फिलासोफी पर घेरा डाले रहता है, मगर इस से पहले नियति का घेरा ऐसा प्रबल नहीं हुआ था। फिलासोफी को अकाल-द्वारा जीतना, नियति को उचित न था।

इसी समय एक मधुर गीत की तान से उसका स्वप्न टूट गया। जिप्सी बालिका गा रही थी।

उसका स्वर उसके नृत्य तथा सौंदर्य के योग्य ही था।—बड़ा आकर्षक। उसकी व्याख्या असम्भव है। वह नैसर्गिक था। उसमें माधुर्य था, मनोहरता थी और थी एक लचक। कोकिला भी उससे लज्जित हो सकती थी। उस गाने वाली के वक्ष-स्थल की तरह उस स्वर में भी चढाव-उतार था। उसका सुन्दर शरीर भावों की व्यजना में कमाल कर रहा था। कभी वह पगली जान पड़ती थी, कभी रानी।

गीत के शब्द ग्रींगोयरे के लिए अज्ञेय थे। शायद गानेवाली भी उन्हें नहीं समझती थी। उसकी दर्द-भरी आवाज से ग्रींगोयरे के नेत्रों से आँसू बह चले। उसके गीत में आनन्द था और

वह आनन्द विभोर हो, चिन्ताओं से रहित पक्षी की तरह गा रही थी।

जिस प्रकार वतास जल को तरङ्गित कर देती है, उसी तरह जिप्सी बालिका के गीत ने ग्रींगोयरे के हृदय को आलोडित कर दिया। उस दिन, वह प्रथम क्षण था, जब कवि के हृदय में एक मधुर पीडा की अनुभूति हुई।

वह क्षण भी क्षणिक था।

ओ शैतान लडकी! तू चुप न होगी ?—उस एकान्तवासिनी स्त्री ने कर्कश स्वर में कहा।

लड़की चुप हो गई। ग्रींगोयरे ने अँगुलियाँ डाल कर अपने दोनों कान बन्द कर लिये।

विराग को तोडने वाली इस स्त्री के लिए मेरे लाखों शाप हैं—कवि ने चिल्ला कर कहा।

उससे शैतान समझे—बहुतों ने एक साथ ही कहा।

'अव्यवस्था के शासक' का जलूस नगर में घूमता हुआ वहाँ आ पहुँचा। उसमें अब नगर के सब गुण्डे-बदमाश और चोर सम्मिलित हो गये थे।

वह जलूस बड़ा विचित्र था। उसके वर्णन में कोई भी कवि थक कर लेखनी फेंक देता। ग्रींगोयरे तो उसके लाखों रुपये देने पर भी वर्णन के लिए तय्यार न होता, क्योंकि उसमें उसी के नाटक के विघ्नकर्ता आगे चल रहे थे।

कासीमोटो के चेहरे पर जो दर्दभरी प्रसन्नता झलक रही

थी, उसका वर्णन कठिन है। यह उसका पहला अहंकार था। इसके पहले उसने अनादर तथा घृणा के सिवा कुछ नहीं पाया था, मगर आज वह बादशाह था और भीड उसकी प्रजा। तालियों के बजने पर वह बहुत प्रसन्न हो उठता था।

कासीमोडो न अपनी भावनाओं की विवेचना कर सकता था, न दूसरों की। उसके कुरूप पींजडे में जो जीव बन्द था, वह मूर्ख अनभिज्ञ एव अपूर्ण था। उस समय जो कुछ वह अनुभव कर रहा था, वह अस्पष्ट तथा मिश्रित था। प्रसन्नता ने बादल को छेद दिया था, दर्द स्पष्ट हो आया था। उदास चेहरा कुछ चमक उठा था।

भीड मे से एक भारी आदमी ने वेग के साथ दौड कर कासो-मोडो के हाथ से उसका 'पोप' का राजदण्ड छीन लिया। आगन्तुक क्रोध से काँप रहा था। लोग आश्चर्य मे डूब गये।

वह उतावला व्यक्ति वही खल्वाट पुरुष था, जिसके कर्कश स्वर के कारण, थोडी देर पहले, जिप्सी बालिका का रक्त ठडा पड गया था। वह चर्च के कपडे पहने था। ग्रीगोयरे ने उसे पहचाना और आश्चर्य से बोल उठा—यह तो आर्चडिकन डाम क्लाडे फ्रोलो हैं, वे क्या चाहते हैं? शैतान उन्हे जीवित ही खा जायेगा।

सचमुच लोग भयातुर हो बैठे थे। कासीमोडो कूद पडा। स्त्रियो ने अपने चेहरे छिपा लिये।

कासीमोडो ने पादरी को पहचान लिया, और घुटने टेक कर बैठ गया।

पादरी ने उसकी टोपी को फाड़ डाला।

कासीमोडो सिर नीचा करके हाथ जोड़े बैठा रहा। फिर उन दोनों में इशारे से बात-चीत होने लगी। पादरी क्रोध से लाल हो रहा था, कासीमोडो भयभीत।

पादरी ने कासीमोडो के कन्धे को जोर से हिलाकर उसे अपना अनुसरण करने के लिये इंगित किया।

अपने पोप को इस प्रकार सिंहासन से अलग होते देख मूर्खों के समूह ने उसे बचाना चाहा। उन्होंने पादरी का पीछा किया।

कासीमोडो, उस मूर्ख समूह तथा पादरी के बीच में हो गया; पर वह मुट्ठी बाँध कर दाँत पीसते हुए भीड़ की ओर झुक पड़ा। लोगों को अब आगे बढ़ने का साहस न हुआ।

पादरी फिर गभीर होगया और कासीमोडो के साथ एक ओर न जाने कहाँ अदृश्य हो गया।

कितना आश्चर्य है!—ग्रींगोयरे धीरे-धीरे बुदबुदाया—मगर मैं अब भोजन कहाँ पाऊँगा।

अनुसरण की असुविधाएँ

ग्रींगोयरे ने जिप्सी लड़की का पीछा करने का निश्चय किया। उसने उसे फाउण्टेलेरी गली में अपनी बकरी के साथ जाते हुए देखा था, इसलिये वह भी उधर ही चल पड़ा।

ग्रींगोयरे पेरिस नगर की गलियों का जानकार था। वह बुद्धि-विलास के लिए किसी सुन्दरी का पीछा करने से अच्छा दूसरा काम नहीं समझता था, विशेषकर जब उसका गमनीय स्थान अज्ञात हो। जब मनुष्य अपनी इच्छा से परवश हो जाता है, तब एक मनोविकार दूसरे मनोविकार के लिये स्थान देने लगता है। इस अचेतन परवशता में स्वतन्त्रता तथा अन्ध-आज्ञापालन का एक अनोखा सम्मिश्रण होता है। यह दासता तथा स्वतन्त्रता का वाञ्छनीय माध्यम है। ग्रींगोयरे के अनिश्चित तथा प्रत्येक कार्य को सीमा तक करने के इच्छुक मस्तिष्क को इस परवशता में बड़ा आनन्द मिल रहा था। उसने अपनी समता मुहम्मद की क़ब्र से की, जो समाधि-मन्दिर में दो चुम्बक पत्थरों के बीच सदैव काँपा करती है।

वह विचार-मग्न हो उस युवती के पीछे चलने लगा। युवती ने यह देखकर कि सब लोग अपने-अपने घरों की ओर जा रहे हैं और सराये बन्द हो रही हैं, अपने पैर को बढ़ाया।

ग्रींगोयरे ने सोचा—कहीं-न-कहीं इसके निवास का स्थान तो होगा ही। जिप्सी बड़े अतिथि-सत्कार-प्रिय होते हैं, कौन जानता है . ।

उसके मस्तिष्क मे बहुत-सी कल्पनाएँ घूमने लगीं।

देर मे घर लौटते हुए नगर-निवासियों की बातों से ग्रींगोयरे की कल्पना मे कभी-कभी बाधा पड जाती थी।

जिप्सी बालिका तथा डजाली को देखकर उसकी कल्पना फिर उडान लेने लगी। वह दोनो के सुडौल, कोमल और मनोहर रूपो की, उनके छोटे पाँव तथा मस्तानी चाल की, कोटि-कोटि प्रशसा कर रहा था। वह अपने ध्यान में एक को दूसरी समझ बैठता था। वह उनकी गहरी मित्रता तथा समझ को देखकर उन्हें दो युवतियाँ तथा उनकी चचलता और पदविन्यास से उन्हें दो बकरियाँ समझ बैठता था।

गली प्रत्येक क्षण अन्धेरी होती जाती थी। कहीं किसी खिड़की पर दीपक का प्रकाश दिखलाई पड जाता था। अब ग्रींगोयरे ने अपने को गलियो की अगम भुल-भुलैया में पाया, मगर जिप्सी बालिका उन गलियों मे जानकार जान पडती थी, क्योंकि वह निस्सकोच भाव से तेजी से बढती जा रही थी।

थोडी देर पहले उसने उसके ध्यान को अपनी ओर आकर्षित किया था। उसने—युवती ने—चिन्ता से कई बार उसकी ओर मुडकर देखा था। एक जगह पर, जहाँ खिड़की से रोशनी आ रही थी, उसने कवि को सिर से लेकर पैर तक देखने के लि

अपने पैरों को रोक लिया था। ग्रींगोयरे ने उसे मुँह बनाते देखा। इस मुँह बनाने मे अवज्ञा तथा व्यंग भरा था। ग्रींगोयरे ने सिर नीचा कर लिया और नीचे पत्थरों को गिनने लगा। वह कुछ दूर-दूर चलने लगा, यहाँ तक कि एक गली के घुमाव के करीब वह उसकी आँखों से ओझल हो गई। उसके बाद ही एक दर्दनाक चीख उसके कानों में पडी। वह शीघ्रता से आगे बढा।

गली अँधेरी थी, मगर वहाँ कुमारी मेरी की मूर्ति के नीचे एक लोहे के पींजडे मे तेल से भिगोया हुआ सन जल रहा था। इस प्रकाश के सहारे उसने जिप्सी बालिका को दो आदमियों के बाहु-पाश मे—जो उसका मुँह बन्द करना चाहते थे—छटपटाते हुए देखा, उसकी बकरी भय से मिमियाँ रही थी।

पुलिस! पुलिस!—चिल्लाते हुए ग्रींगोयरे दिलेरी के साथ दौड पड़ा। उन दो आदमियो मे से एक उसकी ओर झपटा। वह कासीमोडो था।

ग्रींगोयरे काँप उठा। कासीमोडो ने एक ही धक्के में उसे नीचे गिरा दिया और जिप्सी को वह अपने हाथ मे रूमाल की तरह उठा कर अन्धकार में विलीन हो गया। उसका साथी भी उसीका अनुसरण करने लगा और बकरी भी उन्हीं के पीछे चिल्लाती दौडने लगी।

खून! खून!—जिप्सी शोर कर रही थी।

देखो, ये जाने न पायें!—एक सवार ने, जो दूसरी गली से आ निकला था, पीछे के अपने सिपाहियों से कहा।

शेष असुविधाएँ

ग्रींगोयरे अब भी गली के कोने पर, कुमारी मेरी की मूर्ति के नीचे, जमीन पर पड़ा था। गिरने के कारण उसे चोट आई थी और उसका सिर चक्कर खा रहा था। धीरे-धीरे उसकी इन्द्रियाँ चैतन्य होने लगीं। उसे सारी घटना का एक धुँधला ध्यान आ रहा था, किन्तु जमीन की ठडक से शीघ्र ही उसे वास्तविकता का ज्ञान हो गया।

मुझे इतनी ठड क्यो लग रही है?—उसने अपने मन में सोचा। उसे पता चला कि वह सडक के बीच कीचड में पडा है।

उस राक्षस से शैतान समझे—वह बुदबुदाने लगा। उसने उठने का प्रयत्न किया, किन्तु उसे अभी चक्कर आ ही रहे थे। वह वहीं पड़ा रहा। उसके हाथ में चोट नहीं पहुँची—यह उसने अपनी नाक पकड कर जान लिया।

फिर तो उसे उस भयानक घटना का स्मरण हो आया। कासीमोडो की याद आते ही क्लाडफ्रोलो की भी याद आ गई। फिर जब उसके साथी का स्मरण हुआ, तब उसी क्षण पादरी की सूरत उसकी आँखों के सामने नाचने लगी। यह तो बडी असगत है—इसी विषय पर वह बहुत कुछ सोच गया। फिर उसे अपनी दशा का ध्यान आया—मैं ठडा पड रहा हूँ।

उसे अपनी अवस्था असहनीय जान पड़ रही थी। गली का कीचड़ उसके शरीर की गर्मी को धीरे-धीरे खींच रहा था।

लड़कों का एक गिरोह उधर आ निकला। गिरोह के सब लड़के चिल्ला रहे थे। उन्होंने पड़ोसियों को गहरी नींद मे सोने देने का ठीका तो लिया न था, और पहरेदार भी तो—जो शान्ति-रक्षक कहलाते हैं—लोगो की नींद मे काफी खलल डालते हैं। ग्रींगोयरे उठ बैठा था।

वह देखो, मोशान चटाई वाला, मरा पड़ा है, हम लोगों ने उसकी चटाई उठा ली है और अब उसे इसीसे जला भी देना चाहिए।

ग्रींगोयरे पर उन सबो ने चटाई फेंक दी। उनमें से एक, थोड़ी-सी पुआल 'मेरी' के दीपक मे जला कर लाने लगा।

अहा! परमेश्वर! क्या अब मैं बहुत गर्म होने वाला हूँ?

बड़ा बेढब समय था। वह तुरत आग और पानी के बीच मे पड़ जाता, पर वह झट उठ चटाई को लड़को के ऊपर फेंक कर भाग निकला।

पवित्र कुमारी!—लड़को ने कहा—चटाई वाला पुनर्जीवित हो गया!

वे भी भाग चले।

चटाई मैदान मे ही पड़ी रही। दूसरे दिन उस ग्राम के पादरी

ने चटाइयों को उठा कर अपने गिरजा में रख लिया, और इन चटाई-द्वारा सन् १७८९ तक ग्यासी आमदनी हुई। यह कथा प्रसिद्ध हो गई कि १४८२ की छठी जनवरी को कुमारी मेरी की मूर्ति ने ऐसा अलौकिक काम किया कि मृत थ्योवान जीवित हो उठा और शैतान के पंजे से बच गया, जिससे बचने के लिए उसने अपनी आत्मा को इस चटाई से ढक लिया था।



टूटी सुराही

मॉंगोयरे को इसका ध्यान ही न आया कि वह भाग कर कहाँ जा रहा है। वह भागने में व्यस्त रहा। उस असीम भय में भी मॉंगोयरे विवेक-विहीन न था। एकबारगी वह ठहर गया, क्योंकि एक तो उसे साँस लेने की परमावश्यकता थी, दूसरे वह एक दुविधा में पड़ गया, जो अभी उसके मस्तिष्क में उदय हुई थी। वह अपनी अँगुली को सिर पर रख सोचने और बड़बड़ाने लगा—मुझे आश्चर्य हो रहा है, कि मैं इस प्रकार भागा जा रहा था, मानो मेरी सारी समझ जाती रही है। वे छोटे शैतान—लड़के—मुझसे उतने ही भयभीत थे, जितना उनसे मैं। मैं कहता हूँ—मुझको आश्चर्य हो रहा है कि मैंने उनके लकड़ी के खड़ाऊँ की खट खट आवाज सुनी थी। वे दक्खिन की ओर भाग रहे थे, जब मैंने उत्तर की राह पकड़ी। इस अवस्था में दो ही बातें सम्भव हैं, एक तो यह कि वे भय से भागे थे, इस अवस्था में चटाई वहाँ अवश्य पड़ी होगी, जिस निस्तर की चिन्ता में प्रात काल से मारा-मारा फिर रहा हूँ, वह सहजही 'कुमारी मेरी' के प्रसाद स्वरूप मेरे नाटक लिखने के पारितोषिक रूप में मुझे उपलब्ध हुआ है, दूसरी बात जो हो सकती है, वह यह कि यदि वे लड़के वहाँ से न भागे हों, तो इस दशा में उन्होंने चटाई को अवश्य जलाया होगा। मुझे ऐसी ही आग य

तो आवश्यकता है, जिससे अपने पेट को सेक सकूँ। मेरे दोनों हाथ मोदक है। अग्नि के रूप मे या विस्तर के रूप में— अर्थात् दोनों दशा मे—मेरा तो यही कहना है कि वह चटाई ईश्वर की देन है। इस प्रकार पागलो की नाई भागना केवल मूर्खता है। जिसकी खोज में मैं आगे जा रहा हूँ, उसको मैंने पीछे ही छोड़ दिया है, मैं मूर्ख हूँ।

वह लौटा, चटाई की खोज की, पर कहीं उसका पता न चला। ग्रींगोयरे गली कूचो के घुमाव में भूल गया। वह अधकार से भरी गलियों को पहचान न सकता था। उसने सोचा, इन गलियों का विधाता अवश्य शैतान है।

एक सँकड़ी गली के दूर के किनारे पर उसे लाल रग की रोशनी दिखाई दी। उसने समझा, चटाई जल रही है। थोड़ी दूर बढ़ने पर उसे मालूम हुआ कि गली का कीचड़ बढ़ता जाता है और वह ढलुआँ होती जा रही है। उसने एक विचित्र बात देखी। जैसे दीपक के सामने कीट आते हैं, उसी प्रकार वहाँ कुछ धुँधले आदमी छिप-छिप कर उस प्रकाश की ओर जा रहे थे।

उसके पास कुछ था नहीं, इसलिये उसे चोर-डाकुओं का भय भी नहीं रह गया था। दूसरे लोग उसके लिये खतरनाक भी तो नहीं हो सकते थे। वह बढ़ता गया। वह उस लँगडे के समीप पहुँच गया, जो गिरोह के पीछे-पीछे जा रहा था। जब ग्रींगोयरे उसके आगे बढ़ने लगा, तो लँगडे ने दर्दभरी आवाज मे उससे कुछ कहा।

ग्रींगोयरे ने कहा—शैतान तुम्हें उठा ले जाय, और मुझको, यदि मैं यह समझता होऊँ कि तुम क्या कह रहे हो।

वह बढ़ गया।

उसने दूसरे व्यक्ति को देखा, जो लँगड़ा तो था ही, किन्तु उसकी एक बाँह भी नहीं थी। वह लकड़ी के पैर पर चल रहा था। लँगड़े ने अपनी टोपी ग्रींगोयरे के मुँह के पास ले जाकर उसके कान के समीप कुछ कहा, मगर कवि उसे भी न समझ सका।

वह तेजी से पैर बढ़ाने लगा। तीसरी बार उसे किसी चीज का धक्का लगा। वह कोई चीज, या यों कहिये कि वह एक छोटा अंधा था। उसकी दाढ़ी और चेहरा स्पष्ट बताते थे कि वह ज्यू है। उसने भिक्षा माँगी।

ग्रींगोयरे ने कहा—हाँ, यह क्रिश्चियन भाषा बोलता है। उसने कहा—मेरे मित्र, मैंने गत सप्ताह में अपने आखिरी कुर्ते को बेच डाला है।

इतना कहकर वह आगे बढ़ा, अंधा भी उसके पीछे हो लिया। आश्चर्य है कि वह लँगड़ा और काठ का पैर वाला भी उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ा।

वह भाग चला। अंधा दौड़ रहा था, लँगड़ा दौड़ रहा था, काठ पर चलने वाला दौड़ रहा था।

ज्यों-ज्यों वह उस गली में आगे बढ़ता गया, त्यों-त्यों अधिक अंधे, लँगड़े और कोढ़ी दिखाई देने लगे। काने, कुबड़े, सभी के नमूने वहाँ थे। कूदते, उछलते, शोर मचाते वे रोशनी की ओर जा रहे थे।

ग्रींगोयरे इन सब को कुचलता हुआ भाग रहा था। उसके पीछे तीनों दौड़ रहे थे।

वह गली के अन्त तक पहुँचा। उसके बाद एक मैदान दिखाई दिया, जहाँ रोशनी हो रही थी। उसका पीछा करने वाले तेजी से उसकी ओर आ रहे थे।

मैं कहाँ हूँ—वह डर कर चिल्ला उठा।

मिरेकिल-कोर्ट मे, जहाँ आश्चर्य-जनक बातें होती हैं।—एक दर्शक ने कहा।

ठीक है—उसने कहा—मैं देख रहा हूँ कि यहाँ अधे देखते और लँगड़े दौड़ते हैं।

सब हँस पड़े।

उसने भयभीत दृष्टि से चारों ओर देखा, वह 'मिरेकिल कोर्ट' मे था। अभी तक कोई भलामानस रात्रि को उस घड़ी में इस मैदान में नहीं आया था। कोतवाल के आदमी तो उसका नाम तक नहीं लेते थे। वह चोरों का नगर था। प्रत्येक बड़े नगर में ऐसे खतरनाक स्थान होते हैं। वे मधुमक्खियों के छत्ते हैं, जहाँ समाज के कीड़े रात को अपनी लूट के साथ शरण पाते हैं। जहाँ जिप्सी, दुष्ट पादरी, स्पेन, इटली तथा जर्मनी के चोर, ज्यू, ईसाई, मुसलमान और हर तरह के बदमाश इकट्ठे होते हैं। उनके हाथ पाँव बनावटी घावों से भरे रहते हैं। दिन को वे भिक्षुक होते हैं, रात को डाकू।

वहाँ कुत्ते आदमी-जैसे और आदमी कुत्ते-जैसे जान पड़ते थे।

यहाँ जाति और धर्म के बधनों का विनाश हो चला था। पुरुष, स्त्री, जानवर, स्वस्थ, रोगी, एक मे मिश्रित जान पड़ते थे। प्रत्येक इन मर्मों मे अपना हिस्सा बटाये था।

उसके लिये वह एक नया ससार था, जिसे न कभी जाना था, न सुना ही था।

ग्रींगोयरे का भय बढता गया। तीनो भिखमगे उसे लोहे की बाँहों से जकडे हुए जान पडते थे। वह समीप के लोगो को अपने ऊपर मुँह बनाते देख व्याकुल हो उठा। वह कुछ समझ न सका। उसके विचार तथा स्मृति का तन्तु-जाल टूट गया था। प्रत्येक वस्तु को वह सशक दृष्टि से देखने लगा। उसने सोचा—क्या मै, मैं हूँ, या ये चीजें वास्तविक हैं ?

उस समय सब चिल्ला पड़े—इसको राजा के सामने हाजिर करो।

ग्रींगोयरे ने धीरे से कहा—इस राज्य का राजा तो जानवर होना चाहिय।

सब उसे घसीटने लगे, मगर उन तीनो भिक्षुको ने उसे सब से छीन कर कहा—यह हमारी लूट का धन है।

इस खींचा-तानी मे उस के कोट ने अपनी अन्तिम साँस खींच ली।

ज्यों ज्यों वह इस भयानक स्वायर से परिचित होने लगा, उसकी तन्द्रा टूटती गई। वह वास्तविक वातावरण को समझने लगा। उसे ज्ञात हुआ, जैसे वह उन वस्तुओ को भयानक स्वप्न में देख

रहा हो। वहाँ के मनुष्य राक्षस-जैसे दीख रहे थे। धीरे-धीरे यह भ्रम भी कम होने लगा। वास्तविकता ने उसे अन्धा बना दिया और उसकी कविता को, जिसकी मधुर कल्पना में वह परिवेष्ठित था, तहस नहस कर डाला। उसने देखा कि वह नरक की नदी में नहीं, बल्कि कीचड़ में चल रहा है, और भूतों के बदले चोर उसे धक्के दे रहे हैं। उसे ज्ञात हो गया कि उसकी आत्मा नहीं, बल्कि उसका जीवन खतरे में है। वह परियों के विश्राम गृह से नरक में गिर पड़ा।

'मिरेकिल-कोर्ट' सचमुच नरक था, किन्तु वह चोरों का नयखाना था, जो मदिरा और खून दोनों से लाल हो रहा था।

उसे ज्ञात हुआ कि उस सराय में उसकी सरस्वती कविता रूप में उसके पास फिर नहीं आवेगी।

एक बड़े वृत्ताकार पत्थर के टुकड़े पर आग जल रही थी। उसके समीप एक खाली तिपाई पड़ी थी। पास ही दो-तीन मेजें इधर-उधर पड़ी थीं। कीड़ों ने मेज की केवल हड्डियाँ छोड़ रक्खी थीं, जिस पर थोड़ी-सी मदिरा से भरी सुराहियाँ पड़ी थीं। शराबी शराब तथा आग की गर्मी के कारण, रक्तवर्ण हो रहे थे। बड़ी तोंद वाला एक व्यक्ति अपने पास बैठी मोटी स्त्री को अपने चुम्बनों से धनी बना रहा था। कोई अपने नकली घाव से पट्टी हटा रहा था, तो कोई बनावटी यात्री अपनी कथा का विस्तार कर रहा था। ये सब बातें किसी कोर्ट के योग्य तो अवश्य नहीं थीं।

भद्दे गीतों के साथ हँसी के ठहाके लग रहे थे। सब लोग अपनी

री कसम और बात में मस्त थे। अपने निकटस्थ का ध्यान किसी को न था। प्यालों के बज जाने से झगड़े हो रहे थे।

आग के समीप एक टीन पडा था, उस टीन पर एक भिक्षुक बैठा था, उस राजसिंहासन पर बैठा हुआ वही राजा था।

ग्रींगोयरे उसके सामने लाया गया। उस समय सब शान्त हो गये, केवल एक लडका पलने में पडा रो रहा था।

ग्रींगोयरे की साँस बन्द हो गई। वह आँख न उठा सका।

उसी समय किसी ने उसकी एकमात्र टोपी को उससे अलग कर दिया। ग्रींगोयरे ने एक साँस खींच ली।

सिंहासन पर से राजा ने पूछा—यह बदमाश कौन है?

ग्रींगोयरे अचानक काँप उठा। उस डरावनी आवाज ने न्याय भवन के उस आवाज की—जिसने 'दया करो सज्जनो' कह कर उसके नाटक पर पहला प्रहार किया था—सुधि दिला दी। उसने अपना सिर उठाया। सचमुच यह क्लोपीन ट्रोलेफो था।

क्लोपीन के बदन पर वही चिथडे पडे थे, मगर उसकी बाँह पर घाव का निशान तक न था। उसके हाथ में एक हंटर था, और सिर पर एक गोली टोपी थी, जो नुकीली हो गई थी।

क्लोपीन को मिरेकिल-कोर्ट के राजा के रूप में देख कर ग्रींगोयरे की जान में जान आई। इसका कारण वह स्वय नहीं जानता था।

मास्टर!—उसने तुतलाते हुए कहा—माई लार्ड जहाँ-पनाह आह मैं आपको किस प्रकार सम्बोधित करूँ?

क्षमा, मेरे ट्युनिस के बादशाह !—ग्रींगोयरे ने जवाब दिया—मेरी भी सुन लो, मैं आशा रखता हूँ कि आप मेरी बातों को सुने बिना सजा का हुक्म न देंगे।

क्लोपीन ने गैलिली के सम्राट् तथा मिश्र के ड्यूक से कुछ परामर्श किया। फिर उसने कर्कश शब्दों में कहा—चुप रहो।

ट्रोलेफो ने एक इशारा किया, जिससे ड्यूक, सम्राट् और दूसरे लोग उसके चारों ओर आकर खड़े हो गये। ग्रींगोयरे अब उनके बीच में था।

अपनी दाढ़ी सहलाते हुए क्लोपीन ने ग्रींगोयरे से कहा—सुनो, मुझे तो तुम्हें छोड़ देने के लिये कोई कारण ही नहीं दीखता। मुझे मालूम है कि यह भावना तुम्हें दुःखदायी हो रही है, क्योंकि तुम्हारे नागरिकों को इसकी आदत नहीं। इसकी—फाँसी की—तुमने अतिशयोक्तिपूर्ण कल्पना कर ली है। जो हो, हम तुम्हारा बुरा नहीं चाहते। इस समय इस कठिनाई से बचने का केवल एक ही उपाय है। तुम हम लोगों के गिरोह में सम्मिलित हो जाओ।

इस प्रस्ताव ने ग्रींगोयरे पर जो असर डाला, उसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। ग्रींगोयरे ने अपने जीवन को उड़ते हुए देखा था और उसे पकड़ने का प्रयत्न भी ठीक कर लिया था; किन्तु अब की बार उसने बल लगाकर उसे पकड़ा।

मैं हृदय से चाहूँगा।—उसने शीघ्रतापूर्वक कहा।

क्लोपीन ने कहा—तलवार चलानेवाले बहादुरों में सम्मिलित होने के लिये तुम सहमत हो?

हाँ—ग्रींगोयरे ने जोर देते हुए कहा।

चोरों की सेना का सिपाही होना स्वीकार करते हो?

निश्चय।

मैं तुम्हारा ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित करना चाहता हूँ कि इसके लिये भी तुम्हें फाँसी पर चढ़ना होगा—बादशाह ने कहा।

शैतान!—उसने धीरे से कहा।

केवल कुछ कालोपरान्त,—क्लोपीन कहता रहा—पेरिस नगर के खर्च से। सन्तोष इसी बात का है कि उस फाँसी के विधायक नगर के ईमानदार लोग होंगे।

जैसा आप समझें—ग्रींगोयरे ने उत्तर दिया।

इस मण्डल का मम्बर होने में तुम्हें और भी लाभ हैं। तुम्हें सड़कों की कुटाई, गलियों की रोशनी, या दरिद्रों की सेवा के लिये नागरिकों की तरह टैक्स न देना पड़ेगा।

कवि ने कहा—मैं सहमत हूँ। मैं बदमाश, भिखमगा, चोर, या आप जो चाहेंगे, मैं वही बनूँगा।

तुम बदमाश होना चाहते हो?—उसने पूछा।

मैंने तो कह दिया। क्या इसमें कुछ सदेह है?—कवि ने उत्तर दिया।

क्लोपीन ने फिर कहा—केवल चाहने से कुछ न होगा। तुम्हें सिद्ध करना होगा कि तुम काम के आदमी हो। इसको सिद्ध करनेके लिये तुम्हें यौने का पाकेट खोजना होगा।

ग्रींगोयरे ने कहा—मैं खोजूँगा, एक बार नहीं, हजार बार।

क्लोपीन ने इशारा किया। थोड़ी देर मे दो लकड़ी के खम्भे, जो नीचे एक चोड़े तख्ते मे लगे थे, लाये गये। उन खम्भों के ऊपरी सिरों पर उन्होने एक दूसरा खम्भा रख दिया। वह ठीक चलता फिरता फाँसी का तख्ता था, क्योंकि उसमे एक रस्सी भी लगी थी।

वे क्या करने जा रहे हैं?—ग्रींगोयरे आश्चर्य के साथ सोचने लगा। मगर घंटियों की आवाज ने उसका ध्यान दूसरी ओर खींच लिया। एक छोटा-सा बौना, जिसके लाल कोट मे सैकड़ों घंटियाँ लगी थीं, वहाँ आ पहुँचा। गुण्डों ने उसकी गर्दन रस्सी से बाँध कर उसे लटका दिया। रस्सी के हिलने से घंटियाँ बज रही थीं।

क्लोपीन ने एक पुराने स्टूल को दिखाते हुए कहा—उस पर चढ़ जाओ।

ग्रींगोयरे ने हिचकिचाहट के साथ कहा—मेरी हड्डियाँ तोड़ने का विचार है?

चढ़ो—क्लोपीन ने डाँट कर कहा।

ग्रींगोयरे बड़े कष्ट से उस स्टूल पर चढ़ सका।

अपने दाहिने पाँव को बायें मे लपेट लो, और बायें पाँव के पंजे पर खड़े हो जाओ—ट्यूनिस के बादशाह ने कहा।

माई लार्ड! क्या आपने मेरी पँसलियों को तोड़ने का निश्चय कर लिया है?

क्लोपीन ने कहा—मित्र! तुम बहुत बाते करते हो। मैं दो शब्दों मे बताना चाहता हूँ कि तुम्हें क्या करना है। अपने पंजे

पड़ता था कि वहाँ कुछ नहीं हो रहा है। तय्यार हो ? फिर उसने पूछा। एक क्षण में सब मामला तय होने को था।

ठहरो! मैं भूलता हूँ। हमारी नीति है कि हम लोग स्त्रियों को ब्याहने का मौका दिये बिना किसी पुरुष को फाँसी नहीं देते। कामरेड! यह अन्तिम अवसर है। तुम किसी स्त्री से ब्याह करोगे या फाँसी की रस्सी से ?

यह जिप्सियों का कानून था।

फिर क्लोपीन ने स्त्री-समाज को सम्बोधित करके पूछा—क्या कोई बुड्ढी, जवान या लड़की, ऐसी है जो इस दुष्ट से ब्याह करेगी ?

उसने बहुतों का नाम लेकर पुकारा, मगर कोई आगे न बढ़ी। भाग्यहीन ग्रींगोयरे ने उन सबका उत्तर सुना।

नहीं—नहीं! उसे लटका दो। अच्छा खेल रहेगा।

तीन स्त्रियाँ आगे बढ़ीं। वे उसके कोट को ध्यान से देखने लगीं। मगर उसमें छिद्रों के सिवा और क्या था! एक ने पूछा—तुम्हारी टोपी ?

किसी ने ले ली!

तुम्हारा जूता ?

फटकर उड़ गया!

पैसा ?

आह! मेरे पास एक पैसा नहीं है!

वह ~~ बताकर लौट गई। इसी प्रकार अन्य दोनों चली गईं।

उसने जी-तोड़ प्रयत्न कर सफल होने का निश्चय किया। अप दाहिने पाँव को बाँयें में लपेट कर पजे पर खड़ा हुआ हाथ बढ़ाया मगर अपने शरीर का भार न सम्हाल सकने के कारण मुँह के ब ज़मीन पर आ गिरा। घटियाँ वज उठीं। बौना खम्भों के बीच शा से झूल रहा था। ग्रींगोयरे मृतप्राय हो गया। तो भी उसे हँसी ठहाका सुन पड़ा।

इस दुष्ट को उठा कर लटका दो।—राजा की आज्ञा हुई।

पहले ही, बौने को उतार कर, ग्रींगोयरे के लिये जगह बना गई थी।

ग्रींगोयरे स्टूल पर खड़ा किया गया। क्लोपीन ने उसके ग मे रस्सी डाल दी। फिर उससे कहा—गुड-बाइ मित्र! अब तुम्हारी मदद नहीं कर सकता।

ग्रींगोयरे के होठों पर 'दया' शब्द आकर रह गया। उस कण्ठ सूख गया था। उसने देखा, उसके चारों ओर निर्दय हँ बिखर रही है।

फाँसी का सामान सब तय्यार था। बादशाह ने कहा—जब ताली बजाऊँ, तो स्टूल उसके पाँव के नीचे से हटा लिया जा उसने एक आदमी को 'शिकार' के कंधे पर कूदने के लिये प हो खम्भे के ऊपर चढ़ा दिया था।

ग्रींगोयरे काँपने लगा।

तय्यार हो?—क्लोपीन ने जल्लादों से पूछा। फिर अपने, मे आग में कुछ लकडियाँ खिसकाने लगा। उसके चेहरे से ज

पड़ता था कि वहाँ कुछ नहीं हो रहा है। तय्यार हो ? फिर उसने पूछा। एक क्षण में सब मामला तय होने को था।

ठहरो। मैं भूलता हूँ। हमारी नीति है कि हम लोग स्त्रियों को ब्याहने का मौका दिये बिना किसी पुरुष को फाँसी नहीं देते। कामरेड! यह अन्तिम अवसर है। तुम किसी स्त्री से ब्याह करोगे या फाँसी की रस्सी से ?

यह जिप्सियों का कानून था।

फिर क्लोपीन ने स्त्री-समाज को सम्बोधित करके पूछा—क्या कोई बुड्ढी, जवान या लड़की, ऐसी है जो इस दुष्ट से ब्याह करेगी ?

उसने बहुतों का नाम लेकर पुकारा, मगर कोई आगे न बढ़ी। भाग्यहीन ग्रींगोयरे ने उन सबका उत्तर सुना।

नहीं—नहीं। उसे लटका दो। अच्छा खेल रहेगा।

तीन स्त्रियाँ आगे बढ़ीं। वे उसके कोट को ध्यान से देखने लगीं। मगर उसमें छिद्रों के सिवा और क्या था। एक ने पूछा—तुम्हारी टोपी ?

किसी ने ले ली।

तुम्हारा जूता ?

फटकर उड़ गया।

पैसा ?

आह! मेरे पास एक पैसा नहीं है।

वह मुँह बनाकर लौट गई। इसी प्रकार अन्य दोनों चली गईं।

क्लोपीन ने कहा—कामरेड ! तुम्हारा दुर्भाग्य है !

फिर वह खडा होकर चिल्ला उठा—कोई इसे पसद नहीं करती?

कोई उत्तर न मिला।

जल्लाद आगे बढे ! मगर उसी समय शोर मचा—इजमेरल्डा! इजमेरल्डा !

ग्रींगोयरे काँप उठा था। उसने कोलाहल की ओर अपनी दृष्टि दौडाई। भीड छँटने लगी और उससे एक सुन्दरी निकल आई ।

यह वही जिप्सी बालिका थी ।

इजमेरल्डा को ग्रींगोयरे ने आश्चर्य से देखा। दिन की सारी घटनाएँ उसकी आँखों के सामने नाचने लगीं। उस शब्द में जादू भरा था ।

'मिरेकिल-कोर्ट' मे अपने सौंदर्य एव शोभा मे वह शासन करती-सी जान पडी। चोर, बदमाश, सभी नम्रतापूर्वक उसके लिए राह बनाने लगे थे। उनके कठोर मुखडो पर एक आभा-सी आ गई।

वह ग्रींगोयरे के पास पहुँची—उसकी बकरी उसके पीछे थी। ग्रींगोयरे तो मृतप्राय हो रहा था। इजमरेल्ड ने शान्त भाव से ग्रींगोयरे की ओर देखा।

क्यों ! आप इस आदमी को फाँसी देने जा रहे हैं ?—उसने शान्त भाव से क्लोपीन से पूछा।

हाँ, बहिन !—ट्यूनिस के बादशाह ने उत्तर दिया—यदि तुम

इसे अपना पति के रूप में स्वीकार करो, तो यह बच सकता है।

उसके मनोहर होंठ कुछ खिल पड़े, मैं स्वीकार करती —उसने कहा।

ग्रींगोयरे को दृढ़ विश्वास हो उठा कि वह दिन भर स्वप्न देख रहा था, और यह स्वप्न का अन्त है।

भाग्य का चक्र अचानक घूम गया।

वह फाँसी से उतार लिया गया।

मिश्र के ड्यूक ने चुपचाप एक मिट्टी की सुराही लाकर जिप्सी बालिका के हाथ में दी। युवती ने उसे ग्रींगोयरे को देकर कहा—इसे पटक दो।

सुराही चकनाचूर हो गई।

दोनों के सर पर हाथ रखते हुए मिश्र के ड्यूक ने कहा—भाई, चार वर्षों के लिए यह तुम्हारी पत्नी है। बहिन! ये तुम्हारे पति हैं। जाओ।

सुहाग-रात

ग्रींगोयरे को वहाँ एक छोटा-सा कमरा रहने के लिये दिया गया। वह आरामदेह और गर्म भी था। उसमें एक ओर प्यालों तथा तश्तरियों के रखने की एक छोटी-सी आलमारी थी। कमरे के मध्य में एक मेज पड़ी थी, जिसपर कुछ भोज्य पदार्थ रक्खे जाने की आवश्यकता जान पड़ती थी। एक सुन्दरी युवती के साथ सुख-शय्या की भी आशा थी। दिन के सारे काम जादू-भरे जान पड़ते थे। कवि अपने को परियों की कथा का नायक समझने लगा। कभी-कभी वह अपने चारों ओर इस भाव से देखने लगता, मानों वह उडन-खटोले की खोज में है। जब कभी उसकी दृष्टि अपने कोट के छिद्रों की ओर जाती, उसे कठोर वास्तविकता का अनुभव होता। काल्पनिक जगत में उसकी परिभ्रमणशील बुद्धि के लिये वह कोट पथ-प्रदर्शक का काम कर रहा था।

इजमेरल्डा उसकी ओर ध्यान नहीं दे रही थी। वह आती जाती थी। वह अपनी बकरी के साथ बातें करने में लीन थी। उस के साथ हँसती-खेलती थी। अन्त में वह ग्रींगोयरे के पास बैठ गई। ग्रींगोयरे उसे ध्यान से देखने लगा।

पाठक! आप भी कभी बालक थे और सौभाग्यवश शायद अब भी हों। आपने अपने मनोरंजन के लिए किसी सुरम्य नदी के

उपवन में—एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ती हुई—तितलियों का पीछा किया होगा। आपको स्मरण होगा कि आपके नेत्र और मस्तिष्क किस प्रिय जिज्ञासा तथा कौतुक के साथ उस नीले-पीले रंग की फुर्तीली तितली के पीछे दौड़ जाते थे। किन्तु जब वह तितली किसी पुष्प की पँखड़ियों पर बैठकर आराम करने लगती और आप साँस रोककर उसके पतले सुचिक्कण परों और गोल चमकीली आँखों को निहारने लगते, तब इस भय से कि कहीं वह फिर अदृश्य न हो जाय, आपको कितना आश्चर्य तथा भय होता था! उसको स्मरण कीजिए, तब आप ग्रींगोयरे के भावों को, जो इजमेरल्डा को पाकर उसके हृदय तथा मस्तिष्क में उठ रहे थे, सहज ही समझ लेंगे।

वह कल्पना के सुख में निमग्न होता गया। उसने सोचा—यही इजमेरल्डा है! एक नैसर्गिक सौन्दर्य! एक गली की नर्त्तकी! इतनी ऊँची और इतनी छोटी! इसी ने प्रातःकाल मेरे नाटक की पूर्णाहुति की है! इसी ने मेरे जीवन को बचाया है! मेरे अनुरूप स्वर्गीय ललना! यह सुन्दरी है और मुझे अवश्य प्यार करेगी।

अकस्मात उसको वास्तविकता का ध्यान हो आया। वह सोचने लगा, मैं नहीं समझता कि यह कैसे हो गया! किन्तु यह तो स्पष्ट है कि अब मैं इसका पति हूँ।

वह सैनिक तथा प्रेमी की चाल से उसके पास गया, पर वह उससे दूर हट गई।

तुम क्या चाहते हो ?—युवती ने पूछा।

मैं इसका उत्तर क्या दूँ ?—ग्रींगोयरे ने चाह-भरी आवाज में कहा। उसको आप ही अपने स्वर से आश्चर्य हो रहा था।

जिप्सी बालिका ने उस पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डालते हुए कहा—मैं नहीं समझती, तुम क्या कहते हो।

ओह ! मेरे समीप आओ—ग्रींगोयरे ने उत्तेजित होकर कहा—क्या तुम मेरी नहीं हो ? मैं तुम्हारा नहीं ?

निर्दोष भाव से ग्रींगोयरे ने उसकी कमर पकड़ ली।

वह सर्पिणी की नाईं उसके हाथों से फिसल गई। दीवार के पास खड़ी होकर उसने अपनी छोटी कटार कमर से निकाल ली, किन्तु ग्रींगोयरे ने नहीं देखा कि वह कटार कैसे उसके हाथ में आ गई। वह क्रोध में लाल हो रही थी। उसके होंठ फूल उठे थे। कपोल सेब की तरह सुर्ख हो गया था। उसके नेत्रों में बिजली चमक रही थी। उसकी बकरी भी ग्रींगोयरे से लड़ने को सन्नद्ध हो गई। यह सब उसी क्षण में हो गया।

कवि लज्जित हो उठा। वह कभी बकरी को देखता—कभी युवती को।

जिप्सी ने शान्ति भंग करते हुए कहा—तुम बड़े धृष्ट मालूम होते हो ?

तुम क्षमा करो—मुस्किराते हुए ग्रींगोयरे ने कहा—मगर तुमने मुझ से ब्याह ही क्यों किया ?

क्या मैं तुम्हें फाँसी पर लटकने देती ?

कवि की प्रेमाशा निराशा में डूब गई। उसने पूछा—केवल तुमने मुझे बचाने ही के लिये शादी की है?

इसके अतिरिक्त और मैं क्या कर सकती थी?

ग्रींगोयरे अपना होठ चबाने लगा। उसने सोचा, ठीक है, मैं वैसा विजयी नायक नहीं हूँ जैसा अपने को समझता था, मगर उस बेचारी सुराही को फोड़ने से क्या लाभ था?

इजमेरल्डा की कटार अब भी उसके हाथ में थी।

इजमेरल्डा!—कवि ने कहा—हम लोग सुलह कर लें। मैं सी० आई० डी० का आदमी नहीं हूँ, न पुलिस का सिपाही जो तुम्हारे विरुद्ध कटार रखने की इत्तिला कहीं कर दूँगा। तुम विश्वास करो। मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारी आज्ञा बिना तुम पर हाथ न उठाऊँगा, मगर मुझे कुछ खाने को दो।

युवती हँस पड़ी। छोटी कटार फिर वहाँ जैसे आई थी वैसे ही अदृश्य हो गई।

उसने थोड़ी ही देर में रोटियाँ, सेब और थोड़ी-सी शराब लाकर मेज पर रख दी। ग्रींगोयरे बड़े चाव से भोजन करने लगा। उसका सारा प्रेम भूख में लीन हो गया।

युवती उसीके पास बैठ गई। वह उसी की ओर देख रही थी, मगर उसका दिल कहीं और था। वह दूसरे विचारों में लीन थी, कभी कभी मुस्किरा उठती थी। उसके हाथ बकरी के सिर सहलाने में लगे थे।

ग्रींगोयरे ने सकोच करते हुए पूछा—इजमेरल्डा! तुम नहीं खाओगी?

उसने सर हिलाकर उत्तर दिया। उसकी आँखें छत की ओ की ओर लगी थीं।

ग्रींगोयरे सोचने लगा कि वह क्या सोच रही है। वह कु समझ न पाता था। उसने कहा—प्रिये!

उसने सुना ही नहीं।

वह अबकी बार जोर से बोला—प्रिय इजमेरल्डा!

पुकार व्यर्थ गयी। युवती का मन कहीं दूर था। उस बकरी ने उसका कपड़ा पकड़ कर खींचा।

नींद से अचानक उठने के विभ्रम से उसने पूछा—क्या चाहती हो दजाली?

बकरी भूखी है—ग्रींगोयरे ने शीघ्रता से कहा।

युवती रोटियाँ लेकर बकरी को खिलाने लगी। ग्रींगोयरे ने उस विचार मग्न होने का अवसर नहीं दिया। उसने धीरे से पूछा—तुम मुझे अपना पति नहीं बनानी चाहती?

युवती ने कहा—नहीं।

और प्रेमी?—ग्रींगोयरे ने फिर प्रश्न किया।

इजमेरल्डा ने मुँह बनाकर कहा—नहीं।

और मित्र?

वह उसकी ओर घूर कर देखने लगी। फिर थोड़ी देर के बाद बोली—शायद।

'शायद'—दार्शनिकों का बड़ा प्रिय शब्द है। इससे कवि का साहस बढ़ा।

तुम मित्रता का अर्थ जानती हो ?—उसने पूछा ।

हाँ—उसने उत्तर दिया—भाई और बहिन बनने को मित्रता कहते हैं । यह दो आत्माओं का मिलन है, एक का नहीं । यह एक ही हाथ की दो अँगुलियाँ हैं ।

और प्रेम ?—कवि ने पूछा ।

ओह, प्रेम ! उसने कहा—[उसका स्वर काँप रहा था । उसकी आँखें चमक उठीं]—वह तो "दो शरीर एक प्राण" होना है , एक पुरुष और एक स्त्री मिलकर एक देवता बनते हैं । प्रेम ही स्वर्ग है, परमेश्वर है ।

इजमेरल्डा का चेहरा, गुलाब के फूल की तरह, बातें करते-करते खिल उठा । ग्रींगोयरे इसे देख रहा था । उसके पवित्र गुलाब की पँखड़ियों-जैसे होंठ धीरे-धीरे मुस्किरा रहे थे । उसकी निर्दोष टेढ़ी भौंहों पर विचार के बादल थोड़ी देर के लिये घिर आये थे, जैसे श्वास-वायु से दर्पण धुँधला पड़ जाता है । उसकी बड़ी-बड़ी, भौंरों-जैसी कजरारी, आँखों से प्रकाश निकल रहा था, जिससे उसके शरीर की मनोहरता और भी बढ़ गई थी ।

किन्तु ग्रींगोयरे झकनेवाला व्यक्ति न था । उसने कहा—तुम को प्रसन्न करने के लिये किसी को क्या करना चाहिये ?

उसे मनुष्य होना चाहिये ।

और मैं क्या हूँ ?—उसने पूछा ।

उसने उसकी बात बिना सुने ही कहा—उसके सिर पर शिरस्त्राण, हाथ में कृपाण तथा उसके जूतों में सुनहरा 'स्पर' होना चाहिए ।

कवि ने पूछा—अच्छा ! क्या पोशाक आदमी को बड़ा बनाती है ? तुम किसी को प्यार करती हो ?

प्रेमी की हैसियत से ?

प्रेमी के रूप में।

वह क्षण भर निस्तब्ध रही, जैसे कुछ सोच रही हो; फिर उसने ग्रीगोयरे पर एक तीक्ष्ण दृष्टि डाल कर कहा—मैं केवल उस पुरुष को प्यार करती हूँ, जो मेरी रक्षा कर सके।

कवि सकुचित हो उठा। वह चुप था। यह स्पष्ट था कि युवती ने उस दो घंटे पूर्व की दुर्घटना की ओर इशारा किया, जिसमें कवि ने उसे थोड़ी-सी सहायता पहुँचाई थी। कवि को फिर स्मरण हो आया और उसने अपनी भौंहों को सिकोड़ लिया।

सुन्दरी ! मुझे वहीं से प्रारम्भ करना चाहिये था। मेरी मूर्खता के लिये क्षमा करो। तुम क्वासीमोडो के चंगुल से कैसे निकल सकी हो ?

इस सवाल ने युवती के शरीर को कँपा दिया।

ओह ! भयानक कुबड़ा !—वह चिल्ला उठी, और अपने चेहरे को अपने हाथों से छिपा लिया। वह काँप रही थी।

भयोत्पादक तो वह अवश्य है, मगर तुम उस से छुटकारा कैसे पा गईं ?

मैं नहीं जानती—उसने कहा, मगर फिर शीघ्रता से उसने पूछा—तुम भी तो मेरा पीछा कर रहे थे, क्यों ?

मैं तो योंही आ रहा था।

मॉंगोयरे चाकू से मेज को खुरचने लगा। युवती ने मुस्किरा दिया। उसकी अन्तर्भेदिनी दृष्टि जैसे दीवार के उस पार किसी चीज को देख रही थी। अचानक वह अस्पष्ट स्वर में गाने लगी। फिर यकायक वह चुप हो गई और दजाली को सहलाने लगी।

तुम्हारी बकरी बडी सुन्दर है—मॉंगोयरे ने कहा।

यह मेरी बहिन है—उसने उत्तर दिया।

तुमको लोग इजमेरल्डा क्यों कहते हैं ?—साहस करके मॉंगोयरे ने पूछा।

मुझे नहीं मालूम।

किन्तु वे क्यो तुम्हे इजमेरल्डा कह कर पुकारते हैं ?

उसने अपने वक्षस्थल से एक छोटा-सा बटूद्व, जो एक तागे के सहारे उसकी गर्दन मे बॅधा था, निकाला। वह बटूद्व सुगध से भरा था। उसका सौरभ तत्काल चारो ओर फैल गया। वह रेशम का बना था। उसमे एक बडा-सा हरा शीशा, हीरे की शक्ल का, रक्खा था। शायद इसी के कारण उसने उसे निकालकर दिखलाया।

मॉंगोयरे ने बटूद्व को देखना चाहा, मगर उसने फिर उसे कपडे के नीचे छिपा लिया।

इसे न छुओ, यह मेरा रक्षा-कवच है। तुम इसके प्रभाव को नष्ट कर दोगे, या इसका प्रभाव तुम्हे हानि पहुँचायेगा।

मॉंगोयरे की उत्सुक आँखें उसे देखने लगी।

तुम्हें किसने इसे दिया ?

वह अपनी अँगुली दाँत से कुटक रही थी। कवि ने बहुत-से

सवाल किये, मगर उसने एक ही जवाब दिया। उसके नाम का क्या अर्थ है, वह किस भाषा का है, ये ग्रींगोयरे के सवाल थे। इन सबका उत्तर था—मुझे नहीं मालूम।

ग्रींगोयरे ने पूछा—तुम्हारे माता-पिता जीवित हैं?

वह एक प्राचीन गीत गाने लगी—

"जननी मेरी विहगिनी, पिता सुविहग बखान।
सुख सों सागर पै उड़ूँ, चाहिय नहिं जलयान॥"

बहुत सुन्दर—कवि ने कहा। फिर पूछा—तुम फ्रान्स में कितना उम्र में आई थीं?

जब मैं बहुत छोटी थी।

और पेरिस में?

पार साल। अगस्त का महीना था। मैंने कहा न था कि जाड़ा बड़े जोरों का पड़ेगा?

सचमुच जाड़ा बड़े जोरों का पड़ा—कवि ने प्रसन्न हो कहा—मैंने तो अपनी अँगुलियों को फूँक-फूँक कर गर्म करने में ही शीत काल बिता दिया। तुम्हें भविष्य-कथन का वर है क्या?

नहीं।

जिसे तुम मिश्र का ड्यूक कहती हो, क्या वह तुम्हारी जाति का सरदार है?

हाँ।

उसी ने तो हमलोगों का विवाह कराया था—कवि ने डरते हुए कहा।

उसने मुँह बना कर कहा—मैं तो तुम्हारा नाम तक नहीं जानती।

मेरा नाम ? तुम्हारी दया से मेरा नाम पियरे ग्रींगोयरे है।

इससे भी मधुर एक नाम मैं जानती हूँ।

कठोर बालिके ! जब तुम मुझे अच्छी तरह जानोगी तो शायद आप से आप मुझे प्यार करने लगोगी। तुमने मुझपर विश्वास करके अपनी राम-कहानी कही है, इसलिए उचित है कि मैं भी तुम्हें अपने विषय मे कुछ सुनाऊँ।

अपने नाम से लेकर बाप-दादे के नाम तक कवि ने एक साँस में बता दिये। उसने एक लम्बा-चौडा व्याख्यान ही दे डाला। उसने बताया कि कैसे वह छ वर्ष की अवस्था में पितृहीन हो गया, लोगों की दया पर जीवित रहा, फिर लुहार का काम किया, सेना में भर्ती हुआ, पादरी बना, अर्थात् कोई भी व्यापार नहीं छोड़ा। यह जानकर कि वह किसी काम के योग्य नहीं है, कवि हो गया। उसने यह भी बताया कि यही एक ऐसा व्यापार है कि आदमी बैठे ठाले समय मे या गुण्डा होते हुए भी सरलता से इसे कर सकता है। फिर उसने बताया कि कितने सौभाग्य से वह एक दिन नाट्रीडेम-चर्च के आर्च डिकन-डान ड़ाडे से मिला, और कैसे दोनों में घनिष्ठता बढ गई। उसीसे उसने लेटिन पढी, और सभ्य बना। उसने न्यायभवन के नाटक के विषय में भी कहा। बाद उसने बताया कि वह कितने चातुर्यपूर्ण खेल जानता है, जिन्हे वह बजाली को सिखलायेगा। उसने कहा, मैं तुम्हारी सेवा मे

अपनी बुद्धि, विद्या एव विज्ञान के साथ उपस्थित हूँ। मैं तुम्हार
साथ रहने को तैयार हूँ। प्रिये! तुम जिस तरह भी हो, मुझे काम
में ले आओ। अगर उचित समझो तो पति-पत्नी के भावसे य
भाई-बहिन के नाते।

अपने व्याख्यान का असर देखने के लिये ग्रीगोयरे रुक गया।
युवती के नेत्र नीचे झुके थे।

'फीबस' का क्या अर्थ है?—इजमेरल्डा ने पूछा।

अपने व्याख्यान तथा उसके इस सवाल में कवि को कुछ भ
सम्बन्ध न मालूम हुआ। तो भी उसने अपनी विद्वत्ता दिख
के लिये कहा—यह लेटिन-भाषा का शब्द है, इसका अर्थ होता
'सूर्य'।

सूर्य?—युवती ने दुहराया।

यह एक धनुर्धारी देवता का नाम है—कविने कहा।

देवता?—जिप्सी ने दुहराया। उसके स्वर में चाव था, चे
पर प्रसन्नता।

उसी समय उसके एक हाथ का कगन गिर गया। ग्रीगो
स्फूर्ति के साथ उठाने के लिए झुका। जब वह उठा तो उसने जिप
को वहाँ न पाया। उसे दरवाजा बन्द करने की खटखटा
सुनाई दी।

कम-से-कम बिस्तर तो जरूर छोड़ गई होगी।—हमारे
दार्शनिक ने सोचा।

उसने कमरे भरमें बिस्तर को खोजा, मगर उसका कहीं पत

था। केवल एक तख्ता पड़ा था। उसी पर हमारे दार्शनिक को सोना पड़ा।

भाग्य के आगे सर झुकाना ही पड़ता है। किन्तु यह तो विचित्र सुहाग-रात है! कितना दयनीय है! उस सुराही को फोड़ कर शादी करने में कुछ ऐसी प्राचीनता थी, जिसे मैं प्यार किये बिना न रह सका।

सदय

इस कहानी के लगभग सोलह वर्ष पूर्व की बात है। उस दिन ईस्टर के बाद का पहला रविवार था। नाट्रीडेम गिरजाघर के द्वार पर लटकते हुए खटोले में एक बच्चा रखा हुआ पाया गया। लोग उस खटोले मे अनाथ और जारज बच्चो को छोड जाते थे। उस खटोले के आगे पैसो के लिये एक बर्तन पडा था। यदि कोई बालक को ले जाना चाहता, तो वह ले जा सकता था।

सन् १४६७ के उस रविवार को, खटोले में पडे बच्चे के पास बडी भीड लग गई थी। उस भीड मे लगभग सब स्त्रियाँ ही थीं, और बहुधा सब बुड्ढी थीं।

सब से आगे की पंक्ति की चार स्त्रियाँ बच्चे के पलने की ओर झुकी हुई थी। वे अपने भूरे अचकन से धार्मिक संस्था की सेविका जान पड़ती थीं। वे चारों विधवा थीं, सन्यासिनी हो गई थीं। उस दिन उन्हे धार्मिक व्याख्यान सुनने की छुट्टी थी।

किन्तु वे चारों नि शब्द रहने के कानून को भग कर रही थीं। खटोले का बच्चा इतने दर्शको से घबराकर, डरकर, रो रहा था—चीख रहा था—अपने बिस्तर पर लोट रहा था।

इस ससार मे यह क्या है बहिन ?—एक ने समीप वाली से पूछा।

अगर आजकल ऐसे लडके होते हैं तो मैं नहीं समझती कि ससार का भविष्य क्या होगा—एक दूसरी ने कहा।

मैं लडके के विषय मे अधिक नहीं जानती, मगर इसकी ओर देखने में पाप अवश्य लगेगा—तीसरी ने कहा।

यह लडका नहीं है—चौथी ने कहा।

यह कुरूप बन्दर है—पहिली स्त्री ने फिर कहा।

यह अद्भुत जीव है—चौथी ने कहा।

यह एक राक्षस है—दूसरी ने कहा।

इसके शोर से तो कान बहरे हो जायेंगे, दुष्ट चुप नहीं होता—चौथी ने फिर कहा।

मेरा विश्वास है कि यह जानवर है, या ज्यू और सूअर के बीच का कोई जीव है, क्रिश्चियन तो यह कभी नहीं है—तीसरी ने कहा।

मेरा विश्वास है कि इसे कोई न लेगा—चौथी बोल उठी।

मुझे उन नर्सों पर दया आती है जो इस भूत को दूध पिलाती हैं। मुझे तो साँप को दूध पिलाना इससे अच्छा जान पड़ता है—तीसरी ने कहा।

तुम आवश्यकता से अधिक सीधी हो बहिन! नहीं देखती कि यह कम-से-कम चार वर्ष का है। इसकी भूख तुम्हारे स्तनों के चबाने से नहीं जायेगी। यह तो पुष्ट भोजन करने से ही जी सकता है।—दूसरी ने कहा।

सचमुच वह भूत लगभग चार वर्ष का हो चला था। वह एक वण्डल-सा जान पड़ता था। उसके कपड़े पर पेरिस के बिशप का हस्ताक्षर था। वह गोल गठरी की तरह उछलता-कूदता था।

भीड़ आती-जाती रही।

एक धनी और कुलीन स्त्री भी अपने छ वर्ष की पुत्री के साथ आई थी। स्त्री का नाम था टेम-अलोचे और उसकी पुत्री का फ्लीयर-डी-लीज। लड़की ने खटोले पर लिखे हुए शब्दों को मिला कर पढ़ा। उस पर लिखा था—अनाथों के लिये।

मैं समझती हूँ कि यहाँ केवल लावारिस लड़के रखे जाते हैं।—यह कहते हुए वर्तन में चवन्नी फेंक कर वह शीघ्र चली गई।

गिरजाघर से आते हुए व्यक्तियों ने अपने-अपने मनकी बातें कह डालीं। किसी-किसी ने भविष्यवाणी की कि यह साल विपत्तियों से भरा है। किसी ने कहा, यह काना है; तो किसी ने कहा, लँगड़ा। किसी ने कहा, पेरिस की शुभ कामना के लिये इसे जला देना ही अच्छा है।

एक युवक पादरी इन सब बातों को सुन रहा था। उसका मुखमण्डल कठोर था, भौंहें चौड़ी और आँखें तीक्ष्ण थीं। उसने धीरे से भीड़ को हटाकर उस 'छोटे मायावी' को देखा और उसके ऊपर अपना हाथ बढ़ाया। उस समय लोग अपनी-अपनी चिंता म मग्न थे।

मैं इसे गोद लेता हूँ—पादरी ने कहा।

अपने वस्त्र मे बालक को ढँककर वह पादरी लेता चला गया। लोग भयभीत होकर उसकी ओर देखते रहे। थोडी देर मे वह अदृश्य हो गया।

थोडी देर के बाद एक सन्यासिनी ने दूसरी से धीरे से कहा—मैंने तुम से कहा न था कि यह युवक पादरी क्लाडेफ्रोलो जादूगर है?

क्लाडेफ्रोलो

सचमुच क्लाडेफ्रोलो साधारण चरित्र का आदमी नहीं था। उसका जन्म मध्यमश्रेणी के कुल में हुआ था। उस कुल में 'टायर चेपे' की जमींदारी, पेरिस के बिशप की ओर से, बहुत दिनों से चली आती थी। उसके इक्कीस घरों के लिये, तेरहवीं शताब्दी में, बिशप की कचहरी में बहुत-से मामले लड़े गये थे। इस जागीर का स्वामी होने से क्लाडेफ्रोलो उन १४१ लार्डों में से था, जो पेरिस में माफ़ीदार थे।

क्लाडेफ्रोलो के माता पिता उसे चर्च का पादरी बनाना चाहते थे। इसी लिये बचपन ही से उसे लेटिन पढ़ाई गई। उसको नीचे देखने तथा धीरे बोलने की शिक्षा दी गई थी। बचपन ही में उसके पिता ने उसे चर्चमिशन-स्कूल में भर्ती करा दिया। वहाँ पर वह धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ बढ़ने लगा।

वह उदास, गम्भीर तथा सन्यासी बालक था। उसको अध्ययन से प्रेम हो गया था और वह पढ़ने में भी तीक्ष्णबुद्धि था। खेल के समय उसे शोर करते किसी ने नहीं सुना, अव्यवस्थित आनन्दों में वह कम भाग लेता था। १४६३ के विद्यार्थी विद्रोह में उसने कुछ हिस्सा नहीं लिया। कालेज के विद्वानों को भूरा, नीला तथा बैंगनी रंग के गाउन पहिने देखकर उसे कभी हँसी न आई।

वह सदैव स्कूल में पहिले पहुँचता था। चर्च के कानूनों पर जिस समय व्याख्यान होता, वह सब से पहिले आ बैठता। वह मास्टर के समीप ही बैठा करता। उसकी कलम हमेशा उसके हाथ मे रहती। उसके घुटने का कपडा, लिखने के कारण, सर्वदा फटा रहता। जाडे में अँगुलियों को गर्म रखने के लिए वह उन्हे फूँका करता। इसलिए वह सोलह वर्ष की ही अवस्था में अध्यात्म विद्या की गूढ समस्याओं तथा धार्मिक सिद्धान्तो पर बडे-बडे विद्वानो से बहस कर सकता था।

अध्यात्म विद्या के अध्ययन के पश्चात् उसने पोपो की सारी 'आज्ञाओं' का अध्ययन कर डाला। ज्ञान-पिपासा की शान्ति के लिये वह एक 'आज्ञा' के बाद दूसरी 'आज्ञा' पढने लगा। उसने इस विषय पर अनेक किताबें पढ डाली।

'पोप-आज्ञा' के बाद उसने वैद्यक तथा साहित्य पढना प्रारम्भ किया। जडी-बूटियों का ज्ञान प्राप्त कर ज्वर तथा घावो की चिकित्सा का वह विशेषज्ञ हो गया। उसने और विषयो की भी डिग्रियाँ प्राप्त की। उसने लेटिन, ग्रीक तथा हिब्रू भाषाओं का भी ज्ञान प्राप्त किया। साइन्स की ओर उसका विशेष झुकाव था। अठारह वर्ष की ही अवस्था में उसने इतना अध्ययन कर लिया था। उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य ज्ञान-प्राप्ति ही था।

इस समय, सन् १४६६ मे, पेरिस में बडे जोरों का प्लेग आया। उस समय बहुत लोग काल के गाल में समा गये। 'टायरचेपे' में प्लेग का प्रकोप बहुत बढ गया था। वहीं क्लाडे के माता पिता रहते

थे। युवक विद्यार्थी डरता हुआ घर गया। घर में पहुँचते ही उसे पता लगा कि उसके माता पिता एक दिन पहिले ही स्वर्गवासी हो गए। उसका एक छोटा भाई घर मे अकेला पड़ा रो रहा था। कुल में वही एक छोटा बालक बचा था। वह उसे गोद में लेकर बाहर निकल पड़ा। अब तक वह साइन्स के लिये जीता था, अब उसके सामने एक नवीन अध्याय खुला।

यह विपत्ति उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटना थी। पितृहीन तथा बड़ा भाई होने से उसे कुल का कर्ता होना पड़ा। उसे विद्वानों के स्वप्नलोक से अचानक वास्तविक जगत् में आना पड़ा। दया से आर्द्र होकर वह उस बालक को प्यार करने लगा—उसी की सेवा में लग गया। जिसने कभी पुस्तकों के अतिरिक्त किसी और को प्यार नहीं किया था, उसे अब मानव-प्रेम लोकोत्तर-मधुर जान पड़ने लगा।

उसके हृदय में प्रेम छलकने लगा। यह उसका पहला प्यार था। माता-पिता से दूर रहकर, किताबों में गड़े रहने से, उसको अभी तक पता न लगा था कि उसके पास भी हृदय है। उस मातृ-पितृ-विहोन छोटे भाई ने मानो स्वर्ग से उतर कर उसे एकदम दूसरा आदमी बना डाला। उसने देखा कि दुनिया में होमर के काव्य के अतिरिक्त और भी चीजें हैं। मनुष्य को प्यार की आवश्यकता होती है, और कोमलता एव प्रेम से शून्य जीवन केवल कोलाहलपूर्ण तथा भावना-हीन यन्त्र है। उसने सोचा कि कुल तथा रक्त का बन्धन मनुष्य के लिये अनिवार्य है।

प्रेम करके जीवन को पूर्ण बनाने के लिये एक छोटा भाई पर्याप्त था।

उसने अपने हृदय के सम्पूर्ण प्रेम को उस छोटे 'जेहन' के ऊपर उड़ेल दिया। उसके चरित्र में शक्ति, अनुराग तथा एकाग्रता थी। उस दुर्बल, किन्तु सुन्दर तथा गुलाब जैसे, बालक ने उसकी आत्मा को चचल बना दिया। वह पहिले ही से गभीर विचारक था, अब वह जेहन के विषय में अनन्त प्रेम के साथ सोचने लगा। वह उस बालक की, टूट जाने वाली अमूल्य वस्तु की तरह, रक्षा करने लगा। उस बालक के लिए वह भाई से अधिक था, वह उसकी माँ था।

छोटे 'जेहन' को अपनी जमींदारी में एक स्त्री के पास, दूध पिलाने के लिये, आप ही गोद में लेकर जाया करता।

अपने उत्तरदायित्व को ध्यान में रखकर वह अपने जीवन को सयमी बनाने लगा। छोटे भाई के विषय में विचार करना ही अब उसका अध्ययन हो गया। उसने प्रतिज्ञा की—मैं इस भाई के भविष्य के लिये अपने जीवन को खपा दूँगा, मैं अपने भाई के सुख तथा उन्नति के अतिरिक्त किसी दूसरी स्त्री या पुत्र की चिन्ता न करूँगा।—इसलिये वह चर्च के कामों की ओर अधिक ध्यान देने लगा। उसका विशप से सम्बन्ध तथा उसकी विद्या उसके लिये चर्च का द्वार खोले पड़ी थी। वह बीस वर्ष की अवस्था में, पोप की विशेष आज्ञा से, नाट्रीडेम का पादरी बना दिया गया।

अपने परिश्रम तथा अध्यवसाय से वह चर्च के लोगों का प्यारा बन गया। लोग उसकी श्रद्धा तथा प्रशंसा करते थे। उसकी

विद्या की प्रशंसा गिरजे से निकल कर बाहर तक फैल गई, मगर बाहर उसका स्वरूप बदल गया था, लोग उसको ऐन्द्रजालिक कहते थे।

एक दिन जब वह 'कासीमोडो' (ईस्टर के बाद का रविवार) को 'मास' (धर्म-पाठ) कहकर चर्च से बाहर निकल रहा था, तब स्त्रियों की भीड़ से उसका ध्यान आकर्षित हुआ था।

वह उस अभागे बालक के पास गया, जिससे लोग घृणा कर रहे थे। उसकी विपत्ति, कुरूपता, आश्रयहीनता तथा अपने भाई के ध्यान ने—उसने सोचा कि यदि मैं मर जाऊँ तो मेरा भाई भी यहीं रखा जायेगा—उसके हृदय में दया की लहर जगा दी, और उसने बालक को उठा लिया।

उसने उस छोटे बालक को सोलहो आने कुरूप पाया। छोटे की दया उसकी कुरूपता से और बढ़ गई। उसने सोचा कि अपने भाई के प्यार के लिये इस बालक को लिखा-पढ़ा दूँगा। यह पुण्य वह अपने छोटे भाई के लाभ के लिये कर रहा था। छोटे भाई के लिये यह पुण्य-सचय था। 'जेहन' के लिये ही वह यह धर्म धन इकट्ठा कर रहा था। केवल यही धन स्वर्ग में 'कर' चुकाने के काम में आता है।

उसने उस बालक का नाम उस रविवार के नाम पर 'कासीमोडो' रख दिया।

नाट्रीडेम की आत्मा

सन् १४८२ मे कासीमोडो जवान हो गया था। छाडेफोलो की कृपा से वह नाट्रीडेम का घटा बजाने के काम पर नियत हो गया। छाडेफोलो उस समय नाट्रीडेम का आर्चडिकन था।

समय पाकर उस घटे बजानेवाले तथा चर्च मे एक विचित्र सम्बन्ध पैदा हो गया। अपने अज्ञात कुल तथा कुरूपता के कारण वह ससार से विरक्त हो गया था। बचपन ही से उस ऊँची चहार-दीवारी के भीतर रहने से, चर्च के सिवा बाह्य जगत् को न देखने से, उसे कुछ दुख नहीं हुआ। नाट्रीडेम ने अपनी छाया मे उसे शरण दी थी। इसलिये नाट्रीडेम ही उसके लिये घर, देश तथा ससार हो गया था।

उन दोनों मे एक अचिन्तनीय सम्बन्ध स्थापित हो गया था। बचपन ही से वह उसके गुम्बजो तथा मेहरावों के नीचे लँगडते हुए घूमा करता। उस समय वह सचमुच उस अन्धकारमय तहखाने का रेंगनेवाला कोई जीव मालूम होता था।

जिस समय उसने पहिली बार घटे की रस्सी को पकड़ कर घटे को बजाना प्रारम्भ किया था, उस समय छाडे को जान पडा कि उसकी जबान खुल गई और वह बोलने लगा।

कासीमोडो सर्वदा वहीं रहता, वहीं खाता-पीता तथा सोता

था। शायद ही कभी उसने गिरजाघर के घेरे के बाहर पैर निकाला हो। उस चर्च के प्रभाव से वह मानों उसका एक आवश्यक अंग हो गया था। उसके हृदय में उस प्राचीन चर्च के प्रति गहरी सहानुभूति पैदा हो गई थी। वह उसके साथ ऐसा लगा था, जैसे कछुआ कमठ-पृष्ठ के साथ लगा रहता है। वह भग्नप्राय चर्च उसीका आकार था।

सम्पूर्ण गिरजे के साथ उसके निकट सम्बन्ध का वर्णन अनावश्यक जान पड़ता है। कोई ऐसा तहखाना न था जिसे उसने न देखा हो। कोई ऐसा मीनार न था जिस पर वह चढ़ा न हो। दीवार के बाहर निकली हुई ऊँची-से-ऊँची कारनिस पर वह चढ़ सकता था। चर्च में बनी हुई विचित्र जन्तुओं की मूर्तियों से उसे तनिक भय न लगता था। उसमें गिरजे पर चढ़ने तथा कूदने में, बन्दर की-सी स्फूर्ति थी।

उस गिरजे का प्रभाव उसके शरीर पर ही नहीं, किन्तु उसकी आत्मा पर भी पड़ा था। उस आत्मा की क्या अवस्था थी, यह कहना कठिन है। कासीमोडो काना, कुबड़ा तथा लँगड़ा पैदा हुआ था। बड़े धैर्य तथा परिश्रम से डाडेफ्रोलो ने उसे बोलना सिखाया था। किन्तु उस गरीब पर दूसरी विपत्ति पड़ी। नाट्रीडेम के घंटों ने उसकी विपत्ति को पूरा कर दिया, उस कठोर ध्वनि में उसके कानों के परदे फट गये। वह बहरा हो गया। प्रकृति ने संसार से सम्बन्ध रखने का उसे वही एक मार्ग दिया था, सो भी सर्वदा के लिये बन्द हो गया।

कानों के बन्द होते ही उसकी आत्मा तक पहुँचनेवाली आनन्द-रश्मि भी रुक गई। आत्मा घने अंधकार में गिर पड़ी। उसकी कुरूपता के सदृश उसकी उदासी भी परिपूर्ण थी। बहरे हो जाने से उसने न बोलने का व्रत-सा धारण कर लिया, ताकि लोगों को हँसने का अवसर न मिले। इस व्रत को वह केवल एकान्त में तोड़ता था। क्लाडेफ्रोलो द्वारा स्वतंत्र की हुई जिह्वा को उसने इच्छापूर्वक बाँध दिया। इसलिये जब वह बोलने को बाध्य होता, तब उसकी जिह्वा जकड़ जाती।

पाठक! यदि आप कासीमोडो के मोटे चमड़े को पारकर उसकी आत्मा तक घुस पाते, उस कुरूप जीव के अन्तस्तल का पता लगा सकते, उस अलक्ष्य अभ्यन्तर में दीपक का प्रकाश डाल सकते—उसके अंधेरे कोनों की खोज लेते—उन्हें प्रकाशित कर सकते, और उसकी आत्मा को—जो उस कूप में बन्द है—देख पाते, तो आप का पता चल जाता कि वह उन कैदियों की अवस्था में रुका तथा सिमटा पड़ा था, जिनकी तंग कोठरी न सोने के योग्य होती है और न खड़ा होने के।

कुरूप शरीर में आत्मा अनुपयोगी हो जाती है। कासीमोडो ने शायद ही अपनी आत्मा का अनुभव किया था। बाह्य जगत् की वस्तुओं का प्रभाव उसके मस्तिष्क तक पहुँचने के पहिले विकृत हो जाता था। उसका मस्तिष्क एक ऐसा माध्यम था जिससे होकर आने-जाने में उसके भाव अस्पष्ट तथा विकृत हो जाते थे। इस लिये उसका विचार मूर्खतापूर्ण तथा अर्थशून्य होता था।

इस दुर्भाग्य के बुरे प्रभाव ने उसे दुष्ट बना दिया। वह दुष्ट था, क्योंकि वह शिक्षित जंगली था। वह जंगली था, क्योंकि वह कुरूप था।

उसे भगवान ने पर्याप्त शारीरिक शक्ति दी थी, यही उसके बुरा बनने में प्रधान कारण था।

मगर उसके साथ न्याय करने के नाते कहना पड़ता है कि यह स्वभाविक नहीं था। मनुष्यों के प्रथम सम्बन्ध से ही उसे मालूम होने लगा कि लोग उससे घृणा करते, उसे घृणा की दृष्टि से देखते, उसकी अवज्ञा करते तथा उससे दूर रहते हैं। मनुष्य के भाषण का अर्थ, व्यंग तथा शाप के अतिरिक्त, दूसरा वह कर ही कैसे सकता था? उसने जीवन-यात्रा में घृणा के सिवा कुछ न देखा। उसे इसकी छूत लग गई। उसने संसार से घृणा करना प्रारंभ कर दिया। जिस शस्त्र से वह घायल हुआ था, उसको अपना लिया।

दूसरे आदमियों को देख कर उसे दुख होता था। इसलिये गिरजे को उसने पर्याप्त समझा। उसके साथी, वहाँ, राजा महाराजा तथा संतों की मूर्तियाँ थीं जो उसकी ओर शान्ति तथा कृपा की दृष्टि से देखती थीं। भूतों की मूर्तियाँ उसे देखकर हँसती नहीं थीं, वे दूसरे आदमियों पर हँसती थीं। संत उसके मित्र थे जो उसकी भलाई करते थे। भूत भी उसके मित्र थे जो उसकी रक्षा करते थे। वह उनके पास बैठ कर घंटों बात किया करता था, और किसी के आने पर मशक प्रेमी की तरह भाग जाता था।

चर्च उसका केवल साथी ही न था, संसार भी था। नहीं, उसे

लिये प्रकृति भी वही था। उसके अतिरिक्त जगत् के दूसरे वृक्ष या पहाड़ को वह नहीं जानता था।

किन्तु उस गिरजे में वह सबसे अधिक जिसको प्यार करता था—जिससे उसकी आत्मा अपने निर्बल डैनों पर उड़ने का प्रयत्न करने लगती—जिससे वह सचमुच प्रसन्न होता, वह था गिरजे का घंटा। वह घंटे को प्यार करता, उसके साथ कोमल बर्ताव करता, बातचीत करता और उसमें अपनापन पाता था। इन्हीं घंटों ने उसे बहरा बना दिया था। किन्तु माता उस सन्तान को सबसे अधिक प्यार करती है जिसके कारण उसे अधिकाधिक पीड़ा हुई हो।

वह घंटों की ही आवाज सुन सकता था। इसलिये वह गिरजे के सबसे बड़े घंटे को अधिक प्यार करता था।

जिस दिन घंटे बज उठते उस दिन उसके आनन्द का पारावार न रहता। वह दौड़कर उनके पास जाता, कुछ बातें करता, प्यार करता, उनके परिश्रम पर दुःख प्रकट करता, फिर बजाना प्रारम्भ कर देता था। घण्टे बज उठते, वह ऊर्ध्व साँस लेता हुआ चिल्ला उठता, ठठाकर हँसता। घण्टे जोर से बजने लगते, उसके नेत्र बड़े होते जाते। अन्त में सम्पूर्ण गिरजा काँप उठता, नींव काँप उठती, छत काँप उठती, घरें काँप उठतीं, ईंटें काँप उठतीं, सर से पाँव तक वह भी काँप उठता। वह आनन्द का कंपन था। घण्टों का स्वर चारों ओर चार योजन तक सुनाई देता। उन के पास खड़ा कासीमोडो कभी सैकड़ों फीट नीचे आदमियों की ओर देखता, कभी उन घण्टों की ओर। वह पक्षी की तरह प्रसन्न

हो जाता था। अचानक उसके नेत्र विचित्र ढँग के हो जाते थ। वह घंटो के चुप होने के लिये इस तरह प्रतीक्षा करता जैसे मकड़ी मक्खी के लिये करती है। वह समीप की प्रेतमूर्ति के कान पकड़ लेता और दुगुने क्रोधावेग से उसको ठोकरें देने लगता। फिर दाँत पीसने लगता। उसके लाल बाल खड़े हो जाते। उसकी आँखों से आग बरसने लगती। उस समय नाट्रीडेम के घंटों के अस्तित्व का नाश हो जाता, उसे सब स्वप्न प्रतीत होने लगता था। वे बवंडर, आँधी चक्कर, प्रेत, कटे मनुष्य जान पड़ने लगने थे।

इस अद्वितीय जीव के संसर्ग में चर्च में एक विचित्र जीवन आ गया था। कम-से-कम अन्धविश्वासी जनता का कहना था, कि उसके श्वासों से गिरजे का हर-एक पत्थर, हर एक ईंट जानवर की तरह साँस लेने लगती है। उसकी उपस्थिति में, दिहाती सोचने लगते थे, कि मूर्तियाँ हिल रही हैं—साँस ले रही हैं।

सचमुच वह गिरजा एक आज्ञाकारी जीव की तरह जान पड़ता था, जो कासीमोडो की आज्ञा के साथ ही चिल्ला उठता था कासीमोडो उसका प्राण था। वह दिन भर गिरजे में एक से दूसरे मीनार पर, एक जगह से दूसरी जगह, दौड़ा करता था। कहीं यहाँ चढ़ता तो वहाँ उतरता था। कभी-कभी अँधेरे कमरों में विचार मग्न हो अपने स्वप्नों की उधेड़-बुन में संलग्न दिखाई पड़ता था।

बहुधा रात को लोग गिरजे के उन हिस्सों पर उसे सरकते देखते जहाँ चढ़ने के लिए कोई आधार न था। इसीलिए पड़ोसी कहते थे कि उस समय गिरजा भयानक रूप धारण कर लेता है।

क्रिस्टमस में आधी रात को मालूम होता कि गिरजे का दरवाजा नर मुण्डों को निगल रहा है। यह सब कासीमोडो की उपस्थिति के कारण था। मिश्र में लोग उसे देवता समझते। मध्यकाल ने उसे राक्षस समझा, किन्तु वह उस गिरजे की आत्मा था।

जो लोग यह जानते हैं कि कासीमोडो कभी यहाँ था, उनके लिए नाट्रेडेम परित्यक्त, निर्जीव तथा मृत के समान है। ऐसा भान होता है जैसे वहाँ से कुछ चला गया है—वह विशाल शरीर रिक्त है, केवल अस्थि पंजर शेष है, प्राण-पखेरू उड़ गये हैं, वासस्थान रह गया है, और वही अब सब कुछ है। वह कंकाल की तरह आज पड़ा है। आँखों के घर अब भी है, किन्तु दृष्टि का पता नहीं।

कुत्ता और उसका स्वामी

संसार में केवल एक आदमी था, जिसे कासीमोडो ने अपनी ईर्ष्या तथा क्रोध का भागी नहीं बनाया था। उसे वह गिरजे से भी अधिक प्यार करता था। वह था क्लाडेफ्रोलो।

यह स्वाभाविक भी था। क्लाडेफ्रोलो ने उसको पुत्र के समान पाला-पोसा था। बचपन में जब कुत्ते तथा लड़के उसे दुख देने को दौड़ते, तो वह क्लाडेफ्रोलो के पैरों के बीच में ही शरण पाता था। क्लाडेफ्रोलो ने ही उसे बोलना तथा लिखना पढ़ना सिखलाया था—उसे घंटा बजानेवाला बनाया था।

कासीमोडो की कृतज्ञता असीम, चाव-भरी तथा पूर्ण थी। उसकी कृतज्ञता कभी कम नहीं हुई। वह सब से बड़ा आज्ञाकारी तथा संरक्षक की सेवा में सबसे बड़ा दक्ष था। जब वह बहरा हो गया, तब उन दोनों ने इशारों से बातचीत करना प्रारम्भ किया। ये इशारे दूसरों के लिये अज्ञेय थे। केवल क्लाडे ही एक ऐसा व्यक्ति था, जिससे वह कुछ बातचीत करता था। संसार में उसका सम्बन्ध केवल दो ही से था—नाट्रीडेम तथा क्लाडेफ्रोलो से।

क्लाडे के स्वामित्व तथा कासीमोडो की स्वामिभक्ति की उपमा के लिये संसार में कोई वस्तु नहीं है। क्लाडे के एक इशारे पर वह मीनार पर से कूद पड़ता। उसकी प्रसन्नता के लिए वह क्या नहीं

कर सकता था ? उसकी सारी शारीरिक शक्ति अधभार से क्लाडे की सेवा में तत्पर रहती थी। इसका कारण पैतृक प्रेम—पारिवारिक प्रेम—था। एक का दूसरे पर आकर्षण भी इसी कारण था। वह ग़रीब, कुरूप और भद्दे स्वभाव का दास, सिर नीचा करके, आज्ञा-पालक की भाँति विनम्र दृष्टि से, अपने उस स्वामी के सामने खड़ा होता। यह गुण आदर्श मनुष्यों में भी नहीं पाया जाता। हम चाहे तो कह सकते हैं कि वह क्लाडेफ्रोलो को इतना प्यार करता था, जितना कोई प्रभु-भक्त कुत्ता, घोड़ा या हाथी भी अपने स्वामी को नहीं करता।

फिर क्लाडेफ्रोलो

सन् १४८२ में कासीमोडो करीब बीस वर्ष का हो चला था और क्लाडेफ्रोलो लगभग छत्तीस वर्ष का। एक की उठती जवानी थी, दूसरे की ढलती।

क्लाडे अब टोरची-कालेज का वह सीधा-सादा विद्यार्थी न था, जो किसी समय एक छोटे बालक के कोमल हृदय का संरक्षक था। अब वह एक कठोर, नीरस, गम्भीर उदास पादरी था जिसे दूसरों के अन्तःकरण की गुप्त बातों का संरक्षक कहना चाहिये। वह कई स्थानों का आर्चडिकन नियुक्त हो चुका था। वह उदास रहा करता था, इसलिये उसे देखकर लोगों के हृदय में भय उत्पन्न हो आता था। जिस समय वह चर्च के गुम्बजों के नीचे मे—विचार-निमग्न हो, दोनों हाथ जोड कर, सिर को इतना झुका कर कि उसके उन्नत ललाट के अतिरिक्त कुछ दिखाई न देता—धीरे-धीरे चलता था, उस समय भजन गानेवाले लडके, सन्त और चर्च-क्लर्क काँप उठते थे।

उसने अपना साइन्स का अध्ययन नहीं छोडा। छोटे भाई 'जेहन' की शिक्षा का प्रबन्ध भी करता रहा। यही दो उसके जीवन के खास पेशे थे, किन्तु इन मधुर चीजों में समय ने कडवापन ला दिया। 'जेहन' उसकी इच्छा के अनुसार न हो सका। उसने भाई

के बताये मार्ग को छोड़ दिया। बड़ा भाई उसे धार्मिक, पवित्र एवं परिश्रमी विद्यार्थी बनाना चाहता था। मगर वह उस पौदे की तरह—जो बागबान के सभी प्रयत्नों को मिट्टी में मिलाकर, सूर्य तथा हवा के आधार से, बढ़ता है—अपनी राह पर चलने लगा। उसकी सायेग्गर शाखाएँ आलस्य, अज्ञानता और विषय-भोग की ओर बढ़ने लगीं। वह अत्यन्त असंयमी हो गया। वह एक छोटा-मोटा शैतान ही था। इस कारण फ्राडे उसपर बड़ा क्रोधित रहता था। मगर वह इतना चतुर तथा वाक्‌पटु था कि फ्राडे क्रुद्ध होकर भी मुस्करा देता था।

फ्राडे ने उसे 'टोरची'-कालेज में भरती करा दिया, किन्तु उसे इस शैतान द्वारा अपनी बदनामी होते देख बड़ा दुःख होता था। वह कभी-कभी इसको लम्बा व्याख्यान भी सुनाता, पर यह चुपचाप सिर्फ सुन भर लेता।

जो हो, जेहन था नेक दिल। व्याख्यान समाप्त होते ही वह शान्तिपूर्वक अपना रास्ता पकड़ लेता।

फ्राडे के पास उसके बुरे कामों की शिकायतें आने लगीं। एक बार उसने विद्यार्थियों का अगुवा बनकर एक सरायवाले की मदिरा लुढ़का दी। फिर एक रिपोर्ट यह आई कि जेहन जुआ खेलने जाता है। वास्तव में सोलह वर्ष के लड़के के लिए ये बातें कलंक-स्वरूप थीं।

क्वासीमोडो की करतूतों से फ्राडे के भ्रातृ-प्रेम को बड़ा धक्का पहुँचा। वह हतोत्साह तथा खिन्न रहने लगा। वह इधर से विरक्त-

सा होकर फिर विज्ञान में जी-जान से जुट गया। उसकी विद्या बढ़ती गई। फल-स्वरूप वह कट्टर पादरी हो गया।

प्रत्येक मनुष्य की बुद्धि एवं चरित्र में एक समान दूरी होती हैं। ये गुण समानान्तर की दूरी पर बढ़ते जाते हैं। इन्हें केवल जीवन की कोई बड़ी घटना ही अस्तव्यस्त कर सकती है।

युवावस्था में फ्राटे ने यथेष्ट ज्ञान-संचय कर लिया था। ज्ञान वृक्ष के प्रत्येक फल को उसने चखा था, किन्तु अतिशय क्षुधा वृद्धि के कारण उसने वर्जित फल को भी काट खाया।

उसने दूसरे क्षेत्रों में भी प्रवेश किया। साधारण साइंसों के पढ़ लेने पर रसायन-विद्या, ज्योतिर्विद्या तथा अन्यान्य विद्याओं का भी अध्ययन कर डाला।

यह सही है कि वह अब भी अपने माता-पिता की कब्रों के पास जाता था, मगर उन पर बने हुए 'क्रासों' में उसको कुछ दिलचस्पी नहीं मिलती थी। वह केवल प्राचीन कब्रों पर की पुरानी लिखावटों को पढ़ने में ही व्यस्त रहता था।

अब वह बहुधा कमरों की दीवारों पर अपना नाम—या जो कुछ पसंद आता—लिखा करता था। उसने अपने पैतृक घर की दीवारों को खरोंच डाला था। घर के आँगन को गोड़ते हुए भी लोगों ने उसे देखा था। वह 'दार्शनिकों का पत्थर' खोज रहा था।

ऐसी विचित्र किम्वदन्तियाँ उसके विषय में बहुत उड़ने लगीं।

नाट्रीडेम के फाटक के ऊपर जो पत्थर पर मंत्र लिखा था, उसमें वह बड़ी दिलचस्पी लेने लगा। चित्रों और मूर्तियों की लिपि के

अर्थ की वह घंटों खोज करता। चर्च को वह प्यार करता था। कासीमोडो भी चर्च को प्यार करता था। मगर दोनों का प्यार ने कारणों से था। कासीमोडो प्यार करता था उसके वृहदाकार और सौष्ठव के लिये, फ्राडे प्यार करता था उसकी महत्ता—उससे सम्बन्ध रखने वाली किम्वदन्तियों तथा उसकी गुप्त अर्थवाली चित्र-लिपियों और मूर्त्तियों के लिये।

उसने अपने अध्ययन के लिये ग्रीव-स्क्वायर की ओर के दो मीनारों में से एक पर की एक तंग कोठरी ठीक की थी। उसकी आज्ञा के बिना कोई भी उस तंग कोठरी में नहीं जा सकता था। उस कोठरी में क्या था, किसी को कुछ ज्ञात न था। मगर लोग कहते हैं कि कभी-कभी उसकी खिड़की से, थोड़ी देर के अन्तर पर, रोशनी दिखाई देती थी। वह रोशनी अग्निशिखा की मालूम होती थी, मोमबत्ती की नहीं। अन्धकार में, उतनी ऊँचाई से, उस रोशनी का विचित्र असर होता था। लोग कहते थे—वह देखो, आर्चडिकन फिर फूँक रहा है, वह नरक में चिनगारियाँ निकल रही हैं।

इन सब बातों में इन्द्रजाल का कोई प्रमाण न था, तो भी काफी धुआँ उठने से यह मान लिया जाता था कि वहाँ अग्नि है। आर्चडिकन का खासा नाम हो चला। यहाँ यह कह देना उचित है कि उस समय फ्राडे से बढ कर जादू का कोई दूसरा बड़ा शत्रु न था। चाहे वह जादू से सचमुच घृणा करता हो या यह उसकी चालबाजी ही हो, लेकिन लोग इतना अवश्य कहते

थे कि वह नरक के जानने का प्रयत्न कर रहा है या अवकाश में गिर कर दैवी विद्या को टटोल रहा है।

लोगों को धोका न हुआ। वे कासीमोडो को राक्षस तथा क्लाडे को ऐन्द्रजालिक समझते थे। यह स्पष्ट हो चुका है कि घण्टा बजानेवाला एक निश्चित समय तक आर्चडिकन की सेवा करने को बाध्य था। इतना कठिन जीवन व्यतीत करने पर भी लोग उस पर शंका करते और उसे ऐन्द्रजालिक कहते थे।

ज्यों-ज्यों उसकी उम्र बढ़ती गई, त्यों-त्यों उसकी वैज्ञानिक जानकारी में अभाव मालूम होने लगा। उसका हृदय भी शून्य था। उसके चेहरे को देखने में—जहाँ आत्मा का प्रतिबिंब कठिनाई से पड़ता था—ऐसा ही विश्वास होता था। उसका सिर सर्वदा झुका रहता था, उसकी छाती से आह निकला करती थी, अप्राकृत हँसी हँस उठता था, उसके रहे-सहे बाल इसी उम्र में सफेद हो गये थे। इन सब का कारण नहीं जान पड़ता था। हाँ, न जाने उसके अन्तःकरण में वह आग कैसी थी, जो कभी-कभी उसके नेत्रों से होकर चमक उठती थी। उस समय उसके नेत्र भट्टी की दीवार के छिद्र-जैसे प्रतीत होते थे।

सदाचार के नियमों के पालन में अधिक संलग्न रहने के कारण उसके चेहरे पर एक प्रकार की कठोरता आ गई थी। उसकी दृष्टि ऐसी अमानुषिक हो गई थी कि लड़के उसको देखकर भाग चलते थे। चर्च की मरम्मत करनेवाले मजदूर, पवित्र स्थानों में काँटे की कुरूच देखकर, दंग रह जाते थे।

फ्राडें सदा स्त्री-समाज से दूर ही रहता था। इस विषय में उसका आत्मशासन बड़ा कठोर था। वह स्त्रियों को घृणा की दृष्टि से देखता था। रेशम के घाँघरों और कुर्तियों की आहट पाकर वह अपनी आँखों को छिपा लेता था। इस सिद्धान्त में वह यहाँ तक कट्टर था कि १४८१ में जब राजकुमारी ने चर्च देखने के लिए आना चाहा तो उसका उसने यथाशक्ति विरोध किया। उसका कहना था कि स्त्रियों को पादरियों के निवास-स्थान देखने का अधिकार नहीं है। इस विषय पर विशप के साथ उसकी बहस भी हुई थी। इतना ही नहीं, उसने राजकुमारी के सामने जाना तक अस्वीकार कर दिया।

लोग यह भी कहते थे कि वह जिप्सियों से बहुत डरता या घृणा करता था। यह घृणा कुछ दिनों से बढ़ती जा रही थी। उसने विशप से ऐसी आज्ञा जारी करने की प्रार्थना की थी कि गिरजे के सामने के मैदान में कोई जिप्सी आकर न खँजड़ी बजावे—न नाचे। उसने सब जाननेवाली डाइनों तथा जादूगरों के मामलों की जाँच करने में बड़ा परिश्रम किया था—खासकर उनकी, जिन्होंने बकरी, सूअर या भेड़ के साथ इन्द्रजाल करने के अपराध में सजा पाई थी।

वदनामी

पहिले कहा जा चुका है कि आर्चडिकन और घटा बजानेवाले को गिरजे के पडोसी—बालक या वृद्ध—प्यार नहीं करते थे—यहाँ तक कि कृपा दृष्टि से भी नहीं देखते थे। जब वे दोनों साथ-साथ कहीं जाते थे—जैसा वे बहुधा करते थे—तब नाट्रीडेम के समीप की तग और अँधेरी गलियो से गुजरते वक्त ईर्ष्या भरी बातें, व्यग-भरे सम्बोधन और अपमानजनक दिल्लगी से उनके दिल पर चोट पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता था। मगर जिस समय क्लाडे अपने सिर को ऊँचा करके चलता था, उस समय उसकी कठोर तथा राजोचित भौंहो को देखकर किसी को कुछ कहने का साहस न होता।

उस स्थान मे वे दोनों उन कवियो के समान थे, जिनके विषय मे लिखा है कि सब प्रकार के मनुष्य कवियों को देख कर उतावले हो भाग जाते हैं, जैसे उल्लू के कारण गानेवाले पक्षी डर कर भाग जाते हैं।

कभी कोई, अपनी हड्डियों की परवा न कर, कासीमोडो के कूबड में पिन—सुई—गडा देता। कभी कोई सुन्दर हास्यप्रिय और दुस्साहसी युवती, पादरी के समीप से निकल कर, व्यग भरे स्वर मे उसके कानों के पास गा उठती—

'छिपो, छिपो, शैतान यहाँ आया है।'

बुढ़ियाँ कहा करती थीं—इनमे एक की आत्मा उतनी ही कुरूप है, जितना दूसरे का शरीर।

विद्यार्थी तथा सिपाही भी व्यंग के साथ उनका स्वागत करते थे।

किन्तु वे दोनो उन अपमानों की ओर ध्यान न देते थे। क्वासीमोडो बहरा था और पादरी फ्राडे सर्वदा स्वप्न-जगत् मे रहा करता था, इसीलिये वह इन उत्तम भाषणों को सुन न पाता था।

राजवैद्य

फ्राडे का यश सौरभ दिग्दिगन्त में व्याप्त हो चला था। जिस समय उसने राजकुमारी से भेंट करना अस्वीकार कर दिया, उस समय उसके यहाँ एक व्यक्ति आया, जिसके आगमन को वह बहुत दिनों तक नहीं भूल सका।

सन्ध्या हो चली थी। फ्राडे पूजा-पाठ से निवृत्त हो अपने न्या एकान्त पाठ गृह में जा बैठा। उस कमरे में थोड़ी-सी शीशियाँ थीं, जिनमें गन-पाउडर की तरह का कोई शंकाजनक पाउडर था; किन्तु वह भयानक नहीं था। दीवारों पर इधर-उधर बड़े, लाल के विज्ञान विषयक वाक्य खुदे थे। तीन बत्तियों का एक दीप जल रहा था। बहुत-सी हस्त लिखित किताबें भी रक्खी थीं। एक किताब को वह बड़े ध्यान से देखता और उसके पेजों को उलट रहा था। उसके पास केवल यही एक छपी पुस्तक थी। उसी समय किसी ने दरवाजा खटखटाया।

कौन है?—पादरी फ्राडे ने पूछा।

उसका स्वर उस कुत्ते के स्वर से मिलता-जुलता था जो हड्डी चाटने में बाधा पड़ने पर गुर्रा उठता है।

बाहर से उत्तर आया—आपका मित्र जेक्-को-डीयर।

पादरी ने तुरन्त द्वार खोल दिया।

सचमुच आगन्तुक—बादशाह का वैद्य—'कोक्तीयर' था। उसकी अवस्था पचास वर्ष की जान पड़ती थी। उसके मुख का भाव बड़ा कठोर था, मगर उस कठोरता को सँवारनेवाली उसकी चतुर दृष्टि थी। उसके साथ एक दूसरा आदमी भी था।

उसका स्वागत करते हुए पादरी फ्राडे ने कहा—ईश्वर की कृपा है! इस समय—इतनी देर को—मुझे आप-जैसे महान् व्यक्ति के शुभागमन की आशा न थी।

इतना कहते हुए फ्राडे ने उस अपरिचित व्यक्ति की ओर एक चिन्तापूर्ण एव जिज्ञासा-भरी दृष्टि डाली।

आप-जैसे यशस्वी विद्वान से भेंट करने के लिये कोई भी समय कुसमय नहीं है—राजवैद्य ने उत्तर दिया।

उसके वाक्य इस प्रकार एक दूसरे का अनुसरण करते थे, जैसे किसी महिला के भूमि पर सुहगने वाले कपड़े उसके साथ खिंचे चले जाते हैं।

उन लोगों मे बड़ी देर तक शिष्टाचार होता रहा। यह तो उनके विवाद का श्रीगणेश था। उन दिनों की ऐसी ही रीति थी। इस शिष्टाचार-रूपी भूमिका से उनके विवाद या घृणा-द्वेष मे कुछ रुकावट नहीं पड़ती थी। आज भी वही मामला है—एक विद्वान् की जिह्वा, जिससे वह दूसरो को प्रशसा करता है, मधु-भरा विष का प्याला है।

फ्राडे ने वैद्य को, उसकी सासारिक उन्नति के लिए, बधाई दी। दोनों की बातों मे व्यग था। पादरी की बातें वैसीही होती थीं, जैसी

किसी अभागे महान व्यक्ति को वे बातें होती हैं, जिन्हें वह अपने मनोरंजन के लिए किसी गँवार की धन-वृद्धि की प्रशंसा में कहता है।

राजवैद्य अपने दुःख की कहानी ही अधिक कहता था—आज कल रुपये की बड़ी कमी है, बादशाह अपने हकीम को पूरी फीस नहीं देते। यही सब उसकी बातें थीं।

फिर उसने दूसरे आगन्तुक की ओर इशारा करके कहा—भाई, मैं तुम्हारे साथ काम करने को एक आदमी लाया हूँ। यह तुम्हारे नाम और यश को सुनकर तुमसे मिलने के लिए बहुत उत्सुक थे।

विज्ञान के विद्वान ?—पादरी ने पूछा।

उस आगन्तुक को फाड़े एक-टक देखने लगा। वह अपरिचित भी उसी प्रकार उसकी ओर स्थिर दृष्टि से देखने लगा।

उसकी अवस्था लगभग साठ वर्ष की थी। वह औसत ऊँचे का आदमी था। उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी नहीं थी। वह कुबड़ा मालूम होता था। उसकी भौंहों के नीचे उसकी आँखें ऐसी चमकती थीं, जैसे कब्र की सतह से रोशनी निकलती हो। उसके उन्नत चौड़े ललाट से मालूम हो जाता था कि वह कोई बड़ा विद्वान है।

पादरी के सवाल का जवाब उसने आप-ही-आप दिया।

श्रद्धेय महोदय!—उसने गंभीर स्वर से कहा—आपका यश मैंने सुना है और मेरी इच्छा आपसे सलाह लेने की है। मैं केवल देहात का रहनेवाला एक भद्र व्यक्ति हूँ, जो विद्वानों के सम्मुख

जाने का साहस करने से पहिले अपने जूतों को उतार लेता है। मेरा नाम 'फादर तोरेंगो' है।

पादरी ने समझ लिया कि उसके सामने कोई मामूली आदमी नहीं है। राजवैद्य की ऊँची मस्तिष्क-शक्ति ने उसे जतला दिया कि तोरेंगो के वक्षस्थल में एक महान् आत्मा छिपी है। जिस समय पादरी ने उसके गंभीर मुख-मण्डल का अध्ययन करना चाहा, उसी समय पादरी के मुख से वह व्यंग भरी मुस्कराहट—राजवैद्य को देखकर आप ही आ गई थी—सहसा चली गई, जैसे गोधूली का प्रकाश निशा के आगमन के साथ ही विलीन हो जाता है।

अपने सिर को हाथ पर रखकर क्राडे सँभलकर बैठा। थोड़ी देर के बाद उसने दोनों आगन्तुकों को बैठने का इशारा किया। फिर तोरेंगे से पूछा—आप मुझसे परामर्श करने आये हैं? क्या परामर्श का विषय जान सकता हूँ?

मान्यवर! मैं बहुत बीमार हूँ, लोग कहते हैं कि आप बड़े अच्छे चिकित्सक हैं, इसलिये मैं औषधि के विषय में आप की सलाह लेने आया हूँ—तोरेंगो ने कहा।

औषधि के विषय में सलाह!—सिर हिलाकर पादरी क्राडे ने उत्तर दिया।

थोड़ी देर तक मालूम हुआ कि वह आप ही परामर्श कर रहा है। फिर बोला—उधर देखिये, मेरा उत्तर आप को दीवार पर लिखा मिलेगा।

तोरेंगो ने घूमकर अपने सिर के पास दीवार पर एक वाक्य पढ़ा—'औषधि स्वप्न की पुत्री है।'

डाक्टर कोक्तीयर को पहिले तो तोरेंगो के प्रश्न से ही बड़ी अप्रसन्नता हुई, और पादरी के उत्तर मे वह और बढ़ गई। उसने झुककर 'तोरेंगो' के कान मे धीरे से कहा—मैंने आप से कहा था कि यह पागल हो गया है, मगर आपने इसे देखने की अपनी जिद न छोडी।

यह पागल ठीक रास्ते पर भी हो सकता है डाक्टर जैक!—एक कड़वी मुस्कान के साथ 'फादर तोरेंगो' ने उत्तर दिया।

जैसी आपकी मर्जी—निश्चिन्तता दिखाते हुए डाक्टर ने कहा। फिर पादरी क्लाडे की ओर घूमकर कहने लगा—आप अपनी विद्या में बड़े चतुर हैं। किन्तु मुझे आशा है कि प्राचीन रासायनिक विद्वान यदि आज जीते होते, तो आपको ढेलो से बिना मारे छोड़ते। क्या आप पेय औषधियो तथा मलहमों के असर अस्वीकार करते हैं? क्या आप इसे भी अस्वीकार करते हैं कि वनस्पति तथा खनिज पदार्थ आजीवन-रोगी मनुष्य के लिये बनाये गये हैं?

मैं तो न औषधि को अस्वीकार करता हूँ और न रस या रोगी को, मैं तो वैद्य ही को अस्वीकार करता हूँ—पादरी क्लाडे ने शान्त भाव से कहा।

डाक्टर कोक्तीयर ने डाक्टरी भाषा में, जिसे केवल डाक्टर ही समझ सकते हैं, बहुत-सी औषधियों तथा रोगों के नाम गिनाए।

पादरी फ्राडे ने शान्त भाव से उत्तर दिया—कुछ चीजें ऐसी जिन्हें मैं खास तरीके से समझता हूँ।

कोस्तीयर क्रोध से लाल हो गया।

भाई कोस्तीयर, रुष्ट न होओ, आर्चडिकन (फ्राडे) हमारे मित्र हैं—फादर-तोरेंगो ने कहा।

ठीक है, वह पागल जो है—धीरे से यों कहते हुए डाक्टर साहब शान्त हुए।

वाह मास्टर फ्राडे!—तोरेंगो ने ठहर कर कहा—आपने तो मुझे खूब चकमा दिया। मुझे दो बातें पूछनी थीं—एक तो अपने स्वास्थ्य के विषय में, दूसरी अपने भाग्य के विषय में।

महाशय! यदि आप को यही पूछना था, तो अच्छा होता कि आप इन सीढ़ियों पर चढने का कष्ट न उठाते। मैं दवा में विश्वास नहीं करता, ज्योतिष में भी मेरा विश्वास नहीं है—पादरी फ्राडे ने स्पष्ट उत्तर दिया।

सचमुच?—अपरिचित ने आश्चर्य से पूछा।

डाक्टर जबर्दस्ती हँस पड़ा।

अब आपको ज्ञात हो गया कि यह पागल है—तोरेंगो से डाक्टर ने पूछा—ज्योतिष में इसका विश्वास नहीं है?

कोई कैसे विश्वास करले कि हर एक नक्षत्र एक सूत्र है, जिसका सम्बन्ध मनुष्यों के ललाट या भाग्य से है?—पादरी फ्राडे ने कहा।

आप कृपया बता सकते हैं कि आप किस चीज में विश्वास करते हैं?—तोरेंगो ने पूछा।

पादरी क्लाडे थोड़ी देर दुविधा में रहा, फिर एक मन्द मुस्कान के साथ बोला—मैं एक ईश्वर और उसके पुत्र ईसा में विश्वास रखता हूँ।

तोरेंगो ने क्रास का चिन्ह बना कर लेटिन भाषा में कुछ कहा। डाक्टर ने भी कहा—तथास्तु।

श्रद्धेय महोदय! मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आप सच्चे ईसाई हैं। निस्सन्देह आप बड़े विद्वान् हैं, किन्तु क्या आप उस अवस्था को प्राप्त कर चुके हैं, जिसमें पहुँचकर विज्ञान पर विश्वास नहीं रह जाता?—तोरेगों ने कहा।

नहीं—तोरेंगो का हाथ पकड़ते हुए पादरी क्लाडे ने कहा। उसके नेत्रों मे उत्साह की ज्योति चल उठी। वह कहता ही गया—नहीं, मैं विज्ञान को असत्य नहीं समझता, मैं इतने दिनों तक व्यर्थ ही खाक नहीं छानता रहा हूँ।

तब कहिये, आप किसको सत्य और स्थायी समझते हैं?—तोरेंगो ने पूछा।

रसायन या कीमिया को—उत्तर मिला।

कोक्तीयर बोल उठा—खूब कहा डान क्लाडे! रसायन सचमुच प्रशसनीय है, किन्तु वैद्यक-शास्त्र तथा ज्योतिष को तुम क्या बदनाम करते हो?

क्योंकि वे कुछ नहीं हैं—क्लाडे ने अधिकार के साथ उत्तर दिया—मास्टर जेक्रू! मैं अपना विश्वास बता रहा हूँ। बादशाह ने न मुझे अपना वैद्य ही नियत कर रक्खा है, न नक्षत्रों की गति क

अध्ययन करने के लिए वेधशाला ही बनवा दी है। क्रोध न करो, शान्त होकर सुनो। आपको ज्योतिष से क्या नया सत्य मालूम हुआ है ?

इसके बाद उन दोनों में इन विज्ञानों पर बहस होती रही। दोनों अपने-अपने विज्ञान की प्रशंसा में प्रमाण देने से थकते न थे। पादरी क्लाडे ने अँगुलियों पर हजारों आविष्कारों के नाम गिना डाले—कैसे बर्फ पत्थर हो जाती है, सीसे से टीन और टीन से चाँदी तथा अन्त में कैसे सोना बन जाता है, इत्यादि।

पादरी क्लाडे अग्नि की तरह प्रचण्ड हो उठा। उसने डाक्टर को बोलने ही नहीं दिया। वह बकता ही चला गया। कैसे उसने वैद्यक पढ़ा, कैसे ज्योतिष पढ़ा, कैसे संसार की सारी विद्याएँ छान डालीं—तो भी कुछ हाथ न लगा, सारी बातें कह गया। अन्तमें कहा—केवल सोना बनाना ही सही है—सोना बनाना, ईश्वर हो जाना है।

यह कहते-कहते वह अपनी जगह बैठ गया। तोरेंगो उसे शान्त-चित्त हो देख रहा था। डाक्टर ने अपने कंधों को धीरे से हिलाते हुए कहा—पागल।

तोरेंगो ने झट कहा—आपका लक्ष्य तो सचमुच ऊँचा है, पर क्या आप उसे पा सके हैं ? आपने सोना बनाया है ?

विचार मग्न मनुष्य की तरह क्लाडे ने धीरे से कहा—यदि मैं सोना बनाये होता, तो फ्रांस का बादशाह 'लुई न कहलाकर 'क्लाडे' कहलाता ?

तोरेंगो के चेहरे पर क्रोध झलक आया।

आह, पागल!—कोर्चीयर ने धीरे से कहा।

क्लाडे कहता ही रहा, मानों वह अपने-आप ही से कह रहा हो—किन्तु नहीं, मैं अभी घुटनों ही पर चलता हूँ। निगूढ़ मार्गों मे चलने से मेरे तलवे छिल जाते हैं। अभी तक मैं पूरे प्रकाश को नहीं देख पाया। मैं पढ नहीं पाता, अभी हिज्जे करता हूँ।

जब आप पढ पाओगे तब सोना बनाओगे?—तोरगो ने पूछा।

इसमें भी सन्देह है?—पादरी ने उत्तर दिया—ऐसी अवस्था मे नाट्रीडेम को ज्ञात है कि मुझे रुपये की कितनी आवश्यकता है।

मैं प्रसन्नता से आपकी पुस्तकों को पढ़ना सीखूँगा—श्रद्धेय मास्टर—क्या आप मुझे बता सकते हैं कि आप का विज्ञान नाट्रीडेम के खिलाफ तो नहीं है?

क्लाडे ने इस प्रश्न का उत्तर, गभीर भाव से, अपनी महत्ता का ध्यान रखते हुए, दिया—जिसका मैं आर्च-डिकन हूँ?

आप ठीक कहते हैं। अच्छा, तो आप मुझे भी पढ़ाने की कृपा करेंगे? तोरेंगो ने कहा।

वृद्ध महाशय! इस यात्रा को पार करने के लिए बहुत समय की आवश्यकता है। आपके पास जो कुछ समय शेप रह गया है, वह पर्याप्त न होगा। इस गुफा से बिना सित-केश हुए कोई बाहर न निकला, किन्तु इसमे किसी ने सफेद बालों के साथ पदार्पण भी नहीं किया। मनुष्यों के चेहरे पर झुर्रियाँ डालने मे, उसे तोड मरोड़

डालने में, निज्ञान बड़ा चतुर है। फिर भी, यदि आप की इच्छा है, तो आप आइये, मैं यथाशक्ति सहायता दूँगा। मैं आपको मिश्र के पिरामिड, बेबिलोन के स्तूप और भारत के एकलिंग मन्दिर को देखने का भार देना नहीं चाहता। ससार के बहुत-से महत्वपूर्ण स्थानों को देखने का अब समय नहीं है। मैं यहीं के महलों की मूर्तियों, चित्रों और कारीगरियों को समझाने का प्रयत्न करूँगा।

कोकीयर, पादरी छाडे के इस भावुक उत्तर से, घबरा गया।

फिर छाडे ने फादर लोरेंगो से कहा—आप को मैं दिखाऊँगा कि इस कुल्हिया मे कितने सोने के कण हैं, तब आप इसकी समता पेरिस के स्वर्ण से कर देखियेगा।

इसके बाद पादरी छाडे ने एक ही साँस में पेरिस के बहुत से मकानों और कब्रों का भेद बताने को कहा।

लोरेंगो बीच ही में बोल उठा—आपकी पुस्तके कैसी हैं?

उनमे एक यह है—अपनी तग कोठरी की खिड़की खोलते हुए छाडे ने नाट्रीडेम की ओर इशारा किया। फिर शान्त होकर उसने आलीशान महल की ओर देखा। इसके बाद साँस लेकर छपी पुस्तक को दिखाते हुए—जो मेज पर खुली पड़ी थी—अपने बाये हाथ से नाट्रीडेम की ओर इशारा करके कहा—अफसोस। एक दूसरे का घातक होगा।

कोकीयर ने कहा—क्यो, इस किताब मे तो कोई भयजनक बात नहीं है। यह कुछ नई भी नहीं है। क्या इसके छपे होने मे आप को भय लगता है?

यही बात है—विचारमग्न पादरी क्राडे ने उत्तर दिया—अफसोस ! अफसोस ! छोटी चीजें बडी को हरा देती हैं। नाइल नदी का चूहा मगर को मारता है, छोटी मछली ह्वेल को मारत हैं, पुस्तक भी मकान को मार डालेगी।

उसी समय सोने की घटी बजी। जेक़ू कोक्टीयर ने अपन साथी के कान में कहा—यह पागल है।

इसका उत्तर उस अपरिचित (तोरेंगो) ने दिया—मेरा भी यही विश्वास है।

उस मठ में उस समय कोई बाहरी आदमी न रह सकता था। दोनो मिहमान जाने लगे।

तोरेंगो ने कहा—मास्टर ! मैं विद्वानों तथा विभागशरों को बहुत चाहता हूँ और मैं आपको आदर की दृष्टि से देखता हूँ। कल आप 'तोरनेल' के महल मे आइये और सेण्ट-मार्टिन के 'एबाट (मठाधीश) को याद कीजिये।

पादरी क्राडे को यह जानने की बडी उत्सुकता हुई कि तोरेंगो वास्तव में कौन था।

ऐसा कहा जाता है कि उस समय से पादरी क्राडे ग्यारहवें 'लुई' से बहुधा मिला करता था। उसके मान और उसकी साख ने जेक़ू कोक्टीयर के यश को ग्रस लिया। इसके लिए कोक्टीयर बादशाह को बहुत बुरा-भला कहता रहा।

कचहरी में

सन् १४८२ ई० में पेरिस नगर के कोतवाल का नाम 'मास्टर नर्ट' था। वह कुलीन और भाग्यशाली व्यक्ति था। वह राजा सलाहकार, राज-दरबार का उच्चाधिकारी, जज और परिस का र्टी मैजिस्ट्रेट—सब कुछ था। उस पद को वह ७ नवम्बर र् १४६५ से सुशोभित कर रहा था। वह पद केवल प्रतिष्ठा के ए था—न कि आफिस का काम करने के लिए। आफिस की गरानी का काम उसे दिया गया था और सचमुच वह उसकी च्छी तरह से रक्षा कर रहा था। वह उस पर इस प्रकार धाक माये हुए था, उसकी भीतरी बातों से इतना परिचित था, अपने उस का ऐसा अनिवार्य अग बना लिया था कि लुई के परिवर्तन- ल होते हुए भी वह स्वय उस स्थान से कभी विचलित न हुआ, फिस उसके कब्जे से बाहर न होने पाया। इतना ही नहीं, उसने पने लडके के लिए भी उस पद का उत्तराधिकार प्राप्त कर लिया , क्योंकि वह पद राजकृपा का एक असाधारण चिन्ह था।

गार्ट पक्का सिपाही था। वह जनता के हितो के विरुद्ध हस पूर्वक अपना झण्डा ऊँचा रखता था। उसने रानी को ाई का—(चीनी का बना ?)—एक हिरन उपहार में दिया था! के अतिरिक्त राज-भवन का कोतवाल उसका परम मित्र था।

इसलिए उस का जीवन आनन्द मे कट रहा था। मोटे वेतन के अतिरिक्त आमदनी के भी बहुत-मे जरिये थे। पेरिस के प्याज-लहसुन के बाजार का टैक्स उसी के रजिस्टर म—या पाकेट मे ?—जाता था।

इतना आनन्द होते हुए भी, सन १४८८ की ७ वीं जनवरी को प्रात काल वह बहुत चिडचिडाया हुआ उठा। यह चिडचिड़ापन क्यो ? वह स्वय भी इसका कारण नहीं जानता था। क्या आकाश मे बादलो का घिर आना इसका कारण था, या कुछ बदमाशों का शोर मचाते हुए उसकी खिडकी से निकलना ? पाठक चाहे जो समझे, मै तो यही समझता हूँ कि वह चिढने ही के लिए चिढा था।

छुट्टी के बाद का दिन था। सबके लिए यह बडा बुरा दिन है—खासकर उस सिटी-मैजिस्ट्रेट के लिए, जिसका छुट्टी के कारण नगर मे एकत्र हुए कूड़े-करकट का हटाना काम था। उस दिन ग्रैंट-चातलेत में उसे कचहरी करनी थी।

जजो का यह गुण है कि जिस दिन उनका मिजाज ठीक नहीं रहता, उसी दिन कचहरी करते हैं, ताकि राजा, कानन एवं न्याय के नाम पर किसी के ऊपर वे अपना क्रोध सफल कर सकें।

अस्तु। मास्टर राबर्ट के आने से पहले ही कचहरी का कार्य प्रारम्भ हो गया था। सदा की रीति के अनुसार उसके अधीनस्थ अफसर, फौजदारी और दीवानी के दफ्तरो मे, अपना-अपना काम कर रहे थे। सवेरे से ही स्त्री-पुरुषों का झुंड आकर, इजलास के

कमरे के कोने मे खड़े होकर, सिटी-मैजिस्ट्रेट के पेशकार 'मास्टर फ्लोरियन वारवेडियने' का न्याय शासन देख रहा था।

कमरा छोटा था। उसमे एक मेज पडी थी। मैजिस्ट्रेट की कुर्सी वहीं खाली पडी थी। पेशकार के लिए एक तिपाई रक्खी गई थी। नीचे बैठा हुआ मुन्शी कुछ लिख रहा था। उसके सम्मुख दर्शकों की भीड थी। दरवाजे पर मैजिस्ट्रेट के सिपाही लाल वर्दी मे खडे थे। एक कमानीदार खिड़की से प्रकाश आ रहा था।

अपनी कुहनियों को टेककर, कागज के दो बण्डलों के बीच मे, पेशकार झुका बैठा था। उसकी भूरी भौंह उसकी 'बालो की टोपी' का एक भाग मालूम हो रही थीं।

वह बहरा था। पेशकार के लिए यह कोई बहुत बडा दोष नहा था। बहरा होने पर भी तो वह ऐसा फैसला करता था, जिसकी अपील नहीं हो सकती थी। यदि जज ध्यान पूर्वक मामला सुने, तो और चाहिये ही क्या? पेशकार मे यह गुण कूट-कूटकर भरा था। न्याय-शासन के लिये ध्यान की एकाग्रता बहुत आवश्यक है। शोर के कारण पेशकार का ध्यान बँटता न था।

उस भीड मे उसके कार्यों तथा तर्कों के क्रूर समालोचक हमारे मित्र 'जेहन फ्रोलो' विद्यमान थे। क्लास मे प्रोफेसर की मेज के सामने छोडकर उन्हें आप पेरिस के किसी भी स्थान में पा सकते थे।

जेहन, राबिन-पौसेपीन से, उपर्युक्त दृश्य की आलोचना कर रहा था। उसने कहा—ठहरो मित्र! वह देखो, नये बाजार के

रोटीवाले की सुन्दर लड़की 'जेहनेतन' भी यहाँ है। मेरे मन की कसम, इस बुड्ढे मरदूद ने उसे सजा दे दी है। इसकी आँखें इसके कानों से अच्छी नहीं हैं। यह बहरा ही नहीं, अन्धा भी है। गुरियों की दो लड़ियों की माला पहनने के हेतु १५ पेंस ४, फार्दिंग का अर्थ-दण्ड।

वह प्रत्येक अभियुक्त का नाम और गुण बयान करने लगा, मानो पेरिस के प्रत्येक निवासी की छठी में उसने भोज खाया था।

वह आगे बढ़ता गया। वह देखो—दो भलेमानस।—एगनत और हटीन। ओहो! वे जुआ खेलते रहे हैं। हम कब अपने रेक्टर को यहाँ देखेंगे? बादशाह के वास्ते भी १०० पौंड का अर्थ दण्ड होता। पेशकार का दिया हुआ दण्ड बहरे आदमी द्वारा की गई चोट की तरह कड़ा होता है, पर, यदि इसका भय मुझे जुआ खेलने से रोक सके, तब तो? जुआ! मैं तुझे कितना प्यार करता हूँ! मेरी यही इच्छा है कि दिन-भर जुआ, रात-भर जुआ खेलूँ, जीते-जी और मरते दम तक जुआरी बना रहूँ। अन्त में जब मेरी गुदड़ी भी न रहे, तो आत्मा को बाजी में लगा दूँ! यहाँ कितनी लड़कियाँ पवित्र कुमारी हैं? लेकुइयरे, इजाबो, बेनार्डे गिरोनिन—खुदा क़सम, मैं सबको जानता हूँ। मित्र! इन्हें प्राप्त कर लो—इन्हें प्राप्त करना ही तड़क-भड़क से रहने का ढंग सिखला देगा! इन मनमोहनियों को फँसाने के लिए पेरिस का दस पेंस पर्याप्त है! ओह! यह जजों में कैसा पुराना कुत्ता है—बहरा और निर्दय! ओ फलोरियन, मोटू कहीं का! ओ बारवेडियने, अनाड़ी कहीं का

देखो, वह कैसे मेज पर झुका है। वह मवक्किलों को निगल जाता है, मुकदमों को हड़प जाता है, अटक-अटक कर बोलता है, चपर-चपर खाता है, पेटू है! जुर्माना, हर्जाना, तावान, सौंसत, जेल—उसके लिये क्रिसमस के मालपुए हैं! जरा उस सुअर की शक्ल तो देख लो। वह कौन आदमी है? वह क्या कसम खाता है? वे किसको ला रहे हैं? सिपाहियों की कितनी भीड़ है! जुपिटर की कसम, यहाँ के सब कुत्ते इकट्ठे हो गये हैं। यह उनका सबसे अच्छा शिकार जान पड़ता है। कोई जंगली सुअर होगा। राबिन! यह तो वही घण्टा बजानेवाला, काना, कुबड़ा, कुरूप 'क़ासी-मोडो' है।

सचमुच वह दूसरा कोई न था, क़ासीमोडो ही कस कर बँधा था। सिपाही उसे घेरे हुए थे। वह धीर, निस्तब्ध और शान्त था। उसकी अकेली आँख क्रोधपूर्ण हो कभी-कभी अपने बंधन को देख लेती थी।

पेशकार बड़े ध्यान से उस मिसिल के पन्नों को उलट रहा था, जिसमें क़ासीमोडो के जुर्म दर्ज थे। क्लर्क ने उसके हाथों में अभी-अभी यह मिसिल दी थी। पढ़ लेने के बाद ऐसा जान पड़ा कि वह कुछ विचार कर रहा है। इस दूरदर्शिता या पूर्व-विधान के कारण, जिसे वह जिरह करने से पहिले काम में लाता था, वह अभियुक्त के नाम, पेशे और अपराधों से अवगत हो जाता था—अपने सवालों का उत्तर भी तय्यार कर लेता था, और इस प्रकार अपने बहरेपन को बिना प्रकट किये ही जिरह के झंझटों से बच जाता था। मिसिल

समझ नहीं पाता था कि मामला क्या है। जज को, क्रोध की अवस्थामें ही, आगे बढने को बाध्य होना पड़ा। उसे आशा थी कि वह अभियुक्त को भयभीत करके दर्शकों को चुप करने में समर्थ होगा।

चोर ! बदमाश ! तुमने 'चावलेत' के पेशकार को—जो पेरिस के पुलिस-कोर्ट का चीफ मैजिस्ट्रेट है—अपमानित करने का साहस किया है ? तुम नहीं जानते कि सब अपराधों और असभ्यता पूर्ण व्यवहारों की जाँच के लिए ही मेरी नियुक्ति हुई है ?

वह अपने सारे कामों को—जैसे बाजार का नियन्त्रण, सड़कों की मरम्मत आदि—गिनाने लगा। कोई कारण नहीं है कि एक बहरा दूसरे बहरे से बात करते समय रुक जाय !

उसी समय कोतवाल या सिटी-मैजिस्ट्रेट वहाँ आ पहुँचा। उसके आते ही पेशकार ने घूम कर कहा—स्वामिन् ! इस अभियुक्त को कोर्ट के भद्दे अपमान के लिए स्वेच्छानुसार सजा दीजिये—यही मेरी कामना है, माँग है।

पेशकार के चेहरे से बड़े-बड़े स्वेद-बिन्दु गिर कर कागजों को तर करने लगे। पेशकार उन्हें पोंछने में व्यस्त था।

मास्टर राबर्ट की भी त्योरी चढ गई। उसने कासीमोडो की ओर, ध्यान दिलाने के लिए, इशारा किया। बहरे ने भी उसका अर्थ समझ लिया।

बदमाश ! तुम यहाँ कैसे आया ?—मैजिस्ट्रेट ने पूछा।

बिचारे कासीमोडो ने समझा कि उसका नाम पूछा जाता है, इसलिये उसने अपनी कर्कश आवाज में कहा—कासीमोडो।

सवाले दीगर, जवाबे दीगर! सवाल और उत्तर में कुछ सम्बन्ध न होने से दर्शकों में हँसी का सोता फूट पड़ा। मास्टर रानर्ट ने क्रोध से लाल हो कर कहा—

निर्लज्ज शैतान! तू मुझसे भी दिल्लगी करता है?

नाट्रीडेम का घंटा बजानेवाला—कासीमोडो ने उत्तर दिया।

घंटा बजानेवाला सही!—मैजिस्ट्रेट ने कहा।

पहिले कहा जा चुका है कि सबेरे से ही मैजिस्ट्रेट का मिजाज चिड़चिड़ा हो रहा था, अतएव उसकी क्रोधाग्नि को प्रज्वलित करने के लिए ऐसे असगत उत्तरों की बहुत आवश्यकता भी नहीं थी।

ऐ घंटावाला! पेरिस की गलियों में मैं तेरी पीठ पर बेंत की घंटी बजवाऊँगा! सुनता है बदमाश?

यदि आप मेरी उम्र जानना चाहते हैं, तो मेरा विश्वास है कि मैं 'सेंट मार्टिन के दिन' बीस वर्ष का हो जाऊँगा!—कासीमोडो बोल उठा।

इतना बहुत था। मैजिस्ट्रेट के लिए यह असह्य था। क्रुद्ध होकर बोला—

दुष्ट! कोर्ट का अपमान करता है? सिपाही! इस पतित को 'मेर' के कठघरे में बन्द करके एक घंटे तक खूब पीटना। मैं हुक्म देता हूँ कि चार डुग्गियों द्वारा पेरिस नगर में इस सजा की सूचना दे दी जाय।

क्लर्क ने तुरन्त हुक्म को लिख लिया।

खुदा कसम, सजा कैसी दुरुस्त है—कोने में खड़े जेहन ने कहा।

मैजिस्ट्रेट ने कासीमोडो की ओर देखकर कहा—मैं समझता हूँ कि इसीने खुदा की कसम खाई है। क्लर्क! कसम खाने के लिए इसे १२ पेंस का अर्थ-दण्ड दो और उसमें से आधा सेंट यूसटेच के गिरजाघर को भेज दो। मुझे उस गिरजे से बड़ा प्रेम है।

थोड़ी देर में फैसला भी लिख गया, वह छोटा-सा ही था। उस समय तक कानून की वैसी उन्नति नहीं हुई थी—न वकीलों के शब्दों के नोच-खसोट से वह विकृत ही हुआ था। उस समय कानून साफ था—सरल था, थोड़ी देर में सब तय हो जाता था। उसकी चोट ठीक निशाने पर लगती थी। उसके हर-एक रास्ते के अन्त में दण्ड-चक्र और फाँसी की टिकठी स्पष्ट दिखाई देती थी। कम से कम आरम्भ ही से मालूम हो जाता था कि अन्त में क्या होने वाला है।

क्लर्क ने फैसले को मैजिस्ट्रेट के सामने रख दिया। उसने अपनी मुहर लगा दी। इसके बाद वह कोर्ट देखने के लिए चला गया।

जेहन और पौसेपीन हँस रहे थे।

कासीमोडो तटस्थ की तरह चुप था।

पेशाकार दस्तखत करने के पहिले फैसले को पढ रहा था। क्लर्क को कासीमोडो पर करुणा आ गई। सजा को कुछ कम कराने के लिए उसने पेशाकार के कान में, कासीमोडो की ओर इशारा करके, कहा—वह बहरा है।

उसे आशा थी कि बहरेपन की बात पेशकार के हृदय में दया तथा सहानुभूति का उद्रेक करेगी। मगर पहिले कहा जा चुका है कि वह अपने बहरेपन को प्रकट न होने देना चाहता था, दूसरे—क्लर्क का एक शब्द भी उसके कर्ण-कुहर मे प्रवेश न कर सका।

यह दिखाने के लिए कि मैंने सब सुन लिया है, पेशकार ने उत्तर दिया—यह दूसरा मामला है। मैं उसे नहीं जानता था। इस मामले में उसे कठघरे में एक घंटा और रक्खो।

उसने फैसले पर हस्ताक्षर कर दिया।

खूब किया! राबिन-पौसेपीन ने चिल्ला कर कहा—(क्योंकि कासीमोडो से वह खार खाता था)—दूसरों के साथ बुरा बर्ताव करने का अच्छा सबक मिला!

चूहे की मॉद

पाठक ! हमलोगों ने 'ग्रेव स्क्वायर' में मींगोयरे की इज्मेरल्डा का पीछा करने के लिए कल छोड़ दिया था, यदि आपकी अनुमति हो, तो हमलोग फिर वहाँ चलें।

सुबह दस बजे का वक्त है। वहाँ प्रत्येक वस्तु के देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि कल छुट्टी थी। टोपियों से गिरे हुए परों और मोमबत्ती के टुकड़ों से मैदान भरा है। मदिरा के व्यापारी अपने पीपों को लुढका रहे हैं। लोग आ-जा रहे हैं। दूकानदार बैठे-बैठे अपने पडोसियो से बातचीत कर रहे हैं—गप्पें हाँक रहे हैं। उत्सव, राजदूत, कोयेनोले और 'अव्यवस्था के शासक' की बात ही सबकी जिह्वा से सुनाई पड रही है। प्रत्येक मनुष्य अपनी समालोचना की कठोरता और अट्टहास मे दूसरों से बढ जाना चाहता है। वहाँ चार सवार-पुलिस कटहरे के पास तैनात हैं। उनके कारण वहाँ लोगो की एक छोटी-सी भीड भी लग गई है। वे किसी को सजा पाते देखने के लिए वहाँ देर तक खड़े रहने को तैयार जान पड़ते हैं।

पाठक, आप यदि इस सजीव दृश्य से अपनी दृष्टि को अलग कर उस मकान पर डालें, जिसे 'तोर-रोलैंड' कहते हैं, तो आपको वहाँ पर एक 'सार्वजनिक पूजा की पुस्तक' रक्खी हुई दिखाई

देगी। चोर तथा वर्षा से बचने के लिए वह छड़ों से घिरी है। उसी पुस्तक की बगल में एक छोटी सी तंग कोठरी है, जिसमें केवल एक खिड़की है। लोहे के दो छड़ खिड़की के आर-पार लगे हुए हैं। दीवारें बहुत मोटी हैं। जब हम मैदान के शोर और निकट हास्य को सुन कर इस तंग कमरे की ओर ध्यान देते हैं, तो इसकी शान्ति और भी अगाध एवं इसकी निस्तब्धता और भी अधिक उदासीन जान पड़ती है।

यह तंग कमरा पेरिस में तीन शताब्दियों से प्रसिद्ध है। इसको 'मैडम रोलैंड' ने अपने पिता के शोक में प्रार्थना करने को बनाया था। उसने अपना सर्वस्व दान देकर, आप लोगों की भीख के सहारे, अपने जीवन को इसी तंग कोठरी में प्रार्थना करते हुए बिताया था। उसकी मृत्यु के पश्चात इस कोठरी में एकान्तवासी सन्यासी—या अपने किसी प्रिय जन के शोक में प्रार्थना-रत प्राणी—रहने लगे थे।

रोलैंड को वहाँ के लोग बहुत आदर की दृष्टि से देखते थे। उसके लिये लोग रोये भी बहुत। लोगों को इसका ध्यान था कि रोलैंड की तंग कोठरी में रहनेवाले भूक से न मरने पायें। लोगों ने उस कोठरी के पास पूजा की पुस्तक को दीवार से बाँध रक्खा था, ताकि लोग वहाँ पर केवल प्रार्थना करने के लिए रुकें और प्रार्थना से उनकी दान देने की प्रवृत्ति जाग्रत हो।

इस प्रकार की बातें, मध्यकाल में, प्रत्येक बड़े शहर में पाई जाती थीं। भीड़ से भरी सड़कों के किनारे, घनी बस्ती वाले

बाजारों मे, ससार के जन-रव की लहरो मे, घोड़ों की टापों के नीचे एक तग कोठरी और एक कुआँ बना हुआ दिखाई देता था, जिसमे कोई एक मनुष्य रात दिन प्रार्थना, रुदन और प्रायश्चित्त में लीन रहता था। वह भयानक कोठरी थी। घर और कब्र के बीच की वह जजीर थी। उसमे रहनेवाला, अपने जीवित साथियों से अलग, मृतकों की श्रेणी मे गिना जाता था। जीवन-प्रदीप उस कब्र मे टिमटिमा रहा था। उस जीव को, उसके चेहरे को—जो दूसरे ससार की ओर टक लगाये हुए था, उसके नेत्रों को—जो दूसरे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हो रहे थे, उसकी आत्मा को—जो उसके शरीर में कैद थी, भीड़ नहीं देख पाती थी, न उस तपो-निष्ठ आत्मा की भुनभुनाहट को ही वह सुन सकती थी।

उस समय की धार्मिकता किसी धार्मिक कार्य के अनेक पह-लुओं पर दृष्टि नहीं डालती थी। वह उसे सम्पूर्ण रूप में देखती और उसकी प्रतिष्ठा तथा आदर करती थी। आवश्यकता पड़ने पर उसे पवित्र रूप देती थी, किन्तु उस तप के कष्टों का विवेचन नहीं करती थी।

उस समय के लोग प्रायश्चित्त करनेवालों के नाम से परिचित न थे। हाँ, कभी-कभी उन माँदों मे देख लेते थे कि वह जीवित अस्थि पजर उस कोठरी में हिल-डुल रहा है या नहीं, वे कभी गर्म भोजन भी दे देते थे।

वे सूक्ष्मदर्शी यत्र की सहायता के बिना ही अपने खुले नेत्रों से सब चीजों को देखते थे। उस समय तक आध्यात्मिक य

वास्तविक वस्तुओं को देखने के लिए सूक्ष्मान्वेषक यंत्र का आविष्कार ही नहीं हुआ था।

ग्रेव-रम्वायर के मैडेम-रोलैंड की कोठरी में सर्वदा कोई-न-कोई एकान्तवासी रहता ही था। वहाँ पर बहुत-सी औरतें माता-पिता, प्रेमी या पापों के लिए प्रायश्चित्त करते-करते मरी हैं। मगर पेरिस के निवासियों का—जो सब चीजों में बाधा डालते हैं, खासकर उसमें, जिससे उनका सम्बन्ध बहुत कम होता है—कथन है कि उस कोठरी में बहुत कम विधवाएँ देखी गई हैं।

उस समय यह प्रथा-सी थी कि लोग लेटिन में मकानों के दरवाजे पर कुछ लिख देते थे, जिससे उस मकान का परिचय—किस कार्य के लिए बना ?—प्राप्त होता था। जेलों के दरवाजों पर तो अब भी कुछ-न-कुछ लिखा पाया जाता है।

उस तौर-रोलैंड-महल की तंग कोठरी में कोई द्वार न था, इसलिए किसी ने खिड़की पर लिख दिया था—'प्रार्थना के लिए।' इसलिए लोग अपनी बुद्धि के अनुसार इसे 'चूहे की माँद' कहने लगे थे। इस स्थान का यह नाम निश्चय सुन्दर न था, तथापि उस अँधेरी, सील-भरी उदास कोठरी का विशेष परिचायक था।

इस कथा के समय में उस कोठरी में एक वृद्धा रहती थी, जिसे लड़के 'पगली' कह कर पुकारा करते थे।

रोटी की कहानी

उस कोठरी मे रहनेवाली वह बुढिया कौन थी, कहाँ से आई थी—इन प्रश्नो का उत्तर पेरिस के किसी निवासी के पास न था, न वे इस समस्या के सुलझाने का ही प्रयत्न करते थे, और न यह ऐसी कोई महत्त्वपूर्ण बात ही थी जो कालेजो या स्कूलों की परीक्षा में पूछी जाय।

जिस समय मैंने गत परिच्छेद मे पाठकों का ध्यान मेव-स्क्वायर की ओर आकर्षित किया है, उस समय तीन सुयोग्य गप्प हाँकनेवालियाँ, चाललेत की ओर से मेव की ओर, जा रही थीं। उनमें दो तो पेरिस के भलेमानसों की तरह वस्त्रो मे सुसज्जित थीं। उनके लाल घाँघरो तथा आसमानी कुर्तियों पर कारचोबी का काम था। उनके मोजे सफेद थे। जूते चिपटे मुँह के थे। सबसे आकर्षक उनके सिर का पहनावा था—गोटे और लेसों से अलंकृत भडकीले सींग।

उनकी सगिनी तीसरी स्त्री के कपड़े भी ऐसे ही थे। हाँ, अगर सिर के पहनावे के अन्तर से वह दिहात के किसी धनी आदमी की स्त्री जान पड़ती थी। उसके कमरबन्द की ऊँचाई से स्पष्ट ज्ञात होता था कि पेरिस में वह नई ही आई है। वह अपने लड़के का हाथ पकड़े हुए थी। लड़के के हाथ में एक बड़ी सी रोटी थी।

पेरिस की दोनो स्त्रियाँ, पेरिस की अद्भुत गति से चलती हुई, अपनी दिहाती संगिनी को पेरिस नगर दिखा रही थीं।

लड़का धीरे धीरे चलता था, कभी-कभी रुक जाता और फिर खा उठता, जिसके लिए उसकी माँ उसे खरी खोटी भी सुनाती थी। बात यह थी कि बालक जमीन से अधिक रोटी की ओर ही ध्यान से देखता जाता था। रोटी को दाँत न लगाने का कुछ गंभीर कारण था, इसलिए वह उसे प्यार से देखने ही में संतोष अनुभव कर रहा था। मेरा विचार है कि रोटी का भार माता ही को उठाना चाहिये था।

वे तीनों एक साथ ही बोल रही थीं।

जल्दी करो 'मेहियेते'!—पेरिस की युवती स्त्री ने दिहाती औरत से कहा—मुझे डर है कि हम लोग लेट हो जायेंगी। लोग कहते थे कि (कचहरी में) वह सीधे कठघरे में लाया जायगा।

तुम तो व्यर्थ की बातें करती हो 'ओडारडे मस्सीयर'!—पेरिस की दूसरी स्त्री ने कहा—उसे कठघरे में दो घंटे रहना है। जल्दी क्या पड़ी है ? तुमने कभी किसी को कठघरे में देखा भी है ?

हाँ, 'रेमूस' नगर में—दिहाती स्त्री ने उत्तर दिया।

इसके बाद उनमें कुछ देर तक झगड़ा चला कि रेमस् की कचहरी का घण्टा अच्छा है या पेरिस का। वे इसी बहस में लड़ पड़तीं अगर चतुर 'ओडारडे मस्सीयर' झट विषय को न बदल देती। उसने फ्लेमिश राजदूतों की बात छेड़ दी। उन सबों ने गोचे के व्यापारी से लेकर हर-एक राजदूत की आकृति की समा-

लोचना कर डाली। मेहियेते जिस विषय का वर्णन करता, उसका चित्र-सा खड़ा कर देती थी। उसने रेमस् नगर के १४६१ के राज्याभिषेक-महोत्सव के समय के दृश्यों का विशद वर्णन कर सुनाया इस पर ओडारडे बोल उठी—इससे हमारी बात कटती नहीं। मैं कह रही थी कि गत रात्रि मेयर ने 'सिटी-हाल' में दिया था, जिसमे भिन्न भिन्न मिष्टान्नों और मसालेदार नमकीन वस्तुओ की भरमार थी।

बहन ओडारडे! तुम क्या कह रही हो? 'पेटिट बोरबन' में राजदूतों ने कार्डिनल के साथ भाजन किया—जरवेज ने कहा।

कभी नहीं, सिटी-हाल मे भोज हुआ था।

नहीं, पेटिट-बोरबन में हुआ था।

निश्चय ही सिटी-हाल मे हुआ था, डाक्टर स्कोरेबुल का लेटिन में वहाँ भाषण भी हुआ था। मुझे ये बातें अपने पति से मालूम हुई हैं, तुम जानती हो कि उन्हे नकल-नवीसी का लाइसेंस प्राप्त है।

निश्चय ही वह भोज पेटिट-बोरबन में हुआ था—जरवेज ने उत्साह से कहा—मैं तुमको एक लम्बी-सी सूची दे सकती हूँ कि वहाँ क्या-क्या हुआ था। ये सब बातें मुझे अपने पति द्वारा ज्ञात हुई हैं, जो—तुम तो जानती ही हो—पचास सिपाहियों के कैप्टेन हैं।

यह सोलह आने सही है कि राजदूतों ने सिटी हाल में ही भोजन किया था। किसी ने पहिले माँस और मिठाइयों की ऐसी बड़ी तैयारी न देखी थी।

मैं कहती हूँ कि भोजन परोसनेवाला सिटी गार्ड का सिपाही
सिक' था, इसीलिए तुम्हें भ्रम हो गया है।

, मैं ठीक कहती हूँ कि सिटी-हाल में ही भोज हुआ था।

, पेटिट-बोरबन महल में हुआ था बहन! क्या उन लोगों ने
महल पर लिखे हुए 'आशा' शब्द को प्रकाशित नहीं
या था ?

सिटी-हाल में, सिटी-हाल में! क्या मैंने नहीं कहा है कि
मन' ने वहाँ थमी बजाई थी ?

मैं कहती हूँ—नहीं! नहीं!!

मैं कहती हूँ—हाँ।

और मैं कहती हूँ—नहीं।

मोटी ओढारडे उत्तर देने की तैयारी कर रही थीं। डर था कि
मला जबान से सिर तक पहुँच जाता, मगर उसी समय मेहियेते
ल्ला उठी—पुल के समीप वह भीड़ कैसी ? बीच में कुछ ऐसी
ज है, जिसे सब लोग ध्यान से देख रहे हैं।

सच कहती हो—अरवेज ने कहा—मुझे खँजड़ी की आवाज
ाई दे रही है। मेरा विश्वास है कि वहाँ इस्मेरल्डा अपनी
री के साथ खेल दिखा रही है। जल्दी आओ मेहियेते, लड़के
जल्दी खींच लाओ। तुम पेरिस के सब दृश्य देखने आई हो।
राजदूतों को देखा था, आज जिप्सी-बालिका को देखोगी।

जिप्सी!!—मेहियेते ने बड़ी शीघ्रता से कहा और घूम कर
ने लड़के की बाँह को जोर से पकड़ लिया—ईश्वर रक्षा

करे, वह मेरे पुत्र को चुरा ले जायेगी इधर आओ प्यारे।

वह लड़के के साथ भीड के ठीक दूसरी ओर भाग चला। ग्रेव के दूसरी ओर जाकर, लडके के ठोकर खाकर गिर जाने मे, वह रुकी। ओडारडे और जरवेज भी आकर उससे मिलीं।

वह जिप्सी लड़की तुम्हारे लडके को चुरायेगी। तुम्हारा यह कैसा मूर्खतापूर्ण विचार है?—जरवेज ने कहा।

मेहियेते ने अपना सिर हिला दिया—

आश्चर्य तो यह है कि सन्यासिनी भी जिप्सियों के विषय में ठीक ऐसा ही विचार रखती है—ओडारडे ने कहा।

सन्यासिनी से तुम्हारा मतलब?—मेहियेते ने पूछा।

क्यो?—ओडारडे ने उत्तर दिया—'बहन गुदुली।'

बहन गुदुली कौन हैं?—मेहियेते ने फिर पूछा।

तुम नहीं जानतीं? तुम अवश्य रेमस् से आ रही हो—ओडारडे ने कहा—'चूहे की माँद' मे रहनेवाली वह एकान्तवासिनी है।

वही, जिसे देने को हम लोग यह रोटी ले जा रहे हैं?—मेहियेते ने पूछा।

ओडारडे ने सिर हिला दिया—

हाँ, तुम उसे ग्रेव मे खिड़की के पास देखोगी। वह भी जिप्सियों से, जो खँजडी बजाते तथा लोगो की भाग्य-रेखा देखते फिरते हैं, तुम्हारी ही तरह डरती है। कोई नहीं जानता कि वह जिप्सियों से इतना क्यो डरती है। मगर तुम मेहियेते! उनका नाम सुनते ही क्यों भाग चलीं?

अपने लडके को हृदय में लगाते हुए मेहियेते ने कहा—मैं नहीं चाहती कि मेरे साथ भी वैसी ही दुर्घटना घटित हो जैसी फ्लुयरी के साथ घटित हुई थी।

ओह मेरी प्यारी मेहियेते! उस कहानी को अवश्य सुनाओ—मेहियेते का हाथ पकड़ते हुए बीबी जरवेज ने कहा।

खुशी से—मेहियेते ने कहा—मगर मालूम होता है कि तुम पेरिस की रहनेवाली हो जो उस कहानी को नहीं जानती! आगे चलकर तुम जानोगी। मगर मैं यह कहने मे कि फ्लुयरी, आज से १८ वर्ष पहिले, अठारह वर्ष की सुन्दरी युवती थी और आज भी मेरी ही तरह पति-पुत्र के साथ प्रसन्न रहती है, तुम्हारा अमूल्य समय नष्ट नहीं किया चाहती। वह 'रेमस्' नगर के 'गिबरतात' की पुत्री थी। 'गिबरतात' एक गायक था। उसने बादशाह 'चार्ल्स सप्तम' की राजगद्दी के दिन गाया-बजाया था। किन्तु वह फ्लुयरी को दुधमुँही बालिका छोड़कर मर गया। उस समय उसकी माता के अतिरिक्त उसकी देखभाल करनेवाला दूसरा कोई न था। उसका मामा पेरिस में लोहार का काम करता था, वह भी पार साल मर गया। उसका कुल सम्मान्य था। दुर्भाग्यवश उसकी माता ईमानदार और सीधी-सादी औरत थी। उसने पुत्री को झालर तथा गुडिया बनाने के सिवा कुछ और न सिखाया। इस व्यापार ने उसके सयानी होने तथा निर्धन रहने में बाधा न डाला। वे दोनो 'रु-फोले-पीनम' में रहती थीं। इस पर ख्याल रक्खो। मेरा विश्वास है कि इसी कारण से फ्लुयरी को

अभाग्य ने घेर लिया। सन् १४६१ में, बादशाह 'लुई ग्यारहवें' की राजगद्दी के वक्त, फ्लुयरी इतनी सुन्दरी थी कि सभी उसे 'मुकुलित पुष्प' कहते थे। उसके दाँत बहुत ही सुन्दर थे और वह उन्हें दिखलाने के लिए ही हँसा करती थी। तुम जानती हो, कि जो लड़की ज्यादा हँसना पसन्द करती है, वह रुदन के मार्ग में जाती है और सुन्दर दाँत सुन्दर आँखों को बिगाड़ देते हैं। उसको तथा उसकी माता को जीविकोपार्जन के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता था। झालर बनाने के काम से उन्हें किसी तरह अन्न मिल जाता था। वह समय निकल गया, जब 'गिबरतात' एक ही गीत में काफी कमा लेता था। एक समय जाड़े की मौसम में—सन् १४६१ ही में—उनके पास तापने को लकड़ी न थी। जाड़ा कड़ाके का था। शीत से फ्लुयरी का रंग ऐसा चटकीला हो गया कि लोग उसे 'गुल-बहार' कहने लगे थे और वह विनाश के राह में पड़ गई थी। एक दिन, रविवार को, चर्च में लोगों ने देखा कि उसके गले में सोने का 'क्रास' लटक रहा था, और वह भी चौदह वर्ष की अवस्था में! तनिक इस पर गौर तो करो! वह क्रास उसे 'विकोमते' द्वारा प्राप्त हुआ था, जिसका दुर्ग 'रेमस्' से दो मील की दूरी पर था। तत्पश्चात् उसका पतन आरम्भ हुआ। उसके अनेकों प्रेमी हुए। दूसरा प्रेमी बादशाह के घोड़ों का दारोगा मिला, तीसरा एक सार्जेंट था। फिर तो कुछ न पूछो बहन! सीढ़ी-दर-सीढ़ी वह नीचे ही गिरती गई। तब बादशाह का सगतराश, हजाम, रसोइया—एक के बाद दूसरे, उसे प्रेमी-रूप में मिले

बाद में वह एक लालटेन बनानेवाले के हाथ लगी ! और फिर, वह सार्वजनिक सम्पत्ति हो गई ! सोने के सिक्के से वह अन्त में ताम्बे का सिक्का बन गई। ओह ! मैं कैसे बयान करूँ ? सन् १४६१ में वह कमीनों की सेज को सुशोभित करती थी !

मेहियेते आह भर रही थी। उसने अपने कपोलों से आँसुओं को पोछा।

यह तो कोई विचित्र कहानी नहीं है—जरवेन ने कहा—और मुझे इससे तथा जिप्सियों से अथवा बालकों से कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई देता।

धीरज धरो—मेहियेते ने उत्तर दिया—मैं अभी बालक तक पहुँचती हूँ। सन् १४२६ में, आज से सोलह वर्ष पहिले, इसी महीने में, पक्वुयरी को एक छोटी-सी पुत्री पैदा हुई। उसके आनन्द की सीमा न रही। वह बहुत दिनों से संतति के लिए व्याकुल हो रही थी। उसकी माँ उसके दोषों की ओर से आँखें बंद करने के सिवा और कर ही क्या सकती थी ? बेचारी मर गई ! कोई ऐसा न रहा, जिसे पक्वुयरी प्यार करती या जो उसे प्यार दिखलाता। उसके पतन का वह पाँचवाँ वर्ष था। उस समय वह अत्यन्त दुखिनी थी, संसार में वह बिल्कुल अकेली थी। लोग उसकी ओर इशारे करते थे, उँगली दिखाते थे। गलियों में उसका निरादर होता था। पुलिस उसे पीटती थी। लड़के उसे चिढ़ाते थे। उस समय वह बीस वर्ष की हो चली थी। बीस वर्ष की अवस्था ऐसी स्त्रियों के लिए बुढ़ापा है ! पाप की आय घट चली थी।

उसके चेहरे की नई झुर्रियाँ उसकी नई कमाई को छीन लेती थीं। जाड़ा उसके लिए फिर कठोर मौसम हो चला था। उसकी अँगीठी में अब फिर लकड़ी का अभाव रहने लगा। वह अब काम भी नहीं कर सकती थी, क्योंकि ऐश में जीवन बिताने के साथ ही उसने आलस्य को अपना साथी बना लिया था। उसका दुख पहिले से अधिक असह्य हो उठा था, क्योंकि आलसी होने के साथ ही वह ऐशो-आराम की आदी हो गई थी। कम-से-कम पादरी साहब ने तो इसी प्रकार हमको समझाया था कि ऐसी औरतों को, बुढ़ापे में, भूख और शीत अन्य लोगों से अधिक सताते हैं।

जरवेज ने कहा—सही है, मगर जिप्सी ?

एक क्षण धीरज धरो जरवेज—ओडारडे ने कहा—अगर हरएक बात आरम्भ में ही कह दी जाये, तो समाप्ति के लिए आकर्षण क्या रह जायेगा ? कहती चलो मेहियेते! हाय पैकेट फ्लुयरी!

हाँ, तो वह बहुत दुखी और अप्रसन्न रहती थी। उसके आँसुओं के चिन्ह उसके कपोलों से मिटते न थे। उस अपमान और विपत्ति की दशा में भी उसको उतना दुख न होता, यदि केवल कोई व्यक्ति उसके प्यार के काबिल होता या जो उसे प्यार कर सकता। वह एक चोर को प्यार करना सीख रही थी, मगर वह नीच भी उससे घृणा करता था। ऐसी औरतों के हृदय को भरने के लिए किसी प्रेमी या बच्चे की आवश्यकता होती है, नहीं तो उनका

जीवन भार हो जाता है। उसे कोई प्रेमी न मिल सका, इस कारण उसकी इच्छा सन्तान के लिए प्रबल हो उठी। इसके लिए वह रात दिन प्रार्थना करती थी। प्रार्थना करना उसने कभी न छोड़ा। परमेश्वर ने उसपर दया की। उसके एक छोटी-सी पुत्री हुई। मैं उसकी प्रसन्नता का वर्णन नहीं कर सकती। उसने बच्ची को आँसुओं, चुम्बनों और लाड़ प्यार भरे पुचकारों से आच्छादित कर लिया। उसने पुत्री के लिए अपनी एकमात्र ओढ़नी को कुर्ती बनाई। अब उसे शीत या भूक नहीं सताती थी। वह फिर सुन्दर हो उठी। पुन अपने पुराने रास्ते पर चल पड़ी। उसके पुराने मित्र (?) उसे मिलने आने लगे। उसके सोदे के व्यापारी जुटने लगे। नई आमदनी से वह अपनी लड़की के लिए सुन्दर-सुन्दर रंग-बिरंगे वस्त्र, टोपी, खिलौने आदि खरीदने लगी। मगर अपने लिए उसे ओढ़नी खरीदने की सुधि न थी। उस छोटी बच्ची का नाम उसने 'एग्नीज' रखा। और चीजों के साथ उसने लड़की के लिए एक जोड़ी ऐसी सुन्दर जूती खरीदी थी कि शायद वैसी जूती 'ग्यारहवें लुई' के भाग्य में भी न बदी होगी। उन जूतियों पर उसने आप ही बेल-बूटे बनाये थे। वे गुलाबी रंग की जूतियाँ कितनी सुन्दर थीं। वे शायद मेरे अँगूठे से बड़ी न थीं। उस छोटी लड़की के पाँव भी गुड़िया की तरह छोटे थे। छोटे-छोटे पाँव कैसे गुलाबी और कितने सुन्दर थे! ओडारडे, जब तुम्हें भी बच्चे होंगे, तब तुम समझोगी कि नन्हे-नन्हे हाथ पाँव कितने सुन्दर होते हैं।

मुझे वैसी सुन्दर वस्तु को कोई आवश्यकता नहीं है—ओडा-

रडे ने आह भर कर कहा—मुझे तो 'मास्टर गिएड्री मन्सीयर' ‌की कृपा की प्रतीक्षा करनी है।

मेहियेते ने फिर कहना आरम्भ किया—इसके अतिरिक्त फ्लुयरी की पुत्री केवल सुन्दरी ही न थी—जब वह केवल चार महीने की थी तब मैंने उसे देखा था—वह 'प्रेम की मूरत' थी। उसके नेत्र उसके मुँह से भी बड़े थे। उसके भौंरों-जैसे केश घुँघराले थे। यदि वह सोलह वर्ष की अवस्था तक जीवित रहती, तो अवश्य ही वह अत्यन्त सुन्दरी युवती होती। उसकी माँ उसके रूप पर पागल हुई जाती थी। वह उसे पुचकारती थी, चूमती थी, धोती थी, सँवारती थी—मालूम होता था कि उसे खा जायेगी। उसके पीछे वह सचमुच पागल हो उठी। उसके दीर्घ-जीवन के लिए वह नित्य भगवान से प्रार्थना करती थी। उसके छोटे गुलाबी पाँव उसके लिए असीम आश्चर्य उत्पन्न करते थे, वह आनन्द की अधिकता से बेसुध तक हो जाती थी। उसकी जिह्वा सर्वदा उन्हीं पाँवों से लगी रहती थी। वह उन सलोने पाँवों के छोटेपन की प्रशंसा करते कभी थकती न थी। वह उन्हें जूतियों में डालती थी—बाहर निकालती थी—उनकी प्रशंसा कर-करके उन्हें प्रकाश में देखती थी, और जब वे बिस्तर पर चलने में थके मालूम पड़ते तब उन पर तरस खाती थी। वह घुटनों पर खड़े हुए उन छोटे पाँवों में जूतियाँ पिन्हाते समय अपने जीवन को धन्य मानती थी मानों वे नन्हे ईसा के पाँव हों।

बड़ी सुन्दर कहानी है—धीरे से अरवेज ने कहा—मगर जिप्सियों से इसका क्या सम्बन्ध ?

मेहियेते ने उत्तर दिया—सुनो तो, एक दिन रेमस् नगर में कुछ कुरूप घुड़सवार आये। वे भिक्षुक तथा चोर थे। वे इधर-उधर डेरा डालते फिरते थे। बड़े मैले कुचैले थे। उनके कानों में चाँदी की बालियाँ पड़ी थीं। उनकी स्त्रियाँ तो पुरुषों से भी अधिक कुरूप थीं। मुझे उनकी कुरूपता का वर्णन करते घृणा हो रही है। वे पादरियों और मठाधीशों से 'कर' वसूल करते थे। यही पोप की आज्ञा थी। वे रेमस् के समीप एक पहाड़ी में ठहरे थे और 'रेमस्' नगर में घूमा करते थे। लोगों के हाथ देखकर वे आश्चर्य-जनक बातें बताते थे। 'जुडास' को उन्होंने ही बताया था कि वह पोप होगा। मगर उनके विषय में बहुत-सी बुरी अफवाहें भी उड़ी थीं—वे लड़के चुराते थे, नर मांस-भक्षक थे। चतुर लोग सीधे सादे आदमियों से तो कहते थे कि उनसे दूर रहो, मगर आप गुप्त रीति से उनके पास जाते थे। जब कोई जिप्सी स्त्री किसी बालक का हाथ देखकर उसके भाग्य के विषय में आश्चर्य जनक बात कह जाती थी, तब तो माताओं के हर्ष का ठिकाना न रहता था। किसी को उन्होंने 'राजयोग' बताया, किसी को पोप, किसी को कैप्टेन। फ्लुयरी भी अपनी पुत्री का भाग्य जानने को उत्सुक हो रही थी—उसके भविष्य को जानने के लिए वह बेचैन हो रही थी। उसे वह जिप्सियों के पास ले गई। उन्होंने उसके रूप की प्रशंसा की—उसे पुचकारा, अपने काले कलूटे मुँह

से चुम्बन भी लिया । इससे फ्लुयरी कितना प्रसन्न हुई, मैं कह नहीं सकती । लडकी उस समय लगभग एक वर्ष की हो चली थी। वह कुछ-कुछ तुतलाने लगी थी। उस समय वह कोई स्वर्गीय जीव जान पडती थी । एकाएक वह जिप्सी स्त्री से डरकर रो उठी । किन्तु फ्लुयरी उसके सुन्दर भ मग्य से बहुत प्रसन्न थी , क्योंकि वह धार्मिक तथा रानी होनेवाली थी। फ्लुयरी अपनी गोद में 'भावी रानी' को लेकर प्रसन्न मन से 'रु-फोलो-पीनम' में लौट आई। दूसरे दिन, वह पुत्री को सोया देख कर, किवाडो को खुला छोड, अपने एक पडोसिन के घर यह कहने चली गई कि एक दिन इगलैंड के बादशाह और इथियोपिया के ड्यूक उसकी पुत्री के प्रणय के याचक होंगे। किन्तु घर लौटने पर जब उसने बच्ची की आवाज न सुनी, तब उसने सोचा कि शायद बच्ची अभी सो रही है। लेकिन द्वार के किवाड एकदम खुले देखकर वह जब अन्दर गई और बच्ची के बिस्तर की ओर दौडी, तब देखा कि लडकी गायब है। बिस्तर खाली पडा था। लडकी का वहाँ कुछ भी चिन्ह शेष न था, सिर्फ उसके एक पाँव की जूती वहाँ पडी थी। वह कमरे से वेग के साथ बाहर निकली, दौड कर सीढी से नीचे आई और दीवारों को पीट-पीट रोने लगी। वह चिल्ला रही थी—हाय री मेरी पुत्री ! हाय री मेरी प्यारी बेटी ! मेरी 'रानी' को कौन ले भागा रे ! सडक निस्तब्ध थी। सूना घर अकेला खडा था। उसे कोई कुछ न बता सका। वह उस वन-पशु की तरह—जिसके बच्चे खो गये

!!—सड़कों पर इधर-उधर आँख फाड़-फाड़ कर घूरती रही। उसको देखने से भय लगता था। उसकी आँखों में ज्वाला धधक रही थी, जिसमें आँसू उड़ गये थे। राहियों को रोक-रोक कर वह चिल्ला उठती थी—"हा मेरी बेटी! हा मेरी बेटी!! जो कोई मेरी पुत्री को लौटा देगा, मैं उसकी आजन्म सेविका बनी रहूँगी—उसके कुत्ते की खिदमत करूँगी। यदि कोई चाहे तो वह मेरे हृदय को ले सकता है।" कहाँ तक कहूँ बहन औडारडे! उसके क्रन्दन से कलेजा फटा जाता था। मैंने एक पाषाण हृदय को भी रोते देखा था। जब रात्रि का आगमन हुआ, तब बेचारी घर लौटी। उसकी अनुपस्थिति में, एक पड़ोसी ने दो जिप्सी स्त्रियों को, हाथ में एक गठरी लिये हुए, उसके घर में जाते और किवाड़ बन्द कर बाहर आते देखा था। घर में उनके जाने पर फ्लुयरी के घर में बच्चे की रुलाई सुन पड़ी थी। फ्लुयरी तो पागल की तरह हँस रहा थी। सीढ़ियों पर वह इस वेग से चढ़ी जैसे उसे यम ने खदेड़ा हो। कारण, वहाँ एक भयानक घटना हो गई थी। उसकी सुहावने चेहरेवाली पुत्री (मनोज) के स्थान में एक छोटा सा डरावना शैतान पड़ा था—काना, लँगड़ा, कुरूप! फ्लुयरी ने चिल्ला कर कहा—ओह! क्या उन जादूगरनियों ने मेरी पुत्री को इस डरावने शैतान के रूप में परिणत कर दिया है? और, वह शैतान तुरन्त वहाँ से हटाया गया, नहीं तो वह उसे देख कर सचमुच पगली हो जाती। उस शैतान की उम्र चार वर्ष की जान पड़ती थी। फ्लुयरी उस छोटी जूती पर गिर पड़ी, क्योंकि

प्रियतम पुत्री का वही एकमात्र चिन्ह शेष रह गया था। वह निस्तब्ध भाव से चुपचाप वहाँ पड़ी रही। लोगों ने समझा कि वह निश्चय मर गई। एकाएक वह काँप कर उठी और उस जूती को चूमने लगी। वह इस प्रकार विलाप कर रही थी, मानों उसका कलेजा फट रहा हो। हम सब के-सब उसी के साथ रो रही थीं।' वह अपनी पुत्री का नाम ले-लेकर कलप रही थी। आह! ये बच्चे हमारे अग के अश हैं। बहन! देखो, यह मेरा 'यूसटेचे' कितना सुन्दर है! हाँ, तो फ्लुयरी उठी और चिल्लाती हुई दौड़ पड़ी— "जिप्सियों के डेरे पर! जिप्सियो के डेरे पर! उन्हें जला दो!' किन्तु जिप्सी तो चले गये थे। वहाँ पर 'एगनीज' के कुछ चिन्ह गिरे हुए पाये गये। लोगों ने समझा कि जिप्सियों ने लड़की को भून कर खा डाला! फ्लुयरी यह सुन कर रो न सकी; वह बोलना चाहती थी—मगर बोल न सकी। दूसरे ही दिन उसके केश सफेद हो गये। इसके बाद वह गुम हो गई।

बड़ी दर्दनाक कहानी है बहन, इससे तो 'बरगंडी' के निवासी भी रो पड़ेंगे—ओडारडे ने कहा।

अब मुझे इसमें कुछ भी आश्चर्य या सन्देह नहीं है कि जिप्सियो का भय अब भी तुम्हें डराता है—जरवेज ने कहा।

वे दोनो, जिप्सियो के विषय में, कुछ बातें कर रही थीं। एकाएक जरवेज ने पूछा—क्या कोई नहीं जानताकि फ्लुयरी कहाँ गई?

मेहियेते ने कुछ उत्तर नही दिया। जरवेज ने उसके हाथ को हिला कर, उसका नाम पुकार कर, फिर वही सवाल किया।

मेहियेते जैसे जाग पड़ी। बोली—उसका क्या हुआ, वह कहाँ गई, कोई नहीं जानता।

थोड़ी देर के बाद उसने फिर कहा—लोग भिन्न भिन्न रास्तों से उसके रेमस् नगर छोड़ने की बात कहते हैं। उसके गले का साने का 'क्रास' मैदान में गिरा पाया गया। इसी क्रास के कारण सन १४६१ में उसका विनाश हुआ था। सुन्दर 'विकोमते' का दिया हुआ—जो उसका प्रथम प्रेमी था—यह प्रेमोपहार था। फ्लुयरी उसको कभी अपने तन से अलग नहीं करती थी, इसे अपने जीवन की तरह जुगाती थी। इस लिए, जब क्रास मिला तो लोगों ने सोचा कि वह मर गई। फिर कुछ लोग ऐसा भी कहते थे कि उन्हों ने उसे पेरिस जानेवाली सड़क पर जाते देखा था। मेरा विश्वास है कि उसने इस संसार ही को त्याग दिया।

और वह छोटी जूती?—जरवेज ने पूछा।

वह भी माता के साथ ही गुम हो गई—मेहियेते ने उत्तर दिया।

हाय री बेचारी जूती!—ओडारडे ने आह-भरी साँस लेकर कहा।

और वह शैतान?—जरवेज के सवाल अभी खतम नहीं हुए थे।

कौन शैतान?—मेहियेते ने आश्चर्य से पूछा।

वही, जिसे डाइनों ने, फ्लुयरी के घर में, उसकी पुत्री के बदले में, रख दिया था। तुम लोगों ने उसे क्या किया? मेरा विश्वास है कि वह डुबा दिया गया।

नहीं—मेहियेते ने कहा।

तब क्या वह जला दिया गया? अच्छा ही किया, क्योंकि वह जादूगरनी का लड़का था।

नहीं जरवेज! हमारे आर्चबिशप ने उसपर दया करके उसे पेरिस भेज दिया, जहाँ वह नाट्रीडेम में अनाथों के पलने में रक्खा जानेवाला था।

ये पादरी कभी दूसरे मनुष्यों की तरह कोई काम नहीं करते, क्योंकि वे पढ़े लिखे होते हैं। जरा अनाथों की जगह पर उस शैतान के रक्खे जाने की बात पर गौर तो करो। अवश्य वह शैतान था। अच्छा हाँ, मेहियेते! फिर पेरिस में उसका क्या हुआ? मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि किसी भी दयालु आदमी ने उसे नहीं अपनाया होगा।

मैं नहीं जानती—उस 'रेमस्' नगर की निवासिनी ने कहा—उसके बाद हम लोग 'रेमस्' नगर से छः कोस दूर जाकर बस गईं, इस लिए इस विषय मे कुछ पता न लगा।

बातचीत में व्यस्त होने के कारण वे ग्रेव की 'सार्वजनिक-प्रार्थना-पुस्तक' वाली कोठरी को पार कर चुकी थीं। भीड़ के कारण वे 'चूहे की माँद' को भूल गईं। उसी समय छः वर्ष के बलिष्ठ बालक 'यूसटेचे' ने पूछा—माँ! मैं अब उस रोटी को खा सकता हूँ?

यदि 'यूसटेचे' तनिक और चतुर होता—अर्थात् कम लालची होता—तो वह कदापि उस समय डरते डरते यह सवाल न करता।

उसे कम-से-कम घर पहुँच जाने तक तो सन्तोष करना था।

इस बेतुके सवाल से मेह्यिते का ध्यान टूटा। उसने कहा—अरे! हमलोग उस 'एकान्तवासिनी' को भूली जाती हैं। मुझे अपनी 'चूहे की माँद' दिखा दो, ताकि मैं यह रोटी उस सन्यासिनी को दे दूँ।

अभी?—ओह्यारडे ने कहा—सचमुच यही वास्तविक दान है।

यूसटेचे को यह किंचित पसन्द न आया। मेरी रोटी! मेरी रोटी!!—कह कर वह रोने लगा।

तीनो लौटकर 'तोर-रोलैंड' के पास आईं।

ओह्यारडे ने कहा—तीनों का एक साथ झाँकना ठीक नहीं है, नहीं तो वह डर जायगी। मुझे वह नहीं जानती, इसलिए मैं ही पहिले उसकी खिड़की पर जाऊँगी। सुअवसर देख में तुम लोगों को भी बुला लूँगी।

वह अकेली खिड़की के पास गई। खिड़की के अन्दर देखने के साथ ही उसके भाव बिल्कुल बदल गये। उसकी आँखों में आँसू छलछला आये। उसने अपने होंठ पर अपनी अँगुली रखते हुए मेह्यिते को आने का इशारा किया।

मेह्यिते धीरे से आई। सचमुच वह दयनीय दृश्य था। एकान्त वासिनी उस तंग कोठरी के एक कोने में खुले फर्श पर बैठी थी। उसकी ठुड्डी उसके घुटन पर अड़ी थी, उसी के ऊपर उसकी भुजाएँ एक दूसरी पर पड़ी थीं। वह मामूली मोटा कपड़ा पहिने थी। उसके केश उसके मुँह पर बिखरे पड़े थे। खिड़की से

कि वे क्रिसमस मे भगवान की वेदी के सम्मुख खड़ी हैं।

जरवेज का हृदय कौतुक से भर गया था। उसने पुकारा बहन गुदुली !

उसने तीन बार योंही पुकारा, मगर एकान्तवासिनी ने सुना तक नहीं, उसमें जीवन के सचार का अभाव मालूम होता था।

ओडारडे ने धीरे से मीठे स्वर मे पुकारा—ओ बहन गुदुली! बहन गुदुली !!

फिर वही निस्तब्धता।

कैसी विचित्र औरत है! शायद तोप का गोला भी इसे न जगा सकेगा—जरवेज ने झुँझलाकर कहा।

शायद बहरी है—ओडारडे बोल उठी।

अंधी भी हो सकती है—जरवेज ने कहा।

शायद मर गई है—मेहियेते ने कहा।

सचमुच ऐसा ही प्रतीत होता था। यदि आत्मा ने उस अस्थि-पंजर को पहले ही न छोड दिया था, तो कम-से कम वह उसकी इतनी गहराई में जरूर जा छिपी थी कि स्थूल इन्द्रियो की जहाँ पहुँच नहीं हो सकती।

रोटी इस खिडकी पर छोड़ देनी पडेगी, मगर कोई लड़का उठा ले जायगा तो? इसको जगाने का भी तो कोई उपाय नहीं है!—ओडारडे ने कहा।

'यूसटेचे' अभी दूसरे दृश्यो के देखने मे लगा था। उनमे अवकाश पाते ही उसने कहा—माँ, मुझे भी देखने दो।

बालक की सरल और मीठी आवाज को सुनकर एकान्त-वासिनी काँप उठी। उसने स्प्रिङ्ग की तरह तेजी के साथ अपने सिर को एकाएक घुमाया। अपने असमर्थ हाथों से उसने केशों को चेहरे से हटाया, और खिन्न दृष्टि से एकटक बालक की ओर देखने लगी। उसकी दृष्टि में बिजली की चमक थी।

ओह मेरे ईश्वर! मुझे दूसरों को न दिखाओ!!—उसने अपने चेहरे को घुटनों के बीच में छिपाते हुए कहा।

नमस्कार भद्रे!—लड़के ने गंभीर भाव से कहा।

एकान्तवासिनी का शरीर काँप गया, जैसे बिजली की धारा (करेंट) का धक्का लगा हो। उसके बत्तीसों दाँत थरथरा कर बज उठे। उसने झटके से सिर को उठा कर कहा—ओह! कठोर जाड़ा है!

ओडारडे ने कहा—तुम को थोडी आग की । है? लाऊँ?

उसने सिर हिला कर अस्वीकार किया।

एक बोतल देते हुए ओडारडे ने कहा—इसे पीओ, इष्ट पेय है, इससे कुछ गर्मी पहुँचेगी।

ओडारडे की ओर देख कर एकान्तवासिनी ने पूछा ।

ओडारडे ने कहा—नहीं बहन, पानी जनवरी का पेय है, तुम्हारे लिए यह गेहूँ की रोटी तथा यह पेय उपस्थित है।

मेढियेते की दी हुई गेहूँ की रोटी को अलग करती बोली—काली रोटी!

कि वे क्रिसमस मे भगवान की वेदी के सम्मुख खड़ी हैं।

जरवेज़ का हृदय कौतुक से भर गया था। उसने पुकारा—बहन गुदुली!

उसने तीन बार योंही पुकारा, मगर एकान्तवासिनी ने सुना तक नहीं, उसमे जीवन के सचार का अभाव मालूम होता था।

ओडारडे ने धीरे से मीठे स्वर में पुकारा—ओ बहन गुदुली! बहन गुदुली!!

फिर वही निस्तब्धता।

कैसी विचित्र औरत है! शायद तोप का गोला भी इसे न जगा सकेगा—जरवेज़ ने झुँझलाकर कहा।

शायद बहरी है—ओडारडे बोल उठी।

अंधी भी हो सकती है—जरवेज़ ने कहा।

शायद मर गई है—मेहियेते ने कहा।

सचमुच ऐसा ही प्रतीत होता था। यदि आत्मा ने उस अस्थि-पजर को पहले ही न छोड़ दिया था, तो कम-से-कम वह उसकी इतनी गहराई में जरूर जा छिपी थी कि स्थूल इन्द्रियों की जहाँ पहुँच नहीं हो सकती।

रोटी इस खिड़की पर छोड़ देनी पड़ेगी; मगर कोई लड़का उठा ले जायगा तो? इसको जगाने का भी तो कोई उपाय नहीं है!—ओडारडे ने कहा।

'यूसटेचे' अभी दूसरे दृश्यों के देखने मे लगा था। उनसे पाते ही उसने कहा—माँ, मुझे भी देखने दो।

बालक की सरल और मीठी आवाज को सुनकर एकान्त-वासिनी काँप उठी। उसने स्प्रिङ्ग की तरह तेजी के साथ अपने सिर को एकाएक घुमाया। अपने असमर्थ हाथों से उसने केशों को चेहरे से हटाया, और खिन्न दृष्टि से एकटक बालक की ओर देखने लगी। उसकी दृष्टि मे बिजली की चमक थी।

ओह मेरे ईश्वर! मुझे दूसरों को न दिखाओ!!—उसने अपने चेहरे को घुटनों के बीच मे छिपाते हुए कहा।

नमस्कार भद्रे!—लडके ने गभीर भाव से कहा।

एकान्तवासिनी का शरीर काँप गया, जैसे बिजली की धारा (करेंट) का धक्का लगा हो। उसके बत्तीसों दाँत थरथरा कर बज उठे। उसने झटके से सिर को उठा कर कहा—ओह! कितना कठोर जाड़ा है!

ओडारडे ने कहा—तुम को थोडी आग की आवश्यकता है? लाऊँ?

उसने सिर हिला कर अस्वीकार किया।

एक बोतल देते हुए ओडारडे ने कहा—इसे पीओ, इसमें शुद्ध पेय है, इससे कुछ गर्मी पहुँचेगी।

ओडारडे की ओर देख कर एकान्तवासिनी ने पूछा—पानी?

ओडारडे ने कहा—नहीं बहन, पानी जनवरी का पेय नहीं है, तुम्हारे लिए यह गेहूँ की रोटी तथा यह पेय लाई हूँ।

मेहियेते की दी हुई गेहूँ की रोटी को अलग करते हुए वह बोली—काली रोटी।

अपने ओढने को देती हुई जरत्रेज ने कहा—बहन, यह ओढना तुम्हारे ओढने से कुछ अधिक गर्म है, कृपा कर इसे अपने कंधों पर डाल लो।

उसने उसे भी अस्वीकार कर दिया। कहा—कोई मामूली कपड़ा।

ओडारडे ने कहा—तुम तो जानती होगी कि कल छुट्टी का दिन था।

वह बोली—मैं समझ गई थी, क्योंकि दो दिन से मेरे घड़े में एक बूँद जल नहीं है।

थोड़ी देर चुप रहकर उसने फिर कहा—उत्सव या छुट्टी के दिन सब लोग मुझे भुला देते हैं, अच्छा ही करते हैं। जब मैं उनसे दूर हूँ, तो वे क्यों मेरे विषय में चिन्तित रहें? जब आग बुझ जाती है, तो राख तुरन्त ठंडी हो जाती है।

इतना बोलने से वह थकी-सी दीखने लगी। उसने अपने सिर को अपने घुटनों पर फिर से झुका लिया।

दयावती ओडारडे ने फिर पूछा—क्या थोड़ी-सी भी आग तुम पसन्द न करोगी?

आग!—एकान्तवासिनी ने एक विचित्र स्वर में कहा—क्या थोड़ी-सी आग उस बच्ची के लिए भी दे सकती हो, जो पन्द्रह वर्षों से पृथ्वी के गर्भ में पड़ी है?

उसका अंग-प्रत्यंग काँप रहा था। उसकी आवाज भी काँप रही थी। उसके नेत्रों में एक विलक्षण ज्योति थी। वह तुरन्त

अपने घुटनों को टेककर बैठ गई और 'यूसटेचे' की ओर देख कर बोली—इस बच्चे को हटाओ, नहीं तो कहीं कोई जिप्सी स्त्री इधर से होकर न निकल आवे।

फिर वह मुँह के बल पृथ्वी पर गिर पड़ी, जैसे—मानो एक पत्थर पर दूसरा पत्थर गिरा हो।

तीनों ने सोचा, वह मर गई।

मगर थोड़ी देर के बाद वह खिसक कर जूती के पास गई और उसे चूमने लगी। वह दृश्य देखने योग्य नहीं था। उसे देखकर दया को भी दया आ गई।

तीनों ने अपने सिर को विवशता से घुमा लिया।

फिर वहाँ रोने की आवाज़ आई। इसके बाद मालूम हुआ कि उसने अपने सिर को दीवार पर पटक दिया।

वे तीनों काँप उठीं। फिर वहाँ कुछ सुन न पड़ा।

क्या उसने अपने को मार डाला? बहन गुदुली!—जरवेज़ ने पुकारा।

बहन गुदुली!—ओडारडे ने दुहराया।

ओ परमेश्वर! अरे वह हिल भी नहीं रही है। क्या सचमुच वह मर गई? गुदुली!—जरवेज़ ने अत्यन्त आश्चर्य के साथ पुकारा।

मेहियेते भावों के आवेग से कुछ बोल न सकती थी। साहस पर भार देकर उसने कहा—एक मिनट धैर्य धरो।

फिर खिड़की के पास जाकर उसने पुकारा—फ्लुयरी! फ्लुयरी!!

मेहियेते के इन शब्दों ने उस एकान्तवासिनी पर जो प्रभाव डाला, उसे देखकर उसे बड़ा भय हुआ।

एकान्तवासिनी काँप उठी, अपने पैरों पर खड़ी हो गई और खिड़की की ओर—लाल-लाल आँखें निकालकर—दौड़ पड़ी।

उन तीनों स्त्रियों को, बालक के साथ, दूर हट जाना पड़ा।

एकान्तवासिनी ने, हाथ बढ़ाकर, कठोर अट्टहास कर, कहा—ओह! ओह!! जिप्सी स्त्री मुझे पुकार रही है।

इसी समय कटहरे की ओर जाती हुई भीड़ उधर से निकली।

भय से प्लुयरी के माथे पर शिकन पड़ गई। उसने चिल्लाकर कहा—अरी ओ जिप्सी! क्या तुम फिर आ गई? क्या मुझे तुम्हीं ने पुकारा है? अरी ओ लड़कों को चुरानेवाली! मैं तुम्हें शाप देती हूँ! तुम पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़े—वज्र घहराये!

जल के बदले आँसू

मेव स्क्वायर में एक ही साथ दो मचो पर दो दृश्य हो रहे थे। एक का तो पाठको ने 'चूहे की माँद' के पास देखा ही है, दूसरा कटहरे मे हो रहा था। पहिले दृश्य को देखनेवाली केवल तीन स्त्रियाँ थीं, किन्तु दूसरे को देखने के लिए भीड लग गई थी।

पहिले कहा जा चुका है कि कटहरे के पास चार पुलिस-सवार नव ही बजे से आ डटे थे। कोड़ेबाजी देखने के लिए इस प्रकार भीड़ बढ गई कि उन सिपाहियों को, शान्ति की रक्षा के लिए, कोड़ों की फटकार तथा घोडों की टापो से, जनता को अशान्त करना पडा।

दर्शकों मे घबराहट का चिन्ह नहीं था। लोग कटहरे को देख-देख कर अपना दिल बहला रहे थे।

कटहरे की बनावट सीधी-सादी थी। वह लगभग दस फीट ऊँचा था, एक मच-जैसा था, जिसके ऊपरी भाग पर—जो चिपटा था—जाने के लिए सीढी बनी थी। मच पर एक लोहे की कडी लगी थी। अपराधी उसी कडी में, घुटने के बल बैठाकर, बाँध दिया जाता था। उसके हाथ उसकी पीठ पर बँधे होते थे। मच के ऊपरी भाग को एक चक्के द्वारा घुमाकर अपराधी का चेहरा चारों ओर दिखाया जाता था।

वहीं पर फाँसी देने की टिकठी भी उसी तरह सीधी-सादी थी मच पर कहीं कोई बेल-बूटे न थे। लोग उस समय म के सौन्दर्य की ओर ध्यान भी न देते थे।

अपराधी वहाँ लाया गया। मच पर उक्त रीति से बाँध दिया गया। सब लोग उसे देख सकते थे। दर्शकों की चिल्लाहट, हँसी और धिक्कार से आकाश गूँज उठा।

सब लोगों ने कासीमोडो को पहिचान लिया।

कितना आश्चर्यजनक परिवर्तन है! कल इसी स्थान में उसके 'पोप' होने की घोषणा की गई थी। वह मूर्खों का राजा और 'अव्यवस्था का शासक' था! मिश्र का ड्यूक, ट्यूनिस का बादशाह और गैलिली का सम्राट—तीनों उसकी सेवा में उपस्थित थे।

बादशाह के नियुक्त कर्मचारी ने वहाँ आकर सजा की घोषणा की। इसके बाद वह अपने आदमियों के साथ वहाँ से हट गया।

कासीमोडो की आँखें बन्द थी। बधन इतना कड़ा था कि वह हिल-डोल नहीं सकता था।

कासीमोडो ने बाँधे जाने के समय बाँधनेवालों के काम में कुछ भी रुकावट नहीं डाली। उसके चेहरे से केवल मूर्खता और आश्चर्य ही प्रकट हो रहा था। वह बहरा था, मगर आज वह अधा भी जान पड़ता था।

खैर, वह बाँध दिया गया। उसका कुर्ता हटा दिया गया। कभी कभी वह वैसे ही साँस ले रहा था, जैसे वह बछड़ा साँस लेता है जिसका सिर कसाई की गाड़ी से लटका हुआ रहता है।

'जेहन' तथा 'रानिन पौसेपीन' भी साथ-साथ, कचहरी से यहाँ
क, स्वभावत चले आये थे। जेहन ने कहा—मूर्ख, कुछ भी नहीं
समझ रहा है।

कासीमोडो का ऊँटो-जैसा कूबड तथा बालों से आच्छादित
गर्दन नगी दिखाई देने लगी। तब तो लोगों की हँसी का ठिकाना न
हा। उसी समय जल्लाद भी मच पर नजर आया।

जल्लाद ने वहाँ पर पहिले एक बालुका घडी रक्खी। फिर
अपना कोट निकाला। उसके हाथ मे एक लम्बा हटर था। बाँयें
हाथ से उसने अपनी आस्तीन को ऊपर चढाया।

जल्लाद ने अपने पैर को पटक दिया। चक्र घूमने लगा।
कासीमोडो भी घूमने लगा। लोग हँस पडे।

जल्लाद के कोडे, हवा को चीरते हुए, कासीमोडो के कन्धे
और गर्दन पर बरसने लगे।

कासीमोडो चकित हो उठा, जैसे स्वप्न देख रहा हो। अब बात
उसकी समझ में आई। वह बधन के साथ ही घूम गया। हटे के
मारे उसके चेहरे की दुर्दशा हो रही थी। फिर भी उसने आह तक
न की। वह साँड की तरह अपने सिरको दाहिने-बाँयें घुमाता रहा।

चक्र घूमता गया। मार पडती गई। तुरन्त रक्त के छींटे उड़ने
लगे। कुबडे के वृषभ-कन्धों से रक्त की धार बह चली।

कासीमोडो ने अपनी शक्ति की कठोर परीक्षा की। उसने
बधनों को तोड डालना चाहा। उसने अपनी सारी ताकत आज-
माई। लोहे की कड़ी कुछ फैल गई।

मोडो के चेहरे पर प्रकाश की रेखा खिंच गई। उसका चेहरा कुछ कोमल हो आया। उसके चेहरे पर क्रोध की जगह एक मधुर मुस्कान झलक उठी। मालूम होता था कि अभागे के लिए कोई रक्षक आ गया।

जब खच्चर मच के बहुत समीप आ पहुँचा, तब पादरी ने कासीमोडो को पहिचान कर अपने सिर को नीचा कर लिया—वह एकदम लौट पड़ा—एँड़ी दबाकर खच्चर को आगे बढा ले गया। मालूम होता था कि वह कासीमोडो द्वारा पहिचाने जाने के डर से ही भाग निकला।

वह पादरी आर्च-डिकन 'डान-क्लाडे-फ्रोलो' था।

बादल फिर काले होकर घिर आये—कासीमोडो के चेहरे पर छा गये। उसकी मुस्कान कडवी और निःराशामयी होकर उदासीनता में परिणत हो गई।

डेढ घटे से अधिक समय गुजर रहा था। उसपर पत्थर की वर्षा हो रही थी। निराश होकर उसने फिर जजीर को तोड डालने का प्रयत्न किया, पर व्यर्थ! तब वह बडी कडी आवाज मे पुकार उठा—पानी!

वह आवाज किसी मनुष्य की नहीं, बल्कि कुत्ते की जान पड़ती थी। लेकिन वह दर्दनाक आवाज भी दर्शकों के दिल मे दया का सचार न कर सकी, उलटे लोग और भी प्रसन्न हो उठे। पेरिस के जो भद्र नागरिक वहाँ इकट्ठे थे, वे किसी अश में चोरों और बद माशों से कम कठोर तथा क्रूर न थे—पशु वृत्तिवाले थे—नर-

पिशाच थे। उसकी प्यास पर व्यग के अतिरिक्त कोई सहानुभूति-सूचक स्वर न सुन पडा। उस समय उसका चेहरा क्रोध मे लाल हो रहा था। उसके मुँह से गाज निकल रही थी।

सचमुच वह दयनीय था भी नहीं, बल्कि उसको देख कर तो हँसी आती थी।

यहाँ यह भी कह देना उचित है कि कोई दयालु व्यक्ति यदि उस विपद्ग्रस्त को जल देना भी चाहता, तो दे नहीं सकता, क्योंकि उस दड-मच के साथ इतनी घृणा, लज्जा और अपमान का सयोग था कि कोई वहाँ दया दिखा ही नहीं सकता था।

निराशा भरी दृष्टि से फिर उसने हृदय विदारक स्वर मे कहा—पानी।

सब लोग हँस पडे।

इसे पियो—कहते हुए रॉबिन पौसेपीन ने एक 'स्पज' (जलसोख) को—जो गन्दे पनाले से बह कर आया था—उसके सामने फेंक दिया और कहा—अरे बहरा शैतान! ले, मुझपर भी तेरा कुछ ऋण है।

एक स्त्री ने निशाना लगाकर उसके सिर पर एक रोडा मारते हुए कहा—रात को बेतरह चिल्ला कर जगाने का यह सबक है।

एक लँगडे ने पूछा—क्यों बच्चू! अब भी तुम नाट्रोडेम के मीनार पर से हम लोगों पर टोना डालोगे ?

किसी ने एक घडे का टुकडा उसकी छाती पर फेंक कर कहा—इस में से जल पी ले, तुझे ही देखने से मेरी स्त्री के दो सिर वाला शैतान पैदा हुआ था।

तीसरी बार, हाँपते हुए, कासीमोडो ने पुकारा—पानी !

उस समय उसने देखा कि भीड़ छँट रही है। भीड़ में से एक युवती निकली। उस के हाथ में एक गँजड़ी थी। उसके साथ एक सफेद बकरी भी थी, जिसके सींग मढे हुए थे।

कासीमोडो की आँख चमक उठी। यह वही जिप्सी युवती थी, जिसको ले भागने का प्रयत्न उसने गत रात्रि किया था और जिसके लिए इस समय दण्डित हो रहा था। उसको मालूम हुआ कि यह युवती भी उससे बदला चुकाने आई है। उसने युवती को धीरे से सीढ़ियों पर चढते देखा।

कासीमोडो को इच्छा हुई कि युवती के साथ ही इस मच का नाश हो जाता, तो बड़ा अच्छा होता। यदि उसकी आँख में बिजली से नाश करने की शक्ति होती, तो वह युवती मच पर पहुँचने के पहिले ही राख हो गई होती।

वह युवती चुपचाप कासीमोडो के पास पहुँची। वह उस युवती से आँख चुरा रहा था।

युवती ने अपने कमरबन्द से लटकती हुई तुम्बी को खोला, उसको कासीमोडो के सूखे होठो के पास ले गई।

उस समय कासीमोडो की आँख से—जिसमे आग जल रही थी और जो अब तक सूखी पड़ी थी—एक आँसू की बड़ी बूँद टपक पड़ी।

शायद यह उस अभागे के जीवन का प्रथम अश्रुबिन्दु था!

वह जल पीना भूल गया।

अपनी घबराहट दिखाने के लिए युवती ने स्वाभाविक रीति से मुख मुद्रा बना ली। फिर एक मधुर मुस्कान के साथ उस तुम्बी के मुँह को उसके खुले हुए मुँह में डाल दिया।

उसने पेट-भर जल पिया। उसकी प्यास प्रचंड थी।

जब वह पानी पी चुका, तब उसने अपनी काली जिह्वा को—उस सुन्दर हाथ को, जिस ने उसे प्राण भिक्षा दी थी, चूमने के लिए—बाहर निकाला।

किन्तु युवती को रात की दुर्घटना भूली न थी और न उसकी तरफ से वह निःशंक ही थी। वह झट मंच से नीचे उतर गई।

पहला भाग

बकरी के गले मे गुप्त रहस्य

कई सप्ताह व्यतीत हो चुके थे।

मार्च महीने का प्रारम्भ था। सूर्य प्रसन्नता-पूर्वक चमक रहा था। उसकी किरणें चतुर्दिक् व्याप्त हो खेल रही थीं।

वह दिन वसन्त के उन दिनों मे से एक था, जिस दिन पेरिस के लोग स्क्वायरों, पार्कों तथा उपवनों में एकत्र हो रविवार की भाँति आनन्दोत्सव मनाते हैं। ऐसे निर्मल एवं सुन्दर वसन्त के दिनों में भी एक विशेष समय है, जब नाट्रीडेम के गिरजे का ऊपरी भाग अत्यन्त प्रशंसनीय सौन्दर्य से शोभायमान तथा मनोहर हो जाता है। वह समय है, जब सूर्य पश्चिम दिशा को गमन करते हुए नाट्रीडेम के गिरजे के ठीक सामने आ जाता है। किरणें शनै शनै तिरछी होकर स्क्वायर को सतह से ऊपर

उठती हुई गिरजे के विशाल द्वार पर चढ़ती जाती हैं। उन किरणों के पड़ने से दीवारों की मूर्तियाँ जगमगा उठती हैं—बीच का 'गुलाब झरोखा' शनैश्चर के नेत्र की तरह चमक उठता है।

ठीक वही समय था।

उस विशाल गिरजाघर के सामने, स्क्वायर के एक कोने में, एक महल था—जो उस समय मन-मोहिनी युवती कुमारियों के हास्य तथा मनोरंजन से मुखरित हो रहा था। उनकी माँग-मा लम्बी टोपियों में मोती की लड़ियाँ झूल रही थीं। उनके रेशमी और मखमली कपड़े सोने के काम से जगमगा रहे थे। उनकी चमकीली-भड़कीली पोशाकों और सुकोमल-सुकुमार अंगों को देखने से साफ पता चल जाता था कि वे सम्पन्न माँ-बाप की लाडिली पुत्रियाँ थीं और उनका जीवन भोग-विलास तथा आलस्य में कटता था। वे कुमारियाँ 'फ्लुयर-डी-लीज' की सखियाँ—डायने, अमेलोने, कोलोम्बे तथा चम्प-चेवरी—थीं। चम्पचेवरी अभी कमसिन थी।

वे सभी बड़े कुलीन घरानों की लड़कियाँ थीं, जो फ्लुयर की विधवा माँ 'अलोजे' के पास आई थीं। अप्रैल महीने में फ्लैंडर्स की राजकुमारी 'मार्गरेट' के स्वागतार्थ, प्रतिष्ठित कुमारियों को चुनने के लिए, पेरिस में 'बोजे' महाशय आ रहे थे, इसलिए पेरिस के आसपास तीस मील की दूरी तक बसे हुए कुलीन लार्ड लोग अपनी अपनी पुत्रियों के लिए इस सुअवसर से लाभ उठाना चाहते थे। बस इसी लिए उन्होंने अपनी-अपनी पुत्रियों को

श्रीमती 'अलोज' की देख-रेख मे भेज दिया था, जो उस समय अपनी इकलौती पुत्री के साथ नाट्रीडेम के स्क्वायर मे रहती थीं। उनका पति राजकीय सेना का एक अफसर रह चुका था।

जिस छत पर युवतियाँ बैठी थीं, उस पर एक कमरा बहुत ही सुसज्जित था। दीवारो पर रंगीन परदे लटक रहे थे। परदो पर सुनहरे रग की पत्तियो के बीच-बीच रग-बिरंगे पुष्प सुशोभित हो रहे थे। शहतीरों पर बने हुए व्यग चित्रों की शोभा अकथनीय थी। पचीकारी का काम और पत्थरों पर बनी हुई मूर्त्तियाँ इधर-उधर चमक रही थी। मिट्टी का बना हुआ एक शूकर का मस्तक एक आलमारी के ऊपर अपनी निराली छटा दिखा रहा था। कमरे की एक दीवार मे धुआँकश भी बना था, जिसके दिवाल पर ढाल-तलवार आदि हथियार सजे हुए थे। धुएँ की चिमनी के सामने, एक मखमली कुर्सी पर, श्रीमती 'गाडे-लोरियर' बैठी थीं। उनकी आयु के पचपन वर्ष उनके चेहरे तथा उनके वस्त्रों पर अंकित से थे। उनके पास ही एक कुलीन युवक खड़ा था। आकृति तथा खड़े होने की रीति से वह घमडी और डींग हाँकने-वाला व्यक्ति जान पड़ता था। उसकी वर्दी राजमहल के तीरन्दाज सिपाहियो के कैप्टन की-सी थी।

कुमारियो मे से कुछ झरोखे पर बैठी थीं और कुछ कमरे में। उन सब के घुटने पर एक बड़ा-सा परदा पड़ा था, जिस पर वे सब मिल कर सुई का काम कर रही थीं। वे धीरे-धीरे, दबी हँसी के साथ, बातचीत कर रही थीं। युवतियों के झुंड में जब कोई युवक

जा पड़ता है, तब यह बात उनके लिए स्वाभाविक हो जाती है। जिस युवक की उपस्थिति के कारण ये स्त्री-सुलभ चातुर्य तथा विभ्रम फूट पड़े थे, उसका ध्यान इन बातों की ओर दिखाई नहीं देता था। वह अपने कमरबन्द को बकलस पर दस्ताने लगे हुए हाथों के रगड़ने में व्यस्त जान पड़ता था। कभी-कभी वृद्धा उससे कुछ धीमे स्वर में कहती थी, जिसका उत्तर वह बड़ी भद्दी और विवशता-पूर्ण नम्रता के साथ देता था।

श्रीमती अलोजे की मन्द-मन्द मुस्कान तथा सारगर्भित इशारों से—जो वे युवक के साथ बातें करते समय अपनी पुत्री 'फ्लुयर-डी-लीज' की ओर करती जाती थीं—यह स्पष्ट था कि वह निकट भविष्य में होनेवाली मँगनी (सगाई) के विषय में बातचीत कर रही थीं। युवक तथा 'फ्लुयर-डी-लीज' का विवाह शीघ्र ही होनेवाला था, किन्तु युवक की उदासीनता और घबराहट से यह भी स्पष्ट था कि फ्लुयर-डी-लीज की ओर उसके प्रेम का आकर्षण नहीं था। उसके ढंग से मालूम हो रहा था कि वह थकावट से चूर हो रहा है, वह बेमौके छड़ा गया था।

वृद्धा के मस्तिष्क में उसकी पुत्री के अतिरिक्त कुछ न था। वह मूर्खा माता जो थी। उसने युवक की उदासीनता की ओर ध्यान न देकर फ्लुयर-डी-लीज के सुई के कामों की प्रशंसा का पुल बाँध दिया।

'यह देखो—युवक की आस्तीन को खींचते हुए उसने कहा—

तनिक उसकी ओर देख लो! देखो, किस निराले सौन्दर्य के साथ वह झुक रही है!

निश्चय—युवक ने कहा। फिर पहले जैसी-चुप्पी साध ली।

थोड़ी देर के बाद वृद्धा ने फिर कहना आरम्भ किया—तुमने पहिले कभी इस अपनी भावी परिणीता से अधिक प्रसन्न-चित्त या आकर्षक स्त्री देखी है? क्या किसी भी रमणी का रूप इसके रूप से अधिक सुन्दर हो सकता है? देख लो, क्या इसकी ग्रीवा बतख की गर्दन से भी बढ कर सुन्दर नहीं है? मैं तुम्हें फुसलाती नहीं हूँ! तुम्हारा भाग्य है जो तुम पुरुष हो! क्या सौन्दर्य की यह देवी पूजा के योग्य नहीं है? क्या तुम इसके प्रेम मे पागल नहीं हो रहे हो?

निस्सन्देह—युवक ने उत्तर दिया।

किन्तु उसका मन कहीं दूसरी जगह था।

तो फिर तुम उससे बातें क्यों नहीं करते?—वृद्धा ने उसे एक हल्का-सा धक्का देकर पूछा—उससे कुछ बात तो करो, आज-कल तुम मे आश्चर्य-जनक सलज्जता आ गई है।

हम पाठकों को विश्वास दिलाते हैं कि यह लज्जा या सकोच न तो युवक का स्वभाव-गत दोष ही था और न गुण ही। उसने सिर्फ़ पार्ट अदा करने का प्रयत्न किया।

फ्लुअर डी-लीज के समीप जाकर उसने कहा—बहन! यह क्या बना रही हो?

प्यारे भाई—घायल के स्वर में युवती ने उत्तर दिया—मैं तीन बार कह चुकी कि यह कुबेर का तहखाना है।

खँजड़ी की मधुर ध्वनि सुन पड़ी। फ्लुयर ने स्क्वायर की ओर देख कर कहा—कोई जिप्सी-कन्या है।

चलो देखें, चलो देखें—कह कर सब युवतियाँ छत पर निकल आईं। युवक को बातचीत से छुट्टी मिली। वह पहरे पर से लौटे हुए सिपाही की तरह सतोषपूर्वक कमरे के दूसरी ओर चला गया।

फ्लुयर की सेवा में उपस्थित होना युवक के लिये एक आनन्ददायक व्यापार था। मगर विवाह के दिनों को वेग से निकट आते देख उसका आकर्षण दिन पर-दिन कम होता गया।

यह स्वीकार करना पड़ता है कि उसके मनोभाव दृढ़ एवं स्थिर न थे और उसकी रुचि भी भद्दी थी। यद्यपि वह कुलीन और कप्तान था, तथापि उसमें साधारण सिपाहियों के बहुत से दोष आ गये थे। वह सराय को बहुत प्यार करता था। उसको किसी दूसरे स्थान या समाज में उतना आराम नहीं मिलता था। भद्दी दिल्लगियों, सिपाहियों, भोलीभाली सुन्दरियों और सुगम विजयों में उसका मन विशेष रमता था। घर पर उसने थोड़ा शिक्षा भी पाई थी। अपने माँ-बाप से उसने कुछ सम्पत्ति भी पाई थी, मगर छोटी उम्र में ही वह पल्टन में भर्ती हो गया। उसे बड़ी-बड़ी यात्राएँ करनी पड़ीं—कितने ही स्थानों में घेरे डालने पड़े। सैनिक कार्यों की कठोरता के कारण दिन दिन उसकी भलमनसी का चोला तार-तार उड़ता गया।

यद्यपि वह अब भी कभी-कभी 'फ्लुयर' से मिलने आया

करना था, तथापि वह उसके सामने झेंपता था। इस झेंप के दो कारण थे—एक तो अनेक स्थानो मे विचरण करने के कारण फ्लुयर के लिये उसके पास थोड़ा-सा प्रेम बच रहता था, दूसरे वह उन सुन्दर-सुशील एवं सलज्ज युवतियों के बीच बोलते समय अपनी जिह्वा का विश्वास नहीं करता था, क्योंकि उसे—जिह्वा को—शपथ खाने की आदत पड गई थी। वह डरता था, कि कहीं यह निगोडी जीभ लगाम तोड़कर सराय में न चली जाय, अर्थात्—सराय की भाषा मे न बोलने लगे। आप सोच सकते हैं, कि इसका प्रभाव क्या होता।

इन सब बातो के होते हुए भी सुरुचि शाली तथा सुन्दर होने का उसे दावा था। ये सब बातें एक साथ ठीक बैठ सकती हैं या नहीं, यह तो वे ही जानें, जो इनमे सामजस्य लाने का प्रयत्न कर सकते हैं। मैं तो केवल इतिहासकार हूँ।

खैर, चिमनी से सटकर युवक थोड़ी देर तक खड़ा रहा। 'फ्लुयर' अचानक बोल उठी—बन्धुवर! क्या तुमने मुझसे यह नहीं कहा था, कि आज से लगभग दो महीने पहिले, रात को पहरा देते समय, तुमने एक जिप्सी युवती को एक दर्जन डाकुओं के हाथ से बचाया था?

मेरा विश्वास है, कि मैंने कहा था—युवक कप्तान ने कहा।

अच्छा, स्क्वायर मे नाचनेवाली बस वही युवती हो सकती है, जरा यहाँ आकर उसे पहिचानो तो भाई—फ्लुयर ने आग्रह-पूर्वक कहा।

मेल-जोल कर लेने की एक गुप्त इच्छा युवक कप्तान के मन में जाग उठी। उस कोमल निमन्त्रण में बड़ा आकर्षण था। यह कैसे सम्भव था कि फ्लुयर ने तो उसे 'बन्धुवर' कहकर पुकारने का कष्ट उठाया और वह उसकी बगल में आकर खड़ा भी न होता? वह धीरे-धीरे छत पर गया।

उसके हाथ पर अपना हाथ रखते हुए फ्लुयर ने कहा—बँधा रेखा के अन्दर नाचती हुई उस युवती को देखो। वही तुम्हारी जिप्सी युवती तो नहीं है?

हाँ, मैं उसकी बकरी से उसको पहिचानता हूँ—युवक कप्तान ने कहा।

अहा! कितनी सुन्दर बकरी है!—अमेलोने ने प्रशंसा सूचक शब्दों में कहा।

उसके सींग क्या सोने के बने हैं?—चम्पचेवरी ने पूछा।

अपनी आराम-कुर्सी से उठे बिना ही अलोजे बोबी ने कहा—क्या वह उन जिप्सियों में से नहीं है, जो पार साल 'गिनडे' द्वार से नगर में आये थे?

माँ!—फ्लुयर ने बड़े प्रेम से कहा—वह दरवाजा अब 'पोर्ट डी इनफर' कहलाता है।

वह जानती थी कि उसकी माँ के प्राचीनता प्रेम से युवक कप्तान को दुख होता है। सचमुच वह दाँतों में उँगली दबा रहा था।

इतने ही में चम्पचेवरी ने अपने चंचल नेत्रों को नाट्रीडेम के

मीनार के शिखर की ओर उठा कर कहा—देखो। वह काला आदमी वहाँ क्या कर रहा है?

सब की सब उधर ही देखने लगीं। एक आदमी उत्तरी मीनार के शिखर पर, अपने हाथों को रेलिंग पर टेक कर, स्क्वायर की ओर देख रहा था। वह पादरी था। उसका वस्त्र साफ दिखाई देता था। उसका चेहरा उसके हाथ पर था। वह मूर्ति की तरह निस्तब्ध था। स्क्वायर की ओर वह निर्निमेष भाव से देख रहा था।

वह तो आर्चडिकन है—फ्लुयर ने कहा।

तुम्हारी आँखें कितनी तेज हैं जो तुम यहाँ से उसे पहिचान लेती हो!—कोलोम्बे बोल उठी।

अच्छा होता यदि वह जिप्सी-युवती सावधान हो जाती, क्योंकि वह पादरी जिप्सियों को, अच्छी निगाह से नहीं देखता—फ्लुयर ने कहा।

फिर युवक की ओर घूम कर उसने कहा—तुम उस जिप्सी को जानते हो? कृपा कर उसे ऊपर आने का इशारा करो, बड़ा मनोरंजन होगा।

हाँ हाँ—ताली बजाते हुए सब युवतियों ने कहा।

युवक कप्तान ने उत्तर दिया—व्यर्थ! वह निस्सन्देह मुझे भूल गई होगी, और मैं उसका नाम भी तो नहीं जानता। क्या जब आप लोगों का अनुरोध है, तो मैं उसे बुलाने का प्रयत्न करूँगा।

उसने झुक कर पुकारा—ओ नाचनेवाली!

नाचनेवाली उस समय खँजड़ी नहीं बजा रही थी। [illegible]

आवाज आई थी, उधर उसका सिर मुड गया। उसकी सतेज आँखों ने युवक को देख लिया। वह निस्तब्ध हो गई।

नाचनेवाली !—कप्तान ने फिर आने का इशारा करते हुए दुहराया।

युवती ने उसकी ओर देखा। उसके कपोलों पर गुलाबी आभा दौड गई। अपनी खँजडी को काँख मे दबा कर वह दर्शकों की भीड़ को चीरती हुई आगे बढी। दर्शकों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा।

डर-डर कर पाँव उठाती हुई उस घर के दरवाजे की ओर बढने लगी, जहाँ से युवक ने उसे बुलाया था। उसकी दृष्टि से भय का भाव प्रकट हो रहा था, मानो कोई पक्षी अजगर के आकर्षण में फँस गया हो।

थोडी देर में, घर के द्वार पर आकर वह खडी हो गई। उस समय वह लज्जा से सुर्ख और सकुचित हो रही थी। उसकी साँस कठिनता से काम दे रही थी। उसके रतनारे लोचन पृथ्वी की ओर देख रहे थे। वह आगे बढ़ने का साहस न कर सकती थी।

चम्पचेवरी ने दौड़ कर उसका हाथ पकड लिया। फिर भी वह द्वार पर मूर्त्ति की तरह खडी ही रही। उसके आगमन से उन युवतियो पर एक आश्चर्य-जनक प्रभाव पड़ा।

यह निश्चित था कि उस सुन्दर युवक को प्रसन्न करने की चाह उन सुन्दरियों के हृदय मे खेल रही थी। उसकी चमकीली वर्दी ही उनके चोचलो और नखरेबाजियो का लक्ष्य था। अब

तक वह वहाँ था, तब तक उनमें एक होड़-सी चल रही थी। यह होड़ उचित राह पर जा रही थी क्योंकि उन्हें सौन्दर्य में समान भाग मिला था। इस होड में प्रत्येक युवती जीत की आशा कर रही थी।

किन्तु जिप्सी सुन्दरी के आते ही सौन्दर्य के पलड़ों की डंडी हिल गई। वास्तव में उसका सौन्दर्य ऐसा था कि उससे एक विचित्र प्रकाश फैलता-सा जान पड़ा। उस सुन्दर कमरे के अंधकार में उसकी सुन्दरता और भी बढ़ गई। वह इस प्रकार प्रकाशमयी हो उठी, जैसे मशाल दिन के उजेले से अन्धकार में लाने पर चमक उठती है।

कुलीन कुमारियाँ अपने को सुन्दर समझती हुई भी चकाचौंध में पड़ गईं। उन्हें जान पड़ने लगा, जैसे उनकी सुन्दरता कम हो गई है। उनका युद्ध समाप्त हो गया। तो भी वे एक दूसरे को भली भाँति समझ रही थीं।

स्त्रियों की स्वाभाविक बुद्धि, पुरुषों की बुद्धि की अपेक्षा, एक दूसरे को समझने तथा उत्तर देने में अधिक तेज होती है। सब ने समझ लिया कि प्रतिद्वन्द्विनी आ गई है, अतएव एक दूसरे की सहायता के लिये तत्पर हो गईं।

मदिरा की एक बूँद, गिलास के पानी को रँगने के लिये, पर्याप्त है। सुन्दरियों को चिड़चिड़ाहट से रँगने के लिये उनके दल में एक सुन्दरतर युवती का प्रवेश पर्याप्त है—विशेषकर उस समय, जब उनके गिरोह में केवल एक सुन्दर युवक भी हो।

उनका स्वागत जिप्सी सुन्दरी के लिये बहुत ठंडा पड़ गया। उन्होंने उसे नख से शिख तक देखा, फिर अपने दल में एक दूसरे की ओर देखा। इतना ही पर्याप्त था। उन्होंने एक दूसरे को समझ लिया।

जिप्सी युवती उनके सभाषण की प्रतीक्षा कर रही थी। वह इतना घबराई हुई थी कि उसके नेत्र ऊपर उठते ही न थे।

युवक कप्तान ने शान्ति भग की, विश्वास भरी आवाज में कहा—मेरी बातों का विश्वास करो बहनो, यह एक अत्यत मन मोहक जीव है। तुम्हारा क्या विचार है ?

उसकी इस प्रशसा से उनकी वह स्त्री-सुलभ ईर्ष्या भड़क उठी, जो उस समय जिप्सी युवती के विरुद्ध कटिबद्ध थी।

फ्लुयर ने मधुर नखरे के साथ घृणा-भरी आवाज में कहा—वह देखने में तो बुरी नहीं है।

अन्य कुमारियाँ आपस में कानाफूसी कर रही थीं।

बीबी अलोजे ने जिप्सी युवती की ओर सकेत करके कहा—छोटी बच्ची ! भीतर आओ।

छोटी ! भीतर आओ—विदूषक की भाँति गभीरता से चम्पा शेवरी ने कहा, क्योकि वह मुश्किल से जिप्सी युवती की कमर तक पहुँच पाती थी।

इजमेरल्डा वृद्धा के पास गई।

मेरी सुन्दर छोकरी !—युवक ने उसकी ओर एक-दो पग बढ़ा कर कहा—मैं नही जानता कि तुम्हारे द्वारा पहिचाने जाने का असीम आनन्द मेरे भाग्य में बदा है या नहीं ?

जिप्सी युवती ने बात काट कर कहा—निश्चय।

उसकी स्मरण-शक्ति प्रबल है—फ्लुयर ने कहा।

उस रात को तुम बड़ी फुर्ती से भाग गईं, क्या मैंने तुम्हे डरा दिया था ?—युवक ने पूछा।

ओह ! नहीं—जिप्सी सुन्दरी ने उत्तर दिया।

'निश्चय' के बाद 'ओह ! नहीं' जिस स्वर में उस जिप्सी युवती ने उच्चारण किया, उसमें कुछ ऐसी बात थी—कुछ ऐसा लोच था—जिससे फ्लुयर को बडी चोट पहुँची।

सुन्दरी ! तुम अपने स्थान में मेरे लिये एक बदमाश, काने और कुबड़े आदमी को छोड़ गईं। लोग कहते हैं कि वह आर्चडिकन का दत्तक पुत्र है—शैतान है। उसका नाम भी बडा कठोर है—कुछ याद नहीं पडता कि क्या है। उसका नाम शायद किसी बड़ी छुट्टी के नाम पर है। उसने तुम्हे ले भागने का साहस किया था, जैसे तुम उसके योग्य जोडी थीं ! यह उसकी धृष्टता थी। वह उल्लू तुमसे क्या चाहता था ? ठीक बताओ।

उसकी जिह्वा गली-कूचे की युवतियों के पास बे-लगाम हो जाती थी।

मैं नहीं जानती—जिप्सी ने उत्तर दिया।

क्या कभी किसी ने ऐसी शोखी देखी है ? एक घंटी बजाने-वाला एक युवती को ले भागे, मानों वहीं का सूबेदार हो ! शरीफों के शिकार पर एक अदना आदमी हाथ उठावे ? कितनी भद्दी बात है ! यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो मैं बताऊँ कि उस पर कैसी मार पडी ?

बेचारा ग़रीब आदमी !—जिप्सी ने कहा।

उसे दंड-मंच का वह दृश्य याद आ गया।

युवक कप्तान खिलखिलाकर हँस पड़ा, बोला—जाम (मदिरा पीने का प्याला) की कसम ! तुम्हारी करुणा असामयिक है। मैं तो उतना मोटा हो जाऊँ जितना पोप, यदि—

वह तुरन्त रुक गया। खेदपूर्ण स्वर में बोला—महिलाओ मुझे क्षमा करना, मैं एक मूर्खता की बात कहने जा रहा था।

छि: महाशय—कोलोम्बे बोल उठी।

कप्तान महाशय उससे उसी की भाषा में बातचीत कर रहे हैं—धीरे से फ्लुयर ने कहा।

उस समय उसके क्रोध का पारा बहुत चढ़ गया था। उसने देख लिया कि कप्तान महाशय जिप्सी सुन्दरी पर कैसे लट्टू हो रहे हैं। उसने यह भी देखा कि कप्तान महाशय उसकी ओर घूम कर एक सिपाही की तरह कह रहे हैं—मेरे सर की कसम यह युवती बड़ी ही सुन्दरी है।

वस्त्र इसके बहुत ही भद्दे हैं—अपने दाँतों को दिखाने के लिए मन्द मुस्कान के साथ डायने ने कहा।

इस रिमार्क से सब को कुछ प्रसन्नता तथा प्रकाश मिला। इससे जिप्सी की कमजोरी का पता चला। उसके सौन्दर्य से, ... कर उन्हों ने उसके वस्त्र पर धावा किया। बारी-बारी से ... युवतियों ने उसके वस्त्र की आड़ में उस पर वार किया।

यह दृश्य तो युवक कप्तान 'फीवस' से भी बढ़ कर ...

आदमी के लिए देखने योग्य था। उस गली-गली घूमनेवाली जिप्सी सुन्दरी पर उन सुन्दरियों की क्रोध भरी विषाक्त जिह्वा का वार किसी बुद्धिमान मनुष्य के ही देखने योग्य था।

ईर्ष्या से उन्हो ने उसके मैले-कुचैले और ऊटपटाँग वस्त्र की आलोचना की—उसकी खूब दिल्लगी उड़ाई। उनके हास्य, व्यंग तथा नाक सिकोड़ने की कोई सीमा न रही। कुटी चितवनों से वे उस पर आवाज कसती जाती थीं। वे रोम की उन स्त्रियों की तरह थीं, जो सुन्दरी दासियों के वक्षस्थल में सोने की पिन खोंस कर अपना मनोरंजन करती थीं। उनकी समता उन शिकारी कुत्तों से हो सकती है, जो अपनी अग्निमयी आँखों से हिरन को देखते हैं, पर अपने स्वामी के रोकने के कारण उसे खा नहीं डालते।

उन कुलीन घरों की लड़कियों के सामने उस गली-गली नाचनेवाली की बिसात ही क्या थी? उन्होंने उसकी उपस्थिति का तनिक भी ख़याल न किया, उसके विषय में बुरी-से बुरी बातें उसी के सामने बोलती गईं।

किन्तु इस पिन के चुभाव की ओर से वह जिप्सी सुन्दरी उदासीन न थी। कभी-कभी उस की आँखों में, उसके कपोलों पर, लज्जा और क्रोध दौड़ जाते थे। उसके होठों पर अवज्ञा के शब्द कभी कभी काँप उठते थे। वह उदास, मधुर और उपेक्षापूर्ण दृष्टि से युवक को देख रही थी। उसकी वह दृष्टि प्रसन्नता और प्रेम से भरी जान पड़ती थी। बाहर निकाले जाने के डर से वह अपने-आप को बहुत रोक रही थी।

युवक कप्तान 'फीबस' भी हँस रहा था। उसने दया परवश होकर धृष्टता के साथ उस जिप्सी सुन्दरी का पक्ष लिया। उसने अपने स्वरों को झनझनाते हुए कहा—उन्हें कहने दो छोटी! निस्सन्देह तुम्हारा वस्त्र आश्चर्यजनक है, तुम-जैसी सुन्दरी को वस्त्र की क्या परवाह ?

अच्छे दयालु निकले!—कोलोम्बे ने युवतियों की पंक्ति से अपनी बतख-जैसी गर्दन को निकालते हुए कहा—मैं देखती हूँ, कि जिप्सी की चमकीली आँखों के कारण बादशाह के शरीर-रक्षकों के बदन में भी आग लग जाती है।

क्यों नहीं!—युवक फीबस ने कहा।

कप्तान फीबस ने यह उत्तर स्वभावत दे दिया, किन्तु इसका असर अचानक लगी हुई चोट की तरह हुआ। कोलोम्बे तथा डायने हँस पड़ीं, मगर फ्लुयर की आँखों में आँसू भर आये।

जिप्सी की आँखें, कोलोम्बे की बात पर, अधोमुखी हो गई थीं, किन्तु इस बार दर्प तथा प्रसन्नता से, वे ऊपर उठ आईं और युवक फीबस पर फिर जा जमीं। उस क्षण वह सचमुच सुन्दरी थी।

वृद्धा को यह दृश्य बुरा लगा, यद्यपि वह इसका कारण नहीं जानती थी। वह एकाएक बोल उठी—अरी लड़की! मेरे पैर में यह क्या गड़ रहा है ? ओह! यह कमबख्त कुरूप बकरी है!

सचमुच वह 'दजाली' थी, जो अपनी स्वामिनी को खोजते खोजते वहाँ पहुँच गई थी। उसके सींग वृद्धा के वस्त्र के फन्दे में

जा फँसे थे। इस कारण सबका ध्यान उसी ओर चला गया। जिप्सी ने बिना कुछ कहे-सुने उसके सींग को सुलझा दिया।

इस भली बकरी के गुणों की बड़ाई कैसी अच्छी लगती है—चम्पचेवरी ने कहा।

जिप्सी घुटने के बल बैठ कर उसे सहलाने लगी।

डायने ने कोलोम्बे के कान में कहा—ओह! मुझे पहले क्या न खयाल हुआ? इस जिप्सी के विषय में मैं पहिले ही बहुत कुछ सुन चुकी हूँ। लोग कहते हैं, कि यह जादूगरनी है और इसकी बकरी अश्चर्य जनक तमाशा दिखाती है।

बहुत अच्छा—कोलोम्बे ने कहा—अब बकरी से हमारा मनोरंजन होगा। इसे अपना तमाशा दिखाना ही होगा।

दोनो ने एक साथ ही जिप्सी से कहा—छोटी! अपनी बकरी से कुछ करामात कराओ।

मैं आप लोगों का मतलब नहीं समझती—जिप्सी ने कहा।

कोई कौतुक, कोई जादू, कोई टोना।

मैं नहीं समझती—ऐसा कहकर वह बकरी से बोल उठी—दजाली! दजाली!

उस समय फ्लुयर ने एक कामदार बटूह बकरी के गले में देखा। पूछा—यह क्या है?

जिप्सी ने उस युवती के चेहरे को देख कर कहा—यह मेरा गुप्त रहस्य है।

मेरी बड़ी प्रबल इच्छा है कि इसका गुप्त रहस्य सुनूँ—फ्लुरा ने सोचा।

उसी समय वृद्धा क्रोध में कहती हुई उठी—जिप्सी। न तू नाचती है, न तेरी बकरी ही, तो फिर तू यहाँ क्यो देर लगा रही है?

जिप्सी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वह धीरे-धीरे द्वार की ओर बढ़ी, मगर उसे मालूम हुआ, जैसे कोई चुम्बक पीछे से खींच रहा है। एकबारगी वह युवक फीनस की ओर देखकर रुक गई। उसके रतनारे नयन डबडबा गये थे।

युवक कप्तान बोल उठा—तुम्हे इस तरह नहीं जाना होगा। लौटो, हम लोगो को अपना नाच दिखाओ। और हाँ, तुम्हारा नाम क्या है सुन्दरी?

इज़मेरल्डा।

इस आश्चर्यजनक नाम पर सब सुन्दरियाँ हँस पड़ीं।

लड़की के लिये कितना कठोर नाम है?—डायने बोल उठी।

अब तुम भाँपती हो कि यह जादूगरनी है?—अमेलोन ने कहा।

इससे पहले ही चम्पचेरी बकरी को एक कोने मे बहला ले गई थी। वे दोनो परस्पर मित्र हो गईं। जिज्ञासु बालिका ने थैले को खोलकर उसको उलट दिया—लकड़ी के टुकड़ो पर अलग अलग अक्षर लिखे थे।

ज्योंही ये अक्षर चटाई पर गिरे, त्योंही बकरी उसे अपने खुरों से टाल-टाल कर एक कायदे से रखने लगी। बालिका को बकरी

की इस करामात पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने फ्लुयर का हाथ पकड़ कर कहा—दीदी, यह देखो, बकरी ने क्या कमाल किया है।

फ्लुयर ने उसे देखा। देखते ही काँप उठी। चटाई पर पड़े अक्षरों से लिखा था—फीबस।

बकरी ने इसे बनाया है?—फ्लुयर ने स्वर-भंग की मुद्रा में पूछा।

हाँ दीदी—चम्पचेवरी ने उत्तर दिया।

चम्पचेवरी पर अविश्वास करना सम्भव न था, क्योंकि वह हिज्जे तक नहीं कर सकती थी।

यही इसका गुप्त रहस्य है—फ्लुयर ने सोचा।

इसी बीच में सभी वहाँ आ पहुँचे—वृद्धा माँ, कुमारियाँ, जिप्सी और कप्तान युवक भी।

जिप्सी को अपनी बकरी की मूर्खता मालूम हो गई। वह पहिले लाल, फिर पीली हो उठी। वह काँप रही थी, क्योंकि वह युवक कप्तान के सामने दोषी थी। कप्तान मुस्किरा रहा था। उसकी मुस्कान में सतोष तथा आश्चर्य का मिश्रण था।

फीबस!!!—आश्चर्य में डूबी हुई कुमारियों ने कहा,—क्यों, यह तो कैप्टेन का नाम है?

तुम्हारी स्मरण शक्ति प्रबल है—फ्लुयर ने अवाक् जिप्सी की ओर होकर कहा।

फिर अपने चेहरे को अपने हाथों से छिपाते हुए कह उठी—ओह! यह तो जादूगरनी है!

वह रो रही थी। उसके अन्तःकरण में एक कर्कश स्वर झंकृत हो उठा—यह तुम्हारी प्रतिद्वंद्विनी है।

वह मूर्च्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी।

मेरी पुत्री! मेरी पुत्री! भयभीत माता बोल उठी—शैतान जिप्सी, दूर हो!

पलक मारते ही इजमेरल्डा ने गिरे हुए अक्षरों को उठा कर 'दजाली' को इशारा किया, और बाहर निकल गई। मूर्च्छिता फ्लुयर दूसरे कमरे में उठाकर गई।

युवक कप्तान 'फीबस' अकेला रह गया। कुछ देर तक आगा पीछा करके फिर उसने जिप्सी का अनुसरण किया।

पादरी और दार्शनिक बहुत दूर हैं

वह पादरी, जिसे लड़कियों ने नाट्रीडेम के गिरजे के उत्तरी मीनार पर से स्क्वायर की ओर ताकते देखा था, क्लाडे-फ्रोलो के अतिरिक्त कोई दूसरा न था।

पाठक उस रहस्यमयी कोठरी को भूले न होंगे, जहाँ वह पादरी अपने अध्ययन का कार्य करता था।

सूर्य के अस्ताचल-गमन से एक घंटा पहिले पादरी उस कोठरी में पहुँच जाता और अपने को उसी में बन्द कर लेता था। उसकी रात वहीं व्यतीत होती थी। उस दिन वह ज्योंही कोठरी के द्वार पर पहुँचा और ताले में चाभी—जिसे वह सर्वदा अपनी थैली में रखता था—लगाने लगा, त्योंही उसे गँजड़ी की आवाज़ सुनाई दी। वह आवाज़ स्क्वायर की ओर से आ रही थी। वह चटपट ताले से चाभी बाहर निकाल मीनार पर चढ़ गया और उदास तथा ध्यान मग्न-सा होकर स्क्वायर की ओर देखने लगा।

उस समय वह निस्तब्ध था—एक ही दृश्य और विचार में लीन था। सारा पेरिस उसके पैरों के नीचे था—उसके महलों के गुम्बज, बड़े-बड़े आलीशान मकान, उसकी नदियाँ और पुल, सड़कों पर भ्रमणशील नर-नारि वृन्द नाट्रीडेम के चारों ओर फैल रहे थे। मगर उस सम्पूर्ण नगर में आर्चडिकन एक ही स्थान देख

सिर पीछे झुका था, चेहरा लाल हो रहा था—और दाँतों के बीच एक कुर्सी अड़ी थी। उस कुर्सी पर एक पड़ोसी की बिल्ली बँधा थी, जो भय से म्याऊँ-म्याऊँ चिल्ला रही थी।

कुमारी की कसम!—आर्चडिकन क्राडे चिल्ला उठा (जब बाजीगर उसके सामने से होकर निकला)—मास्टर पियरे ग्रींगो, यरे यहाँ क्या कर रहा है?

आर्चडिकन की कर्कश आवाज से उसके हृदय में ऐसी हलचल मच गई कि उसका 'बैलेंस'-बिगड़ गया और उसका स्तूप—कुर्सी, बिल्ली, सभी कुछ—दर्शकों के सिर पर तितर बितर हो गिर पड़ा। चारों ओर शोर मच गया। हँसी के ठहाके उड़ने लगे।

मास्टर पियरे ग्रींगोयरे को—सचमुच वही था!—यदि आर्च डिकन गिरजे की ओर न बुला ले जाता तो—बिल्ली तथा दर्शकों की चोट के लिये काफी मूल्य चुकाना पड़ता।

गिरजे मे अंधकार छा गया था। वह उस समय सुनसान पड़ा था। कहीं-कहीं चिराग जल उठे थे। केवल वहाँ 'गुलाब झरोखा'—जिसके विविध रंग डूबते हुए सूर्य की किरणों में स्नान कर रहे थे—उस अंधकार में भी हीरक-राशि की तरह प्रकाश दे रहा था, उसका प्रतिबिम्ब गिरजे के मध्य भाग में पड़ रहा था।

थोड़ी दूर भीतर जाकर पादरी एक खम्भे के सहारे खड़ा हो गया और ग्रींगोयरे की ओर गौर से देखने लगा। वह वैसी निगाह न थी, जिसका भय ग्रींगोयरे को उस विद्वान द्वारा उक्त दर्शन

मण्डली में पहिचान जाने के संकोच से हो आया था। पादरी की निगाह में भर्त्सना या व्यंग का चिन्ह न था। उसमें गंभीरता थी—वह शान्त तथा पैनी थी।

आर्चडिकन ने कहा—यहाँ आओ मास्टर पियरे! तुम्हें बहुत कुछ समझाना है। सबसे पहिले यह बताओ कि तुम दो महीने में मुझसे क्या नहीं मिल सके? और, आज मैंने बड़े अचम्भे के साथ तुम्हें गली में इस दयनीय दुर्दशा में पाया है। तुम तो सेब की तरह आधे लाल और आधे पीले हो रहे हो।

महाशय!—ग्रींगोयरे ने करुणाजनक स्वर में कहा—निश्चय ही मेरा वस्त्र विचित्र है और मुझे इसकी बड़ी शर्म है। पर मेरे श्रद्धेय मास्टर! मैं कर क्या सकता था? इसका सारा दोष मेरे पुराने कोट पर है, जो जाड़े के आरम्भ काल में ही फटने के बहाने से किसी चीथड़े बटोरनेवाले की टोकरी में चला गया। सभ्यता अभी उस स्थान पर नहीं पहुँची है, जहाँ मनुष्य नंगा ही रह सकता है। इसके सिवा जनवरी के महीने में हवा भी तो बहुत ठंडी हो चली है। चूँकि यह कोट आप-ही-आप आ गया, इसलिये मैंने इसे स्वीकार कर लिया और अपने पुराने काले कोट को छोड़ दिया। आज मैं सेंट-जेनेस्ट की तरह विचित्र वेश में हूँ।

तुम्हारा पेशा भी क्या ही सुन्दर है!—आर्चडिकन ने कहा।

मैं स्वीकार करता हूँ मास्टर, कि कविता बनाना, फिलासफी में लीन रहना और भट्ठी की आग जलाना—ये काम कुर्सी पर बिल्ली नचाने से कहीं अच्छे हैं। इसलिये जब आपने मुझे

पादरी का चेहरा प्रकृत अवस्था को प्राप्त हो चुका था। उसने कहा—तब, मास्टर पियरे! क्या तुम्हारा विश्वास है कि इस स्त्री को किसी पुरुष ने स्पर्श नहीं किया है?

अन्ध-विश्वास के विरुद्ध जबान हिलाना व्यर्थ है। ब्रह्मचर्य की उम्र पर खब्त सवार रहती है। उसके बचने के तीन कारण हैं—पहिला यह कि मिश्र का ड्यूक उसकी रक्षा करता है, शायद वह उसे किसी भले पादरी के हाथ बेंचना चाहता है; दूसरा यह कि उसकी सारी जाति उसे दूसरी 'मेरी' की तरह श्रद्धा की दृष्टि से देखती है; तीसरा यह कि एक कटार वह कोतवाल की आज्ञा के विरुद्ध सर्वदा अपने पास रखती है—यदि आपने उसकी कलाई पकड़ ली, तो समझिये कि कटार उसके दूसरे हाथ में नाच रहा है। मैं आपको बताये देता हूँ कि वह शहद का छत्ता नहीं, बर्रे का छत्ता है।

ग्रींगोयरे की राय में इजमेरल्डा का रूप सुन्दर और मनमोहक था। वह एक अति रूपवती स्त्री थी। केवल थोड़ा सा दोष उसका मुँह बनाना था। वह सरला प्रेममयी तथा संसार के पापों से अनभिज्ञ थी। सब चीजों को वह बड़े चाव से देखती थी। खासकर नाच का उसे बड़ा शौक था। उसके पाँवों में अदृश्य पर लगे थे। वह मधुमक्खी की नाईं सर्वदा चक्कर लगाने ही में आनन्द लेती थी।

ग्रींगोयरे को पता लग गया था, कि बचपन में ही वह दूर-दूर की यात्रा कर चुकी थी—स्पेन और सिसिली में घूम चुकी थी। वह प्रायः कल्पना किया करता था, कि वह काफिले के साथ यूनान में कुस्तुनतुनियाँ के रास्ते पर जा रही थी।

ग्रींगोयरे ने कहा कि जिप्सी लोग अलजीरिया के बादशाह की जा हैं। हाँ, एक बात यह भी निश्चित है, कि इजमेरल्डा फ्रांस में ोटी ही अवस्था में आ गई थी। अनेक देशों से वह विचित्र ापाएँ, गीत और भाव सीख आई है, जिससे उसकी बातचीत— सके वस्त्रों की तरह ही—अस्तव्यस्त जान पड़ती है। जिन ुहल्लों में वह जाती है, वहाँ के रहनेवाले उसे—उसकी मस्तानी ाल, उसकी मनोरंजक तथा सजीव भावभंगी एवं कलापूर्ण ृत्य के लिये—उसे प्यार करने लगते हैं। वह कहती थी, कि नगर ं सिर्फ दो ही आदमी उससे घृणा करते हैं—एक तो तोरलैंड की ्कान्तवासिनी और दूसरा एक पादरी, जिसकी विचित्र निगाहों और बातचीत से वह भय खाती है।

इस दूसरी बात से आर्चडिकन का कुछ घबराहट-सी मालूम हुई। ग्रींगोयरे ने इस ओर कुछ ध्यान नहीं दिया, क्योंकि दो महीने में उसको 'ग्रेव' के होलिका दहन की बात—जहाँ उसने जिप्सी को पहिले पहिल देखा था—भूल गई थी। भला आर्चडिकन की उपस्थिति उसे कहाँ तक याद रहती!

उसके सिवा जिप्सी युवती को किसी का भय न था। वह कभी किसी का हाथ देखकर भविष्य कथन नहीं करती थी, इसलिये जादूगरी के अभियोग का भय भी उसे न था, जैसा कि जिप्सी स्त्रियों पर लगाया जाता था। तिस पर तुर्रा यह कि ग्रींगोयरे ने उसके भाई का स्थान ग्रहण किया था।

दार्शनिक ग्रींगोयरे इस प्रकार के आध्यात्मिक विवाह के भार

को सन्तोष-पूर्वक सह रहा था। जो हो, इससे उसको भोजन तथा रहने के स्थान का ठिकाना हो गया था।

ग्रींगोयरे नित्य इजमेरल्डा की सहायता किया करता था। रात को दोनों एक ही छत के नीचे सोते थे। जिप्सी को एक छोटे से कमरे में सोने की आज्ञा उसने दे दी थी। वह पवित्र चरित्र मनुष्य की नींद सोता था। सब तरह से उसका जीवन आनन्द मय था—ध्यान में डूबने के लिये तो बड़ा ही अनुकूल था!

अन्तःकरण में दार्शनिक ग्रींगोयरे को यह विश्वास नहीं था, कि वह उस सुन्दरी युवती को प्यार करता है। वह उसकी बकरी को भी खूब प्यार करता था। वह सुन्दर, कोमल, समझदार एवं चतुर बकरी थी। मध्यकालीन युग में इन चतुर जानवरों को पढ़ानेवालों की कमी न थी।

ग्रींगोयरे ने इन सब बातों को पादरी को समझाया। पादरी भी बड़े ध्यान से सुन रहा था।

जिप्सी ने बकरी को तमाशे दिखाना इस तरह सिखा दिया है कि खँजड़ी उसके सामने कर दीजिये और वह तमाशा दिखाने लगेगी। वह सिखाने में बहुत चतुर है। उसने बकरी को थोड़े दिनों में काठ के टुकड़ों पर बने हुए अक्षरों द्वारा 'फीबस' लिखना सिखा दिया है।

'फीबस!'—पादरी ने कहा—'फीबस' क्या?

मैं नहीं जानता—ग्रींगोयरे ने कहा—हो सकता है कि तुम वह कोई गुप्त जादू का मंत्र समझती हो। जब वह अकेली रहती है, तो इस शब्द को धीरे-धीरे कहती है।

तुम निश्चय पूर्वक कहते हो कि यह एक शब्द है, नाम नहीं ?—फ्राडे ने ग्रींगोयरे पर पैनी दृष्टि डालते हुए पूछा ।

किसका नाम ?—कवि ने पूछा ।

मैं कैसे जानूँ ?—पादरी ने कहा ।

मेरा विश्वास यह है कि जिप्सी लोग अग्निपूजक होते हैं । वे सूर्य की पूजा करते हैं । शायद इसलिये वह 'फीबस' को रटा करती है ।

पर यह मुझे उतना विश्वसनीय नहीं जँचता, जितना तुम्हें ।

कोई चिन्ता नहीं । इससे मेरा कुछ सबंध नहीं है । वह जितनी बार चाहे, 'फीबस' का उच्चारण करे । मेरा पूर्ण विश्वास है कि 'दजाली' मुझ भी उतना ही प्यार करती है जितना उसे ।

'दजाली' कौन है ?

वही बकरी ।

आर्चडिकन थोड़ी देर के लिये विचार में मग्न हो गया । अचानक वह ग्रींगोयरे की ओर मुड़ा । बोला—तुम शपथ खाते हो कि तुमने उसे कभी स्पर्श तक नहीं किया है ?

किसको ? बकरी को ?—ग्रींगोयरे पूछ बैठा ।

नहीं, उस औरत को ।

मेरी स्त्री ? हाँ, मैं शपथ खाता हूँ कि मैंने कभी—

और तुम जो बहुधा उसके साथ अकेले रहते हो सो ?

शाम को सिर्फ एक घंटा ।

डानक्लाडे की त्योरी चढ़ गई ।

अपनी माता की शपथ खाकर कहो कि तुमने उसे कभी अँगुली की नोक से भी नहीं छुआ है—उग्रता-पूर्वक पादरी ने कहा।

यदि तुम्हारी इच्छा है, तो मैं अपने पिता की भी शपथ खा लूँगा, पर श्रद्धेय मास्टर! मुझे भी एक सवाल पूछ लेने दीजिये।

पूछो।

आपको इस प्रश्न से क्या मतलब ?

लज्जावती युवती के गण्डस्थल की तरह पादरी का कपाल लाल हो उठा। उसको कुछ उत्तर न सूझ पड़ा। फिर कुछ घबराहट के साथ उसने कहा—सुनो मास्टर पियरे, तुम अब भी अपवित्र नहीं हुए हो, इतना तो स्पष्ट है। मैं तुम्हारी भलाई करना चाहता हूँ, क्योंकि उस शैतान जिप्सी के साथ थोड़ा भी सम्पर्क तुम्हें शैतान से भी बदतर बना देगा। अगर फिर उस औरत के पास तुम गये, तो समझो कि तुम्हारी मौत है। बस इसी कारण मैं इस विषय में दिलचस्पी ले रहा हूँ।

मैंने एक बार प्रयत्न किया था—ग्रीगोयरे ने कान खुजलाते हुए कहा—उसी पहिले दिन को, मगर मुझे निराश होना पड़ा।

मास्टर पियरे! तुममें इतनी निर्लज्जता है ?

पादरी के चेहरे पर उदासी छा गई।

दूसरे समय—कवि ने मुस्किराते हुए कहा—मैंने सोने जाने के पहिले एक छिद्र से उसे देखा। वह कपड़े बदल रही थी। अहा! उस समय वह कितनी कोमल और स्वादिष्ट दिखाई देती थी। वह

इतनी सुन्दर दीख रही थी जितनी कि कोई भी सुन्दरी युवती पलँग पर पाँव रखते समय दीख सकती है।

शैतान तुम से समझे !—पादरी भयोत्पादक रीति से देखते हुए बोल उठा। उसने ग्रींगोयरे को एक धक्का दिया और फिर गिरजे के अंधकार में विलीन हो गया।

नाट्रीडेम के घंटे

मच पर बेंतबाजी हो चुकने के पश्चात्, नाट्रीडेम के पड़ोस मे रहनेवालो को मालूम हुआ कि कासीमोडो का घटा बजाने का उत्साह ठडा पड़ गया है। उस वक्त तक वह समय असमय, सदा घटों को सोत्साह बजाता रहा था। घटों का सगीत प्रात काल से सन्ध्या तक दिग्दिगन्त में व्याप्त हो उठता था। विवाहोत्सव पर किसी के नामकरण के समय, प्रार्थना-काल में, घटों का मधुर शब्द नाना भाँति के स्वर मे निकलकर वायु में विलीन हो जाता था। बह पुराना गिरजा, प्रतिध्वनि के रूप में, अपने घटों के बजने पर हर्षो ल्लास कर उठता था। जान पड़ता था कि गिरजे की मूर्त्तियों में कोई जीव है, जो गा रहा है—शोर मचा रहा है।

इस समय ऐसा जान पड़ा जैसे वह आत्मा वहाँ से चली गई थी। गिरजा अब गभीर तथा निस्तब्ध भाव धारण कर बैठा था। शव सस्कार एव उत्सवादि के अवसरों पर अब भी कुछ घटे बजते थे, मगर केवल विधान पूरा करने के लिये—उनका सगीत गिरजे के हृदय से बाहर नहीं निकल पाता था।

गिरजे के घटा-घर मे कोई गायक नहीं था, तो भी कासीमोडो वहीं था। उसकी क्या अवस्था थी? क्या उस बेंत लगने की लज्जा ने अकर्मण्य बना डाला था? बेंत लगने की आतरिक पीड़ा ने क्या

उसके सारे भावों को—यहाँ तक कि घंटी बजाने के प्रेम को भी—निर्जीव बना डाला? या उसकी प्यारी घंटी 'मेरी' का कोई प्रतिद्वन्द्वी उसके हृदय में आ बसा था और इसी कारण—किसी सुन्दर और मोहक पदार्थ के आगे—वह बेचारी अपृष्ठ कर दी गई थी?

ऐसा हुआ कि सन १४८२ के मार्च महीने की पचीस तारीख को, शुभ मंगलवार को, 'कुमारी मेरी के नमस्कार' का उत्सव आ गया। इस दिन को 'कुमारी-दिवस' भी कहते हैं। उस दिन का वायुमण्डल इतना स्वच्छ एवं आनन्द-दायक था कि कासीमोडो के हृदय में भी घंटियों का प्रेम कुछ उमड़ ही पड़ा। इसलिये वह नाट्रीडेम के उत्तरी मीनार पर चढ़ गया।

गिरजे के सारे द्वार उन्मुक्त कर दिये गये थे।

कासीमोडा थोड़ी देर तक घंटियों की ओर उदास भाव से सिर हिलाता रहता रहा, मानों वह अपने हृदय और उन घंटियों के बीच किसी चीज के आ जाने पर अफसोस कर रहा था। मगर जब वह उन्हें बजाने लगा—जब उसने उन्हें नाचते हुए देखा—जब घंटियों का लोरियाँ पक्षियों की तरह फुदकने लगीं, तब वह अन्य सारी बातों को भूल गया। वह प्रसन्न था। उसका हृदय नाच उठा। उसका चेहरा प्रकाशित हो उठा। वह इधर-उधर दौड़ रहा था, ताली बजा उठता था, एक रस्सी के बाद दूसरी खींचता था, अपनी भावभंगी तथा शाबाशी से घंटियों को उत्साह देता जाता था।

वह घंटियों के नाम ले लेकर चिल्ला उठता—बज उठ गेब्रीयेल! अपने सारे संगीत को आज स्क्वायर में फैला दे, आज

महोत्सव है। थीबोल्ड! काहिली न दिखाओ, तुम्हारा गात धीमा पड़ रहा है! मैं कहता हूँ, गाती चलो। जल्दी करो, जल्दी करो! मैं ताली बजानेवालों को नहीं देखना चाहता, उन्हें भी मुझ जैसा बहरा बना दो। गिलोमे! गिलोमे!! तुम सबसे बड़ी हो! पेम क्रियर! तुम सबसे छोटी हो, तो भी उसका स्वर तुमसे मधुर है। आज 'कुमारी के नमस्कार' का उत्सव है। सूर्य चमक रहा है! आज तुम्हारे मधुर संगीत की आवश्यकता है। आह! प्यारी गिलोमे! तुम्हारी साँस फूल रही है।

इसी प्रकार वह घटियों को उत्साह दिलाने में व्यस्त था।

अचानक उसकी आँख स्क्वायर की ओर चली गई। वहाँ एक विचित्र-वस्त्र-धारिणी युवती दीख पड़ी। एक छोटी दरी पर एक बकरी बैठी थी। दर्शकों की भीड़ लगी थी।

उसकी भाव-धारा ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया। उसका संगीत का उत्साह इस प्रकार ठंडा पड़ गया, जैसे पवन के शीतल झोंके से पिघली मोम। उसने घंटी बजाना बंद कर दिया। उसने घटियों की तरफ अपनी पीठ कर ली। खिड़की के पास खड़ा होकर वह कोमल दृष्टि से उस नाचनेवाली युवती की ओर देखने लगा।

उसकी इस स्वप्नमयी सुकोमल भावना ने पादरी को आश्चर्यान्वित कर दिया। घटियों का बजना एकाएक बन्द हो गया। संगीत के प्रेमियों को, जो बड़े ध्यान से सुन रहे थे, बड़ी निराशा हुई। वे आश्चर्य में डूबे हुए इस प्रकार चले गये, जैसे कुत्ता हड्डी दिखाकर पत्थर मारने पर भाग जाता है।

नियति

अभी मार्च महीने के एक दिन सवेरे—शायद २९ तारीख को शनिश्चर के दिन—हमारे मित्र युवक 'जेहन' को, कपडे पहिनते समय, पता लगा कि उसकी पाकेट में सिक्कों की खनखनाहट—आवाज—नहीं आ रही है। पाकेट से बटुआ को निकालते हुए उसने कहा—प्यारे बटुए! तुम्हारे पास एक पैसा भी नहीं रहा? प्रेम कठोरता से जुए के पाँसे और 'वेनस'—सुन्दरता की देवी—तथा मदिरा के प्याले ने तुम्हे खाली कर दिया है—तुम में झुर्रियाँ डाल दी हैं। पैसा बिना इन किताबों की—जो फर्श पर फैली पडी हैं—बिया किस काम की?

वह उदास-मन हो कपड़ा पहिनने लगा। जब वह अपने जूतो का फीता बाँधने लगा, तब उसके मस्तिष्क में एक विचार उठा। फिर वह अपनी टोपी को दूर फेंकते हुए बोल उठा—जो हो, मैं अपने भाई के पास जाऊँगा, मुझे वहाँ एक उपदेश मिलेगा, साथ ही कुछ रुपये भी मिल जायेंगे।

जल्दी में टोपी को उठाकर वह कमरे से बाहर निकला। नगर की गलियों से होता हुआ वह आगे बढने लगा। होटलो को देखकर वह एक आह खींच लेता था, क्योंकि जलपान के लिये उसके पास एक भी पैसा न था।

बहुत-सी गलियों को पार कर वह नाट्रीडेम के द्वार पर आ खड़ा हुआ। बहुत देर तक वह गिरजे के द्वार पर टहलता रहा। दर्दनाक आवाज में वह कभी-कभी बोल उठता था—उपदेश का लेक्चर तो निश्चय होगा, मगर रुपये के विषय में शुबहा है।

गिरजे का एक प्रबन्धक गिरजे से बाहर निकला। उसको रोकते हुए उसने पूछा—आर्चडिकन कहाँ हैं ?

मेरा विश्वास है कि वे अपनी उत्तर के मीनार वाली कोठरी में हैं, मगर मैं आपको सलाह देता हूँ कि आप यदि पोप या बादशाह के पास से न आते हों, तो उन्हें इस समय बाधा न पहुँचावें।

जेहन ने निराशा में मुट्ठी बाँध ली। मन-ही-मन कहा—शैतान! आर्चडिकन के जादू के कमरे को देखने का यह कैसा सुन्दर सुयोग है!

इस विचार ने उसे साहस प्रदान किया। वह भीतर जाकर मीनार की सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। 'कुमारी मेरी' की जूती के फीते की कृपा से—उनके चरण-कमलों की कृपा से—मैं आज अवश्य देखूँगा। उस कोठरी में सचमुच कोई गुप्त रहस्य है, तभी तो वह उसे इस प्रकार छिपाये रहता है। लोग कहते हैं कि वहाँ वह नरक की अग्नि जलाता है। सुना है कि वहाँ पारस-पत्थर भी है। पर मैं सच कहता हूँ, मैं इस समय उस पारस पत्थर को फर्श में जड़े हुए साधारण पत्थरों से अधिक मूल्यवान नहीं समझता। मेरी कामना तो यह है कि इस समय वहाँ उस पारस पत्थर के बदले भोज्य अण्डे मिलें तो बेहतर।

सीढ़ियों को पार कर, घंटा-घर से गुजरता हुआ, वह आर्चडिकन के कमरे के पास पहुँच गया। उस कमरे के द्वार पर लोहे के किवाड़ लगे थे। उसका ताला बहुत बड़ा था। जेहन ने कहा—ओहो! यही स्थान मालूम होता है।

कुंजी ताले में पड़ी थी, दरवाजा कुछ खुला पड़ा था। धीरे से किवाड़ों को कुछ और हटा कर वह झाँकने लगा।

कमरा अंधकारपूर्ण था। उसमें प्रकाश बहुत कम आता था। एक बड़ी मेज के पास बड़ी-बड़ी कुर्सियाँ पड़ी थीं। कहीं ध्रुव-यंत्र और कहीं सामुद्रिक पत्रा पड़ा था। भूमण्डल का एक वृत्ताकार मानचित्र (ग्लोब) पृथ्वी पर लुढ़क रहा था। कहीं शीशियों में सोने के पत्तर पड़े थे। बहुत सी मोटी मोटी हस्त-लिखित पुस्तकें एक-पर-एक रक्खी थीं। तात्पर्य यह कि वहाँ विज्ञान की सभी सामग्री अस्त-व्यस्त पड़ी थी, जिसपर धूल तथा मकड़ियों के जाले छा रहे थे। तो भी वह कमरा सुनसान न था। मेज पर झुका हुआ एक आदमी वहाँ बैठा था। 'जेहन' को उसकी पीठ तथा गंजे सिर का पिछला भाग दिखाई देता था।

जेहन ने अपने भाई को पहिचान लिया, मगर जान-फ्राडे को उसके आने का पता न चला। वह जिज्ञासु विद्यार्थी, सुअवसर पा कर, कमरे को ध्यानपूर्वक देखने लगा। कुर्सी की बायीं ओर एक अँगीठी बनी थी। उसके ऊपर एक खिड़की थी, जो प्रकाश पड़ने से अत्यन्त सुन्दर हो रही थी। चूल्हे पर थोड़े-से बर्तन भी पड़े थे।

जेहन ने आह भरकर देखा कि वहाँ भोजन का कहीं कोई चिन्ह

भी नहीं है। चूल्हे मे आग भी नहीं थी। मालूम होता था कि कई दिनो से इसमें आग नहीं जलाई गई। सीसे का एक चेहरा, जिसे आर्चडिकन किसी विस्फोटक पदार्थ की परीक्षा करते समय अपने मुखड़े पर लगाता था, उस समय धूल मे लोट रहा था। वहाँ की प्रत्येक वस्तु पर धूल की तह जम गई थी। दीवारों पर बहुत से 'मोटो' (उपदेश-वाक्य) लिखे थे—कुछ स्याही से लिखे और कुछ काँटे से खुदे थे। हिब्रू, ग्रीक, रोमन—सभी प्रकार की लिपियाँ प्रदर्शित थीं। वाक्यो की लिखावट में कला का ध्यान नहीं रक्खा गया था। वृक्ष की शाखाओं की तरह सब वाक्य एक दूसरे के ऊपर पड रहे थे। उनमें से बहुतेरे जेहन की समझ ही में नहीं आते थे और बहुतों को तो वह पढ़ भी नही सकता था।

सब चीजों की हालत देखने से ज्ञात होता था कि उस कोठरी के स्वामी का उधर कुछ ध्यान ही नहीं है। मालूम होता था कि वह किसी दूसरी चिन्ता के कारण इधर ध्यान ही नहीं दे सका था।

आर्चडिकन के सामने एक हस्त लिखित पुस्तक पड़ी थी, जिसमें निराले चित्र बने थे। उसके हृदय मे कोई विचार बार बार उठ कर उसकी एकाग्रता में विघ्न डाल रहा था, जिससे वह बहुत दुखी दीख रहा था। वह कुछ बोल-बोलकर सोच रहा था—हाँ, मनु ने ऐसा कहा था और जोरेस्टर ने भी ऐसी ही शिक्षा दी है—सूर्य अग्नि का पुत्र है और चन्द्रमा सूर्य से पैदा हुआ है, सम्पूर्ण पिण्ड का केन्द्र और जीवन अग्नि है, इसके कण सर्वदा बह रहे हैं और नाना प्रकार की धाराओं से विश्व को प्लावित कर रहे हैं।

जहाँ वे धाराएँ स्वर्ग में मिलती हैं, वहाँ प्रकाश उत्पन्न होता है और इस संसार में सोना। प्रकाश और स्वर्ण एक ही वस्तु हैं, तरल अग्नि से फिर ठोस पदार्थ बन जाता है। दर्शनीय तथा स्पर्शनीय पदार्थ—एक ही वस्तु के तरल तथा ठोस स्वरूप के अन्तर-मात्र हैं। ये केवल स्वप्न नहीं हैं, यह तो प्रकृति का साधारण नियम है। मगर विज्ञान द्वारा इस प्रकृति के साधारण नियम का रहस्य कैसे पाया जा सकता है? क्यों, जो प्रकाश मेरे हाथों को प्रकाशित कर रहा है, वही तो स्वर्ण है? इन प्रकाश के फैले हुए कणों को दूसरे नियम की सहायता से एकत्र कर देने की आवश्यकता है। किन्तु किस प्रकार? यही तो सवाल है। लोगों ने भिन्न भिन्न मार्ग बताये हैं।

शैतान! रुपये के लिये बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है—जेहन ने स्वगत कहा।

औरों ने कहा है—आर्चडिकन कहता गया—कि एक रश्मि के साथ काम करना ठीक है मगर निर्मल रश्मि का पाना तो बड़ा दुःसाध्य है, क्योंकि दूसरे तारा की उपस्थिति के कारण बहुत-सी किरणें एक साथ मिल जाती हैं। हाँ, अग्नि, बस इतना ही। हीरा कोयले में मिला रहता है, सोना अग्नि से मिलेगा। किन्तु उसे निकाला कैसे जाय? मैजिस्ट्री ने कहा है कि कुछ ऐसे स्त्रियों के नाम हैं, जिनमें इतना माधुर्य है—उनके उच्चारण में वह आश्चर्यजनक असर है कि कीमिया का क्रिया करते समय उनका उच्चारण मात्र पर्याप्त है। देखें, मनु इस विषय में क्या कहते हैं—यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता—जहाँ स्त्रियों का अनादर

देता था। इसलिये वह अपने भाई के हृदय की अग्निज्वाला को समझ नहीं सका। भला वह क्या समझे कि मनुष्यों की भावनाओं का सागर—फैलने का रास्ता न पाकर—किस प्रकार प्रबलता के साथ खलबला उठता है, किस प्रकार बढ़ता है, किस प्रकार फूट कर वह चलता है, किस प्रकार हृदय को उमड़ा देता है, किस प्रकार दबे आँसुओं के रूप में—आहों के रूप में—फूट निकलता है और अन्त में बाँध को तोड़कर हृदय को बहा ले जाता है।

छाडेफोले के चेहरे की वाह्य कठोरता और गंभीरता ने जेहन को धोका दिया था। उस प्रसन्न-चित्त विद्यार्थी ने ज्वालामुखी पर्वत के बर्फीले शिलाखण्डों के नीचे वाले तप्त एवं तरल द्रव्य ('लावा') की कभी कल्पना भी नहीं की थी।

मैं नहीं कह सकता कि अब भी जेहन को इन चीजों का ज्ञान हुआ या नहीं, मगर वह इतना अवश्य जान गया कि उसने अपने भाई को—उसकी आत्मा को—एक गुप्त घड़ी में देख लिया है, इसलिये उसने सोचा कि छाडेफोलो को इसका पता नहीं लगना चाहिये।

यह देखकर कि आर्चडिकन फिर पहिले की तरह निस्तब्ध पड़ा है, उसने अपने सिर को धीरे से हटा कर द्वार पर धीरे धीरे खटखटाया, मानों वह अभी आया हो, और अपने भाई को आने की सूचना दे रहा हो।

भीतर आओ—कोठरी से आर्चडिकन ने कहा—मैं आप की

प्रतीक्षा में था। इसीलिये मैंने दरवाजे में सिटकिनी नहीं लगाई थी। भीतर आओ मास्टर जेहन!

विद्यार्थी जेहन साहस के साथ भीतर घुसा। आर्चडिकन को इस स्थान पर उसके आने से बड़ा रंज हुआ। वह चौंक पड़ा। बोला—यह क्या! तुम हो, जेहन?

जो हो, यह 'जे' (J) है—विद्यार्थी ने कहा, उसका गुलाबी निर्लज्ज चेहरा हँसता सा जान पड़ता था।

पादरी ने गंभीर होकर पूछा—यहाँ क्यों आये हो?

भैया!—संकोच भाव धारण करने का प्रयत्न करते हुए विद्यार्थी ने कहा—मैं आप से—

क्या?

एक उपदेशपूर्ण व्याख्यान सुनना चाहता हूँ, इसकी मुझे बड़ी आवश्यकता है—फिर धीरे से कहा—और कुछ रुपये भी, जिनकी और भी अधिक आवश्यकता है।

अन्तिम वाक्य का अन्तिम भाग उसने ओठों ही पर कहा।

आर्चडिकन ने कहा—मैं तुमसे बहुत अप्रसन्न हूँ।

अफसोस—आह भरकर विद्यार्थी ने कहा।

आर्चडिकन ने जेहन की ओर देखकर फिर कहा—मैं तुम्हें यहाँ आया देखकर बहुत प्रसन्न हुआ हूँ।

यह अच्छा श्रीगणेश न था। जेहन कठोर आक्रमण को सहने के लिये तैयार हो गया।

मुझे रुपये की बड़ी आवश्यकता है—जेहन ने दुहराया।

पादरी दुखड़े रोने लगा—अभी पोप को ६ पौंड देना है।

मैं तो बस यही जानता हूँ कि मुझे रुपये की आवश्यकता है—जेहन ने तीसरी बार फिर कहा।

कौन-सी आवश्यकता है ?

इस सवाल ने जेहन के हृदय में आशा उत्पन्न कर दी।

प्यारे भाई ! मैं यहाँ किसी बुरी भावना को लेकर नहीं आया हूँ। मैं उन रुपयों से सराय में मदिरा पीने नहीं जाना चाहता, न छैला बनकर घूमने के लिये रुपया माँग रहा हूँ। दान देने के लिये रुपये चाहता हूँ।

कैसा दान ?—आश्चर्य के साथ पादरी ने पूछा।

मेरे दो मित्र एक विधवा के लड़के के लिये कपड़ा खरीदना चाहते हैं। उचित दान है। इसमें जो कुछ लगेगा, उसमें मैं अपना हिस्सा दिया चाहता हूँ।

तुम्हारे दोनों मित्र कौन हैं ?

उसने दो नाम बता दिये।

झूठ ! ये नाम तो स्वयं दया के पात्र हैं—पादरी ने कहा।

सचमुच जेहन ने शंकापूर्ण नाम चुना था और उसे भी यह मालूम हो गया, मगर हाथ से तीर निकल जाने पर।

फिर जिस विधवा के बच्चे का कपड़ा खरीदने की तुम बात करते हो, वह भी झूठ है।

जेहन ने फिर कहा—अगर मुझे बताना ही है तो मैं स्पष्ट

कहता हूँ कि मैं आज 'इजाबेला' से मिलने जाने के लिये रुपये चाहता हूँ।

बदमाश!—पादरी चिल्ला उठा।

अपवित्रता!—जेहन ने ग्रीक भाषा में कहा।

ईर्ष्यावश उसने दीवार पर के शब्द को दुहरा दिया। इसके कारण पादरी पर एक विचित्र प्रभाव पड़ा। वह होंठ चबाने लगा। उसका क्रोध लज्जा में परिणत हो गया। उसने जेहन से कहा—जल्दी यहाँ से चले जाओ, यहाँ एक आदमी आनेवाला है।

विद्यार्थी ने फिर प्रयत्न किया—भाई क्लाडे! कम-से-कम भोजन के लिये तो कुछ पैसे दे दो।

तुम पोप की आज्ञाओं को कहाँ तक जानते हो?—पादरी ने पूछा।

मेरी कापी (नोट-बुक) खो गई है।

लेटिन कहाँ तक पढे हो?

किसी ने मेरी 'होरेस' की पुस्तक चुरा ली है।

अरस्तू में क्या पढ रहे हो?

भाई! एक पादरी ने मुझसे कहा कि अरस्तू तो नास्तिक और मैं अपना धर्म उसकी अध्यात्म विद्या के लिये नहीं छोड़ना चाहता।

नौजवान! मेरा उपदेश है कि तुम इस कहावत पर विचार करो—जो परिश्रम नहीं करता, उसे खाने का अधिकार नहीं।

जेहन कुछ देर तक चुप रहा। उसकी उँगली उसके कान के

पास थी। उसकी आँखें जमीन में गडी थीं। वह क्रोध से लाल हो रहा था।

फिर तुरन्त वह झाडे की ओर घूम गया। कोमल भाव से कहने लगा—भाई! तो तुम रोटी के लिये भी पैसा देने से इनकार करते हो?

जो परिश्रम नहीं करता—

इस उत्तर के पाते ही जेहन अपने चेहरे को अपने हाथों में छिपाकर औरत की तरह रोने लगा और निराशापूर्ण स्वर में बोल उठा—ओटोटोटोटोटोट्वाइ।

इसका क्या अर्थ है?—पादरी ने उसके रोने पर आश्चर्य करते हुए पूछा।

क्यों—जेहन ने कहा—यह ग्रीक है। यह ठीक ठीक शोक को प्रकट करता है।

जेहन इस प्रकार जोरों से खिलखिला उठा कि पादरी भी मुस्करा पड़ा। सचमुच इस में पादरी ही का दोष था। उसने क्यों इस बालक को बिगाड़ दिया था?

पादरी की मुस्कान ने जेहन को कुछ साहस दिया। वह फिर कहने लगा—दयालु भाई! मेरे फटे जूते को तो देखो, इसका तल्ला उड़ जाता है। इससे अधिक दुःख का दृश्य और क्या हो सकता है।

पादरी फिर गंभीर हो गया।

मैं तुम्हें नई किताबें भेज दूँगा, मगर रुपये न दूँगा।

केवल कुछ पैसे भाई। मैं अब अपना पाठ कण्ठाग्र कर लूँगा

मैं ईश्वर में हृदय से विश्वास करूँगा। दया करके एक पैसा तो दो। क्या तुम मुझे भूख से मरते देख सकते हो ?

पादरी फिर उसी तरह बोल उठा—जो परिश्रम नहीं करता—

जेहन ने इस बार उसे पूरा न कहने दिया। वह बीच ही में बोल उठा—अच्छा तो अब मैं शैतान के पंजे मे हूँ। ऐश के लिये मैं सराय में जाऊँगा, में युवतियों को देखने जाऊँगा।

उसने अपनी टोपी फेक दी।

जेहन! तुम्हारे पास आत्मा नहीं है।

एपिक्यूरस के कथनानुसार मेरे पास अज्ञेय पदार्थों से बनी एक अनजान चीज़ नहीं है।

जेहन! तुम्हें सुधार की बात सोचनी चाहिये।

वाह! क्या यहाँ हर-एक चीज़ टेढी ही है, विचार से लेकर बोतल तक ?—जेहन ने चूल्हे की ओर देखते हुए कहा।

जेहन! तुमने काई जमा हुआ मार्ग पकड़ा है। डर है कि तुम फिसल पड़ोगे। तुम जानते हो, कहाँ जा रहे हो ?

सराय मे—जेहन ने कहा।

सराय का रास्ता दण्ड-मंच (कटहरा) की ओर जाता है।

यह बहुत बढ़िया मार्ग दर्शक है।

कटहरे का रास्ता फाँसी के तख्ते पर पहुँचाता है।

फाँसी का तख्ता तराजू की डंडी है। उसके एक पलड़े में संसार है, दूसरे म वह अकेला आदमी। अकेला आदमी होना ही अच्छा है।

फाँसी की टिकठी सीधे नरक के द्वार पर पटक देती है।

वही तो प्रकाशमयी अग्नि है।

जेहन ! तुम्हारा अन्त बड़ा बुरा होगा !

मेरा प्रारम्भ तो अच्छा रहेगा ?

इसी समय सीढ़ियों पर किसी के पाँव की आहट सुन पड़ी।

चुप—पादरी ने कहा—मास्टर जेकू आ रहा है। जो तुम यहाँ सुनो, उसे कभी किसी से न कहना। उस चूल्हे में छिप जाओ। देखो, साँस तक न लेना।

जेहेन चूल्हे में घुस गया। वहाँ पर उसे एक युक्ति सूझी। बोला—भाई फ्राडे ! मैं साँस बन्द करने के लिये रुपये चाहता हूँ।

चुप, मैं दूँगा।

तो बस अभी दे दो।

लो—क्रोध मे रुपयों की एक छोटी-सी थैली फेंकते हुए पादरी ने कहा।

इधर जेहन चूल्हे के भीतर चला गया, और उधर दरवाजा खुला।

काली पोशाक मे दो आदमी

जो आदमी झाडे की कोठरी मे घुसा, वह काली पोशाक में नीचे से ऊपर तक ढँका था। जेहन—जो चूल्हे में इस तरह बैठा था कि सब देख-सुन सके—ने देखा कि आगन्तुक के चेहरे पर उदासीनता छा रही थी, तो भी उसके चेहरे से सुशीलता टपक रही थी। वह वृद्ध था। उसके बाल बिल्कुल सफेद हो गये थे। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं।

जब जेहन ने देखा, कि आगन्तुक एक साधारण व्यक्ति—शायद कोई डाक्टर या मैजिस्ट्रेट—है, तो उसे बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि ऐसे नीरस आदमियों के बीच उस कष्ट प्रद स्थान में बैठने से उसका तनिक भी मनोरंजन नहीं हुआ।

पादरी ने बिना उठे ही बैठने का इशारा किया और अपने ध्यान से जगते हुए कहा—नमस्कार, मास्टर जेक्!

आपका सेवक, मास्टर—काली पोशाकवाले ने उत्तर दिया।

स्वर-विभेद से पता चल गया, कि एक गुरु था, दूसरा शिष्य।

थोड़ी देर मुस्ताकर पादरी ने पूछा—अच्छा, कुछ सफलता मिली?

दूसरे ने उदासीनता की हँसी हँसते हुए कहा—अफ़सोस

मास्टर ! मैं आग फूँकता जाता हूँ, मगर सोने का एक कण भी नहीं हाथ आता।

पादरी ने असंतोष का भाव दिखलाते हुए कहा—मेरा मतलब उससे नहीं था, मैं तुम्हारे जादूगर के अभियोग के विषय में पूछ रहा था। उसका क्या नाम बताया था—'मार्क सेन'? क्या वह अपनी जादूगरी स्वीकार करता है?

अफ़सोस, नहीं—पहिले-जैसी हँसी के साथ जेक़ू ने कहा—हमें सन्तोष नहीं है। वह पत्थर की तरह कठोर और निश्चल है। सत्य को जानने के लिये हमने कुछ नहीं उठा रक्खा, हमने पहाड़ खोद डाला, मगर चूहा भी हाथ न लगा।

उसके घर पर कुछ नई चीजें नहीं मिली हैं?

मिली हैं—मास्टर जेक़ू ने अपनी पाकेट को टटोलते हुए कहा—यही कागज। इसमें कुछ लिखा है, जो हमारी समझ में नहीं आता, न फौजदारी के वकील ही इसे समझ पाते हैं।

उसने कागज को खोल दिया। पादरी ने उसे लेकर पढ़ना शुरू किया और साधारण शब्दों का ऐसा अर्थ किया, मानो वे जादू के मन्त्र थे। कहने लगा—यह तो साफ जादू है मास्टर जेक़ू! देखो, यह पागल कुत्तों के काटे हुए जख्म को झाड़ने का मन्त्र है। यह कागज तो नरक का परवाना है!

हम उस आदमी को फिर साँसत-घर की हवा खिलायँगे। उसके घर पर यह चीज मिली थी।

अपने कपड़े के अन्दर से निकालकर जेक़ू ने एक कुल्हिया

दी, जो ठीक वैसी ही थी, जैसी पादरी के चूल्हे पर एक पड़ी थी।

आर्चडिकन ने कहा—ओह, यह तो कीमिया बनाने की कुल्हिया है।

सकोच की हँसी हँसते हुए जेक्रू ने कहा—मुझे स्वीकार करना पड़ता है कि मुझे इस कुल्हिया द्वारा भी असफलता ही हाथ लगी।

पादरी कुल्हिया को ध्यान से देखने लगा।

इसी बीच आगन्तुक ने कहा—मैं भूल रहा था, क्षमा कीजिये मास्टर! इस छोटी जादूगरनी को कैद करने का आप कब आज्ञा देंगे?

कौन-सी जादूगरनी?

वही जिप्सी युवती, जिसे आप अच्छी तरह जानते हैं, और जो सरकारी आज्ञा के विरुद्ध नित्य इस स्क्वायर में नाचती है। उसके पास एक बकरी है, जिसे 'शैतान का अवतार' कहते हैं—उसके सींग तो शैतान के ही सींग हैं—वह लिख-पढ़ सकती है और हिसाब भी अच्छा जानती है। सब कागज दुरुस्त हैं, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि यह एक छोटा-सा मामूली मामला होगा। सर की कसम! वह नाचनेवाली जिप्सी युवती तो अत्यन्त सुन्दरी है! उसकी आँखों-जैसी कजरारी आँखें तो मैंने स्वप्न में भी नहीं देखी हैं, वे आँखें हैं या दो अनमोल लाल हैं या अँधेरी रात के दो उज्ज्वल दीपक हैं!—मामला कब शुरू होगा?

पादरी अत्यन्त पीला पड़ गया।

मैं तुम्हें बताऊँगा—वह तुतलाकर धीरे-धीरे कहने लगा—अभी मार्क-सेन का ही मामला देखो।

हाँ-हाँ, मैंने सब ठीक कर लिया है। वह साँसत घर में सड़ रहा है। और, उस छोटी लड़की के विषय में मैं आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा करूँगा। मगर मैं आशा रखता हूँ कि आज आप गिरजे के द्वार पर जो बागबान का चित्र है, उसका रहस्य बताने की कृपा करेंगे।

पादरी ध्यान में तल्लीन था। जेक ने देखा कि वह एक मकड़ी के जाले की ओर देख रहा है। उसी समय एक मक्खी आकर उस जाले मे फँस गई। मकड़ी ने कूद कर मक्खी को पकड़ लिया। मास्टर जेक ने उस मक्खी को बचाने के लिए अपना हाथ बढाया। पादरी ने जोर से उसका हाथ पकड़ लिया और कहा—मास्टर जेकू! भाग्य के काम में बाधा न डालो!

मास्टर जेकू को मालूम हुआ कि उसका हाथ लोहे की सँड़सी से पकड़ लिया गया है। पादरी की आँखो से आग निकल रही थी—वे जाल की ओर एक-टक लगी रहीं।

यह संसार का प्रतिबिम्ब है। मक्खी प्रसन्न है, युवा है, वह वसन्त-कालीन, सूर्य की खोज में है, वह ताजा हवा तथा स्वतन्त्रता की खोज में है, मगर वह इस प्राणघातक जाले में आ फँसी है। मकड़ी भी दिखाई देती है। भयानक मकड़ी! नाचनेवाली! बेचारी मक्खी के भाग्य में यही बदा है! मास्टर जेकू, बीच में न पड़ो, इसमें भाग्य का हाथ है! अफसोस क्लाड, तुम मकड़ी हो,

तुम्हीं मक्खी भी हो ! तुम ज्ञान की खोज में इधर-उधर उड़ रहे थे, तुम्हारी एकान्त कामना सत्य की खोज में थी, मगर जल्दी में तुम दूसरे संसार की खिड़की के पास पहुँच गये—बुद्धि के, प्रकाश के, विद्या के संसार में । ओह अंधी मक्खी ! ज्ञान हीन डाक्टर ! तुम यह नहीं देख सके कि भाग्य ने तुम्हारे तथा प्रकाश के बीच एक मकड़ी का जाल तान रक्खा है । तुम इसमें सिर के बल फँस गये । भाग्य के फौलादी पंजे में जकड़ कर तुम पंख विहीन हो छटपटा रहे हो । मास्टर जेक्रू ! मास्टर जेक्रू ! मकड़ी को अपना काम करने दो !

मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ—मास्टर जेक्रू ने कहा—मैं इसको स्पर्श नहीं करूँगा, किन्तु दया कर मेरी बाँह को तो छोड़िये, आपका हाथ लोहे की सँड़सी की तरह चिपका हुआ है ।

पादरी ने सुना ही नहीं, अपनी ही धुन में बकता रहा—ओह, पागल ! यदि तुम अपने निर्बल पक्षों द्वारा इस जाल को तोड़ डाले होते, तो भी क्या तुम प्रकाश तक पहुँच पाते ? आह ! क्या तुम उस पारदर्शी शीशे को पार कर सकते हो, जो दर्शन तथा सत्य के बीच में लोहे की दीवार की तरह खड़ा है ? यह विज्ञान की निस्सारता है, अहङ्कार है, मूर्खता है ! कितने ऋषि इसमें टक्कर खाकर घायल हो चुके हैं ।

वह चुप हो गया । उस अन्तिम विचार ने, जिसने उसे अपने से दूर कर विज्ञान की ओर ला दिया था, उसे शान्त कर दिया ।

जेकू ने उससे सवाल किया—मास्टर! बतलाइये, सोना बनाने में आप मुझे कब सहायता दे रहे हैं ? मैं सफलता के लिए पागल हो रहा हूँ।

विकृत अट्टहास के साथ पादरी ने अपना सिर हिला दिया—मास्टर जेकू! हमारा काम सर्वथा निर्दोष नहीं है।

मास्टर! इतने ज़ोर से न बोलो! मुझे भय है कि आप सत्य कह रहे हैं, धीरे-धीरे बोलो—मास्टर जेकू ने कहा।

उस समय चूल्हे से किसी सूखी चीज़ के चबाने की आवाज़ आई। मास्टर जेकू का ध्यान उधर खिंच गया।

यह क्या है ?—उसने पूछा।

चूल्हे में जेहन को एक सूखी रोटी का टुकड़ा मिल गया था। भूखा होने के कारण उसी से वह जलपान कर रहा था।

यह मेरी बिल्ली है—पादरी ने कहा—चूल्हे में चूहा पकड़ पाई होगी।

मास्टर जेकू को संतोष हो गया।

सचमुच मास्टर!—उसने श्रद्धा-पूर्ण हँसी हँस कर कहा—प्रत्येक महान दार्शनिक का कोई-न-कोई प्यारा जानवर होता है।

किन्तु पादरी को जेहन की ओर से डर ही बना था। उसने अपने योग्य शिष्य से कहा—गिरजे के द्वार पर के चित्रों का अध्ययन करना है न ?

दोनों कोठरी के बाहर हो गये।

जेहन को छुटकारा मिला।

सात शपथों का असर

जेहन अपनी जगह से निकला और प्रसन्नता में बड़बड़ाने लगा—मैंने उनकी बातें सुनी हैं, दोनों उल्लू चले गये। मेरा सिर घंटा-घर की तरह गूँज रहा है, और बदले में मिला क्या? एक सूखी रोटी! चलो चलें, और बड़े भैया के रुपयों को शीतल-वासिनी भगवती के चरणों पर निछावर करें।

उसने थैली पर एक कोमल दृष्टि डाली। अपने कपड़े को ठीक कर, राख को झाड़-पोंछ कर, इधर-उधर कोठरी में देखने लगा कि साथ ले जाने लायक कोई वस्तु है या नहीं। चूल्हे पर से शीशे के कवच तथा अँगूठियों को उसने उठा लिया। सोचा, 'इसमेला' को इन्हें गहना कह कर दे दूँगा। दरवाजा खोलकर बाहर आया और बिना बन्द किये ही, धीरे धीरे, सीटी बजाते, नीचे उतरने लगा।

सीढ़ी के बीच में उसे किसी चीज का धक्का लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह कासिमोडो था। इससे हँसते हँसते उसके पेट में बल पड़ गया। बाहर आने पर भी वह हँस रहा था।

स्क्वायर में आकर उसने अपने पाँव को पटक दिया। ओह! यह पेरिस का मैदान कितना अच्छा है! अभागे मीनार! तुम्हारी सीढ़ियों पर चढ़ते-चढ़ते साँस फूल उठती है, खाने को सूखी रोटी

जेकू ने उससे सवाल किया—मास्टर ! बतलाइये, सोना बनाने में आप मुझे कब सहायता दे रहे हैं ? मैं सफलता के लिये पागल हो रहा हूँ ।

विकृत अट्टहास के साथ पादरी ने अपना सिर हिला दिया—मास्टर जेकू ! हमारा काम सर्वथा निर्दोष नहीं है ।

मास्टर ! इतने जोर से न बोलो ! मुझे भय है कि आप सत्य कह रहे हैं , धीरे-धीरे बोलो—मास्टर जेकू ने कहा ।

उस समय चूल्हे से किसी सूखी चीज के चबाने की आवाज आई । मास्टर जेकू का ध्यान उधर खिंच गया ।

यह क्या है ?—उसने पूछा ।

चूल्हे में जेहन को एक सूखी रोटी का टुकड़ा मिल गया था। भूखा होने के कारण उसी से वह जलपान कर रहा था !

यह मेरी बिल्ली है—पादरी ने कहा—चूल्हे में चूहा पकड़ पाई होगी ।

मास्टर जेकू को संतोष हो गया ।

सचमुच मास्टर !—उसने श्रद्धा-पूर्ण हँसी हँस कर कहा—प्रत्येक महान दार्शनिक का कोई-न-कोई प्यारा जानवर होता है ।

किन्तु पादरी को जेहन की ओर से डर ही बना था । उसने अपने योग्य शिष्य से कहा—गिरजे के द्वार पर के चित्रों का अध्ययन करना है न ?

दोनों कोठरी के बाहर हो गये ।

जेहन को छुटकारा मिला ।

सात शपथों का असर

जेहन अपनी जगह से निकला और प्रसन्नता में बड़बड़ाने लगा—मैंने उनकी बातें सुनी हैं, दोनों उल्लू चले गये। मेरा सिर घटा-घर की तरह गूँज रहा है, और बदले में मिला क्या? एक सूखी रोटी। चलो चलें, और बड़े भैया के रुपयों को बोतल-वासिनी भगवती के चरणों पर निछावर करें।

उसने थैली पर एक कोमल दृष्टि डाली। अपने कपड़े को ठीक कर, रास को झाड़-पोंछ कर, इधर-उधर कोठरी में देखने लगा कि साथ ले जाने लायक कोई वस्तु है या नहीं। चूल्हे पर से सीसे के कवच तथा अँगूठियों को उसने उठा लिया। सोचा, 'इज़ानेला' को इन्हें गहना कह कर दे दूँगा। दरवाज़ा खोलकर बाहर आया और बिना बन्द किये ही, धीरे धीरे, सीटी बजाते, नीचे उतरने लगा।

सीढ़ी के बीच में उसे किसी चीज़ का धक्का लगा। उसने निश्चय कर लिया कि वह कासीमोडो था। इससे हँसते हँसते उसके पेट में बल पड़ गया। बाहर आने पर भी वह हँस रहा था।

स्क्वायर में आकर उसने अपने पाँव को पटक दिया। ओह! यह पेरिस का मैदान कितना अच्छा है! अभागे मीनार! तुम्हारी सीढ़ियों पर चढ़ते चढ़ते साँस फूल उठती है, खाने को सूखी रोटी

मिलती हैं और खिड़की से पेरिस के गुम्बज देखने को मिलते हैं।'

उसने देखा कि दोनों उल्लू गिरजे के द्वार पर के चित्रों को ध्यान से देख रहे हैं। बीच-बीच में पादरी मास्टर जेक्रू को उनका अर्थ, रहस्य एवं भावार्थ समझाता चलता था।

उसी समय उसको अपने पीछे से किसी के शपथ खाने की आवाज सुनाई दी। आवाज कर्कश थी। शपथों का ताँता-सा बँध गया था—ईसा की कसम! खंजर की कसम! क्रॉस की कसम! परमेश्वर तथा प्रार्थना-पुस्तक की कसम! शैतान की कसम! ईश्वर की मौत की कसम! युद्धदेव की कसम!

सर की कसम—जेहन ने कहा—मेरे मित्र कैप्टेन फीबस के अतिरिक्त यह दूसरा कोई नहीं हो सकता।

फीबस का नाम पादरी के कानों तक पहुँच गया। वह काँप उठा, चुप हो गया। सरकारी वकील 'मास्टर जेक्रू' को इससे बड़ा आश्चर्य हुआ।

पादरी ने अपने भाई जेहन को, एक लम्बे अफसर से 'अलोजे गाडे लोरियर' के दरवाजे पर, बातचीत करते देखा।

सचमुच वह फीबस ही था। अपनी प्रेमिका के द्वार पर खड़ा होकर, वह जलदस्यु—समुद्री डाकू—की तरह, शपथ खा रहा था।

मेरी बात पर विश्वास करो, कैप्टेन फीबस!—जेहन ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा—तुम प्रशंसनीय रीति से शपथ खाते हो।

युद्धदेव की कसम!—कैप्टेन ने उत्तर दिया।

युद्धदेव के तुम गर्जन हो !—जेहने ने कहा—मेरे भले कैप्टेन ! किस कारण इन सुन्दर विशेषणों का प्रयोग कर हे हो ?

चमा करो, मित्र जेहन !—फीवस ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा—तुम जानते हो कि सरपट दौड़ता हुआ घोड़ा एकदम नहीं रुक सकता। मैं भी सरपट चाल से शपथ खा रहा था। मैं अभी उन नखरेबाज औरतों के पास से आ रहा हूँ। जब मैं उनके पास से हटता हूँ, मेरे मुँह में शपथें भर आती हैं। मैं यदि उन्हें बाहर थूक न दूँ, तो मेरा दम घुट जाय। बन्दूकों की कसम।

एक-आध प्याला छानोगे ?—विद्यार्थी ने पूछा।

इस प्रस्ताव से कैप्टेन को शान्ति प्राप्त हुई।

खुशी से, मगर मेरे पास एक भी पैसा नहीं है।

मेरे पास तो है !!

दूर हो, मुझे दिखाओ तो सही !

सरलता-पूर्वक जेहन ने थैली को कैप्टेन की आँखों के सम्मुख कर दिया। इस बीच में आकर पादरी, सरकारी वकील को वहीं छोड़कर, उनसे थोड़ी दूर पर खड़ा हो गया था। पर थैली के आगे वे कुछ नहीं देख रहे थे।

फीवस ने कहा—जेहन ! थैली ! और तुम्हारी पाकेट में ! यह तो थाल का चन्द्रमा है। वह वहाँ दीख पड़ता है, मगर वास्तव में वहाँ है नहीं। यह तो केवल छाया-मात्र है। ईश्वर की कसम ! मैं तो समझता हूँ कि उसमें कुछ कंकड़ भर लिया है।

जेहन ने गंभीर होकर उत्तर दिया—मैं उन कंकड़ों को फिर ऊँगा जिनसे मैं अपनी पाकेट की सतह को पका करता हूँ।

फिर उसने थैली को वहीं खाली कर दिया। उस समय वह ऐसा दिख रहा था, जैसा एक रोमन अपने देश की रक्षा करते समय दीखता है।

खूब! खूब!—फीबस ने कहा—बड़े-बड़े, छोटे-छोटे, सभी प्रकार के सिक्के हैं। ये तो आँखों मे चकाचौंध पैदा कर रहे हैं।

जेहन खड़ा था। कुछ पैसे कीचड मे गिर गये थे। कैप्टेन उत्साह के साथ उन्हें उठाने के लिये झुका। जेहन ने 'छि' कैप्टेन' कहते हुए उसे ऐसा करने से रोका।

फीबस ने रुपये-पैसे को सहेज कर कहा—जानते हो जेहन! यहाँ तो पूरी २३ गिन्नियाँ हैं। तुमने गत रात्रि किसको ठगा है?

जेहन अपने घुँघुराले बालों को पीछे फेकता हुआ बोला—मेरा एक भाई है, आर्चडिकन है, मगर साथ ही मूर्ख भी है।

तुम्हारा भाई आर्चडिकन है?

चलो, कुछ छनें—जेहन ने कहा।

कहाँ चला जायगा?—पोम की सराय मे?—फीबस ने पूछा।

नहीं कैप्टेन। चलो वीमिलेसाडस के मयखाने (कलवरिया) में तशरीफ़ ले चलें। वहाँ मुझे एक बुढिया की कहावतें और पहेलियाँ बहुत पसन्द पड़ती हैं।

मित्र! दूर करो पहेलियो और बुझौवलों को। 'पोम' के मयख़ाने में मदिरा अच्छी मिलती है। इसके अतिरिक्त उसके दरवाजे

र अँगूर की लता धूप मे खेला करती है। शराब पीते समय उसके कारण मनोरंजन दूना हो जाता है।

यही सही—जेहन ने कहा।

दोनो हाथ-मे हाथ मिलाकर उस मयखाने की ओर बढे।

यह कहना अनावश्यक जान पडता है, कि आर्चडिकन भी उन लोगों के पीछे-पीछे चला।

पादरी उनका पीछा कर रहा था, मगर वह बहुत उदास और थका दीख रहा था। वह विचार-मग्न था। सोचता जाता था, कि क्या यही फीवस है, जिसकी चर्चा ग्रींगोयरे ने की थी।

जो हो, वह फीवस था और उसके नाम मे ऐसा जादू भरा था कि पादरी को पीछा करनेके लिये बाध्य होना पडा। वह उनकी बातों की ओर कान लगाये, उनकी भावभगियों को ध्यान-पूर्वक देखते हुए, दबे पाँव उनके पीछे-पीछे जा रहा था। दोनो युवक जोर-जोर से बाते कर रहे थे, इसलिये उनका सुनना बहुत सरल था। वे द्वन्द्व-युद्ध, सुन्दरी युवतियों, मदिरा-पान तथा उपद्रवो के विषय मे बतिया रहे थे। अपनी धुन में मस्त थे।

एक गली के कोने पर, थोडी दूर से आती हुई, खँजडी की आवाज सुन पडी। पादरी ने कैप्टेनको जेहन से कहते हुए सुना—हमलोगों को शीघ्रता करनी चाहिये।

क्यों फ़ीवस ?

मुझे भय है कि जिप्सी युवती मुझे देख लेगी।

जिप्सी युवती कौन ?

वही छोटी, जिसके पास एक बकरी है।

स्मेरल्डा ?

हाँ-हाँ भाई जेहन, मैं सर्वदा उसके नाम को भूल जाता हूँ। शीघ्रता करो, वह निस्सन्देह मुझे पहिचान लेगी। मैं नहीं चाहता कि उससे इस गली मे देखादेखी हो।

फीबस ! तुम उसे जानते हो ?

पादरी ने देखा कि फीबस ने जेहन के कानों में कुछ कहा, फिर वह खिलखिला कर हँस पड़ा और विजय-गर्व से सिर हिलाने लगा।

सचमुच ?—जेहन ने पूछा।

मेरे सर की कसम—फीबस ने कहा।

आज ही रात को ?

हाँ-हाँ, आज ही रात को।

तुम्हें निश्चय विश्वास है कि वह आवेगी ?

जेहन ! तुम पागल हो गये हो ? ऐसे मामलों म सन्देह का स्थान कहाँ ?

कैप्टेन ! तुम कितने भाग्यशाली हो।

इस बातचीत को पादरी ने अक्षरश: सुना। उसके दाँत कट कटा उठे। उसका नख-शिख काँप उठा। वह थोड़ी देर तक एक खम्भे से लग कर मतवाले की तरह बेसुध खड़ा रहा। फिर उन दोनों के मार्ग का अनुसरण करने लगा।

जब वह उनके पास पहुँचा, तो वे दूसरे विषयों पर बातचीत कर रहे थे—चिल्लाकर एक प्राचीन गीत की टेक को साथ साथ गा रहे थे।

छाया

पोम' का सुप्रसिद्ध मयख़ाना विश्वविद्यालय के समीप था। नीचे की सतह पर एक लम्बा कमरा था, इसी का नाम 'पोम' था। उसमें अस्तव्यस्त अवस्था में मेजें पड़ी थीं। दीवारों से शराब की सुराहियाँ टँगी थीं। वहाँ शराबियों तथा युवतियों की कभी कमी नहीं रहती थी। सड़क की ओर एक खिड़की थी। दरवाजे पर अँगूर की एक लता थी। उसके ऊपर लोहे के पत्ले पर एक स्त्री तथा सेब का चित्र बना था। यही उस मयख़ाने का साइनबोर्ड था।

रात आ पहुँची थी। सड़कें अँधेरी हो चली थीं। मयख़ाने में मोमबत्तियाँ जल रही थीं। खिड़की से शीशों की खनखनाहट और घुस्सेबाज़ी तथा शपथ का शोर बाहर आ रहा था। लोग अपने काम में व्यस्त चले जाते थे। केवल छोटे-छोटे लड़के खिड़की के पास जाकर कभी बोल उठते थे—गदहो! अपने-अपने प्याले सँभालो।

केवल एक आदमी उस सराय के द्वार पर लगातार चहल-क़दमी कर रहा था। जैसे सन्तरी अपने स्थान से दूर नहीं जाता, वैसे वह भी अपनी जगह से दूर नहीं हटता था। उसने सिर को अपने कपड़े से ढँक लिया था। उसने एक पुराने कपड़े

छीन लूँगा। यदि 'सीजर' के समान भी तुम बली हो, तो मैं इसकी परवा नहीं करता।

महाशय ! यह गली उस गली में जाती है—जेहन ने कहा।

हाँ-हाँ मित्र जेहन ! तुम सच कहते हो, किन्तु ईश्वर के नाम पर होश सँभालो। मुझे केवल थोड़े-से पैसों की आवश्यकता है। मेरा मिलन-समय सात बजे है।

ध्यान देकर मेरा गीत सुनो—जेहन कुछ भुनभुनाने लगा।

तुमसे शैतान समझे—फीवस ने कहा, और जेहन को बड़े जोर का एक धक्का दिया।

उस धक्के से जेहन एक दीवार से टकरा कर फर्श पर जा गिरा। उस भ्रातृ-प्रेम के नाते—जो कभी मद्यपों के हृदय से दूर नहीं होता—फीवस ने जेहन को अपने पाँवों से ठुकरा कर उस तकिये पर कर दिया, जो पेरिस की गलियों में ईश्वर की देन है, और जिसे धनी-मानी लोग 'गोबर' कहते हैं।

यदि कोई गाड़ीवाला तुम्हें उठा ले, तो समझो कि तुम्हारे लिये बुरा ही हुआ—ऐसा कहकर, अपनी मनुष्यता जताते हुए, उसे जमीन पर छोड़ कर, कैप्टेन ने अपनी राह ली।

काली पोशाकवाला आदमी थोड़ी देर तक धराशायी जेहन के पास दुविधा में खड़ा रहा। फिर एक आह खींच कर वह कैप्टेन का पीछा करने लगा।

हम भी जेहन को, उन्हीं की तरह, तारों के नीचे छोड़ देते हैं। और, यदि पाठकों की सम्मति हो, तो उन दोनों का पीछा किया जाय।

थोड़ी दूर जाने पर कैप्टेन को मालूम हुआ कि कोई उसका पीछा कर रहा है। अचानक उसने पीछे मुड़ कर देखा। एक छाया दीवारों के पास से उसके पीछे आ रही थी। वह रुक गया, छाया भी रुक गई। वह चलने लगा, छाया भी चलने लगी। इससे, उसको बहुत चिन्ता नहीं हुई।

मेरे पास एक भी पैसा नहीं है—उसने सोचा।

कैप्टेन स्वभावत एक जगह रुक गया। यह स्थान उसका स्कूल था, जहाँ लड़कपन में उसने कुछ सीखा था। उसने देखा कि गली सुन-सान है, केवल वही छाया धीरे-धीरे समीप आती जाती है। यह छाया एक ओवर-कोट तथा हैट भी पहिने थी। समीप आकर वह मूर्ति की तरह खड़ी रही, मगर उसकी दोनों आँखें, रात को, बिल्ली की तरह, फीवस पर लगी थीं।

कैप्टेन साहसी पुरुष था। वह चोरों का तनिक भी भय न खाता था, मगर इस चलती-फिरती तस्वीर ने उसके सारे रक्त को ठंडा कर दिया। रात में प्रेत-पादरियों के घूमने की बात पेरिस में प्रसिद्ध थी। इस कहानी ने उसे सन्न कर दिया।

थोड़ी देर के बाद जबरदस्ती हँसकर वह कहने लगा—महाशय! यदि आप कोई डाकू हैं, तो आपको बता देता हूँ कि मैं एक भाग्यहीन कुल का वारिस हूँ। आप गलत दूकान पर आ गये हैं, दूसरा दरवाजा देखिये। वहाँ कालेज के प्रार्थना-गृह में एक चाँदी का क्रास है।

छाया का हाथ आगे बढ़ा और फीवस की बाँह को, लोहे के

शिकंजे की तरह, पकड़ लिया। छाया ने कहा—कैप्टेन फ़ीबस!

शैतान!—फ़ीबस बोल उठा—तुम मेरा नाम भी जानते हो?

मैं केवल तुम्हारा नाम ही नहीं जानता—छाया ने क़ब्र से निकलती हुई आवाज़ में कहा—मैं यह भी जानता हूँ कि आज यह तुम्हारे अभिसार का समय है।

हाँ?—आश्चर्य में डूबे हुए फ़ीबस ने कहा।

सात बजे।

पन्द्रह मिनट में।

मदर-फ्लोरडेल के घर पर!

ठीक!

पाट-सेंट-माइकेल की बुड्ढी कुटनी!

सेंट-माइकेल, जिसे प्रधान स्वर्गदूत कहते हैं।

अपवित्र दुष्ट—छाया ने धीरे से कहा—एक स्त्री के साथ

ठीक।

जिसका नाम—

इज़मेरल्डा है—फ़ीबस ने हँसते हुए कहा।

धीरे-धीरे उसका चित्त ठिकाने आ गया था, और वह लेकिनी के साथ उत्तर दे रहा था।

इस नाम को सुन कर 'छाया' के पंजे ने फ़ीबस की बाँह को झकझोर दिया।

कैप्टेन फ़ीबस! तुम झूठ बोलते हो।

कैप्टेन के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह इस प्रकार झटका

कर पीछे की ओर कूद गया कि छाया का हाथ झट छूट गया। द दर्पपूर्ण भाव से अपने हाथ को तलवार की मूठ पर ले गया।

छाया उस क्रोध से तनिक भी विचलित नहीं हुई।

ईसा और शैतान!—कैप्टेन ने चिल्ला कर कहा—आज तक किसी ने ऐसी अनुचित बात सुनाने की धृष्टता नहीं की। तुम उसके दुहराने का साहस नहीं कर सकते!

तुम झूठ बोलते हो—छाया ने फिर धीरे से दुहराया।

कैप्टेन दाँत पीसने लगा। छाया, प्रेम और अन्ध-विश्वास—, सब उस समय भूल गये थे। उसने वहाँ केवल एक आदमी और अपमान को देखा।

ठीक है—क्रोध के कारण तुतली जुबान से उसने कहा।

उसने अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल ली। वह काँप उठा, क्योंकि क्रोध मनुष्य में कम्प तथा भय—दोनों—का सचार करता है।

इसी जगह, अभी, तलवार! तलवार! इस पत्थर पर रक्त की धार बहेगी।

छाया हिली तक नहीं। अपने प्रतिद्वन्द्वी को तैयार देख उसने कहा—कैप्टेन फीबस!—(उसके स्वर से कड़वापन झलक रहा था)—तुम भूलते हो कि तुम्हें किसी से मिलना है।

फीबस की प्रकृति के मनुष्यों का क्रोध उफनाया हुआ दूध है, एक बूँद शीतल जल उसे शान्त करने को पर्याप्त है।

कैप्टेन के हाथ की चमकती हुई तलवार नीची हो गई।

कैप्टेन ! कल, परसों, एक महीने में, दस वर्ष में, तुम मुझे अपना गला काटने में तत्पर पावोगे, मगर अपने वादे को तो पहिले पूरा करो।

ठीक है—फीवस ने अपने-आप को समझाने के ढंग से कहा—प्रतिज्ञा करके युवती तथा तलवार का सामना करना बड़ा सुन्दर होता है, मगर कोई कारण नहीं है कि एक के लिये दूसरी छोड़ी जाय, तिसपर यहाँ तो दोनों मिल रहे हैं।

उसने तलवार को म्यान के हवाले किया।

महाशय—फीवस ने कहा—आपको इसके लिए अनेक धन्यवाद हैं। आप ठीक कहते हैं कि अपना-अपना हाथ दिखाने का अवसर कल आवेगा। मैं इस समय को शान्ति-पूर्वक बिताने देने के लिये आपका कृतज्ञ हूँ। मैं आशा करता था कि आपको इस पनाली मे सुलाने के बाद भी मैं सुन्दरी से समय पर जा मिलूँगा। ऐसे अवसरों पर अभिसारिका को कुछ देर तक प्रतीक्षा कराना भी ठीक है। मगर मैं आप को हठी कुत्ते की तरह पाता हूँ। अच्छा, हमलोग कल समझेंगे। इसलिये मैं आज तो अपना वादा पूरा करूँगा—सात बजे।

फीवस ने फिर अपना सर खुजलाते हुए कहा—मैं भूलता हूँ, कमरे का भाड़ा देने के लिये मेरे पास एक भी पैसा नहीं है और उस कुटनी को पहिले ही देना पड़ता है। वह मेरा विश्वास नहीं करेगी।

उसको देने के लिये यह रुपये लो।

फीवस को मालूम हुआ कि अजनबी ने हथेली पर कुछ रुपये रख दिये हैं।

वह रुपये लेने तथा हाथ मिलाने से इनकार न कर सका।

ईश्वर की कसम! तुम बड़े भले आदमी हो!—कैप्टेन कहा।

एक शर्त्त है, तुम्हें सिद्ध करना पड़ेगा कि मैं गलती कर रहा था और तुम सही कह रहे थे। किसी कोने में मुझे छिपा दो, ताकि मैं यह देख लूँ कि सचमुच तुम उसी औरत से मिलने आये हो, जिसका तुम नाम ले रहे थे।

हृदय से?—फीबस ने कहा—आप उस कमरे की कुत्तेवाली कोठरी से सरलता पूर्वक देख सकेंगे।

तब आओ—छाया ने कहा।

मैं हाज़िर हूँ—कैप्टेन ने कहा—मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं, मगर आज हमलोग मित्र रहे, कल मैं आपका क़र्ज़—रुपये और तलवार का—चुका दूँगा।

वे शीघ्रता-पूर्वक 'पाट-सेंट-माइकेल' के पास चले आये। नदी कल-कल निनाद से बहती चली जाती थी।

मैं पहिले आपको घर में कर आऊँगा, तब अपनी हृदय-हारिणी को लाऊँगा, जो मेरे लिये थोड़ी दूर पर प्रतीक्षा कर रही होगी—फीबस ने कहा।

साथी कुछ न बोला। फीबस ने एक घर के दरवाज़े को खट-खटाया। छिद्र से दीपक का प्रकाश दीख पड़ा।

खिड़की से पलायन

फ्राडेफ्रोलो अन्धकार मे कुछ देर तक उस माँद को टटोलता रहा, जिसमे फोवस ने उसे बन्द कर दिया था। उस माँद में कोई खिडकी न थी। छत इतनी नीची थी कि वह सीधा खडा नहीं हो सकता था, इस लिये धूल-भरे फर्श पर बैठ गया। उसका सर गर्म हो उठा था। उसे शीतलता की आवश्यकता थी।

उसे लगभग पन्द्रह मिनट प्रतीक्षा करनी पडी। इतना ही समय उसके लिये एक शताब्दी के समान जान पडा। उसे ऊपर आनेवालो के पाँवो की आहट सीढी पर सुनाई पडी। बगल के कमरे का दरवाजा खुला। रोशनी मे उसने देखा कि उसके दरवाजे में एक छिद्र है, जिससे वह बाहर के कमरे की चीजो को भली भाँति देख सकता है।

पहिले दीपक लेकर बुढ़िया आई। फिर फीवस मूछों पर ताव देता हुआ दिखाई पड़ा। तब एक तीसरा व्यक्ति—सुन्दरी शोभा शालिनी इज्मेरल्डा।

पादरी काँप उठा। उसके नेत्रों के सामने बादल छा गये। जान पडा, उसके स्नायु में तप्त लोहा घुसेड दिया गया है। उसकी आँखों के सामने की हर-एक वस्तु चक्कर काटने लगी। वह न कुछ देख सकता था—न सुन।

कुछ देर बाद, जब उसका मस्तिष्क कुछ ठंडा हुआ, तब उसने फीबस तथा इजमेरल्डा को दीपक के समीप एक बेंच पर बैठे देखा। एक पुराना बिस्तर भी पास के खिलान पर रक्खा हुआ था। कमरे में एक खिडकी भी थी, जिसके टूटे हुए शीशों में आकाश, और सुदूरवर्ती बादलों के बिस्तर पर पडा हुआ चन्द्रमा, दिखाई दे रहे थे।

युवती सकोच तथा लज्जा से लाल हो रही थी। उसका मस्तिष्क अस्तव्यस्त जान पडता था। उसके नागिन के समान लम्बे बाल उसके चेहरे को ढँक रहे थे। कैप्टेन के चेहरे की ओर देखने का उसे साहस न होता था। कैप्टेन का चेहरा प्रसन्नता से प्रकाशित हो रहा था। युवती अपनी अँगुली के नखों से बेंच पर निरर्थक रेखाएँ खींच रही थी। फिर अँगुलियों की ओट से देखती भी जाती थी। उसकी बकरी उसके पाँवों पर पडी थी।

पादरी की कनपटियाँ इतने ज़ोर से धडक रही थीं कि उनकी बातों को वह कठिनाई से सुन पाता था।

प्रेमियों की बातें बडी साधारण होती हैं। वही—मैं प्यार करता हूँ—मैं मर रहा हूँ।

इन बातों से पादरी को कुछ मतलब न था। उसके लिये ये बातें निरर्थक थीं, किन्तु वह इन बातों की ओर से उदासीन भी न था।

आँखों को ज़मीन में गडाकर युवती ने कहा—ओह! मेरे प्यारे फीबस! मुझे घृणा की दृष्टि से न देखो। मैं समझती हूँ कि मैं बहुत बुरा कर रही हूँ।

तुमसे घृणा करना सुन्दरी !—फीबस ने उत्तर दिया—तुमसे घृणा ? ईश्वर की क़सम ! क्यों ?

तुम्हारे साथ यहाँ आने से।

इस विषय मे हम लोगों की राय एक नहीं है। मैं तुम्हें दूसरे दोष के लिये हेच नज़र से देखता हूँ।

युवती ने उसकी ओर कातर दृष्टि से देखते हुए कहा—मैंने क्या किया है ? मुझ से क्यों घृणा करते हो ?

क्योंकि तुम इतनी देर करती हो !

युवती—अफसोस ! मैं इतना कातर इसलिये बनी हूँ कि मैं आज एक पवित्र प्रतिज्ञा को भंग कर रही हूँ। मैं अपने माता पिता को न पा सकूँगी ! कवच का प्रभाव जाता रहेगा ! किन्तु उससे क्या मतलब ? अब मुझे माता-पिता की क्या आवश्यकता है ?

फीबस—शैतान की कसम, मैं कुछ नहीं समझ सका।

इजमेरल्डा थोड़ी देर तक चुप रही। फिर उसकी आँखों से एक बूँद आँसू टपक पड़ा। उसने कहा—मेरे स्वामी ! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।

उस युवती के चारो ओर पवित्रता तथा ब्रह्मचर्य का एक ऐसा वातावरण था, जिससे फीबस को अपनी ओर से डर बना था—वह सकोच कर रहा था।

किन्तु युवती के उपर्युक्त वाक्य ने उसका साहस बढ़ा दिया। पूछा—तुम मुझे प्यार करती हो ?

इतना कहकर उसने अपने हाथ को जिप्सी की कमर में लगा दिया। वह इसी सुअवसर की प्रतीक्षा कर रहा था।

पादरी ने उसे देखा। अपनी अँगुली के सिरे से वह अपने वक्षस्थल पर पड़े हुए खंजर की नोक टटोलने लगा।

फीवस!—अपनी कमर से हठी हाथों को हटाते हुए जिप्सी ने कहा—तुम भले हो, दयालु हो, कृपालु हो, तुमने मेरे प्राणों की रक्षा की थी। मैंने बहुत दिनों से स्वप्न देखा है कि एक फौजी अफसर मेरे प्राणों की रक्षा करेगा। मैंने तुमको जानने से पहिले तुम्हें स्वप्न में देखा था। तुम्हारा नाम कितना सुन्दर तथा मधुर है। मैं तुम्हारे नाम को प्यार करती हूँ, तुम्हारी तलवार को प्यार करती हूँ। अपनी तलवार को म्यान से बाहर करो, ताकि मैं उसे देख लूँ।

छोकरी!—कैप्टेन ने कहा, और तलवार को म्यान से बाहर निकाला।

जिप्सी ने तलवार के अंग प्रत्यंग को ध्यान से देख कर उसका चुम्बन किया और कहा—तुम एक शूर-सामंत की तलवार हो। मैं अपने कैप्टेन को प्यार करती हूँ।

फीवस ने फिर सुअवसर को हाथ से न जाने दिया, उसकी सुन्दर ग्रीवा को चूम लिया।

युवती चौंक पड़ी, लाल हो गई। पादरी अँधेरे में दाँत पीस रहा था।

जिप्सी ने फिर फीवस के वस्त्रों तथा उसकी चाल की प्रशंसा

युवती अपने मधुर विचारों में मग्न थी। वह उसका अर्थ जाने विना भी उसके स्वर से प्रसन्न हो रही थी।

ओह! तुम कितना प्रसन्न होगी।—कैप्टेन ने कहा, और धीरे से उसका कमरबन्द खोल दिया।

तुम क्या कर रहे हो?—वेग से युवती ने कहा।

कैप्टेन के अतिक्रम से वह चौंक पड़ी।

कुछ नहीं—फीबस ने उत्तर दिया—केवल यही कहना था कि जब तुम मेरे यहाँ आवोगी, तो तुम्हें इस हास्यास्पद वस्त्र को त्यागना होगा।

जब मैं तुम्हारे साथ रहूँगी, मेरे प्यारे फीबस!—युवती ने विनय पूर्वक कहा।

वह फिर विचार में डूबकर चुप हो गई।

कैप्टेन का साहस युवती की नम्रता से बढता जाता था। उसने उसकी कमर को पकड़ लिया। युवती ने कुछ बाधा नहीं दी। धीरे-धीरे उसने बेचारी की कुर्ती के बटन खोलना प्रारम्भ किया। उसके कंठ में बँधे रूमाल को इस प्रकार अस्तव्यस्त कर दिया कि बेचारी के सुन्दर कंधे दिखाई देने लगे। हाँपते हुए पादरी ने देखा कि वे ऐसे सुन्दर हैं जैसे कुहरे से निकलता हुआ चन्द्रमा।

युवती ने कैप्टेन के कामों में बाधा नहीं डाली। उसे कुछ पता ही न था। साहसी कैप्टेन की आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं। अचानक जिप्सी उसकी ओर घूमकर देखने लगी। असीम प्रेम के साथ बोली—फीबस! मुझे अपने धर्म की बातें सिखा दो।

मेरा धर्म !—खिलखिला कर हँसते हुए कैप्टेन ने कहा—मैं तुम्हें अपने धर्म की बातें सिखाऊँ ? मेरे धर्म से तुम्हारा क्या मतलब ?

तुम्हारे साथ व्याह करने के लिये—युवती ने उत्तर दिया।

कैप्टेन के चेहरे पर आश्चर्य, अवज्ञा, असावधानता तथा कामान्धता के भाव एक ही साथ झलक पड़े। उसने कहा—अनर्थ ! हम लोग व्याह क्यों करेंगे ?

जिप्सी पीली पड़ गई। उसका सिर उसके वक्षस्थल पर झुक गया। कोमलता से फीबस ने कहा—यह मूर्ख विचार किस लिये कर रही हो ? व्याह कुछ नहीं है ! किसी पादरी की दूकान में थोड़ी-सी लेटिन की मन्त्रावली उच्चारण न करने से कोई प्रेमी नहीं होता ?

मधुर शब्दों में ऐसा कहते हुए फीबस युवती के पास सट गया। उसके हाथों ने फिर युवती की कमर को घेर लिया। उसकी आँखें चमकती जा रही थीं। उसके भावों से प्रकट हो रहा था कि वह उस क्षण के समीप जा रहा था, जिसमें जुपिटर भी इतना मूर्खतापूर्ण काम करता है कि होमर को वाध्य होकर, बादलों की सहायता लेनी पड़ी थी।

पादरी सब कुछ देख रहा था। उसकी तंग कोठरी के किवाड़ पुराने थे। उन्हीं के छिद्रों से उस समय बाज की-सी पैनी दृष्टि से वह देख रहा था। गिरजे के कठोर नियमों में बँधा रहने वाला वह पादरी उस अन्धकार में अपने प्यार के ज्ञान से काँप उठा।

अपनी सेवा से अलग न करना। तुम्हारे रूमाल पर बेल-बूटे बना ऊँगी, वस्त्रों की रक्षा करूँगी। मुझे तुम अपना कोट झाड़ने दोगे? अपने जूतों मे पालिश लगाने दोगे? फीवस! तुम मुझपर इतना दया करोगे? नहीं? अच्छा, मुझे स्वीकार करो, यह सब तुम्हारा है, केवल मुझे प्यार चाहिये। हम जिप्सी-युवतियों को और कुछ नहीं चाहिये—केवल प्यार और खुली हवा।

इतना कह कर युवती ने अपनी भुजाओं को अफसर के गले में डाल दिया। उसकी कातर आँखें दया की भीख माँग रही थीं। उसकी आँखों मे आँसू थे, किन्तु चेहरे पर मन्द मुस्कान। अपने अर्द्ध-नग्न शरीर को उसने अफसर के अंक में छोड़ दिया।

कैप्टेन अपने गर्म होठों से उसके कधों को चूमने लगा।

युवती के नेत्र छत पर लगे थे। उसका सिर पीछे की ओर झुका था। वह फीवस के चुम्बनों के साथ सिहर उठती थी।

एकाएक फीवस के सिर पर उसने एक दूसरा सिर देखा, जिसका चेहरा सूखा था—जिसके मुखड़े पर घनी पीड़ा झलक रही थी। उस सिरवाले का हाथ खंजर के साथ ऊपर उठा था।

वह चेहरा और हाथ, दोनों ही, पादरी के थे—जो दरवाजे को तोड़ कर वहाँ आ उपस्थित हुआ था। फीवस उसे देख नहीं रहा था।

युवती शिथिलता से निस्तब्ध थी। वह भयानक प्रेत के प्रकट होने से ऐसा डर गई थी, जैसे बाज को देखकर छोटी चिड़िया डर जाती है। वह चिल्ला भी नहीं सकी। उसने खंजर को रक्त में लिप्त उठते हुए देखा।

शाप!—कैप्टेन चीख उठा—और पृथ्वी पर गिर पड़ा। युवती भी मूर्च्छित हो गई।

जब वह मूर्च्छित हो रही थी, उसे मालूम हुआ कि उसके होठों पर आग रख दी गई हो—वह एक चुम्बन था, जो गर्म लोहे से भी अधिक दाहक था।

जब उसे होश आया, उसने अपने को पहरेदार सिपाहियों से घिरा पाया। कुछ सिपाही रक्त से सराबोर कैप्टेन को ले जा रहे थे।

पादरी का कहीं पता न था। खिड़की, जो ठीक नदी के ऊपर थी, खुली पड़ी थी और वहीं पर एक ओवर-कोट पड़ा था, जिसे कैप्टेन फीबस की चीज समझकर किसी ने उठा लिया।

उसने सुना, सिपाही कह रहे थे—यह जादूगरनी है, जिसने कैप्टेन को खंजर भोंक दिया है।

दूसरा भाग

रुपया—पत्ते में परिणत

ग्रींगोयरे तथा 'मिरेकिल-कोर्ट' के निवासियों को, इज़मेरल्डा के गायब हो जाने पर, बड़ी चिन्ता हुई। एक महीने से उसका पता न था—न उसकी बकरी ही का पता था। इससे ग्रींगोयरे का पीड़ा दूनी हो गई थी।

एक रात को वह गायब हो गई थी। तब से उसका कुछ पता न लगा था। कुछ डाहियों ने उसी शाम को ग्रींगोयरे से कहा—हमने इज़मेरल्डा को 'पाट-सेंट-माइकेल' के पुल के पास एक फ़ौजी अफ़सर के साथ जाते देखा था।

मगर इज़मेरल्डा का पति अविश्वासी दार्शनिक था। इसके अतिरिक्त उसकी पत्नी का सतीत्व तथा ब्रह्मचर्य उससे अधिक कोई दूसरा नहीं जानता था। वह जानता था कि जिप्सी

कवच तथा गुणों ने मिल कर उसमें अजेय शील पैदा कर दिये हैं। वह जानता था कि उसकी पत्नी में अपनी पवित्रता की रक्षा करने की कितनी क्षमता है, इसलिये इस विषय में उसे कुछ चिन्ता नहीं थी। मगर उसके गुम होने के कारण को वह नहीं समझ सका। इसलिये उसको बड़ा मार्मिक आघात पहुँचा था। यदि सम्भव होता, तो वह दिन-रात कलपने के कारण दुबला भी हो गया होता। वह अपना सब कुछ भूल गया था—यहाँ तक कि उसकी साहित्यिक पिपासा भी मर गई थी।

एक दिन जब वह उदास मन से टहल रहा था, उसने न्याय-भवन के सामने एक भीड़ देखी। बात क्या है?—उसने एक युवक से पूछा—जो न्याय भवन से बाहर निकल रहा था।

युवक ने उत्तर दिया—मैं नहीं जानता। सुना है कि एक स्त्री का, जिसने पलटन के किसी अफसर को मार डाला है, मुकदमा पेश है। इसमें कुछ जादू का भी मामला है। और, मेरा भाई, जो नाट्रीडेम का आर्च-डिकन है, इस समय यहीं है। मैं उससे कुछ बात करना चाहता था, मगर उसके पास तक न पहुँचने पाया। इससे मुझे बड़ा रंज हुआ है, क्योंकि मुझे रुपये की बड़ी आवश्यकता है।

अफसोस महाशय!—ग्रींगोयरे ने कहा—मैं कितना भी चाहता हूँ कि आप को कुछ दूँ, मगर मेरे पाजामे में जो ये छिद्र हैं, वे रुपये के बोझ से नहीं हुए हैं।

उसने यह नहीं बतलाया कि वह उस युवक के भाई पादरी को

जानता है या नहीं। युवक ने अपना रास्ता लिया। ग्रींगोयरे अदालत के बडे कमरे में घुसा। सोचा—उदासी मिटाने के लिये फौजदारी के मामले की सुनवाई से बढकर कोई दूसरा रुचिकर दृश्य नहीं है, क्योंकि जज बहुधा मनोरंजक मूर्ख होते हैं।

वह भीड मे समा गया। कमरे मे यत्र-तत्र मोमबत्तियाँ जल रही थीं, क्योंकि बाहर से प्रकाश बहुत कम आ रहा था। कमरे के सामने का भाग दर्शकों से भरा था। पीछे के हिस्से में वकील बैठे थे। एक मच पर बहुत-से जज बैठे थे। जजों की टोपियों पर क्रास के चिन्ह बने थे।

ग्रींगोयरे ने अपने पास के एक व्यक्ति से पूछा—वहाँ पंक्ति बाँध कर बैठे हुए वे कौन हैं?

वे कई तरह के जज हैं, उनके कपडों से ही यह बात प्रकट हो रही है।

उनके ऊपर, वह लाल मुँह वाला व्यक्ति—जो पसीने से तर हो रहा है—कौन है?

वही प्रेसिडेंट—अध्यक्ष—है।

और उसके पीछे वे भेड़े?—ग्रींगोयरे ने पूछा।

पाठक जानते हैं कि ग्रींगोयरे जज तथा मजिस्ट्रेटों को अच्छी निगाह से नहीं देखता था।

वे राज-महल के अफसर हैं।

उनके सामने वह सुअर कौन है?

वह पारलामेंट के कोर्ट का क्लर्क है।

दाहिनी तरफ़ वह घड़ियाल कौन है ?

मास्टर फ़िलिप, सरकारी वकील।

बायीं ओर का वह बड़ा-सा काला बनबिलाव ?

मास्टर जेकू चारमोले, जो चर्च-कचहरी में राजा का प्रतिनिधि है।

ये महानुभाव यहाँ क्या कर रहे हैं ?

एक मुकदमा देख रहे हैं।

ग्रीगोयरे को पता लगा कि मामला किसी स्त्री से सम्बन्ध रखता है, जो जजों के सामने दर्शकों की ओर पीठ करके बैठी थी। उस मामले मे जादू का अभियोग था, क्योंकि बिशप की कचहरी का जज भी वहाँ उपस्थित था।

एक बुढिया का बयान होने लगा। वह कहने लगी—मैं 'पॉंट-सेंट-माइकेल' मे चालीस वर्ष तक रही हूँ। कुछ दिन पहिले मुझसे किसी ने कहा था कि शाम को बाहर बैठकर चर्खा न कातो, क्योंकि पादरी की प्रेतात्मा इस समय नगर मे घूमती है। एक दिन मेरे दरवाजे पर दो आदमी आये। एक आदमी काला कपड़ा ओढे था, दूसरा एक सुन्दर कप्तान था। दोनों ने कहा—'सेंट-मारथा का कमरा'। वही मेरा सबसे सुन्दर ऊपर का कमरा है। उन्होने मुझे एक रुपया दिया, जिसे मैंने मेज़ के दराज मे रख दिया। जब वे लोग ऊपर गये, तो काला आदमी गुम हो गया। इससे मुझे कुछ सन्देह हुआ। सुन्दर कप्तान मेरे साथ नीचे आया। वह घर से बाहर चला गया। मैं चर्खा कातने लगी। थोड़ी देर मे वह एक सुन्दरी युवती के साथ वापस आया। उस युवती के साथ एक

जादू का यह नया प्रमाण था।

दो आदमी तुम्हारे साथ ऊपर गये थे ? काला आदमी पहिले गुम हो गया और फिर पादरी के भेष में 'सेन' नदी में तैरता हुआ दिखाई पड़ा ? और कप्तान ? दोनों में से किसने तुम्हें रुपया दिया था ?

कप्तान ने।

लोग भुनभुना उठे।

ग्रीगोयरे ने सोचा—इससे मेरा विश्वास जाता रहा।

मास्टर फिलिप ने फिर कहना शुरू किया—महाशयो ! हम आप का ध्यान उस कत्ल किये गये अफसर के बयान की ओर आकर्षित करते हैं, जिसमें यह कहा गया है कि उसके मस्तिष्क में यह बात थी कि काला आदमी प्रेत-पादरी हो सकता है। हम यह भी कहा है कि उस छाया ने उसे रुपया दिया। कप्तान उस रुपये को फ्लोरडेल को दिया। इसलिये रुपया नरक का था।

इस टिप्पणी के कारण ग्रीगोयरे का सारा सन्देह जाता रहा।

महाशयो ! आप के पास कागजात हैं। आप फीबस के बयान को मिला देखिये।—सरकारी वकील ने कहा।

इस नाम को सुन कर अभियुक्त स्त्री उठी। भयभीत ग्रीगोयरे ने इजमेरल्डा को पहिचान लिया।

वह पीली पड़ गई थी। उसके केश बिखरे हुए थे। उसके हाँठ स्याह पड़ गये थे। उसकी धँसी आँखें भयानक हो रही थीं।

फीबस !—उसने चिल्ला कर कहा—वह कहाँ है ? आह

ज्जनो !! आप मुझे मार डालने के पहिले बता दें कि वह
ीवित है या—

चुप रह स्त्री !—प्रधान ने कहा—उससे हम लोगों को कुछ
त्तलब नहीं।

ओह ! दया करो, यदि वह जीवित है, तो बतलाने की
ा करो।

उसने अपनी कमजोर बाँहों को एक साथ मिला दिया।
सकी हथकड़ी झनझना उठी।

अच्छा, तो वह मर रहा है ! सतोप हुआ ?—सरकारी
ील ने कहा।

कातर हो वह अपनी जगह पर गिर पड़ी। वह मोम की
ती की तरह चुप, अश्रु-विहीन और सफेद थी।

प्रधान जज ने कहा—अरदली, दूसरे अभियुक्त को लाओ।

तुरन्त ही वहाँ पर एक बकरी आ उपस्थित हुई। उसके साग
ा खुर मढे हुए थे। भाँगोयरे ने बड़े दुःख से उसे देखा।

बकरी, जिप्सी युवती को देखते ही, कुर्के के सिर के ऊपर से
छल कर, युवती के पास पहुँच गई—उसके पाँवों पर लोटने
गी। मगर युवती ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया।

वृद्धा ने कहा—यही बकरी है।

मास्टर जेकू ने बीच में बाधा देकर कहा—यदि आप महानु-
ावों की सम्मति हो तो बकरी का भी बयान ले लिया जाय।

दूसरा अभियुक्त 'दजाली' ही थी। पशुओं के विरुद्ध जादू-

गरी का अभियोग लगाना उस समय बड़ा सरल था और पार के जजों का तो यह धार्मिक काम था। पशुओं की तो कोई बात ही नहीं, उस समय के न्याय का राज्य प्रेतों तक पर था, क्योंकि कभी-कभी प्रेतों पर भी मुकदमे चलाये जाते थे।

चर्च-कोर्ट में राजा के प्रतिनिधि (जेक़्) ने कहा—यदि यह शैतान, जो इस बकरी में वास करता है, अपने जादू भरे कामों से बाज नहीं आता और कोर्ट को भय-प्रदान करता है, तो हम पहिले से उसे सूचित कर देते हैं कि हमें बाध्य होकर उसे फाँसी पर लटकाना पड़ेगा।

ग्रींगोयरे को पसीना हो आया।

जेक़् ने जिप्सी की खँजड़ी को बकरी के सामने रख दिया और बकरी से समय पूछा। बकरी ने खँजड़ी पर सात चोटें करके बता दिया कि सात बजे थे।

बकरी को ये निर्दोष कौतुक सिखलाये गये थे। उसने उन्हें यों ही दिखा दिया। दर्शकों ने बहुत बार इन निर्दोष कौतुकों की प्रशंसा की थी, मगर आज वे 'न्याय भवन' में उन्हीं के कारण भयातुर हो रहे थे।

दर्शकों ने सोचा—बकरी पर शैतान का वास है।

इसके बाद जेक़् ने एक छोटी थैली से काठ के अक्षर निकाले। दजाली ने उनसे 'फीबस' लिख दिया। यही मन्त्र था जिसके कारण कैप्टेन उस युवती का शिकार बना था।

सबकी नजरों में वह परी 'डाइन' थी।

इज्मेरल्डा कचहरी के किसी काम को नहीं देख रही थी और कुछ सुन ही रही थी। एक अरदली ने उसे ध्यानावस्था से गाने के लिये निर्दयता-पूर्वक झकझोर दिया।

प्रधान जज गम्भीरता के साथ बोल उठा—युवती ! तू जिप्सी और जिप्सी जादूगरी के लिये काफी बदनाम है। तुमने अपने तान बकरी से मिलकर २९ मार्च को रात को, प्रेत एवं मन्त्र या जादू की सहायता से, फोबस नाम के एक कैप्टेन की हत्या है। क्या तुम इसे अब भी अस्वीकार करती हो ?

भयानक !—युवती ने अपने हाथों से अपने मुँह को छिपाते र कहा—मेरे प्यारे फोबस ! ओह, यह कैसा नरक है !

तुम अब भी अस्वीकार करती जा रही हो ?—प्रधान पूछा।

निश्चय !—वह उठकर खड़ी हो गई। उसकी आँखों से आग कल रही थी।

प्रधान ने कुण्ठित होकर पूछा—तो अपने विरुद्ध लगाये गये भियोग का किस प्रकार खंडन करती हो ?

मैंने पहिले ही बतला दिया है कि मैं नहीं जानती। वह हत्यारा पादरी था, जिसे मैं नहीं जानती। वह नारकी पादरी बहुत नों से मेरे पीछे पड़ा था।

वह प्रेत पादरी था—प्रधान ने कहा।

मेरे लार्ड ! मुझ पर दया करो, मैं एक गरीब लड़की हूँ।

जिप्सी !—जज ने कहा।

मास्टर जेकू ने कहा—इसकी अवाञ्छनीय हठ के लिये मेरा निवेदन है कि यह यन्त्रणा-गृह में रक्खी जाय।

ठीक है—प्रधान ने कहा।

अभागी युवती काँप उठी। तो भी वह धैर्य पूर्वक मास्टर जेकू के आगे से होकर निकलने लगी। वह समीप के एक कमरे में चली गई।

ग्रॅंगोयरे को मालूम हुआ, जैसे किसी राक्षस ने उस अपने पेट में रख लिया।

बकरी करुणा-जनक स्वर में 'में-में' करने लगी।

प्रधान ने हुक्म दिया कि इस कर्त्तव्य को पूरा करने के लिये यहाँ एक मैजिस्ट्रेट रहेगा।

रुपये का पत्ते में परिणत होने का फल

इजमेरल्डा भयानक सिपाहियों से घिरी थी। हवलदार ने उसे धक्का देकर एक भयानक कमरे में ढकेल दिया। उस कोठरी में खिड़की का नाम न था—केवल एक ही दरवाजा था, जिस में लोहे के किवाड लगे थे। तिस पर भी वहाँ प्रकाश की कमी न थी, क्योंकि दीवार पर, एक भयानक भट्ठी की हुकार करती हुई अग्नि-ज्वाला, प्रकाश डाल रही थी। अग्नि-ज्वाला के प्रकाश से कमरा लाल रंग का दिखाई देता था और मोमबत्ती रोती सी जान पडती थी। भट्ठी का लोहे का ढक्कन खुला था—जान पडता था कि 'भुकभुकवा'-राक्षस अपने मुँह से आग उगल रहा था। उस भट्ठी के आसपास भयोत्पादक हथियार रखे थे, जिनसी उनके इस्तेमाल के तरीके को नहीं समझ सकती थी। कोठरी के बीच में एक चमडे की चटाई पडी थी। भट्ठी में लोहे के चिमटे, सँडसी तथा छड पडे थे, जो अंगार की तरह लाल हो रहे थे। इस कोठरी को 'यन्त्रणागृह' (साँसत-घर) कहते थे।

इजमेरल्डा ने साहस धारण करने का प्रयत्न किया, किन्तु व्यर्थ। भय ने उसका गला दबा लिया।

सिपाही एक तरफ खडे हो गये और पादरी दूसरी ओर, एक कोने में एक क्लर्क। कलम, दावात और कागज पडे थे।

मास्टर जेकू ने मुस्किराते हुए पास आकर पूछा—मेरी प्यारी बच्ची ! तुम अब भी अस्वीकार करती हो ?

हाँ—उसने धीमी आवाज से कहा ।

तब तो हमें अपना कष्टदायक कर्त्तव्य पालन करने के लिये तुम्हारे साथ कठोरता से पेश आना पड़ेगा ।

उसने जल्लाद से कहा कि युवती को चटाई पर बिठा कर द्वार बन्द कर दो ।

अगर मैं द्वार बन्द कर दूँ तब तो मेरी आग ही बुझ जायगी—जल्लाद ने कहा ।

तब खुला रहने दो—जेकू ने कहा ।

इजमेरल्डा चुप खड़ी रही । उस चटाई को देखकर उसका कलेजा काँपने लगा । भय के कारण वह बुद्धिहीन हो रही थी।

जेकू के इशारा करने पर दो सिपाहियों ने उसे पकड़ कर चमड़े की चटाई पर बिठा दिया । उन्होंने उसे चोट नहीं पहुँचाई किन्तु उनके स्पर्श के साथ ही उसके शरीर का सारा रक्त उसके हृदय पर दौड़ आया । उसने निराशा-भरी दृष्टि से कमरे को एक बार देखा । जैसे लवा-पक्षी बाज को देखते ही सिकुड़ जाता है—भयातुर हो उठता है, वैसे ही वह बेचारी सुकुमार युवती यन्त्रणा के यन्त्रों को देखकर सूख गई । जान पड़ा कि चारों ओर सर्प फन फैलाये काटने को तैयार खड़े हैं ।

डाक्टर कहाँ है ?—जेकू ने पूछा ।

यहाँ—एक काले गाउनवाले ने उत्तर दिया ।

युवती उसे देखकर काँप उठी।

युवती!—राजा के प्रतिनिधि ने कहा—तीसरी बार मैं पूछ रहा हूँ, अब भी तू अस्वीकार करती है?

इस बार वह बोल न सकी। उसने सिर हिला दिया।

तुम हठ करती हो, मगर मुझे अपने कर्त्तव्य को पालना ही है।

प्रतिनिधिजी!—जल्लाद ने पूछा—किससे आरम्भ किया जाय?

लोहे के जूते से—उसने कुछ सोच कर कहा।

ईश्वर तथा मनुष्यों से परित्यक्त युवती का सिर पीछे को झुक गया। यन्त्रणा तथा डाक्टर एक ही साथ उसके पास आये।

लोहे की झनकार सुनते ही वह काँपने लगी। उसने बुदबुदाते हुए कहा—ओह! मेरे प्यारे फीबस!

फिर वह संगमरमर की मूर्त्ति की तरह निश्चल एवं निस्तब्ध हो गई। वह दृश्य जर्जों के हृदय के अतिरिक्त किसी के भी दिल को चूर-चूर कर सकता था। वह इस प्रकार दीख रही थी, जैसे कोई गरीब पापात्मा नरक के द्वार पर शैतान द्वारा पीड़ित होते समय दिखाई देता है। वह कोमल और सुन्दर जीव, जो मनुष्य के न्याय द्वारा यन्त्रणा की चक्की में जौ की तरह पीसी जाती थी, क्या कोई कह सकता है कि उन कठोर जल्लादों के हाथों और भयावनी सँड़सियों से छूने योग्य थी?

जल्लादों ने पहिले ही से उसके पाँव को नंगा कर रक्खा था। वही पैर था, जो अपने सौन्दर्य से लोगों को आश्चर्य में डुबोया करता था।

अफसोस !—जल्लाद ने कहा।

भय-कातर इजमेरल्डा ने देखा कि उसका पाँव उस लोह के यत्र में जकड़ दिया गया। भयानक यत्र के भय से उसको कुछ साहस हुआ। वह चिल्ला उठी—इसे दूर करो, दया ! दया !!

वह राज-प्रतिनिधि के पाँवों पर गिरने के लिये झटके से उठी, मगर उसका पाँव उस भयानक यत्र ने पकड़ लिया था, इसलिये वहीं गिर पड़ी।

अन्तिम समय है, युवती ! तुम अभियोगों को स्वीकार करती हो या नहीं ?—अपनी निश्चल दया के साथ जेकू ने पूछा।

अफसोस ! महाशय ! मैं बिल्कुल नहीं जानती !

कुछ नहीं ?

एकदम कुछ नहीं।

बढ़ो—जल्लादों को हुक्म हुआ।

जल्लाद ने मुट्ठी घुमाई। जूता तग होता गया। बेचारी युवती चीख उठी। उस चीख को प्रकाशित करने में कोई भाषा समर्थ नहीं है।

बस करो—जेकू ने कहा।

फिर जिप्सी से पूछा—स्वीकार करती हो ?

सब कुछ—दुखी युवती ने कहा—स्वीकार करती हूँ, स्वीकार करती हूँ, दया करो, दया !

उसे अपनी शक्ति का ज्ञान न था। उसका जीवन इस समय

तक कितना प्रसन्न, मधुर तथा सरल था। किन्तु प्रथम पीड़ा ने उसे हरा दिया।

मनुष्यता का तकाजा है कि मैं बता दूँ कि स्वीकार कर लेने पर तुम्हे मृत्यु के सिवा किसी वस्तु की आशा नही रह जायगी।

इसी की आशा है—कह कर युवती बेहोश होकर गिर पड़ी।

सुन्दरी! थोड़ा सब्र करो—जल्लाद ने कहा।

जेहू ने कहा—क्लर्क! लिखो। युवती! तुम अपने प्रेम के बादलो की और जादूगरों तथा राक्षसों के साथ नारकीय कामों के करने में अपना सहयोग स्वीकार करती हो?

हाँ—जिप्सी ने धीरे से कहा।

तुमने बादलो के नीचे के भेड़े को देखा है, जिसे जादूगर के सिवा दूसरा कोई नहीं देख सकता? इसे स्वीकार करती हो?

हाँ।

स्वीकार करती हो कि तुमने शैतान की पूजा की है?

हाँ।

तुमने उस शैतान से, जो बकरी के भेष मे इस मामले में अभियुक्त है, सर्वदा सहायता ली है?

हाँ।

तब फिर अन्त में तुम यह भी स्वीकार करती हो कि शैतान तथा प्रेत-पादरी की मदद से, २९ मार्च की रात को, तुमने कैप्टेन फीबस को मार डाला?

उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से मैजिस्ट्रेट के चेहरे की ओर देखा, फिर मशीन के पुर्जे की तरह शब्द करते हुए कहा—हाँ।

वह अत्यन्त निराश हो गई थी।

क्लर्क! सब लिख लिया?

फिर उसने जल्लाद से कहा—कैदी को कचहरी के कमरे में ले चलो।

राजा के प्रतिनिधि ने उसके पाँव की ओर देख कर कहा—कोई हर्ज नहीं, बहुत अधिक चोट नहीं है। समय पर तुम बच गईं। सुन्दरी! तुम अब भी नाच सकती हो!

फिर दूसरी ओर घूमकर पादरी से उसने कहा—अन्त में न्याय को सत्य का पता लग ही गया। युवती साक्षी है कि हम लोगों ने यथाशक्ति कोमलता से काम लिया है!

सूखी पत्ती का अन्त

न्याय-भवन में इजमेरल्डा को देख कर लोग प्रसन्न हो उठे। दर्शक उसके विना घबरा रहे थे। जजों ने समझा कि मामला जल्दी तय होने से भोजन मिलेगा।

मास्टर जेक्रू ने बैठते हुए कहा—अभियुक्त ने सब कुछ स्वीकार कर लिया है।

प्रधान ने पूछा—जिप्सी ! तुमने अपनी जादूगरी कुलटापन तथा फीबस के कत्ल को स्वीकार कर लिया है ?

वह अंधकार में रो पड़ी। दर्द-भरी सिसक के साथ बोली—जो कुछ आप कहें, मगर मुझे शीघ्र फाँसी दीजिये।

आप की बहस को सुनने के लिये कोर्ट तैयार है—प्रधान ने सरकारी वकील मास्टर जेक्रू से कहा।

मास्टर जेक्रू की बहस और उनकी भावभंगी का वर्णन कर हम पाठकों का अमूल्य समय नहीं लेना चाहते। बहस लैटिन भाषा में थी। पाठकों को उसकी बहस का अर्थ आप ही ज्ञात हो गया होगा।

अपनी टोपी को सिर पर रख कर प्रधान बैठ गया।

अभियुक्त के पास से काले गाउनवाला एक आदमी उठा। वह अभियुक्त का वकील था। जज लोग भूखे थे, इसलिये भुनभुनाने लगे।

वकील साहब, संक्षेप ही हो—प्रधान ने कहा।

जब मेरे मुवक्कल ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया है, तो मुझे थोड़ा ही कहना है। सैनिक कानून में, जादूगर पर हत्या के अपराध के लिये, सोने के दो सौ पेंस के अर्थ-दंड का विधान है। मेरी प्रार्थना जज महानुभावों से यही है कि अभियुक्त को इतना ही अर्थ-दंड दिया जाय।

वह कानून अब लागू नहीं है—मास्टर जेकू ने कहा।

हरगिज नहीं—वकील ने उत्तर दिया।

वोट लीजिये, मामला सरल है, देर हो रही है—जजों ने कहा।

वोट लिया गया। जजों ने सिर हिला कर सम्मति दी। बड़ी जल्दी थी। अभियुक्त युवती उनकी ओर देख रही थी, मगर उसकी आँखों के सामने अंधकार के अतिरिक्त कुछ न था।

क्लर्क ने कुछ लिख कर प्रधान न्यायाधीश के हाथों में दे दिया।

प्रधान ने फैसला सुना दिया—

जिप्सी! जिस दिन राजा की खुशी होगी, उस दिन दो-पहर को, तुम छकड़े पर चढ़ाकर नाट्रीडेम के दरवाजे के सामने ले जाई जाओगी। तुम्हारे गले में रस्सी पड़ी रहेगी। वहाँ तुम प्रार्थना करोगी, फिर ग्रेव-स्क्वायर में तुम्हें फाँसी दी जायगी। तुम्हारी बकरी भी फाँसी पायेगी और तुम जजी कचहरी के पादरी को सोने के तीन सिक्के अदा करोगी—पापों के प्रायश्चित्त के लिये। ईश्वर तुम्हारी आत्मा को शान्ति दे।

ओह! यह तो स्वप्न है!—भुनभुनाते हुए जिप्सी ने कहा।

इसके बाद सिपाही उसे उठा ले गये।

पलायन का प्रस्ताव

मध्य काल में बड़े-बड़े राज-प्रासादों, गिरजों तथा दुर्गों के नीचे बहुधा तहखाने बने होते थे। राजमहलों और किलों के तहखाने कभी कैदखाने होते थे, कभी कब्रगाह, या कभी दोनों के सम्मिश्रण।

पेरिस के न्याय भवन का तहखाना जेल था। वह जेलखाना सदा अंधकार में विलीन रहता था। उसमें कई-एक मंजिल थे। नीचे के मंजिलों में अंधकार की सघनता बढ़ती ही जाती थी। 'दान्ते' को उससे बढ़कर कोई नरक का चित्र न मिला होता। 'दान्ते' ने शैतान के घर की जैसी कल्पना की है, वैसा ही वह तहखाना था। उसमें सामाजिक अपराध के लिये फाँसी का दंड पाये हुए कैदी रक्खे जाते थे। जिस समय कोई अभागा उस कब्र में जा पड़ता उसे प्रकाश, वायु, जीवन तथा सारी आशाओं को अन्तिम प्रणाम करना पड़ता—सबसे अन्तिम विदा लेनी पड़ती। फाँसी की टिकठी पर जाने ही के समय वह उस तहखाने को छोड़ता था। न्याय ने उसे 'विस्मृत' का नाम दे रक्खा था। मनुष्य-जाति तथा क़ैदी के बीच तहखाना तथा जेलर दुर्गम पर्वत की तरह खड़े हो जाते थे।

उसी तहखाने की अँधेरी कोठरी में इज़मेरल्डा रक्खी गई थी। उसके सिर के ऊपर न्याय-भवन के विशाल स्तम्भ थे।

आह! वह बेचारी क्षुद्र जीव, जो हल्के-से-हल्के पत्थर को भी उठा नहीं सकती थी!

सचमुच नर एव नारायण, दोनों, समान ही अन्याय कर रहे थे! उस निर्बल जीव को मारने के लिये इतनी पीड़ा,—इतनी यन्त्रणा—को क्या आवश्यकता थी?

वह वहाँ अधकार मे—कब्र में—पडी थी, दफ़नाई गई थी! सूर्य के मधुर प्रकाश में नाचनेवाली को उस अवस्था मे देखकर प्रत्येक हृदय काँप जाता। शीत-रात्रि के समान ठंडी, मृत्यु के तुल्य शीतल और वायु-विहीन उस अँधेरी तग कोठरी में वह पड़ी थी। उसके, कर्ण-कुहर मे कभी मनुष्य का स्वर नहीं पडता था। उसके नेत्रों को कभी सूर्य की रश्मि के दर्शन नहीं होते थे। वह गन्दी घास के बिस्तर पर पडी थी। समीप ही एक मिट्टी का घडा तथा काली रोटी थी। उस कोठरी मे छत से बूँद-बूँद पानी टपक रहा था, जिसके कारण फर्श पर पानी जम गया था, बेहद सीत और सर्दी थी! वह सज्ञा-हीन सी पडी थी। उसकी इन्द्रियो में पीड़ा का अनुभव करने की शक्ति नहीं रह गई थी। फ़ीबस, सूर्य, चन्द्र, वायु, पेरिस की गलियाँ, प्रेत-पादरी, वृद्धा, कटार, रक्त, पीडा, अन्त में फाँसी की टिकठी—एक-एक कर उसके नेत्रों के सामने नाच जाते थे। उनका दृश्य मनोरजक न था—वह स्वप्न के राक्षस की तरह भयानक था। वे सारे दृश्य धुँधले पड़ते जाते थे—ऐसे धुँधले, जैसे दूर का सगीत।

वहाँ पर वह जब से आई थी, न जाग सकी थी—न सो

की थी। उस विपद में, उस अधकूप-कारागार में, उसे जागरण या निद्रा, स्वप्न एवं वास्तविकता, में न कुछ अन्तर का ज्ञान हा, न वह दिन या रात का आगमन ही समझ सकती थी। उसके स्तिष्क में इन सबों का एक अपूर्व धुँधला सम्मिश्रण नाच रहा ा। उसे किसी चीज का ज्ञान न रहा—न सोचने की शक्ति ही ी। केवल स्वप्न देख सकती थी। ऐसे शून्य जगत में किसी शरीर-ारी को जाने का अवसर ही नहीं मिला।

शीत के कारण सिकुड़ कर वह पत्थर हुई जाती थी। दरवाजे खुलने का उसे ज्ञान नहीं होता था। एक आदमी उसी दरवाजे एक रोटी फेंक जाता था। कभी-कभी कारागाराध्यक्ष निरीक्षण लिये आ जाता था।

वह केवल एक शब्द सुन सकती थी। वह शब्द छत से चूते जल की बूँद का था, जो उसके समीप ही टपक रहा था। उस तब्धता में केवल वही बूँद, जल पर गिरकर, 'टिप' कर उठता था। मय जानने की घड़ी वही था। पृथ्वी-मंडल पर जितना शोर-गुल ा था, उसमें वह केवल उसी बूँद का 'टिप' सुन पाती थी।

कभी-कभी उसके पाँवों पर से कोई शीतल वस्तु सरक जाती , तब वह काँप उठती थी।

उसे याद न रहा कि वहाँ आये कितने दिन हो गये। फाँसी के म की, वहाँ पर लाये जाने की, एक धुँधली स्मृति रह गई थी। अपने चारों ओर ठंडी दीवार और नीचे पानी में डूबी हुई ह का ज्ञान हो जाता था। वहाँ पर न दीपक था, न प्रकाश

उस अभागिनी को बहुत ठंड लग रही थी, तो भी पादरी के हाथ का स्पर्श उसे बहुत ठंडा लगा।

ओह! यह तो मृत्यु का हाथ जान पड़ता है, तुम कौन हो?—वह बोल उठी।

पादरी ने अपने चेहरे से कपड़ा हटा लिया। कैदी ने उसे ध्यान से देखा। वही चेहरा था, जो सर्वत्र उसका पीछा करता रहा था—वही राक्षसी चेहरा, जो फ्लोरडेल के घर पर, फीबस के सिर के ऊपर, खंजर की बगल मे, दिखाई पड़ा था।

उसी प्रेत के कारण वह इस आफत में फँसी थी। उस अभागिनी की आँखों से परदा हट गया। सारी दुर्घटना उसकी आँखों के सामने नाचने लगी, मगर अबकी बार वह पहिले की तरह धुँधली न थी—अबकी बार वह स्पष्ट थी, किन्तु थी बड़ी भयानक। अपनी आपत्ति मे वह उस चेहरे को भूल चुकी थी, मगर अबकी बार उसे देखकर उसके हृदय के सारे घाव नये हो गये—इनसे एक की धार बह चली।

अपनी आँखों को हाथो से बंद करके उसने कहा—पादरी है!

फिर वह काँपती हुई, सिर नीचा कर, बैठ गई। और, पादरी बाज की तरह उसकी ओर देख रहा था। जिप्सी ने गुनगुनाते हुए कहा—अपने मन की कर लो, कर लो, अन्तिम बार भी कर लो।

इसके बाद बेचारी का सिर झुक गया, जैसे मेमने का सिर कसाई के गँड़ास के आगे झुक जाता है।

तो क्या तुम मुझसे भय खाती हो?—पादरी ने कहा।

हाँ, वधिक वध्य से दिल्लगी कर रहा है। महीनों मे उसने मेरा पीछा किया है—मुझे धमकाया है—भयभीत किया है। उसीने मुझे इस विपत्ति के नरक में ढकेला है। मेरे ईश्वर! वही मुझे मार रहा है—उसी ने मेरे प्यारे फीनस को मार डाला।

वह सिसक सिसक रोने लगी। फिर बोली—दुष्ट! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है? क्या तुम मुझसे इतनी घृणा करते हो? मेरे विरुद्ध तुम्हारी क्या शिकायत है?

मैं तुम्हें प्यार करता हूँ—पादरी ने कहा।

उसके आँसू बंद हो गये। वह पादरी को शून्य दृष्टि से देखने लगी। पादरी घुटने टेक कर बैठ गया, उसकी आँखों से चिनगारियाँ निकल रही थीं।

सुनती हो? मैं तुम्हे प्यार करता हूँ।

कैसा प्यार?—उस अभागिनी ने काँपते हुए कहा।

एक अभिशापित का प्यार!

दोनों कुछ देर तक चुप रहे। भावों की उत्तेजना से दोनों दुखी थे। पादरी पागल हो रहा था। वह अचेत हो रही थी।

सुनो—पादरी ने आश्चर्य जनक शान्ति धारण करके कहा—मुझे सब बताना पडता है। मैं तुमसे वह बात बताऊँगा, जिसे मैंने कभी अपनी आत्मा के सम्मुख भी स्वीकार नहीं किया है। घोर रात्रि के उस घने अन्धकार में भी, जब ऐसा मालूम होता कि हम लोगों को ईश्वर भी नहीं देख सकता, मैंने अपने आप

से भी इन बातों की चर्चा नहीं की थी। सुनो, तुम्हें देखने से पहिले मैं बड़ा सुखी था।

और मैं ?—अभागिनी ने लम्बी साँस खींच कर कहा।

बाधा न डालो ! हाँ, तो मैं बड़ा सुखी था—कम-से-कम मैं ऐसा ही समझता था। मैं पवित्र था। मेरे सामने सिर उठाने वाला कोई न था। साइन्स ही मेरा सब कुछ था। यही विद्या मेरी बहिन थी और बहिन के अतिरिक्त मुझे और कुछ न चाहिए था, मगर मैं ज्यों-ज्यों अधिक आयु का होता गया, त्यों-त्यों मेरे मन में और-और विचार भी आने लगे—स्त्रियों को देख कर मेरी नसों में बिजली दौड़ने लगी। स्त्री-जाति के आकर्षण ने मेरी प्रतिज्ञा की जंजीर को छिन्न-भिन्न कर दिया। उपवास, प्रार्थना, अध्ययन तथा मठ के आचार-विचार ने फिर मेरी आत्मा को मेरे शरीर का स्वामी बना डाला। मैं स्त्री-जाति से दूर भागने लगा। फिर मैं पुस्तकों की संगति में पड़कर संसार की सारी बातों को भूलने लगा। मैं फिर शान्त तथा गंभीर हो गया—सत्य के प्रकाश में स्नान करने लगा। उस समय तक शैतान मुझको जीतने के लिये धुँधली छाया से काम लेता था। मैंने उसे सरलता पूर्वक जीत लिया। अफ़सोस ! यदि विजय अब तक मेरी न रही, तो इसमें मेरा कुछ दोष नहीं है—ईश्वर का दोष है क्योंकि उसने आदमी और शैतान को समान शक्तिशाली नहीं बनाया। सुनो, एक दिन—

पादरी चुप हो गया। युवती ने उसे आह भरते सुना।

वह फिर कहने लगा—एक दिन, मैं अपनी कोठरी में एक किताब पढ़ रहा था। स्क्वायर से खँजड़ी की आवाज आकर मेरी पढाई में बाधा डालने लगी। मैं खिन्न हो उठा, क्योंकि मेरे अध्ययन में बाधा पड़ी थी। मैंने नीचे देखा। जो कुछ मैंने देखा, उसे बहुत लोग देख रहे थे, तो भी वह दृश्य मानव-दृष्टि से देखने योग्य न था। उस समय, दोपहर को, एक रमणी नाच रही थी—वह इतनी सुन्दरी थी कि प्रभु ईसा उसे 'मेरी' के बदले अपनी माता बनाये होते।

इसके पश्चात् वह जिप्सी के रूप का वर्णन करने लगा—जैसे पागल प्रेमी अपनी प्रेमिका के नख-शिख का सुन्दर वर्णन करता है—ओह! वह नाचनेवाली तुम्हीं थीं। मैं देर तक तुम्हें देखता रहा। मैं काँप उठा। मुझे मालूम हो गया कि भाग्य ने मुझपर विजय पाई। पतन से बचने के लिये मैंने किसी सहारे की तलाश की। मुझे शैतान के फेंके हुए सारे जाल याद आने लगे। अबकी बार जो जीव मेरी आँखों के सामने आया, वह था तो नैसर्गिक था या नरक निवासी—अन्यथा कोई इतना सुन्दर हो कैसे सकता है? वह कोई साधारण युवती न थी—वह देवी थी, मगर प्रकाशमयी नहीं, अंधकारमयी! हाँ, जब मैं ऐसा सोच रहा था, उसी समय मैंने तुम्हारे पास एक बकरी देखी। मुझे मालूम हुआ कि बकरी मुझ पर हँस रही है। मैंने शैतान के जाल को पहिचान लिया। मेरा सारा सन्देह जाता रहा। मैंने समझ लिया कि तुम नरक-लोक से आ रही हो और मेरा विनाश किया चाहती हो। मेरा ऐसा ही विश्वास था।

यहाँ पर पादरी ने जिप्सी की ओर देखा और फिर कहना आरम्भ किया—यह विश्वास अब भी वैसा ही बना है। जो हो, मोहन मन्त्र ने मुझे मुग्ध कर लिया। मेरे मस्तिष्क में तुम्हारा नाच होने लगा। मेरी आत्मा को एक प्रकार की झपकी आने लगी। उस अर्द्ध-निद्रा से मुझे बड़ा आनन्द मिलने लगा। तुमने गाना शुरू कर दिया। आह! मैं विपद्ग्रस्त कर क्या सकता था? तुम्हारा संगीत तुम्हारे नाच से कहीं अधिक मोहक था। मेरे पैर उस स्थल पर जकड़ दिये गये थे। मैं इच्छा करने पर भी दूर नहीं हट सकता था। वह असम्भव था। मेरे पैर बर्फ की तरह शीतल हो जकड़े हुए थे। मेरे मस्तिष्क में ज्वाला उठ रही थी। अन्त में तुमने मुझ पर कृपा की—संगीत बन्द हुआ, तुम कहीं लुप्त हो गई। तुम्हारे रूप का प्रतिबिम्ब, तुम्हारे संगीत की प्रतिध्वनि—मेरे हृदय में रह गई। मैं थोड़ी देर में वहाँ से भागा, मगर मैंने समझ लिया कि इस मोहन-अस्त्र से बच कर मैं भाग नहीं सकता।

थोड़ी देर तक वह सुस्ताया और फिर कहने लगा—उस दिन मे मेरे अन्दर एक दूसरा आदमी पैदा हो गया। मैंने अनेक उपचार किए—मठ का निवास, पूजा-गृह में प्रार्थना, और पुस्तकों का अध्ययन। किन्तु सब व्यर्थ! मैं साइंस की ओर से निराश हो गया। पुस्तकों के अक्षर मुझे नहीं दिखाई देते थे—उनमें केवल तुम और तुम्हारी छाया ही दीख पड़ती थी। तुम्हारी छाया धीरे धीरे मुझे उदास लगने लगी, क्योंकि आदमी देर तक सूर्य की ओर नहीं देख सकता। तुम्हारा संगीत मेरे कर्ण-कुहरों में रात-दिन गूँजन

लगा। मैं उससे दूर नहीं भग सकता था। मैं तुम्हारे ही स्वप्नों में रात काटने लगा। तुम्हें देखने की, तुम्हें स्पर्श करने की, इच्छा प्रबल हो उठी। मैं जान गया था कि तुम कौन हो, मगर मैं जानना चाहता था कि तुम मेरी आदर्श छाया, चित्र की तरह, थीं या नहीं। मैंने अपने स्वप्न को वास्तविक बनाना चाहा। मैंने तुम्हारी खोज की, और पा भी गया। विपद्! तुम्हें दो बार देखने पर तुम्हें हज़ार बार देखने की इच्छा प्रबल हो उठी। मैं तुम्हें सर्वदा नेत्रों के सामने देखना चाहता था। नरक की सीढियों पर उतरने पर कोई बीच में नहीं रुक सकता। मेरे परों को बाँधनेवाली रस्सी शैतान के पाँव से बँधी थी। मैं भी तुम्हारे ही जैसा घुमक्कड़ हो गया। मैं गलियों में तुम्हारी प्रतीक्षा करने लगा। तुम्हें अपने गिरजे के मीनार से देखने लगा। मैं क्षण क्षण मोहित होता गया, निराश होता गया। जादू अपना असर कर चुका था। मैं विनाश की ओर द्रुतगति से जा रहा था।

पादरी रुका नहीं, कहता ही गया—मैंने सुना था कि तुम जिप्सी हो। फिर मैं तुम्हारे जादू के विषय में कैसे सन्देह कर सकता था? मैंने सोचा कि फौजदारी का मामला तुमसे मेरा गला छुड़ा देगा। फिर मैंने सोचा, तुम्हारे फाँसी लटक जाने पर मेरा रोग दूर हो जायगा। मैंने पहिले नाट्रीडेम के स्क्वायर में तुम्हारे आने की मनाही करा दी—मेरा विश्वास था, आशा थी, कि मैं तुम्हें भूल जा सकता हूँ, मगर उस मनाही की ओर ध्यान न देकर तुम वहाँ आ ही पहुँचती थीं। मैंने फिर तुम्हें ले भागने का

विचार किया, एक रात को ऐसा ही किया भी। तुम मेरे पंजे मे आ गई थीं, मगर वह अभागा कप्तान हम लोगो के बीच म आ पडा—उसने तुम्हे बचा लिया। उसी ने मेरे, तुम्हारे और अपने दुर्भाग्य का श्रीगणेश किया। मैं यह नहीं, सोच सका कि मेरा हाल क्या होगा, तुम्हारी दशा क्या होगी—मैंने जजो के सामने तुम पर अभियोग लगा ही दिया। मैंने सोचा कि अभियोग द्वारा या तो मैं रोग से छुटकारा पा जाऊँगा या तुम्हे अपना बना सकूँगा—अर्थात जेलखाने में मैं तुम्हे अपना सहने में समर्थ हो सकूँगा, क्योंकि वहाँ तुम मुझसे भाग नहीं सकतीं—अब तक में तुम्हारे वश मे था और अब तुम मेरे वश मे हो जाओगी। जब कोई एक गलती आदमी से हो जाय, तब सभी सम्भव गलतियों को कर डालना चाहिये। जुल्म करने मे बीच में रुकना पागलपन है। जुल्म की सीमा पर पहुँचने का अपना एक अपूर्व आनन्द होता है। एक पादरी और जादूगरनी, कारावास के घास-फूस पर, आनन्द-पूर्वक एकत्र हो सकते हैं—एक हो सकते हैं। इसीलिये मैंने तुम पर जजो के सामने दोषारोपण किया। मेरा षड्यन्त्र और मेरे द्वारा तुम्हारे सिर पर आनेवाला तूफान—दोनों इतने भयकर थे कि मैं स्वय काँप उठा।

कुछ थम कर फिर कहने लगा—शायद मैं चुप हो गया होता, शायद मेरा विचार मेरे मस्तिष्क मे विलीन हो गया होता—उसके फूलने फलने का अवसर ही न आया होता। मेरा विचार था कि मैं अभियोग को जब चाहूँगा, बन्द कर दूँगा, मगर विचार को

रोकना बड़ा दुःसाध्य है—वह कार्य-रूप में परिणत होना चाहता है। भाग्य मुझसे बलवान निकला। अफसोस! भाग्य ने ही तुम्हें मेरी रची मशीन के पहियों पर फेंक दिया है। सुनो, मैं समाप्त कर रहा हूँ। मैंने एक दिन एक आदमी को तुम्हारा नाम लेते हुए सुना। उसकी आँखों से काम की उत्तेजना टपक रही थी। विनाश! मैंने उसका पीछा किया। उसके बाद की सभी बातें तुम जानती हो।

युवती ने उसाँस लेकर कहा—ओर मेरे फीबस!

वह नाम न लो—पादरी ने क्रोध में उसके हाथ को अपनी हथेली में लेते हुए कहा—उस नाम का उच्चारण न करो! उसी नाम ने हम लोगों का सर्वनाश किया है, अथवा भाग्य ने हमारा नाश किया है? तुम जिस विपद में फँसी हो—तुम अंधकार में अंधी हो रही हो—कारागार में निरुपाय पड़ी हो! तुम्हारे हृदय में उस अविश्वासी अफसर के प्रति मूर्खता-भरे प्रेम की एक-किरण चमक रही है, मगर मेरे हृदय में कारागार है, मेरे अन्तस्तल में अंधकार-ही-अंधकार है, मेरी आत्मा निराशा के अंधकार में निरुपाय हो रही है। तुम नहीं जानतीं कि मैं कितनी विपत्ति उठा चुका हूँ। मैं तुम्हारे अभियोग के समय कचहरी में था। मैंने अपने पाप तथा फाँसी की टिकटी को तुम्हारे सिर पर गिरते हुए देखा। मैंने तुम्हें यंत्रणा-गृह में सौमित पाते हुए देखा। मैंने तुम्हारे पाँवों को लोहे के जूतों में कसे जाते देखा। मेरे हृदय में मेरा खंजर जाना चाहता था। तुम चीख पड़ीं, वह चीख मेरे चमड़े को भेद चुकी थी, मगर तुम्हारी चीख बन्द हो गई और मेरा हृदय टूक-टूक

होने से बच गया। मेरे हृदय की चोट को देखो, शायद अब भी खून बह रहा है।

पादरी ने अपने कोट को खोल कर घाव दिखा दिया। चोट वास्तव मे गहरी थी! युवती भय से दूर हट गई।

पादरी चुप न हुआ, कहता रहा—युवती! मुझ पर दया करो—करुणा करो! तुम अपने ही को दुखी समझती हो, मगर अफसोस! दुःख का तुम अर्थ नहीं समझतीं। ओह! स्त्री का प्यार कितना भयंकर है! पादरी होना कैसा अभिशाप है! स्त्री की एक मुस्कान के लिये—अपना रक्त, अपना जीवन, यश, मुक्ति, अमरत्व और अपने जन्म-जन्मान्तर का दान! उसके चरणों में आत्म-समर्पण करने के लिये यह सोचना कि हम सम्राट न हुए, ईश्वर-दूत न हुए, देवता न हुए! अपने विचार में, स्वप्न में, कल्पना में, रात-दिन उसका आलिंगन! फिर यह देखना कि मैं एक पादरी हूँ और वह एक सैनिक की वर्दी पर लट्टू हो रही है! और, फिर ईर्ष्या तथा क्रोध के साथ उसका सामना करना—उस समय, जब कि वह एक बदमाश के प्रेम मे सूख कर काँटा हुई जाती है—अपने प्रेम को, अपने हृदय को, उस चचल चित्त सैनिक के हवाले कर चुकी है! अपनी प्रेमिका को दूसरे द्वारा चुम्बित होते देखना! आह परमेश्वर! उसके अंग-प्रत्यंग को प्यार करना, रात-दिन उसी के विचार मे मग्न रहना; फिर भी अपने स्वप्न के अभ्यस्त दुलार को, पुचकार को, पत्थर पर चूर-चूर होते देखना! ओह! निश्चय ही ये सब नरक के अग्निकुड में तपाये हुए सँडसे हैं। निश्चय ही वह सुखी है, जो दो

आरियों से चीरकर दो खड कर दिया जाता है। तुम उसकी पीडा को क्या समझोगी युवती, जिसने अपने हृदय को तुम्हारी प्रेमाग्नि म भून डाला है—जिसका हृदय प्रेम, ईर्ष्या तथा नैराश्य के विचारो से आन्दोलित तथा पीडित हो रहा है। दया करो युवती ! एक क्षण के लिये सधि कर लो—धधकते हुए कोयले पर एक मुट्ठी राख तो डाल दो। मैं प्रार्थना करता हूँ कि मेरी इन भौंहो के पसीने को पोंछ तो लो। एक हाथ से यन्त्रणा देती रहो, किन्तु दूसरे से मुझे पुचकारती तो रहो। बालिके ! कुमारी ! युवती ! करुणा करो, दया करो मुझ पर।

इतना कहकर पादरी सतह पर, पानी में, धम से गिर गया। उसका सिर सीढी के पत्थर से टकरा गया। युवती उसकी बातो को सुनती रही, उसकी ओर देखती रही।

युवती ने कहा—ओह ! मेरे प्यारे फीबस !

पादरी घुटने के बल उठकर बोल उठा—मैं प्रार्थना करता हूँ, यदि तुम्हारे हृदय मे कुछ भी सहानुभूति है, तो मुझे न ढकेलो। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। अभागिनी युवती, जब तुम वह नाम लेती हो, तो मालूम होता है कि तुम मेरे हृदय-तन्तुओं को अपने दाँतो से काट रही हो। दया ! दया !! दया !!! अगर तुम नरक-लोक की रहनेवाली हो, तो भी मैं तुम्हारे साथ वहाँ जाऊँगा। उसके लिये मैं सर्वथा प्रस्तुत हूँ। जिस नरक में तुम रहोगी, वह मेरे लिये स्वर्ग हो जायगा। मैं ईश्वर-दर्शन से भी अधिक तुमको देखने में आनन्द पा रहा हूँ। बोलो, तुम अब भी मुझे स्वीकार न करोगी ? मेरा निश्चित

विचार है कि जिस दिन स्त्री ऐसे अविरल प्रेम का त्याग करेंगी, उसी दिन अचल भी चलायमान हो जायँगे। ओह! यदि तुम मुझे स्वीकार कर लेतीं, तो हम लोग कैसे सुखी हो जाते! मैं तुम्हें यहाँ से भागने में सहायता देता। हम लोग कहीं दूर चले चलते—जहाँ सूर्य की किरणें मधुर हैं, वृक्षों के कुञ्ज हैं, नीले आकाश का चँदोवा है। वहीं हम एक दूसरे को प्यार करेंगे, हमारी आत्माएँ एक हो जायँगी—हमारी प्यास एक दूसरे के लिये बढ़ती जायगी और हम प्रेमामृत के प्याले से अपनी प्यास बुझायँगे।

युवती भयानक रूप से खिलखिला उठी। बोली—वह देखो, तुम्हारे नाखून पर खून लगा है।

पादरी की आँखें नाखून की ओर कुछ देर तक लगी रहीं। उसने कोमलता-पूर्वक उत्तर दिया—मेरा अपमान कर लो, व्यंग वाणी बोल लो, किन्तु आओ-आओ, हमें जल्दी करनी चाहिये, कल ही फाँसी की तिथि है। ग्रेव-स्क्वायर वाले फाँसी के तख्तों को तुम जानती हो, वे सर्वदा दुरुस्त रहते हैं। आह! वे कैसे भयानक हैं! दया करो सुन्दरी! मैं अपने प्रेम की गहराई को इससे पहिले नहीं जानता था। बस आओ, मेरा अनुसरण करो। मैं जब तुम्हारे जीवन को बचा लूँगा, तब तुम मुझे प्यार करना सीखोगी। तुम जब तक चाहो, घृणा करती रहो, मगर यहाँ से चलो। कल, हाँ कल ही तो, ओह! अपनी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।

पादरी ने हाथ को पकड़ लिया, उसे खींच ले जाने का

प्रयत्न किया। जिप्सी उसे एकटक देख रही थी, अचानक बोल उठी—हाय! मेरे प्यारे फीवस की क्या हालत है?

आह!—पादरी ने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा—तुम अकरुण हो, निष्ठुर हो, क्रूर हो।

फीवस का क्या हुआ?—युवती ने दुहराया।

वह मर गया—पादरी ने झुँझलाकर कहा।

मर गया?—युवती ने कहा—फिर मुझसे जीने की बात क्यों करते हो?

पादरी ने कुछ नहीं सुना। युवती शेरनी की तरह उस पर टूट पड़ी और अलौकिक शक्ति से उसको सीढ़ियों पर ढकेल दिया—राक्षस! दूर हो, दूर हो यहाँ से। हत्यारा कहीं का! चला जा यहाँ से मरने दे मुझे। हम दोनों का खून तुम्हारे जीवन को कलंकित करता रहेगा। तुम्हारी होऊँ मैं? दुष्ट पादरी! कभी नहीं, हरगिज नहीं! नरक भी हम लोगों को एक नहीं कर सकता। अभिशप्त पादरी! दूर हो यहाँ से।

पादरी धीरे से उठा, अपनी लालटेन लेकर दरवाजे के बाहर हो गया। अचानक युवती ने उसके चेहरे को दरवाजे में पुनः देखा—उसका मुख-मंडल भयानक हो रहा था, वह क्रोध तथा हास्य में चिल्ला उठा—मैं कहता हूँ कि वह मर गया!

युवती मुँह के बल फर्श पर गिर पड़ी। कारागार फिर प्रशान्त हो गया—केवल वहीं पानी की बूँदें उस अन्धकार में धीरे-धीरे साँस ले रही थीं।

माता

अपने बालक की जूती को देखकर माता के हृदय में जो भाव उत्पन्न होते हैं, उससे मधुर कोई चीज इस संसार में नहीं है—ऐसा मेरा विचार है। विशेषकर जब वह जूती तड़क भड़क वाली—रविवार के दिन पहिनने के लिए—हो, और बालक उसे पहिन कर कभी टहला न हो। वह जूती इतनी सुन्दर है, इतनी छोटा है कि माता उसे देखकर समझने लगती है कि वह अपने बालक को ही देख रही है। वह उसे देखकर मुस्किरा उठती है, उसे चूमती है, उससे बातें करती है, और पूछती है कि सचमुच कहीं इतना छोटा पाँव हो सकता है या नहीं। और, जब बालक अनुपस्थित होता है, तब उसको माता के सामने ला खड़ा करने के लिये वह जूता ही पर्याप्त होती है। सचमुच वह बालक को देखने लगती है—नख से शिख तक, हँसते हुए बालक के छोटे हाथ, सिर, होठ तथा नेत्र—सभी उसकी आँखों के सम्मुख आ उपस्थित होते हैं। यदि जाड़े का मौसिम हो, तो माता उसे तिपाई पर चढ़ते हुए देखती है और यह सोच कर काँप उठती है कि बालक कहीं आग के बहुत समीप न चला जाय। यदि ग्रीष्म ऋतु हो, तो बालक को वह उपवन में भ्रमणशील तथा दूब को नोंचते हुए देखती है—उसे कुत्तों के साथ, घोड़ों के साथ, निर्भय खेलते देखती है, फूलों को

नोचते देखती है। उस बालक के चारो ओर सभी चीजें चमकती हैं, आनन्दमयी दिखाई देती हैं। उनके केशों में मन्द पवन के, झोंके तथा सूर्य की रश्मियाँ खेलती हुई दीख पडती हैं। जूती, माता को, यह सब दिखाती है और उसके हृदय को पिघला देती है—जैसे आग के सामने मोम।

किन्तु, यदि बालक भूल गया हो, तब तो ये सारे प्रकाशमय आनन्दमय चित्र तथा जूती के चारो ओर रहनेवाला प्यार, भयानक स्वप्न-दृश्य हो जाते हैं। वह सुन्दर जूती माता के हृदय को चीरनेवाला यन्त्र हो जाती है। वे ही हृदय तन्तु अब काँपने लगते हैं—किसी देवता के द्वारा पुचकार पाने के बदले में वे किसी राक्षस द्वारा टुकडे-टुकडे कर दिये जाते हैं।

एक दिन जब सुदूर नीले आकाश में मई का प्रातःसूर्य उग रहा था, तोर-रोलैंड की एकान्तवासिनी ने गाड़ी के पहिये की गड़गड़ाहट, घोड़ों की टापों की आवाज तथा लोहे की जजीरों की झनझनाहट सुनी। उसने उधर तनिक भी ध्यान नहीं दिया, सिर्फ अपने बालों को कानों पर बिखेर दिया। वह घुटने टेक, इस निर्जीव पदार्थ को—जिसकी उसने पन्द्रह वर्षों से रक्षा की थी—बड़े ध्यान से देखने लगी। वह छोटी जूती ही उसके लिये सारा ससार थी। उसके सारे विचार उसी से सम्बद्ध थे। केवल मृत्यु ही उन्हें अलग कर सकती थी। केवल वह अधकारमयी कोठरी ही जानती थी कि उसने उस जूती को कितनी बार अपने आँसुओं से भिगोया था, और कितने कठोर शाप, रुदन तथा

प्रार्थनाएँ उसने परमेश्वर को सुनाई थीं। उस जूती से सुन्दर तथा शोभाशाली वस्तु पर आज तक कभी भी इतना बड़ा नैराश्य नहीं हुआ था।

उस दिन उसकी चिन्ता असीम हो उठी थी। लोगों ने उसे हृदय विदारक करुणा जनक स्वर में विलाप करते हुए सुना। वह रुदन कठोर-से-कठोर पाषाण हृदय को वेध रहा था।

पाठक! मैं आपके सहानुभूतिपूर्ण हृदय को उस एकान्तवासिनी माता के करुण विलाप से विदीर्ण करना नहीं चाहता—न मैं यही बताना चाहता हूँ कि उस विलाप में कैसे वह ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि वह उसकी पुत्री—एकमात्र पुत्री—को लौटा दे, उसे देकर छीन लेने के लिये ईश्वर को कैसे कोस रही थी, पुत्री के पालन-पोषण के कष्टों को और उसके दर्शन से प्राप्त होनेवाले अपने असीम आनन्द को वह कैसे रो-रो कह रही थी तथा कैसे वह उस पुत्री के कारण पापिनी से पवित्र हो गई थी।

उसका रुदन क्यों न करुणा-जनक हो? जूती रह गई थी, किन्तु वह छोटा पाँव कहाँ था? उसके लिये वह ईश्वर को कोसे न, तो करे क्या? जिसका बालक आँखों के सामने मर जाता है, उसका विश्वास ईश्वर पर से उठ जाता है। वह एकान्तवासिनी अनन्त काल के लिये नरक की यातना भोगने को प्रस्तुत थी—यदि उसकी पुत्री लौटा दी जाय। वह शेरनी थी, जो सिर पटक-पटक अपनी बच्ची के लिये रोती थी—ईश्वर को गालियाँ देती थी। उसकी एकान्त कामना—अन्तिम इच्छा—यही थी कि वह एक बार, एक

क्षण के लिये भी, उस जूती को अपनी पुत्री के पाँव में पहिना सकती! उस पुत्री का भग्नावशेष-मात्र वही जूती रह गई थी।

अभागिनी माता जूती पर गिर कर उसे अपने चुम्बनों से शीतल कर रही थी। पन्द्रह वर्ष से वह जूती उसकी सान्त्वना तथा निराशा थी। उसके हृदय-विदारक विलाप ऐसे थे, मानो उसकी पुत्री आज ही खोई है, क्योंकि माता के लिये बालक का खोना सर्वदा एक-सा बना रहता है—वह रुदन, वह चिन्ता, वह शोक कभी पुराना नहीं होता। उसका हृदय सर्वदा के लिये अंधकार में डूब जाता है।

उसी समय कुछ बालकों का शोर सुन पड़ा। अन्य अवसरों पर बालकों से दूर रहने के लिये वह उनकी आवाज़ सुन कर कोने में सिमट जाती थी, किन्तु आज खिड़की पर आकर उनकी बात सुनने लगी। एक बालक कह रहा था—आज एक जिप्सी बालिका को फाँसी होने जा रही है।

एकान्तवासिनी ने इस प्रकार खिड़की को पकड़ लिया, जैसे मकड़ी को पाठकों ने मक्खी पर झपटते देखा होगा। फाँसी के तख्ते के पास उसे एक सीढ़ी दिखाई पड़ी। एक जल्लाद सब ठीक-ठाक कर रहा था और कुछ लोग उसे देखने में लगे थे।

लड़के हँसते हुए चले गये। एकान्तवासिनी किसी की राह देख रही थी, जिससे वह कुछ पूछ सकती थी। उसने पास ही एक पादरी को देखा, जो सार्वजनिक प्रार्थना पुस्तक के पढ़ने का प्रयत्न कर रहा था, मगर उसकी आँखें बहुधा फाँसी के तख्ते की

और उदास भाव से उठ जाया करती थीं। एकान्तवासिनी ने उसे पहिचान लिया। वह नाट्रोडेम का आर्चडिकन था।

पिता! आज किसको फाँसी होगी?—उसने पूछा।

पादरी ने उसकी ओर देखा, किन्तु उत्तर नहीं दिया। उसने अपने सवाल को दुहराया।

मैं नहीं जानता—जवाब मिला।

लड़के कह रहे थे कि कोई जिप्सी बालिका है—एकान्त वासिनी ने कहा।

मेरा भी ऐसा ही विश्वास है—पादरी ने कहा।

तब फ्लुयरी खिलखिलाकर हँस पड़ी।

आर्चडिकन ने कहा—बहिन! तुम जिप्सियों को इतनी घृणा से देखती हो?

एकान्तवासिनी—मैं उनसे घृणा करती हूँ। वे जादूगर हैं, बालकों के चोर हैं। उन्होंने मेरी छोटी बच्ची को खा डाला। मेरी बच्ची, मेरी बच्ची! मेरे पास अब हृदय नहीं है, उन्हीं जिप्सियों ने उसे खा डाला!

उसको फाँसी के तख्ते की ओर देखने का साहस न होता था।

विशेषकर एक जिप्सी को मैं घृणा की दृष्टि से देखती हूँ। उसे मैंने शाप भी दिया है। वह युवती है, और ठीक मेरी बच्ची की उम्र की है—यदि मेरी बच्ची आज जीवित होती। जब जब वह सर्पिणी मेरी खिड़की के सामने से निकलती है, मेरा खून खौलने लगता है।

पादरी ने कहा—खुश होओ बहिन! उसी लड़की को आज फाँसी दी जावेगी।

उसका सिर झुक गया। वह धीरे से वहाँ से चला गया।

माता प्रसन्नता से तालियाँ बजाने लगी—मैंने उससे कहा था कि एक दिन तुझे इन तख्तों पर चढ़ना होगा। धन्यवाद है पादरी साहब!

फिर वह भयानक रूप धारण कर अपनी कोठरी में टहलने लगी, जैसे भूका भेड़िया भोजन के समय घबरान लगता है।

तीन हृदयों की भिन्न-भिन्न बनावट

फीवस मरा न था। फीवस-जैसे मनुष्य को मारना जरा टेढ़ी खीर है। जब राजा के असाधारण वकील मास्टर फिलिप ने 'वह मर रहा है' कहा था, तब या तो वह भूल कर रहा था या मजाक। जब आर्चडिकन ने जिप्सी का फैसला सुनाते हुए 'वह मर गया' कहा था, तब वह स्वयं उस विषय में सर्वथा अनभिज्ञ था, किन्तु फीवस की मृत्यु के विषय मे उसकी धारणा पक्की थी—उसको इस में कुछ भी सन्देह न था। अपनी प्रेमपात्री के पास अपने प्रतिद्वन्दी का समाचार पहुँचाने मे इससे अधिक उससे आशा रखना बडी भारी भूल होगी।

फीवस की चोट गहरी तो अवश्य थी, मगर उससे वह मर न सका। जिस डाक्टर के पास सिपाहियों ने उसे रख छोडा था, उसे भी फीवस के जीवन के विषय में शका हो आई थी, उसने अपने भाव को लेटिन भाषा में कह भी डाला था।

डाक्टर की आज्ञा के विरुद्ध रोगी अच्छा होने लगा। जब फीवस रोग-शय्या पर पडा था, तभी विशप की कचहरी से जाँच करने के लिये मास्टर फिलिप आया था, इसमें कैप्टेन को बड़ा रंज हुआ। इसलिये एक दिन प्रात काल स्वस्थ होने पर वह डाक्टर की फीस के लिये अपना सुनहरा 'स्पर' छोड़ कर चलता बना।

इस घटना के कारण न्याय शासन में कुछ असुविधा नहीं हुई। उस समय में न्याय को वास्तविक बात जानने से कुछ सम्बन्ध न था। जो सब से आवश्यक कार्य न्याय के हवाले था, वह था अभियुक्त को फाँसी दे देना।

जजों को इजमेरल्डा के विरुद्ध काफी सबूत मिला था। वे फीबस को मरा समझते थे। इससे अधिक और क्या चाहिये था?

फीबस कहीं दूर न गया था। वह अपनी सेना में जा सम्मिलित हुआ, जो पेरिस के समीप ही छावनी डाले पड़ी थी।

मुकदमे में उपस्थित होने का उसका विचार अणुमात्र भी न था। वह उस घटना के विषय में कुछ निर्णय नहीं कर सका था। वह सच्चे सिपाहियों की तरह अधार्मिक तथा अंध विश्वासी था। जब वह उस दुर्घटना पर विचार करने लगा, तब उसे प्रत्येक बात शंका-भरी जान पड़ने लगी। बकरी, इजमेरल्डा के प्रथम दर्शन की घटना, उसका प्रेम, उसका जिप्सी होना, और सबके ऊपर प्रेत-पादरी के कारण, कैप्टेन ने घटना को जादू से खाली न समझा। उस घटना में प्रेम के स्थान में उसे जादू अधिक दिखाई देने लगा। उस नाटक में उसका पार्ट बड़ा भद्दा—हास्यास्पद—था। उसको लज्जा का बोध हुआ, जैसे लोमड़ी को एक डरपोक मुर्गी द्वारा पकड़े जाने पर लज्जा हो आती है। उसे इतनी आशा तो अवश्य थी कि उसकी अनुपस्थिति में उसका नाम कचहरी के बाहर न जायगा। उसकी यह धारणा सही थी, क्योंकि उस समय कोई पुलिस-गजट न था और पेरिस की अनेक कचहरियों में फाँसी की सजा एक

मामूली घटना थी। किसी का कोड़े खाना, उस समय एक साधारण-सी बात थी। लोग ऐसी बातों की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। उस समय के कुलीन लोग फाँसी पानेवालों के नाम तक नहीं जानते थे, केवल साधारण जनता ही उनके मामले में कुछ दिलचस्पी लेती थी। उस समय के जल्लाद अपने व्यापार में चतुर कसाई थे।

फ़ीबस के मस्तिष्क से मोहिनी डालनेवाली इज़मेरल्डा, खंजर की चोट और मुक़दमे का परिणाम—सब, जाते रहे। इस घटना के भूलते ही उसके हृदय में फ्लुयर-डि-लीज़ का चित्र फिर स्थापित हो गया।

उस स्थान पर—जहाँ उसकी सेना की छावनी पड़ी थी, जहाँ नालन्दों और साधारण दूधवालियों का गाँव था, जहाँ झोपड़ियों के अतिरिक्त कुछ और न था—फ़ीबस का मन न लगता था।

फ़ीबस अब अच्छी तरह स्वस्थ हो गया था। चोट खाये दो महीने हो गये थे। उसने सोचा कि निश्चय ही जिप्सी का मामला तय हो गया होगा और लोग उसे भूल गये होंगे। इसलिये, एक दिन सुहावने, प्रात काल में, वह नाट्रीडेम-स्क्वायर में स्थित फ्लुयर के द्वार पर आ उपस्थित हुआ।

उस समय नाट्रीडेम के सामने एक बड़ी भीड़ लग रही थी मगर उस ओर उसने कुछ ध्यान नहीं दिया। घोड़े को बाहर बाँध कर वह प्रसन्नता-पूर्वक अपनी भावी पत्नी से मिलने के लिये भीतर गया।

उस समय फ्लुयर अपनी माँ के साथ अकेली थी।

फ्लुयर को जिप्सी का आना और उसकी बकरी के गले में 'फीवस' के अक्षरों का टँगा होना अभी भूला न था। तो भी कैप्टेन को नई भड़कीली वर्दी में देख कर उसका हृदय बाँसों उछल पड़ा। अपने उस असीम आनन्द के कारण वह कुछ सकुचित हो उठी। वह कुमारी उस समय अपूर्व सुन्दरी दिखाई देने लगी। उसने उस दिन अपने केशों को खूब सँवारा था। उसके गोरे बदन पर नील वसन अपूर्व छटा दिखला रहा था। उसकी आँखों में प्रेम छलछल कर रहा था।

फीवस ने अपनी सेना छोड़ने के बाद किसी सुन्दरी को न देखा था, इसलिये वह फ्लुयर के सौन्दर्य तथा शृंगार के प्रवाह में बह चला। वह शूर-वीर की तरह प्रेम पूर्वक मिला। संधि स्थापित होने में कठिनाई नहीं पड़ी।

फ्लुयर की माँ अपनी आराम कुर्सी पर पड़ी थी, मगर उसे फीवस को फटकार बताने का साहस न हुआ। पुत्री की भर्त्सना प्यार में परिणत हो गई।

युवती कुर्सी पर बैठकर कुछ सुई का काम कर रही थी। कैप्टेन कुर्सी के पिछले भाग पर झुक गया। युवती ने धीमी आवाज में उलाहना देना आरम्भ किया—

तुम बड़े चंचल मनुष्य हो, दो महीने कहाँ बिताये?

मैं शपथ खाकर कहता हूँ कि तुम्हारा सौन्दर्य किसी आर्च-बिशप के स्वप्न को भंग करने में पूर्ण समर्थ हो सकता है—युवती के प्रश्न से व्याकुल होकर फीवस ने कहा।

वह धीरे से हँस पड़ी। बोली—जनाब! सुन्दरता की बात छोड़िये, मेरे प्रश्न का उत्तर दीजिये।

प्यारी! मैं बाहर भेज दिया गया था।

कृपा कर कहिये, कहाँ? और, जाते समय, आप मिलकर क्यों न गये?

'क्यू-इन-बरी'—पेरिस के समीप एक गाँव—में गया था।

फीबस सोच रहा था कि पहिले प्रश्न का उत्तर देने से दूसरे का जवाब देने की आवश्यकता नहीं है।

वह गाँव तो बहुत समीप है। कभी आ कर भेंट क्यों नहीं कर गये?

फ़ीबस को कुछ उत्तर नहीं सूझ रहा था।

अपने कर्त्तव्यों में लिप्त रहने के कारण। और, मैं कुछ बीमार भी था।

बीमार?—भय से युवती बोल उठी।

हाँ, कुछ चोट आ गई थी।

चोट!—युवती भयभीत हो उठी।

घबराओ नहीं—फीबस ने कहा—मामूली चोट थी। एक झगड़े में तलवार की नोक लग गई थी। इससे तुमको क्यों चिन्ता हो रही है?

इससे मुझको क्यों चिन्ता हो रही है?—युवती रो कर कहने लगी—तुम दिल्लगी कर रहे हो! तलवार की चोट कैसे लगी? मुझे अवश्य सब कुछ बताओ।

मेरी प्यारी! इसमें कोई कहानी नहीं है। एक अफसर से यों ही झगड़ा हो गया। बस और कुछ नहीं।

अमत्य भापो फीवस को यह मालूम था कि स्त्रियों की आँखों मे प्रतिष्ठा के कार्य पुरुषों को बहुत ऊँचा बना देते हैं।

सचमुच युवती भयभीत हो उसकी ओर प्रसन्नता तथा प्रशंसा का दृष्टि से देख रही थी। फिर भी उसे पूर्ण विश्वास न हुआ। वह बोली—प्यारे फीवस! अब तुम बिल्कुल अच्छे हो गये हो? मैं तुम्हारे विरोधी को नहीं जानती, तो भी कह सकती हूँ कि वह बहुत बुरा आदमी है। झगड़ा क्यों हो गया?

फीवस को प्रश्नों के जाल से बाहर निकलने का कोई उपाय न सूझ पड़ा। बोला—मुझको याद नहीं है, यों ही बात-ही-बात में बात बढ़ गई।

बात बदलकर अपनी प्रेमिका का ध्यान बँटाने के लिये वह बोल उठा—स्क्वायर में आज इतना कोलाहल क्यों है?

वह खिड़की के पास आ गया। बोल उठा—हे भगवन्! बड़ी भारी भीड़ है!

युवती ने कहा—मैं नहीं जानती, मगर मैंने सुना है कि कोई जिप्सी जादूगरनी फाँसी पाने के पहिले सबके सामने यहाँ पर प्रायश्चित्त करेगी।

कैप्टेन को इसमेरल्डा का भ्रम न हुआ, इसलिये उसने युवती के उत्तर में कोई दिलचस्पी नहीं ली, किन्तु तो भी एक-दो सवाल पूछा—जादूगरनी का क्या नाम है?

मैं नहीं जानती—युवती ने उत्तर दिया।

उसका दोष क्या बतलाया जाता है ?

मैं नहीं जानती।

इस पर युवती की माँ बोल उठी—इन दिनों इतने जादूगरों को फाँसी हो रही है कि उनका नाम जाने बिना ही फाँसी का हुक्म हो जाता है।

भीड़ को देखकर वृद्धा को अपने लड़कपन की बातें याद आने लगीं। उसने 'सप्तम चार्ल्स' का पेरिस महानगर में प्रवेश देखा था। उसके वर्णन का लोभ वह संवरण न कर सकी।

दोनों प्रेमी उस वृद्धा के भाषण की ओर से उदासीन थे। फ़ीबस फिर अपनी प्रेमिका की कुर्सी के पीछे झुककर अपने धृष्ट नेत्रों से फ्लुयर की ओढ़नी के भीतर कुछ देखने लगा। ओढ़नी इस प्रकार खुली थी कि वह उसके भीतर बहुत सी अच्छी चीज़ों को देख सका। युवती के रूप से चकाचौंध हो उसने सोचा—लोग सुन्दर चमड़ेवाली स्त्रियों के अतिरिक्त दूसरी स्त्रियों के प्रेम में कैसे पड़ते हैं।

दोनों चुप थे। युवती, युवक की ओर, कभी-कभी प्रेम भरी निगाहों से देख लेती थी। दोनों के सिर के बाल एकत्र हो गये थे, उन पर वसन्त-कालीन सूर्य की किरणें खेल रही थीं।

फ़ीबस!—फ्लुयर ने एकाएक धीमे स्वर से कहा—तीन महीने में हमलोगों का विवाह होनेवाला है, शपथ खाओ कि मेरे सिवा तुमने किसी दूसरी स्त्री को कभी प्यार नहीं किया है।

स्वर्गीय देवी ! मैं शपथ खाता हूँ।

उसके स्वाभाविक कथन पर युवती को विश्वास हो गया। शायद फीबस को भी उस समय अपने कथन में विश्वास हो आया।

इस बीच माता, दोनों प्रेमियों को घुल घुलकर बातें करते देख, भीतर चली गई थी। फीबस ने उसे जाते देख लिया था। एकान्त के कारण उसका साहस बढता जाता था। उसके मस्तिष्क में विचित्र विचार उठ रहे थे। युवती उसे प्यार करती थी—वह उसका भावी पति था। दोनों अकेले थे।

फ्लुयर का प्रथम प्रेम अपनी समस्त ज्वाला के साथ जाग पड़ा। उसके नेत्रों के भाव को देख कर फ्लुयर भयभीत हो उठी। उसने अपने चारों ओर देखा—समझ गई कि उसकी माँ वहाँ से चम्पत हो गई है।

संकुचित होकर उसने कहा—मुझे बड़ी गर्मी मालूम हो रही है।

जहाँ तक मैं सोचता हूँ—फीबस ने कहा—मालूम होता है कि दोपहर हो गया है। धूप बड़ी कड़ी है। अच्छा हो कि मैं परदों को गिरा दूँ।

नहीं-नहीं—बेचारी युवती बोल उठी—मुझे हवा की आवश्यकता है।

वह द्रुत गति से उठी। दौड़कर खिड़की खोल दी। छत पर आ गई, जैसे कुत्ते को समीप जान मृगी एकाएक भाग खड़ी होती है।

नाट्रीडेम-स्क्वायर के उस समय के करुणाजनक दृश्य को देखकर फ्लुयर का भय जाता रहा। स्क्वायर तथा पास,की गलियाँ नरमुंडो से भरी थीं। स्क्वायर के बीच का हिस्सा, जिसे 'पारवीज़' कहते थे, सिपाहियों द्वारा रक्षित था। 'पारवीज़' के चारो ओर छाती तक ऊँची एक दीवार थी, जिसका द्वार बिशप के सिपाहियों द्वारा रक्षित था। नाट्रीडेम गिरजे का द्वार बन्द था।

भीड मे साधारण गन्दे लोग थे। इससे स्पष्ट था कि जिस घटना की आशा मे वे लोग वहाँ कन्धे-से-कन्धा रगड़ रहे थे, वह ठीक वैसी ही थी, जिससे वैसे लोग एकत्र हो जाते हैं। उनका कोलाहल भयानक था। भीड के लोग शोर मचाने की अपेक्षा हँसते बहुत थे। उसमे पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ बहुत थीं।

किसी ने कहा—वह यहाँ प्रायश्चित्त करने आयेगी। पादरी कुछ लेटिन मे कह देगा। यह सर्वदा यहाँ दोपहर को होता है। यदि तुम्हें उसकी फाँसी देखनी है, तो ग्रेव-स्क्वायर मे जाओ।

किसी दूसरी ने कहा—सुना है, उसने किसी पादरी से अपना गुप्त पाप नहीं कहा है।

एक पडोसी ने कहा—ऐसा ही तो सुना जाता है।

एक स्त्री ने कहा—काफ़िर जो है।

कैप्टेन की समस्त विचार-शक्ति युवती ही मे लगी थी। उसने भीड़ की ओर ध्यान नहीं दिया, बल्कि पीछे से आकर युवती का कमरबन्द पकड़ लिया। युवती ने मुस्किराते हुए विनती की—

कृपा करके मुझे अकेली छोड़ दो फीबस! यदि मेरी माँ आ जायगी, तो तुम्हारे हाथ को देख लेगी।

उसी समय नाट्रीडेम की घड़ी में बारह बजे। भीड़ में सतोष की ध्वनि गूँज उठी। सब लोग स्क्वायर से, छतों से, खिड़कियों से बोल उठे—वह आई!

फ्लुयर ने अभागिनी से नजर बचाने के लिये अपनी आँखों को ढँक लिया।

मेरी मोहिनी!—फीबस ने कहा—भीतर न चलोगी?

नहीं—उत्तर मिला।

सिपाहियों से घिरा हुआ एक छकड़ा स्क्वायर में आया। उसमें एक मजबूत घोड़ा बँधा था। पहरेदार सिपाही भीड़ में उसके लिये रास्ता बनाने लगे। छकड़े के पास न्याय-भवन के बहुत-से अफ़सर, पुलिस-अफसरों के साथ, घोड़ों पर आ रहे थे। मास्टर जेक्रू सबके आगे था। उस प्राणघातक छकड़े में एक युवती बैठी थी, जिसके हाथ उसी की पीठ पर बँधे थे। उसके लम्बे केश उसके वक्षस्थल तथा अर्धनग्न कंधों पर बिखरे पड़े थे।

उन चमकीले और चिकने केशों के भीतर से एक खुरखुरी रस्सी बँधी थी, जिससे उसका कोमल चमड़ा कटा जाता था। वह रस्सी उस युवती की गर्दन में भी लगी थी, जैसे एक सुन्दर पुष्प को चारों ओर से केचुआ घेरे हो। रस्सी के नीचे उसका कवच पड़ा था—अभागिनी को इतनी आज्ञा मिल गई थी, क्योंकि फाँसी पानेवालों की इच्छाएँ तब भी पूरी की जाती

थी। उसके पाँव नंगे थे, जिन्हें वह स्त्री-सुलभ लज्जा के भाव से ढँकने का प्रयत्न कर रही थी। उसके पाँवों के पास उसकी बकरी भी बँधी थी। वह अपने दाँतों से अपने शमीज या कुर्ता को पकड़ हुई थी ; क्योंकि वह ठीक से बँधा न था। उस विपद् में भी लोगों के सामने नगी हो जाने के डर से वह दुःख पा रही थी। अफसोस! ऐसे भयभीतों के लिये लज्जा नहीं बनी है।

प्यारे! जरा इधर देखो—फ्लुयर ने कहा—यह वही मलेच्छ जिप्सी है, जो सर्वदा एक बकरी साथ रखती है।

इतना कह कर वह फीवस की ओर घूम गई। फीवस के नेत्र छकड़े की ओर लगे थे, वह अत्यन्त पीला पड़ गया था।

कौन-सी बकरी वाली जिप्सी ?—उसने पूछा।

क्यों, फीवस!—फ्लुयर ने उत्तर दिया—तुम्हें याद नहीं है?

मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझता—सोच ही में फीवस बोल उठा।

उसने भीतर जाने के लिये पाँव बढाया, किन्तु फ्लुयर की ईर्षा जिप्सी को देखते ही जग उठी। उसने कैप्टेन को सन्देहात्मक भाव से देखा। उसको अस्पष्ट रूप से याद आया कि इस जादूगरनी के मामले से किसी कैप्टेन का भी सम्बन्ध था।

तुमको क्या हो गया ?—फ्लुयर ने कहा—लोग सोचेंगे कि इस जिप्सी के कारण तुम्हारे हृदय में खलबली मच गई है।

फीवस ने झींकने का प्रयत्न करते हुए कहा—मेरे हृदय में खलबली ? कभी नहीं!

तब ठहरो—युवती ने आज्ञा के स्वर में कहा—हम लोग सब कुछ देखेंगे।

कैप्टेन को बाध्य होकर ठहरना पड़ा। उसका बहुत कुछ भय जाता रहा, जब उसने देखा कि कैदी जिप्सी अपनी दृष्टि नीचे से ऊपर नहीं उठाती। यह इजमेरल्डा थी। यह अपने दुर्भाग्य के अन्तिम सोपान पर भी सुन्दर दीख रही थी। कपोलों के पिचक जाने से उसकी कजरारी आँखें और भी लम्बी दिखाई देती थीं।

छकड़े के हिलने के कारण वह इधर-उधर झकझोरें में पड़ जाती थी। सकोच-भाव के अतिरिक्त निराशा में उसे कुछ नहीं सूझ पड़ता था। छकड़े की उछल-कूद के साथ उसका शरीर मृतक की तरह उछल पड़ता था। उसके नेत्रों में आँसू की एक एक बूँद लटकी पड़ी थी, मगर जान पड़ता था कि वे वहीं जम गई हैं।

भीड़ की हँसी के बीच में छकड़ा 'पारवीज' के पास पहुँचा। उस सौन्दर्य तथा विपद का ध्यान कर कहना पड़ता है कि कठोर-से-कठोर पाषाण-हृदय भी इस समय करुणा से द्रवित हो उठे।

भीड़ शान्त हो गई। 'पारवीज' का द्वार खुला। वहाँ वेदी पर दीपक जल रहे थे। एक किनारे चाँदी का एक क्रास पड़ा था। पादरी इधर-उधर घबराये से फिर रहे थे। जिस क्षण नाट्रेडेम का गहन् द्वार खुला, भीतर से बाइबिल के पाठ की ध्वनि सुन पड़ी। उसी समय प्रार्थना-गान के अतिरिक्त एक पादरी ने लेटिन में कुछ मंत्रोच्चार भी किया। वृद्ध जनों द्वारा गाया गया वह मन्त्र मृतकों की शान्ति के लिये था।

लोग शान्तिपूर्वक सुन रहे थे। अभागिनी जिप्सी भय से अपनी दृष्टि-शक्ति तथा विचार-शक्ति को खो चुकी थी। उसके पीले होंठ प्रार्थना करते दिखाई पड़े। जब गाड़ीवाला उसे नीचे उतरने में मदद दे रहा था, तब उसने जिप्सी के होंठ से 'फीबस' शब्द निकलते हुए सुना।

उसके हाथ खोल दिये गये। वह अपनी बकरी के साथ नीचे उतरी। नंगे पाँव वह वेदी की सीढ़ियों तक गई। उसकी गर्दन में रस्सी लगी थी। रस्सी सर्पिणी की तरह उसका पीछा कर रही थी।

गिरजे का गाना बन्द हुआ। एक आदमी एक सोने का क्रास तथा मोमबत्ती लेकर गिरजे के अन्धकार से बाहर निकला। फिर पादरियों का एक लम्बा जलूस निकला। वे गाते हुए कैदी की ओर बढ़े, किन्तु जिप्सी के नेत्र सबसे आगे के पादरी पर गड़े थे।

ओह!—वह अचानक बोल उठी—वह फिर यहाँ भी आ पहुँचा!

वह आर्चडिकन था। अपने पद का चिन्ह उसके हाथ में था। वह कैदी की ओर आगे बढ़ा। उसका सिर पीछे को मुड़ा था। आँखों की पलकें नहीं गिर रही थीं। वह जोर से मन्त्रोच्चार कर रहा था। जब वह बाहर प्रकाश में आया, तब लोगों ने उसके पीत वर्ण के कारण समझा कि वह कोई संगमरमर का बना बिशप है, जिनकी मूर्त्तियाँ गिरजे में बनी थीं, और जो उठकर कब्र में जानेवाली का स्वागत करने आया है।

जिप्सी-युवती भय के कारण सूख गई थी। उसे ज्ञात नहीं,

हुआ कि किसने उसके हाथ में एक बड़ी सी मोमबत्ती दे दी, न वह मन्त्रों को ही कुछ समझ रही थी। उसके शरीर में जीवन के सचार के कुछ लक्षण न थे। पादरी के इशारा करने पर जेलर वहाँ से हट गया। वह अकेला कैदी के समीप बढ़ा।

युवती को अचानक होश आ गया। उसका खून उबल पड़ा। उसकी मृतप्राय आत्मा में क्रोध की अग्नि धधक उठी।

आर्चडिकन धीरे से उसके पास गया। उस समय भी वह चाह, ईर्षा तथा वासना से भरी निगाहों से जिप्सी के खुले अंगों की ओर देख रहा था। उसने गम्भीर स्वर में पूछा—युवती! अपने पापों तथा दोषों के लिये तुमने ईश्वर से क्षमा माँग ली है?

युवती के कानों के पास झुककर उसने धीमे स्वर में इतना और कहा—तुम मेरी होना स्वीकार करती हो? मैं अब भी तुम्हारी रक्षा कर सकता हूँ।

लोगों ने समझा कि वह युवती के पापों की स्वीकृति सुन रहा है।

युवती ने उसकी ओर पैनी दृष्टि से देखा और कहा—राक्षस! दूर हो! अन्यथा मैं सब भेद फोड़ दूँगी!

पादरी भयानक हँसी हँस पड़ा—कोई तुम्हारा विश्वास न करेगा और तुम घर बैठे, हत्या के दोष के साथ-साथ, एक बदनामी भी मोल ले बैठोगी। तुरन्त उत्तर दो, मेरी होकर रहोगी?

तुमने मेरे फीबस का क्या किया है?

वह मर गया—पादरी ने कहा।

अभागे आर्चडिकन ने उस समय यों ही अपने सिर को ऊपर उठाया। उसने उस मकान की छत पर फ़ीबस को देख लिया। वह काँप उठा। उसने अपनी आँखों को बन्द कर लिया। फिर देखा और शाप देने लगा। उसके हृदय में खलबली मच गई।

उसने फिर अपने हाथ को उठा कर जिप्सी के सिर के ऊपर फेरते हुए एक मन्त्र पढ़ा। वही अन्तिम मन्त्र था।

भयानक पूजा-विधि का अन्त हुआ। पादरी और जल्लाद के बीच वह इशारा था।

जनता ने भी घुटने टेक प्रार्थना की।

एवमस्तु—आर्चडिकन ने कहा।

वह घूमा। उसका सिर उसके वक्षस्थल पर लटक गया। वह पादरियों के गिरोह में जा मिला। फिर क्षण भर में वह लापता हो गया।

कैदी जिप्सी अपनी जगह पर निस्तब्ध खड़ी थी। वह अपने अन्त की प्रतीक्षा कर रही थी।

मास्टर जेकू चर्च के गुम्बज पर बनी हुई किसी मूर्ति का अध्ययन करने में लगे थे। बड़ी कठिनाई से वे अपने स्थान से हटे। उनके इशारे से दो जल्लाद, पीले वस्त्र पहिने, जिप्सी के हाथों को पुनः बाँधने के लिये आगे बढ़े।

अभागिनी जिप्सी को शायद उस समय जीवन के लिये कुछ अफ़सोस हो आया। उसने अपने सूखे नेत्रों को आकाश की ओर, सूर्य की ओर, रुपहले बादलों की ओर उठाया। बादल आकाश

म यत्र-तत्र सुशोभित हो रहे थे। फिर उसने एक लिप्सा-भरी दृष्टि लोगों पर तथा आसपास के घरों पर डाली।

जब जल्लाद उसके हाथों को बाँध रहे थे, वह एकाएक चीख पड़ी। वह चीख़ आनन्द से भरी थी। उसने सामने के मकान की छत पर अपने प्रेमी फीबस को सजीव—सुन्दर रीति से सजा हुआ—देख लिया।

जज ने झूठ कहा था। पादरी ने झूठ कहा। उसने फ़ीबस को अपनी आँखों से देखा है। अब वह कैसे सन्देह में रह सकती है? वह जीवित था, सुन्दर था, नई वर्दी में था।

फीबस!—वह पुकार उठी—मेरे प्यारे फ़ीबस!

उसने अपने हाथों को फैलाने का प्रयत्न किया, मगर वे बँधे थे। उसने कैप्टेन को त्योरी चढ़ाते हुए देखा। एक युवती, जो उसके शरीर पर झुकी हुई थी, क्रोध-भरी दृष्टि से कैप्टेन की ओर ताक रही थी।

फीबस ने कुछ कहा, जो जिप्सी के कानों तक न पहुँचा। फिर वे दोनों छज्जे की खिड़की बन्द कर भीतर चले गये।

फबीस!—निराश होकर जिप्सी ने कहा—तुम इन बातों पर विश्वास करते हो?

उसे एक भयानक विचार ने आ दबाया। उसे याद आ गया कि कैप्टेन फीबस की हत्या के लिये उसे दंड मिला है।

अब तक उसने सब कुछ धैर्य धर कर सह लिया था, किन्तु यह अन्तिम चोट असह्य थी। वह जमीन पर मूर्च्छित हो धम से गिर पड़ी।

उसे उठाकर छकड़े पर रक्खो ; शीघ्र इस मामले का अन्त करो—जेकू ने कहा।

गिरजे के ओसारे के ऊपर, कमानियों के सहारे निकले हुए छज्जे पर, बादशाहों की मूर्तियों के बीच में, एक विचित्र कुरूप दर्शक बैठा था। किसी ने उसे नहीं देखा था। यदि वह अपना रंगीन वस्त्र धारण किये होता, तो अवश्य वह मूर्तियों की श्रेणी में गिना जाता।

वह दर्शक बड़े ध्यान से, शान्तचित्त हो, सब कुछ देख रहा था। कभी-कभी सीटी दे उठता था पहिले ही उसने एक खम्भे से एक मजबूत रस्सी कस कर बाँध रक्खी थी। रस्सी का एक सिरा नीचे ज़मीन पर झूल रहा था। किसी ने इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया था।

ठीक उसी समय, जिस समय सिपाही, जेकू की आज्ञा के अनुसार, काम करने जा रहे थे, उस दर्शक ने रेलिंग को पार कर रस्सी को पाँवों से, घुटनों से और हाथों से पकड़ लिया। फिर वह एकदम नीचे को फिसल पड़ा, जैसे शीशे पर से बूँद फिसल पड़ती है। बिल्ली की तरह वह दोनों जल्लादों के पास जा कूदा। उसने अपने दोनों हाथों से दोनों जल्लादों को पृथ्वी पर दे मारा। एक हाथ में जिप्सी को उठा लिया, जैसे बालक गुड़ियों को उठा लेते हैं, और एक ही छलाँग में गिरजे के अन्दर दाखिल हो गया। फिर जिप्सी को अपने हाथों पर उठा कर वह चिल्ला उठा—पवित्र मन्दिर।

उसने यह सब काम इतने वेग के साथ किया कि रात के

समय बिजली की एक ही चमक में यह सब कुछ दिखाई दे देता।

पवित्र मन्दिर! पवित्र मन्दिर!—भीड़ चिल्ला उठी। हजारों हथेलियाँ करतल-ध्वनि कर उठीं। इससे कासीमोडो की इकलौती आँख दर्प तथा प्रसन्नता से चमक उठी।

इस अचानक धक्के से जिप्सी को होश आ गया। उसने अपनी आँखें खोलीं, कासीमोडो की ओर देखा, फिर उन्हें बंद कर लिया—मानो वह अपने रक्षक से भयभीत हो उठी थी।

मास्टर जेक बेवकूफ बन गये। सिपाही, जल्लाद, सब-के-सब बेवकूफों की तरह चुपचाप खड़े थे। नाट्रोडेम के भीतर क्यों जिप्सी सुरक्षित थी। गिरजे की शरण अकटक थी। मनुष्यों का न्याय गिरजे की चौखट पर माथा रगड़ता था।

कासीमोडो अपने कर्कश हाथों में जिप्सी को लिये हुए था। वह काँप रही थी, मगर वह उसे बड़ी हिफाजत और सहूलियत से ले जा रहा था, ताकि कहीं उसे चोट न पहुँचे। उसे मालूम हुआ कि वह एक अत्यन्त कोमल एवं अत्यन्त अमूल्य वस्तु थी, जो उसके हाथों के योग्य न थी। मालूम हुआ कि वह अपनी साँस से भी उसे छूने की हिम्मत नहीं करता।

एकाएक उसने अपने भुज पाश में उसे बाँध कर अपनी छाती से लगा लिया, मानो वह उसका खजाना थी।

जिप्सी की आँखों से कोमलता और करुणा झलक रही थी। फिर उसमें अग्नि का प्रादुर्भाव देखा गया।

स्त्रियाँ हँस पड़ीं, रो पड़ीं। भीड़ ने शाबाशी दी, क्योंकि इस

न रहा। वह यह नहीं समझ पाता था कि मैं कहाँ हूँ, क्या कर रहा हूँ, स्वप्न देख रहा हूँ, या जाग रहा हूँ। वह चलते चलते दौड़ पड़ता था, फिर धीरे धीरे चलने लगता था, जो गली सामने आती थी, उसी में घुस पड़ता था, किन्तु 'ग्रेव' का भय उसे बना हुआ था, वह ग्रेव-स्क्वायर से दूर हट जाना चाहता था।

वह नगर से दूर निकल गया, जहाँ केवल छिट-पुट एकाध घर बने थे। एक ऊँचे टीले ने पेरिस-नगर को उसकी आँखों से ओझल कर दिया। उसने सोचा कि वह पेरिस से सैकड़ों मील दूर खेतों में है, मरुस्थल में है। वह रुक गया और फिर साँस लेने लगा।

भयानक विचार उसके मस्तिष्क में लहरों की तरह एक-पर एक आने लगे। फिर एक बार उसने अपनी आत्मा को दिन के उजाले की तरह देखा, और वह उस दृश्य को देखकर काँप उठा। वह उस दुखी युवती के विषय में सोच रहा था, जिसने उसके जीवन को नष्ट कर दिया था, और जिसके जीवन को स्वयं उसने धनोंट किया था। उसे अपनी प्रतिज्ञा की मूर्खता और पवित्रता की निस्सारता का स्मरण हो आया—साइस, धर्म, शील तथा, ईश्वर भी निरर्थक जान पड़े। वह अपवित्र विचारों में डूब गया। उस समय जान पड़ा कि वह शैतान की हँसी का पात्र हो उठा है।

अपनी आत्मा की जाँच कर उसने देख लिया कि प्रकृति ने उसमें वासना के लिये किस प्रकार स्थान रख छोड़ा था। वह

और भी कटु होता गया। उसके हृदय के हर एक कोने से घृणा तथा ईर्षा जागृत हो उठी। उसको ज्ञात हुआ कि उसकी ईर्षा उसके प्रेम के विकृत स्वरूप के अतिरिक्त और कुछ न थी। जो प्रेम मनुष्यों के हृदय में सद्गुणों का उद्रेक करता है, वही प्रेम पादरी के हृदय में भयानक रूप धारण कर लेता है। और, छाड़े फरों के स्वभाव के मनुष्य जब पादरी हो जाते हैं, तब वे पिशाच बन जाते हैं।

पादरी खिलखिला कर हँस पड़ा, और फिर पीला पड़ गया। अपनी घातक लालसाओं की विवेचना कर वह काँप उठा—उसका प्रेम कितना विषमय और ईर्षापूर्ण था कि एक को फाँसी के तख्ते और दूसरे को नरक तक पहुँचाया। वह दंडित हुई, और उस अभिशप्त को नरकगामी होना पड़ा।

फिर उसके मस्तिष्क में फीबस आ गया। उसे जीता देख कर तथा यह सोच कर कि कैप्टेन एक क्षुद्र जीव है—जो पुरानी के बदले एक नई प्रेमिका के साथ मौज उड़ा रहा है—नये-नये भेष बना रहा है, पादरी फिर खिलखिला पड़ा, किन्तु जब उसके ध्यान में आया कि जिप्सी युवती भी—जो पहिले उसकी घृणा की पात्री नहीं हुई थी—अब उसकी घृणा की ज्वाला से नहीं बच सकी, तब तो उसकी घृणा और अचेतनता दूनी हो उठी।

इसके पश्चात् उसका ध्यान भीड़ की ओर गया। उसके प्रति उसकी ईर्षा अति प्रबल हो उठी। भीड़ ने उसकी प्रेमपात्री का अंग अधखुली कुर्ती से देखने की धृष्टता की थी। अपनी प्रेमपात्री

की दुर्दशा का ध्यान आते ही उसके लिलार पर शिकन पड़ गई। यह सोच कर कि उसकी प्रेमपात्री अर्धनग्न अवस्था में भीड़ के सम्मुख लाई गई थी, उसको हजारों बिच्छुओं के डंक मारने की सी पीड़ा हुई। प्रेम के रहस्य को इस प्रकार अपवित्र होते और सबके सामने खुलते तथा सर्वदा के लिये मुरझाते देख वह क्रोध के आवेश में रो पड़ा। जो युवती मुकुलित कमल की तरह पवित्र, विनम्रता और प्रसन्नता की मूर्त्ति थी, उसको देखने का साहस भीड़ के अपवित्र नेत्रों ने किया था—इसका विचार कर वह क्रुद्ध हो रोने लगा। जिस युवती के शरीर को अपनी जिह्वा से भी स्पर्श करने का उसको साहस न हुआ था, वही उस दिन सार्वजनिक सम्पत्ति हो रही थी, और पेरिस के नीचतम चोर, भिखमंगे तथा बदमाश उसे देख कर मनोरंजन कर रहे थे!

उसकी कल्पना ने मार्ग बदला—यदि वह युवती जिप्सी-जाति की न होती, मैं पादरी न होता, फीवस का जन्म ही न हुआ होता, और वह मुझे प्यार करती, तब मैं कितना सुखी होता! मेरा जीवन कितना शान्तिमय होता! आह! इस समय भी सुखी दम्पति, कल्पना-जगत् के उस पार, घने-काले बादलों में, घुल घुल कर बातें कर रहे हैं, और यदि ईश्वर की कृपा हुई होती, तो मैं भी उन सुखी दम्पतियों में से एक होता!

इस विचार के साथ ही उसका हृदय कोमलता तथा नैराश्य से पिघल उठा।

वही—वही युवती उसके ध्यान में बार-बार आकर उसको

व्यथित और उसके मस्तिष्क को सन्तप्त कर रही थी, उसके स्ना-युओं को कुतर रही थी। अब उसको कोई अफसोस न रहा, किसी बात का पश्चात्ताप न रहा। जो कुछ वह कर चुका था, उसे फिर से करने को तैयार था। कैप्टेन के अंक में उसे देखने की अपेक्षा वह उसको जल्लाद के पंजे में देखना कहीं अधिक पसंद कर रहा था। उसकी व्यथा अपनी सीमा को पार कर चुकी थी। वह अपने बालों को हाथ से नोच-नोच कर देखने लगा कि कहीं वे सफेद तो नहीं हो गये।

दूसरे ही क्षण इजमेरल्डा के सुख तथा दुरवस्था का ध्यान कर वह पैशाचिक हास्य में मग्न हो गया। पहिला चित्र उस समय का था, जब उसने इजमेरल्डा को पहिले-पहिल देखा था—वह, निश्चिन्त और प्रसन्न मुख नाच रही थी। दूसरा उस समय का था, जब उसने जिप्सी को अन्तिम बार देखा था—वह बन्दीन थी, उसके गले में रस्सी बँधी थी, वह नंगे पाँव फाँसी की टिकटी की ओर जा रही थी। इन दोनों चित्रों ने उसे पागल बना दिया। वह भयानक अट्टहास कर उठा।

जिस समय वह प्रलयकालीन तूफान उसके हृदय को घेरे हुए था—वहाँ की प्रत्येक वस्तु का सर्वनाश कर रहा था—सबको तोड़-फोड़ रहा था—जड़ से उखाड़ रहा था, उस समय उसने अचानक बाह्य दृश्यों की ओर दृष्टिपात किया—उसके पाँवों के समीप ही कुछ मुर्गियाँ चारा चुग रही थीं, उसके सिर के ऊपर रंग बिरंगे भूरे चादर नीले आकाश में गीड रहे थे,क्षितिज पर भव्य भवनों

के गुम्बज आकाश को छू रहे थे, पनचक्कियों का स्वर उसके कानो मे पड रहा था। इन दृश्यों से उसके दिल को गहरी चोट लगी। फिर वह भागने का प्रयत्न करने लगा।

सध्या के आगमन तक वह योंहीं खेतों मे दौडता रहा। वह दिन-भर प्रकृति, जीवन, मनुष्य तथा ईश्वर की आँखो से ओझल होने के लिये दौडता ही रहा। कभी वह पृथ्वी पर मुँह के बल गिरकर नाज के पौदों को नोचता, कभी किसी गाँव की सूनी गली मे साँस लेता। उसके विचार इतने असहिष्णु हो रहे थे कि वह अपने सिर को दोनो हाथों से पकडकर कन्धे से अलग करने का प्रयत्न करने लगता, ताकि पृथ्वी पर पटक कर उसे चूर चूर कर दे।

सध्या समय उसने फिर अपनी ओर एक दृष्टि डाली, तो अपने को विक्षिप्त पाया। युवती को बचाने में असमर्थ होने की ग्लानि और निराशा ने उसके मस्तिष्क के विचारों मे ऐसा उथल पुथल मचा दिया था, कि वहाँ अव्यवस्था के सिवा और कुछ था ही नहीं। उसमें बुद्धि भी न रही। रह गई केवल दो छाया—एक इस्मेरल्डा की, दूसरी फाँसी के तख्ते की—दोनो ही डरावनी थीं। अपनी अवशेष बुद्धि द्वारा वह ज्यों-ज्यों उन्हें ध्यान से देखने लगा, त्यों त्यो वे वृहत् होती गईं—एक अधिक शोभा शालिनी, मोहनी, तथा प्रकाशमयी होती जाती थी, दूसरी अधिक भयानक।

इस व्यथा से पीडित होने पर भी उसने कभी आत्महत्या का विचार नहीं किया। अभागे की प्रकृति ही ऐसी थी। वह

जीवन को मजबूती के साथ पकड़े हुए था। शायद याद को उसे नरक ही दिखाई दे रहा था।

दिन बीतते ही गये। जीवन की चिनगारियाँ उसके हृदय में बच गई थीं। उसके मन में घर जाने का एक धुँधला विचार आया। वह अपने को पेरिस से बहुत दूर समझता था, मगर वास्तव में वह विश्वविद्यालय के ही आसपास चक्कर लगाता रहा था। उधर के भाग में दिन-रात लोगों की चहल पहल मची रहती थी, इसलिये किसी से भेंट हो जाने के भय से वह काँप रहा था। नगर की गलियों में वह अभी प्रवेश नहीं करना चाहता था।

अन्त में वह नदी के किनारे आ पहुँचा। एक नाव द्वारा नगर के उस भाग में पहुँचा, जहाँ राजकीय उद्यान के समीप पाठकों ने ग्रींगोयरे को कभी ध्यानमग्न पाया था।

नदी के जल की कल कल ध्वनि ने दुखी क्लाडे को संज्ञाहीन बना दिया। वह नदी के किनारे शून्य दृष्टि से खड़ा रहा। वह आँखें फाड़ फाड़ कर देख रहा था, मगर सामने के सभी दृश्य कुहरे में नाचते से दिखाई दे रहे थे।

व्यथा की थकावट का मस्तिष्क पर ऐसा ही असर होता है।

सूरज डूब गया था। गोधूली का समय था। नीलाकाश रौप्य वर्ण हो रहा था। नदी का जल भी चाँदी को मात कर रहा था। कहीं-कहीं नदी-तट के मकानों की खिड़कियों से दीपक का प्रकाश झाँक रहा था। आकाश का प्रतिबिम्ब जल में पड़ कर उसकी गहराई को बढ़ा रहा था।

झाडे को पेरिस के गुम्बजो और मीनारों को देखकर भ्रम हुआ कि वह अपने स्थूल नेत्रों से नरक के मीनारों को देख रहा है। चारो ओर के दीप-प्रकाश उसे रौरव के अग्नि-कुड की ज्वाला जैसे दीख रहे थे। खिड़कियो से जो स्वर आ रहे थे, वे नरक पतितो के कराहने के सदृश जान पडते थे। वह भयभीत हो उठा। उसने कानो को अपने हाथों से बद कर लिया, ताकि कुछ सुन न सके, और अपनी पीठ उधर फेर दी, ताकि कुछ देख न सके। वह वहाँ से द्रुत गति से रवाना हुआ, ताकि उस दृश्य से दूर हो जाय। किन्तु दृश्य तो उसके अन्त करण मे उपस्थित थे।

एक बार फिर उसने नगर की गलियों में प्रवेश किया। उसके कर्ण-कुहरों मे विचित्र स्वर प्रवेश कर रहे थे और अलौकिक चित्र आ-आकर उसकी इन्द्रियो को सता रहे थे। उसे गृह, पथ, रथ, पुरुष तथा स्त्री—सब-के सब एक अनिश्चित गडबडझाले में पडे दीख रहे थे।

एक जगह, एक पसारी की दूकान पर, टॅगी हुई दो काठ का मोमबत्तियाँ हवा मे खटखट कर रही थीं। पादरी ने सोचा कि अन्धकार में अस्थि-पजर लड रहे हैं। बोल उठा—आह! हवा उनको धक्का दे रही है, जिससे उनकी जजीर उनकी हड्डियों से टकरा कर विचित्र शब्द कर उठती है। शायद वह भी उनमे दूसरे अस्थि-पजरो के धक्के खा रही है।

वह विक्षिप्त हो रहा था, इसलिये यह नहीं समझ पाता था कि कहाँ जा रहा हूँ। थोडी देर के बाद वह 'पाट-सेंट-माइकल'

के समीप आ उपस्थित हुआ। एक खिड़की पर प्रकाश हो रहा था, वह वहाँ गया। वहाँ पर उसने एक गंदा कमरा देखा, जिसके कारण उसके मस्तिष्क में एक अस्पष्ट स्मृति जागृत हो उठी। उस कमरे में एक प्रसन्नमुख, सुन्दर केशोंवाला, युवक था। वह खिलखिलाता जाता था और एक तड़क भड़कवाली युवती का चुम्बन भी करता जाता था। दीपक के समीप एक बुढ़िया चरखा चला रही थी। वह अपने कर्कश स्वर में गाती भी जाती थी। युवक की हँसी के बीच-बीच में बुढ़िया का गीत धीमा सुन पड़ता था। वह गीत पादरी की समझ में न आ रहा था, तथापि वह था बड़ा भयानक। युवक हँस हँस कर युवती को पुचकारता जाता था।

बुढ़िया 'मदर फ्लोरडेल' थी। युवती कोई कुलटा थी। युवक, पादरी का अनुज, 'जेहन' था।

पादरी निर्निमेष नयनों से इस दृश्य को देखने लगा।

जेहन ने एक दूसरी खिड़की को खोलकर बाहर देखा। फिर उसे बंद करते हुए उसने कहा—मेरी प्यारी! रात हो आई है। नागरिकों ने मोमबत्तियाँ जलाई हैं और परमेश्वर ने नक्षत्र-दीप।

फिर उसने युवती के पास आकर एक बोतल फोड़ डाली और कहा—मेरे पास अब एक पैसा नहीं है। प्यारी इजाबो! मैं ईश्वर से तब तक प्रसन्न नहीं हो सकता, जब तक कि वह तुम्हारे दोनों श्वेत स्तनों को दो काली बोतलें नहीं बना देता, जहाँ से मैं रात-दिन मदिरा का पान किया करता!

इस रसिकोक्ति से युवती हँस पड़ी। जेहन बाहर निकला।

क्लाडे खिड़की के नीचे, जेहन की नजरों से बचने के लिये, जमीन पर पड़ रहा। सौभाग्यवश गली में घना अन्धकार छा रहा था। विद्यार्थी जेहन शराब के नशे में चूर हो रहा था। फिर भी जेहन ने क्लाडे को कीचड़ मे पड़ा देख लिया। बोल उठा—हो-हो! यहाँ एक जीव है, जो आज रसिक-जीवन का आनन्द ले रहा है।

उसने अपने पाँव की ठोकरों से क्लाडे को उलट दिया। क्लाडे अपनी साँस को बन्द किये पड़ा रहा। जेहन कहता चला गया—नशे में चूर है पट्ठा! पूरा पिया है! जोंक की तरह पड़ा है, क्योंकि अब अधिक नहीं पी सकता। गजा है, बूढ़ा है!

क्लाडे ने उसे आगे बढ़ते हुए देखा। वह कहता जा रहा था—बुद्धि बड़ी चीज है। मेरा भाई आर्चडिकन बड़ा भाग्यशाली है, क्योंकि वह बुद्धिमान होने के साथ ही धनी भी है।

आर्चडिकन उठा और द्रुत गति से नाट्रीडेम की ओर दौड़ पड़ा। नाट्रीडेम के मीनार अन्धकार में सिर उठाये खड़े थे।

दौड़कर वह गिरजे के सामने आ गया, मगर गिरजे की ओर आँख उठाने की उसकी हिम्मत न हुई। उसने धीमे सुर में कहा—ओह! यह कैसा विलक्षण सत्य है कि आज सवेरे ऐसी घटना यहाँ घटित हुई?

चारों ओर अन्धकार छाया था। चन्द्रमा दाहिने मीनार पर श्वेत पक्षी की तरह अभी आकर बैठ गया, वहाँ प्रकाश हो गया।

मठ का द्वार बन्द था, मगर आर्चडिकन अपनी कोठरी की कुन्जी सर्वदा अपने पास रखता था। वह गिरजे में घुस पड़ा।

भीतर कब्र की तरह शान्ति थी। सबेरे जो तैयारियाँ की गई थी, ज्यों-की-त्यों पडी थीं। चाँदी का बडा क्रास अन्धकार में चमक रहा था।

पादरी भय से काँप उठा। उसे मालूम हुआ कि बहुत-से नेत्र उसकी ओर लगे हैं। वह गिरजे में दौडने लगा। उसे मालूम होने लगा कि गिरजा भी हिल रहा है—साँसें ले रहा है—सजीव है, खम्भे उसके पाँव हैं, उसकी आलीशान इमारत हाथी है, दोनों मीनार सूँड हैं।

उसकी परेशानी बहुत बढ गई। बाह्य प्रकृति उसे भयावनी प्रतीत होने लगी। जब वह गिरजे की बगल के रास्ते में घुसा, तब उसे स्तम्भों के पीछे एक लाल रोशनी दीख पडी। उस नाट्रीडेम के सार्वजनिक पूजा-ग्रंथ के पास एक दीपक रात-दिन जला करता था। वह उधर ही दौड पडा। उस क्षण उसे कुछ आराम मिला।

वह पूजा ग्रंथ के पन्ने उलटने लगा। 'जोब -कथित निम्नाङ्कित वाक्य उसके सामने आ गया—'फिर मेरे सामने से एक प्रेतात्मा निकल गई, और मेरे रोंगटे खडे हो गये।'

इस वाक्य के पढने से उस पर जो असर हुआ, उसको वही अधा समझ सकता है, जिसे अपने ही डंडे से अनायास चोट लग गई हो। वह घुटने के बल जमीन पर बैठ गया। उसको उस समय उस विनष्ट युवती का ध्यान आ गया। उसके मस्तिष्क से भयानक धुँआ उठा, जिससे उसने समझ लिया कि उसका सिर नरक का द्वार हो गया है।

वह थोडी देर तक यो हो निस्तब्ध पडा रहा। शैतान के हाथ मे पडकर वह शक्ति-हीन हो गया था। फिर उसे कुछ चेतना आई। उसने अपने स्वामिभक्त 'कासीमोडो' के साथ रात बिताने का विचार किया। वह उठा, पूजा-ग्रन्थ के पास का दीपक उठा लिया, क्योकि अँधेरे में जाने से वह भय खा रहा था। यह देवता का अपमान था, मगर इन छोटी बातो की ओर ध्यान देना उसने छोड दिया था।

भय के साथ वह मीनार पर चढने लगा। उसके दीपक के प्रकाश को मीनार के छिद्रो द्वारा चलते हुए देखकर बाहर के लोग अवश्य भयभीत हुए होंगे।

वह ऊपर के गृह के द्वार पर पहुँच गया। शीतल वायु चल रही थी, इससे उसे कुछ चेतना हो आई। चन्द्रमा की किरणें आकाश के बादलो को भेद कर आ रही थीं। उसी समय घडी में बारह बजा। पादरी को दिन के बारह बजे का स्मरण हो आया। उसने ओठों के बीच मे कहा—ओह! इस समय वह ठंडी पड गई होगी।

अचानक वायु के एक झोंके से उसका दीपक बुझ गया। उसी समय मीनार के दूर के कोने में उसे एक छाया दीख पड़ी। फिर वह छाया स्त्री-रूप मे दिखाई पडने लगी। वह भयसे काँप उठा। इस स्त्री की बगल में एक बकरी थी।

साहस कर उसने छाया की ओर देखा। वही युवती थी। पीली पड गई थी। खिन्न एव कृश हो रही थी। प्रात काल की भाँति उसके

केश उसके कन्धों पर अस्त-व्यस्त पड़े थे, किन्तु उसके गले में रस्सी न थी और न उसके हाथ ही बँधे थे। वह स्वतंत्र थी, मृतक थी। उसके शरीर पर शुक्ल वसन पड़ा था और उसके सिर पर एक सफेद चादर। वह धीरे-धीरे पादरी की ओर आने लगी। उसकी दृष्टि आकाश की ओर लगी थी। बकरी भी उसके पीछे-पीछे आ रही थी।

पादरी को मालूम हुआ, जैसे वह पत्थर हो गया हो। वह भाग न सकता था। जैसे-जैसे वह छाया एक-एक सीढ़ी के आगे बढ़ने लगी, वह एक-एक सोपान नीचे हटने लगा। इस प्रकार वह सीढ़ी के नीचे अन्धकार में छिप रहा। यह सोचकर कि कहीं वहाँ भी छाया उसका पीछा न करे, वह भय से सूख गया। यदि कहीं वह वहाँ पहुँच गई होती, तो निश्चय ही वह भय से मर गया होता।

वह सीढ़ी के द्वार तक आई। थोड़ी देर के लिये, अधकार मे देखती हुई, वहाँ खड़ी रही। उसके भाव से प्रकट हो रहा था कि वह पादरी को देख नहीं रही है। वह आगे बढ़ गई। पादरी को वह बहुत लम्बी दिखाई दे रही थी।

जब वह वहाँ से चली गई, तब वह उसी प्रकार धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा, क्योंकि वह अपने को भी प्रेतात्मा ही समझने लगा। उसके रोंगटे खड़े हो आये थे। बुझा हुआ दीप उसके हाथ ही मे था। नीचे उतरते समय, उसे मालूम हुआ, जैसे कोई व्यंग-भरे स्वर में उसके कानों में कह रहा है—एक प्रेतात्मा मेरे सामने से निकल गई, मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

शरण-स्थल

मध्यकाल में, बारहवें लुई के समय तक, हर-एक नगर में एक न-एक शरण-स्थान—कोई-न-कोई, पवित्र मन्दिर—अवश्य था। मनुष्य के कठोर न्याय की जगली अवस्था मे वे स्थान जल प्लावित प्रदेश के द्वीप का-सा काम करते थे। अपराधी वहाँ पहुँचकर सुरक्षित हो जाता था। जितनी फाँसी की टिकठियाँ थीं, उतने ही शरण-स्थान—आश्रय-स्थल—भी थे।

अधिकार के दुरुपयोग के साथ-ही-साथ दड की निर्बलता भी चल रही थी। दो बुरी चीजें एक दूसरे का सुधार कर रही थीं।

शरण-स्थान में अपराधी से कोई बोल नहीं सकता था। उससे बाहर पाँव निकालने पर उसकी मौत थी। फाँसी सर्वदा उसकी राह देखती रहती थी। कितने ही लोग शरण-स्थान में वृद्ध हो जाते थे। वे कैदी न कहलाकर भी सब प्रकार से जेलखाना ही भोगते थे। कभी-कभी तो पार्लामेंट की आज्ञा से अपराधी को शरण-गृह से भी पकड कर न्याय-विभाग के हवाले किया जाता था, मगर ऐसा बहुत कम होता था। पार्लामेंट भी बिशपों से भय खाती थी।

शरण-स्थान के लिये लोगों मे बडी श्रद्धा थी। उसके अन्दर

शरण लेनेवाले जानवर भी अवध्य समझे जाते थे। गिरजों में भी ऐसे भगोड़ुओं के निवास के लिए कोठरियाँ बनी होती थीं।

नात्रीडेम में वह कोठरी मीनार के पास ही बनी थी।

इसी कोठरी मे कासीमोडो ने इज़्मेरल्डा को लाकर रक्खा था। जिस समय कासीमोडो अपने भुज-पाश मे कसकर उसे ऊपर ला रहा था, वह सज्ञाहीन हो रही थी। वह तन्द्रावस्था में, अधखुली आँखों से, कभी उस कुरूप 'कासीमोडो' की ओर देख लेती। यदा-कदा कासीमोडो की हँसी उसके कर्ण-कुहरो में पड़ जाती थी।

वह सोच रही थी—मैं मर गई हूँ। मेरी मूर्च्छितावस्था ही मे मुझे फाँसी दे दी गई है। यह कुरूप डरावना प्रेत, जो मेरे पीछे पड़ा था, मुझे ऊपर ले जा रहा है।

वह भय से उसकी ओर देखने का साहस न कर सकी। तो भी उसने देखा कि घटी बजानेवाले उस कुरूप ने उसे कोठरी में लाकर धीरे से रख दिया और कोमलता-पूर्वक उसके गले से रस्सी को खोलकर फेंक दिया। जैसे अधकार मे नाव किनारे पर धक्के के साथ आ लगती है और नाववालों को एक सुखमय धक्का लगता है, वैसा ही धक्का युवती को लगा। उसने होश सँभाला। उसे सब याद आ गया—

वह नात्रीडेम में थी, फीबस अभी जीवित था, पर वह अब उसे प्यार नहीं करता—इन दोनो विचारों ने एक दूसरे को कटु बना दिया। वह कासीमोडो की ओर घूम कर बोली—तुमने मेरी रक्षा क्यों की है?

कासीमोडो उसके कथन का अर्थ समझने के लिये उस ओर देख रहा था। युवती ने अपने प्रश्न को दुहराया। कासी मोडो ने उदासीन की तरह उसकी ओर देखा, और भाग गया वह आश्चर्य में डूब गई।

थोड़ी देर बाद वह एक छोटी-सी गठरी के साथ लौटा। गठरी को युवती के पाँवों के पास रख दिया। गठरी में पहिनने के कपड़े थे, जिन्हें किसी दयालु स्त्री ने उसके लिये गिरजे के द्वार पर दिया था।

युवती ने अपनी तरफ देखा। अपने को लगभग नग्न देख संकुचित हो उठी। कासीमोडो को भी उसके संकोच का पता लग गया। उसने अपने हाथों से अपने चेहरे को ढँक लिया और जाने लगा, मगर धीरे-धीरे।

युवती ने शीघ्रता-पूर्वक कपड़े पहन लिये। गठरी में एक लहँगा तथा एक सफेद चादर थी।

थोड़ी देर में कासीमोडो लौट आया। उसके एक हाथ में टोकरी थी, दूसरे में एक चटाई। टोकरी में और थोड़ी-सी कुछ और चीज़ें थीं। दे
उसने कहा, खाओ। चटाई को
का भोजन था, उसी की चट
धन्यवाद देने

कासीमोडो ने कहा—मैं तुम्हें डरा देता हूँ। मै बड़ा कुरूप हूँ। मेरी ओर न देखो, केवल मेरी बात सुन लो। दिन-भर तुम्हें यहीं रहना होगा, रात को गिरजे में जहाँ चाहो, वहाँ घूम सकती हो, किन्तु रात हो या दिन, गिरजे के बाहर पाँव न रखना। तुम्हें वे मार डालेंगे और मैं मर जाऊँगा।

उसके इस कथन से वह पिघल उठी। उत्तर देने के लिये उसने सिर उठाया, किन्तु वह वहाँ से चला गया था। वह एकान्त में पिशाच-जैसे कासीमोडो की बातों की विवेचना करने लगी—उसका स्वर कर्कश होने पर भी कितना कोमल था!

फिर उसने अपनी कोठरी को देखा। उसमें एक ही खिड़की थी और एक ही दरवाजा। वहाँ से सम्पूर्ण पेरिस दिखाई दे रहा था।

उसी समय, जब वह एकान्त में अपनी दुर्दशा की व्यथा से पीड़ित होने जा रही थी, बालोंवाली कोई चीज उसके हाथों और घुटनों से छू गई। वह काँप उठी। नीचे देखने लगी। वह 'दजाली' थी।

दजाली भी उसी के साथ भाग निकली थी। वह घंटों से वहाँ उपस्थित थी, मगर जिप्सी उसकी ओर देख ही न रही थी। जिप्सी ने उसका चुम्बन किया—दजाली! मैं कैसे तुम्हें भूल गई, मगर तूने मुझे न भुलाया? कम-से-कम तुम अकृतज्ञ नहीं हो।

इसके साथ ही वह रो पड़ी, मानो रुदन को रोकनेवाला

कासीमोडो उसके कथन का अर्थ समझने के लिये उसकी ओर देख रहा था। युवती ने अपने प्रश्न को दुहराया। कासीमोडो ने उदासीन की तरह उसकी ओर देखा, और भाग गया। वह आश्चर्य में डूब गई।

थोडी देर बाद वह एक छोटी-सी गठरी के साथ लौटा। गठरी को युवती के पाँवो के पास रख दिया। गठरी में पहिनने के कपड़े थे, जिन्हें किसी दयालु स्त्री ने उसके लिये गिरजे के द्वार पर रख दिया था।

युवती ने अपनी तरफ देखा। अपने को लगभग नग्न देखकर सकुचित हो उठी। कासीमोडो को भी उसके सकोच का पता लग गया। उसने अपने हाथों से अपने चेहरे को ढँक लिया, और जाने लगा, मगर धीरे-धीरे।

युवती ने शीघ्रता-पूर्वक कपडे पहन लिये। गठरी में एक सफेद लहँगा तथा एक सफ़ेद चादर थी।

थोड़ी देर में कासीमोडो लौट आया। उसके एक हाथ में एक टोकरी थी, दूसरे में एक चटाई। टोकरी में एक बोतल, एक रोटी और थोड़ी-सी कुछ और चीजें थीं। टोकरी को नीचे रखते हुए उसने कहा, खाओ। चटाई को बिछा कर कहा, सोओ। वह उसी का भोजन था, उसी की चटाई थी।

जिप्सी ने धन्यवाद देने के लिये उसके चेहरे की ओर देखा मगर वह बोल न सकी। वह सचमुच भयावना था। भय से उसका सिर नीचा हो गया।

कासीमोडो ने कहा—मैं तुम्हें डरा देता हूँ। मैं बड़ा कुरूप हूँ। मेरी ओर न देखो, केवल मेरी बातें सुन लो। दिन-भर तुम्हें यहाँ रहना होगा, रात को गिरजे में जहाँ चाहो, वहाँ घूम सकती हो, किन्तु रात हो या दिन, गिरजे के बाहर पाँव न रखना। तुम्हें वे मार डालेंगे और मैं मर जाऊँगा।

उसके इस कथन से वह पिघल उठी। उत्तर देने के लिये उसने सिर उठाया, किन्तु वह वहाँ से चला गया था। वह एकान्त में पिशाच-जैसे कासीमोडो की बातों की विवेचना करने लगी—उसका स्वर कर्कश होने पर भी कितना कोमल था!

फिर उसने अपनी कोठरी को देखा। उसमें एक ही खिड़की थी और एक ही दरवाजा। वहाँ से सम्पूर्ण पेरिस दिखाई दे रहा था।

उसी समय, जब वह एकान्त में अपनी दुर्दशा की व्यथा से पीड़ित होने जा रही थी, बालोंवाली कोई चीज उसके हाथों और घुटनों से छू गई। वह काँप उठी। नीचे देखने लगी। वह 'दजाली' थी।

दजाली भी उसी के साथ भाग निकली थी। वह घंटों से यहाँ उपस्थित थी, मगर जिप्सी उसकी ओर देख ही न रही थी। जिप्सी ने उसका चुम्बन किया—दजाली! मैं कैसे तुम्हें भूल गई, मगर तूने मुझे न भुलाया? कम-से-कम तुम अकृतज्ञ नहीं हो।

इसके साथ ही वह रो पड़ी, मानो रुदन को रोकनेवाला

बोझ उसके हृदय से हट गया हो। आँसुओं के साथ ही उसके कटु शोक भी बहने लगे।

जब संध्या आई, तब रात उसे बड़ी सुहावनी लगी। चन्द्रमा बड़ा कोमल दिखाई दे रहा था। वह वहीं बरामदे में टहलने लगी। टहलने से उसके शरीर में कुछ स्फूर्ति आ गई। उतनी ऊँचाई से पृथ्वी उसको बहुत शान्त दिखाई दे रही थी।

कासीमोडो के स्वर में बड़ी दीनता और नम्रता थी। जिप्सी उससे पिघल पड़ी। उसने अपनी आँखें खोल लीं, पर वह खिड़की पर नहीं था।

युवती खिड़की के पास गई। कासीमोडो को दीवार से सट कर विनीत अवस्था में बैठा देखा। उसे देखकर करुणा उत्पन्न होती थी।

युवती ने अपने द्वेष तथा भय को पराजित करने का प्रयत्न किया। उसने कोमल स्वर में कहा—यहाँ आओ।

उसके होठों के कम्पन से कासीमोडो ने समझा कि वह यहाँ से भी हट जाने को कहती है, इसलिये वह धीरे से उठा और सिर को नीचा किये हुए हचकने लगा। उसे युवती की ओर देखने का भी साहस न हुआ।

इधर तो आओ—युवती चिल्ला उठी।

मगर वह चला ही जाता था। युवती कोठरी से निकली और द्रुत गति से दौड़ कर उसके पास पहुँची। पास जाते ही उसका हाथ पकड़ लिया। उसके कर-स्पर्श से कासीमोडो काँप उठा।

कासीमोडो ने अपनी भिखारिनी आँखों को ऊपर उठाया। देखा, युवती उसे अपनी ओर खींच रही है। प्रसन्नता तथा कोमलता से उसका मुखमंडल उद्भासित हो उठा।

युवती उसे कोठरी के भीतर लाने का प्रयत्न कर रही थी। वह चौखट पर खड़े रहने की हठ कर रहा था—नहीं-नहीं, उल्लू को लवा के घोंसले में न जाना चाहिये।

फिर वह अपनी चटाई पर आराम से लेट रही। बकरी उसके पाँवों के पास सो रही थी।

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। दोनों ही विचार कर रहे थे—कासीमोडो उस शोभा-राशि पर, युवती उस कुरूपता पर।

युवती को कासीमोडो में अधिकाधिक कुरूपता का आभास मिलता गया। उसकी दृष्टि कासीमोडो के लँगड़े पाँव से ऊँचे कूबड़ पर पहुँची, वहाँ से फिर उसकी एक आँख तक जा पहुँची। वह यह नहीं समझ सकती थी कि ऐसा कुरूप मनुष्य क्यों जीवित है, किन्तु उस कुरूपता के साथ ही कासीमोडो के चेहरे पर इतनी उदासी थी—इतनी कोमलता थी—कि वह उसकी ओर आकृष्ट होने लगी।

कासीमोडो ने पूछा—तुमने मुझे लौट आने को कहा है?

युवती ने 'हाँ' कह कर सिर हिला दिया।

अफ़सोस! मैं बहरा हूँ!

करुणापूर्ण नेत्रों से देखते हुए जिप्सी ने कहा—अभागे आदमी!

वह उदासीनता से भरी हँसी हँस रहा था। एकाएक बोल उठा—तुम सोचती हो कि मुझे उसी की कमी है। क्यों, ऐसी ही बात है न? हाँ, मैं बहरा हूँ, और तुम—तुम इतनी सुन्दरी हो!

कासीमोडो का स्वर उसके दुःख के अनुभव को पूर्ण रीति से व्यक्त कर रहा था। युवती में बोलने की शक्ति न रही, और वह सुन भी नहीं सकता था।

कासीमोडो के स्वर में बड़ी दीनता और नम्रता थी। जिप्सी उससे पिघल पड़ी। उसने अपनी आँखें खोल लीं, पर वह खिड़की पर नहीं था।

युवती खिड़की के पास गई। कासीमोडो को दीवार से सट कर विनीत अवस्था में बैठा देखा। उसे देखकर करुणा उत्पन्न होती थी।

युवती ने अपने द्वेष तथा भय को पराजित करने का प्रयत्न किया। उसने कोमल स्वर में कहा—यहाँ आओ।

उसके होठों के कम्पन से कासीमोडो ने समझा कि वह यहाँ से भी हट जाने को कहती है, इसलिये वह धीरे से उठा और सिर को नीचा किये हुए हचकने लगा। उसे युवती की ओर देखने का भी साहस न हुआ।

इधर तो आओ—युवती चिल्ला उठी।

मगर वह चला ही जाता था। युवती कोठरी से निकली और द्रुत गति से दौड़ कर उसके पास पहुँची। पास जाते ही उसका हाथ पकड़ लिया। उसके कर-स्पर्श से कासीमोडो काँप उठा।

कासीमोडो ने अपनी भिखारिनी आँखों को ऊपर उठाया। देखा, युवती उसे अपनी ओर खींच रही है। प्रसन्नता तथा कोमलता से उसका मुखमण्डल उद्भासित हो उठा।

युवती उसे कोठरी के भीतर लाने का प्रयत्न कर रही थी। वह चौखट पर खड़े रहने की हठ कर रहा था—नहीं-नहीं, उल्लू को लवा के घोंसले में न जाना चाहिये।

फिर वह अपनी चटाई पर आराम से लेट रही। बकरी उसके पाँवों के पास सो रही थी।

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे। दोनो ही विचार कर रहे थे—कासीमोडो उस शोभा-राशि पर युवती उस कुरूपता पर।

युवती को कासीमोडो में अधिकाधिक कुरूपता का आभास मिलता गया। उसकी दृष्टि कासीमोडो के लँगड़े पाँव से ऊँचे कूबड़ पर पहुँची, वहाँ से फिर उसकी एक आँख तक जा पहुँची। वह यह नहीं समझ सकती थी कि ऐसा कुरूप मनुष्य क्यों जीवित है, किन्तु इस कुरूपता के साथ ही कासीमोडो के चेहरे पर इतनी उदासी थी—इतनी कोमलता थी—कि वह उसकी ओर आकृष्ट होने लगी।

कासीमोडो ने पूछा—तुमने मुझे लौट आने को कहा है?

युवती ने 'हाँ' कह कर सिर हिला दिया।

अफसोस! मैं बहरा हूँ!

करुणापूर्ण नेत्रों से देखते हुए जिप्सी ने कहा—अभागे आदमी!

वह उदासीनता से भरी हँसी हँस रहा था। एकाएक बोल उठा—तुम सोचती हो कि मुझे इसी की कमी है। क्यों, ऐसी ही बात है न? हाँ, मैं बहरा हूँ, और तुम—तुम इतनी सुन्दरी हो!

कासीमोडो का स्वर उसके दुःख के अनुभव को पूर्ण रीति से व्यक्त कर रहा था। युवती में बोलने की शक्ति न रही, और वह सुन भी नहीं सकता था।

वह कहता ही गया—इस क्षण के पहिले मुझे अपनी कुरूपता का अनुभव नहीं हुआ था। तुम्हारे सम्मुख अपने को देख कर मैं आप ही दया का पात्र बन गया हूँ। सचमुच मैं पिशाच की तरह दिखाई दे रहा हूँ। मैं तुम्हें अवश्य ही किसी भयानक पशु की तरह लगता होऊँगा। तुम सूर्य की किरण हो, ओस की बूँद हो, पक्षी का कल रव हो। मैं भयावना हूँ—न मनुष्य हूँ, न जन्तु, कोई बे नाम की चीज हूँ। पत्थर से भी कठोर और ऊँट से भी कुरूप हूँ, उससे भी अधिक पद-दलित हूँ।

वह हँसने लगा, मगर उसकी हँसी संसार की सबसे बड़ी हृदय विदारक वस्तु थी। वह फिर कहने लगा—हाँ, मैं बहरा हूँ, मगर तुम इशारों से मुझसे कुछ कह सकती हो। मेरे एक मालिक हैं, जो इशारे से ही मुझसे बातचीत करते हैं। मैं तुरन्त तुम्हारे अधर-कम्पन और भावभंगी से तुम्हारी इच्छा को जान जाऊँगा।

मुस्कराते हुए युवती ने पूछा—अच्छा, बताओ, तुमने मुझे बचाया क्यों?

क्वासीमोडो उसे ध्यान-पूर्वक देख रहा था। बोला—मैं समझता हूँ, तुम पूछती हो कि मैंने तुम्हें क्यों बचाया। तुमने उस दुष्ट को भुला दिया है, जिसने तुम्हें एक रात को ले भागने का प्रयत्न किया था। उस दुष्ट को दूसरे ही दिन कटहरे (दंड-मंच) पर तुमने सहायता पहुँचाई थी। उस एक बूँद जल तथा करुणा के कण का मूल्य मेरे सम्पूर्ण जीवन से भी न चुक सकेगा।

कासीमोडो की बात सुनकर युवती के हृदय में गहरे भाव जाग उठे। घंटी बजानेवाले की आँख में आँसू की एक निर्मल बूँद चमक उठी, किन्तु वह गिरी नहीं। आँसू को दबा रखने में वह अपनी प्रतिष्ठा समझ रहा था।

सुनो—आँसुओं का भय छूट जाने पर कासीमोडो ने कहा—यहाँ बड़े ऊँचे मीनार हैं। जो कोई इनके ऊपर से गिरेगा, वह जमीन पर पहुँचने से पहिले ही काल के गाल में चला जायगा। जब इनपर से मुझे गिराने की तुम्हारी इच्छा हो, बस तुम्हारी एक चितवन पर्याप्त होगी। तुम्हें एक शब्द भी बोलने की आवश्यकता नहीं।

वह उठा। दुखी जिप्सी के हृदय में इस विचित्र मनुष्य ने करुणा का उद्रेक कर दिया था। युवती ने इशारा किया।

नहीं-नहीं—कासीमोडो ने कहा—मुझे देर तक नहीं ठहरना चाहिये। मेरी तबीयत अच्छी नहीं है। दया के कारण तुम अपनी आँखें नहीं छिपातीं। मैं वहाँ जाता हूँ, जहाँ तुम मुझे न देख सको, किन्तु मैं तुम्हें देख सकता हूँ। वही अच्छा होगा।

उसने अपनी पाकेट से धातु की बनी एक सीटी निकाली और कहा—यह लो, जब तुम्हें मेरी आवश्यकता हो, मुझको बुलाना चाहो, और जब मैं तुम्हें डरावना न लगूँ, तब तुम इस सीटी को बजा देना। मैं इसके तीव्र स्वर को सुन लेता हूँ।

जमीन पर सीटी को रखकर वह भाग गया।

हमारी आत्मा में, हमारे अंग-प्रत्यंग में, उसकी जड़ें जकड़ जाती हैं। बहुधा वह भग्न हृदयों में ही हरा भरा होता है। प्रेम का भाव जितना ही अंधा होता है, उतना ही अधिक हठी भी। यह गुण प्रेम की पहेली है। जब प्रेम अकारण होता है, तब तो उसकी प्रबलता की सीमा ही नहीं होती।

बहुधा कैप्टेन की सुधि उसे आने लगी, मगर वह सुधि कटुता से रिक्त न थी। यह कितने दुख की बात है कि वह भी धोका खा गया। उसे तो इस बात को असम्भव समझना चाहिये था। जो जिप्सी उसके लिये अपने जीवन का बलिदान कर सकती थी, उसी पर खंजर का वार करने का केवल सन्देह ही नहीं किया गया, बल्कि फीबस ने विश्वास भी कर लिया।

वह अबला यंत्रणा से डर क्यों गई? यह दोष उसी का था। उसे मर जाना चाहिये था, न कि भय से जुर्म को स्वीकार करना। किन्तु उसे अब भी विश्वास हो रहा था कि वह एक बार भी अगर फीबस से मिल सके, तो अवश्य उसके धोके को दूर कर उसे जीत ले। इस विषय में उसे तनिक भी संदेह न था।

उसके प्रायश्चित्त के दिन फीबस एक युवती के साथ वहाँ था, इस बात को जिप्सी समझने का प्रयत्न करने लगी। उसने सोचा कि शायद वह उसकी बहन थी। वह अब भी विश्वास करती थी कि अभी तक फीबस केवल उसी को प्यार करता था। वह इसके लिये शपथ खा चुका था।

उसका विश्वास कितना सरल था!

नाट्रीडेम का गिरजा, अपने धार्मिक वातावरण से, उसके लिये औषधि का काम कर रहा था। उस धार्मिक वातावरण ने अलक्ष्य भाव से उसको शान्ति प्रदान किया। गिरजे के प्रार्थना-संगीत उसकी आत्मा को शान्ति देते थे।

दिन-दिन वह स्वस्थ होती गई—उसका पीलापन घटता गया। हृदय के घावों के भर जाने से उसका सौन्दर्य फिर एक बार खिल उठा। पहिले के उसके भाव एक-एक करके लौटने लगे। उसकी चंचलता, दजाली के प्रति उसका प्यार, उसका प्रेम और उसकी विनम्रता, सभी गुण नये सिरे से विकसित होने लग गये। वह नित्य सँभाल कर वस्त्र पहिनने लगी, ताकि कोई खिडकी से उसे देख न ले।

फीवस के बाद वह कासीमोडो के विषय में विचार किया करती थी। मनुष्य-समाज के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित करने का एक-मात्र साधन कासीमोडो ही रह गया था, किन्तु वह उस विचित्र मित्र को, जिसे नियति ने ला मिलाया था, ठीक समझ नहीं सकती थी। वह अपनी आँखों को बद कर लेने के लिये अपनी ही भर्त्सना करती थी। तो भी वह कासीमोडो के साथ हिल-मिल नहीं सकती थी। वह बहुत ही कुरूप था।

उसने कासीमोडो को सीटी को जमीन पर ही छोड दिया था, मगर कासीमोडो समय पर उसको भोजन पानी दे जाता था। युवती उसकी ओर देखने का प्रयत्न करती थी। किन्तु वह उसको तनिक भी आँख चुराते देख उदास हो चला जाता था।

एक बार वह आकर चुपचाप खड़ा हो गया। जिप्सी दजाली

को पुचकार रही थी। थोड़ी देर बाद उसने अपने भारी सिर को हिलाते हुए कहा—मेरा अभाग्य है कि मैं मनुष्य की तरह बनाया गया हूँ। मेरी कितनी इच्छा है कि मैं भी इस बकरी की तरह पूर्ण जन्तु होता।

वह आश्चर्य भरी निगाह से देखने लगी।

उसने उसकी निगाह का उत्तर दिया—मैं इसका कारण अच्छी तरह समझता हूँ।

इतना कह कर वह चला गया।

एक बार इजमेरल्डा स्पेन का एक गीत गा रही थी। कासीमोडो कोठरी के द्वार पर दिखाई पड़ा। युवती सहज भय से गीत गाना बन्द कर चुप हो गई। अभागा कासीमोडो दरवाजे ही पर घुटने टेक कर प्रार्थना करने लगा—मैं प्रार्थना करता हूँ कि गाना बन्द न करो, गाओ, मुझे यहाँ से खदेड़ो न।

जिप्सी उसका दिल दुखाना नहीं चाहती थी। काँपते हुए स्वर में उसने फिर गाना प्रारम्भ किया। थोड़ी देर में संगीत के मृदुल प्रभाव में उसका सारा भय विलीन हो गया।

कासीमोडो द्वार पर घुटने के बल बैठा था। उसके दोनों हाथ उठे हुए थे, मानों प्रार्थना कर रहा है। वह ध्यान पूर्वक युवती के चमकीले नेत्रों की ओर देख रहा था, मानों उसकी आँखों में उसके गीत का अर्थ पढ़ रहा था।

एक दिन कासीमोडो डरते डरते उसके पास आया, कहने लगा—मेरी ओर ध्यान दो, मुझे तुमसे कुछ कहना है।

युवती ने सुनने का इशारा किया। फिर वह हाँपने लगा, आह भरने लगा, और धीरे से अपने ललाट को ठोंक कर चला गया।

युवती आश्चर्य-चकित हो रही थी।

वह एक मूर्ति से कह रहा था—मैं भी तुम्हारे ही समान पत्थर क्यों न हुआ ?

एक दिन इजमेरल्डा साहस कर मीनार की छत पर गई। वहाँ से स्क्वायर की ओर देखने लगी। कासीमोडो, छिप कर पीछे खड़ा था। अचानक युवती की आँखों में प्रसन्नता के आँसू भर आये। छत के किनारे की रेलिंग पर झुक कर उसने अपने हाथों को फैला दिया, और चिल्ला उठी—फीवस ! जरा इधर आओ, इधर आओ ! ईश्वर के लिये, इधर आओ। केवल एक बात ! फीवस ! फीवस !

उसके स्वर तथा उसकी भाव-मुद्रा हृदय को विदीर्ण कर रही थी, मानों जहाज से गिरा हुआ व्यक्ति दूर पर प्रसन्नता से जाते हुए जहाज को देखकर पुकार रहा हो।

कासीमोडो ने झुक कर देखा कि वह पागलों की तरह एक युवक को पुकार रही थी। वह युवक कैप्टेन था, सुन्दर था और पल्टन की पोशाक में चमक रहा था। एक सुन्दरी युवती की ओर—जो छज्जे पर खड़ी थी—वह अपने हाथ को हिला रहा था। उसकी ओर देखकर युवती मुस्करा रही थी।

जिप्सी की पुकार को कैप्टेन सुन नहीं रहा था, वह बहुत दूर

था, किन्तु अभागे बहरे ने सुन लिया। उसकी छाती साँस से फूल आई। उसके हाथों ने उसके सिर के बालों को पकड़ लिया। जब उसके हाथ अलग हटे, तो उसकी मुट्ठियाँ नुचे हुए बालों से भरी थीं।

जिप्सी कासीमोडो को नहीं देख रही थी। वह दाँत पीस रहा था। उसने धीरे से कहा—कितना दुःख है! आदमी को ऐसा ही होना चाहिये। केवल बाहरी सौन्दर्य की आवश्यकता है।

युवती चिल्ला रही थी। बहरा उसे देख रहा था और उसके शोक को समझ भी रहा था। उसकी आँखों में आँसू भर आये, मगर उसने उन्हें नीचे नहीं गिरने दिया। उसने युवती का कपड़ा पकड़ कर खींचा। वह घूम गई। कासीमोडो उस समय बड़ा शान्त था। उसने कहा—जाकर उसे लिवा आऊँ?

प्रसन्नता से युवती ने कहा—ओह! जाओ, उस कैप्टेन के पास जाओ, उसे मेरे पास ले आओ। मैं तुम्हें प्यार करूँगी।

युवती ने उसका पाँव पकड़ लिया। वह उदास हो, सर हिलाने लगा। मैं उसे लिवा आऊँगा—कहकर एकदम नीचे दौड़ पड़ा।

जब वह स्क्वायर मे पहुँचा, तो घोड़े को गाडेलोरियर महल के पास बँधा पाया। कैप्टेन पहिले ही अन्दर चला गया था।

गिरजे की छत पर इजमेरल्डा ज्यों की त्यों खड़ी थी। कासीमोडो दुःख के साथ सिर हिलाने लगा। कैप्टेन के बाहर आने की आशा मे वहीं दीवार से सटकर खड़ा हो गया।

घर के अन्दर विवाह के प्रारम्भिक उत्सव हो रहे थे। कासी-

मोडो ने बहुतो को आते-जाते देखा। कभी कभी वह गिरजे की छत पर देख लेता—जिप्सी उसी प्रकार निस्तब्ध खड़ी थी। घोड़ा भी अस्तबल में बाँध दिया गया था।

इस प्रकार दिन बीत चला। कासीमोडो दीवार से सटा था। जिप्सी छत पर खड़ी थी। फीबस निस्सन्देह फ्लुयर के पाँवों पर पड़ा था।

रात हो आई। रात अँधेरी थी। कासीमोडो इजमेरल्डा को न देख सकता था। चारों ओर अँधेरा था। कासीमोडो ने गांडेलोरियर महल की खिड़कियों से मोमबत्तियों का प्रकाश देखा। कैप्टेन बाहर न निकला। रात बहुत बीत गई। कासीमोडो अंधकार में अकेला रह गया। उस समय गलियों में रोशनी का प्रबन्ध न था।

कासीमोडो ने खिड़की के शीशों पर उस घर के अन्दर नाचने वालों की छाया देखी। वह बहरा था, नहीं तो उसे गीत, मजाक और हँसी की ध्वनि अवश्य सुन पड़ी होती।

एक बजे रात को मिहमान जाने लगे। कैप्टेन उनमें न था। कासीमोडो थक गया था, उदास और हताश हो गया था, आकाश की ओर देख रहा था। एकाएक अपने सिर के ऊपर की खिड़की को—जो छज्जे से लगी थी—उसने धीरे से खुलते हुए देखा। दो आदमी दरवाजे से छज्जे पर आये। धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया।

कासीमोडो ने कठिनाई से कैप्टेन को और उस युवती को पहिचाना। उस दिन प्रातःकाल युवती उसी छज्जे से कैप्टेन को बुला रही थी। छज्जा भी अंधकार में डूब रहा था।

कासीमोडो ने समझ लिया कि वे प्रेम की चोचलेबाजी में मग्न हो रहे हैं। युवती ने अफसर को अपनी कमर पकड़ने दिया था। वह उसके चुम्बन का स्वाद ले रही थी।

नीचे से कासीमोडो उस दृश्य को देखने लगा। वह दृश्य इसलिये बहुत अधिक आकर्षक था कि वह लोगों के देखने के लिये नहीं था। कासीमोडो कटु भावों के साथ उस प्रसन्नता तथा सौन्दर्य से भरे दृश्य को देख रहा था। जो हो, उसके हृदय में प्रकृति मूक न थी। यद्यपि वह अष्टावक्र था, तथापि अन्य मनुष्यों की तरह उसकी रगों में भी बिजली दौड़ सकती थी। प्रकृति ने कितना लघुतम उसे बनाया था! स्त्री, प्रेम, प्रसन्नता, सौन्दर्य, अनेक दृश्य सर्वदा उसकी आँखों के सामने से गुजरते थे, तथापि वह उनमें कुछ हिस्सा नहीं ले सकता था, केवल दूर से दर्शक की तरह देख सकता था। मगर इस दृश्य के कारण उसे क्रोध हो आया था, क्योंकि वह सोच रहा था कि जिप्सी ने यदि इस दृश्य को देखा होता, तो उसकी क्या अवस्था होती। सौभाग्यवश रात अँधेरी थी। इजमेरल्डा अगर अपने स्थान पर डटी भी होती—जिसमें कि उसे तनिक भी सन्देह न था—तो भी वह दूर होने के कारण नहीं देख सकती थी। इस विचार से उसे कुछ धैर्य हुआ।

इस बीच दोनों में चुहलबाजी बढ़ती गई। युवती कुछ और आगे न बढ़ने के लिये प्रार्थना कर रही थी। कासीमोडो को इतना ही दीख पड़ा कि वह हाथ जोड़ती थी, आँसुओं के साथ मुस्कुरा

देती थी और कैप्टेन चाव-भरी आँखों से उसकी ओर देख रहा था।

सौभाग्यवश—क्योंकि युवती अब बहुत बाधा नहीं डाल रही थी—छज्जे का द्वार खुला। एक वृद्धा वहाँ आ उपस्थित हुई। युवती घबराई-सी जान पड़ी। कैप्टेन निराश हो गया। तीनों घर के अन्दर चले गये।

थोड़ी देर के बाद कैप्टेन अपने घोड़े पर सवार हो कासीमोडो की ओर से निकला। कासीमोडो ने उसे थोड़ी दूर जाने दिया। फिर बन्दर की गति से दौड़ कर चिल्ला पड़ा—कैप्टेन!

कैप्टेन रुक गया। कासीमोडो को अपनी ओर हचकते आते देख कर कहा—दुष्ट, क्या चाहता है?

कासीमोडो पास आया। साहस के साथ घोड़े की लगाम पकड़ ली। कहने लगा—कैप्टेन! मेरे पीछे-पीछे आओ। कोई तुम से बातचीत करना चाहता है।

कैप्टेन ने कहा—शैतान! कितना कुरूप है। मैंने इसे कहीं देखा है। क्यों जी, घोड़े की लगाम क्यों पकड़ते हो? छोड़ दो।

बहरे ने उत्तर दिया—कैप्टेन! तुम यह भी नहीं पूछते कि वह कौन है?

फीबस ने कहा—मैं लगाम छोड़ने को कहता हूँ। इस तरह क्यों घोड़े की गर्दन पर लटक रहे हो? क्या इसे फाँसी का तख्ता समझते हो?

कासीमोडो ने लगाम नहीं छोड़ी। वह घोड़े को घुमाना चाहता

था। कैप्टेन की अनिच्छा को न समझ कर उसने शीघ्रता-पूर्वक कहा—कैप्टेन, आओ। वह एक स्त्री है, जो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है, वह तुम्हें प्यार करती है।

कैप्टेन ने कहा—दुष्ट, क्या मैं उन स्त्रियों के यहाँ जाने को योग्य हूँ, जो मुझे प्यार करती हैं? फिर यदि वह भी तुम्हारी तरह सुन्दरी हो तो। उससे कह देना कि मैं व्याह करने जा रहा हूँ और वह शैतान के पास जा सकती है।

कासीमोडो ने यह आशा की कि कैप्टेन को वह एक बात में जीत लेगी, इसलिये उसने कहा—मेरे लार्ड! शीघ्रता कीजिये, वह जिप्सी युवती है, जिसे आप जानते हैं।

फाबस पर इस शब्द का प्रभाव सचमुच गहरा पड़ा। पाठकों को याद होगा कि कैप्टेन, कासीमोडो द्वारा जिप्सी के छुटकारा पाने के पहिले ही, छज्जे से चला गया था। वह कभी उसका नाम न लेता था, क्योंकि जिप्सी की स्मृति से उसे बड़ा रंज होता था। फ्लुयर, जिप्सी का समाचार देना, उचित नहीं समझती थी। इसलिये कैप्टेन सोचता था कि इजमेराल्डा दो महीने पहिले ही मर चुकी है। आधी रात के बाद सुनसान गली में उस अलौकिक कुरूप को देखकर उसे प्रेत पादरी का ध्यान आ गया। उसका घोड़ा भी कासीमोडो को देखकर डर रहा था।

जिप्सी युवती!—भयभीत होकर कैप्टेन ने कहा।

क्या तुम दूसरी दुनिया से आ रहे हो?—कैप्टेन ने फिर कहा।

उसका हाथ तलवार की मुट्ठी पर पहुँच गया।

शीघ्रता कीजिये ! शीघ्रता कीजिये !—बहरे ने घोड़े का मुँह फेरने का प्रयत्न करते हुए कहा।

फीवस ने उसे जोर से एक लात मारा। कासीमोडो की आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं। उसने कैप्टेन पर वार करने की तैयारी की, मगर अपने को शान्त करके उसने कहा—ओह! तुम कितने सौभाग्यशाली हो कि तुम्हें कोई प्यार करता है!

'कोई' शब्द पर उसने जोर दिया था। फिर उसने लगाम छोड़कर कहा—जाओ।

शपथ खाते हुए फीवस ने घोड़े को एँड़ी लगाई, और गली के अंधकार में विलीन हो गया।

कासीमोडो नात्रीडेम को लौट आया। अपना दीपक जला कर मीनार पर चढ़ा। जैसा कि वह सोचता था, जिप्सी वैसे ही छत पर पड़ी थी।

कासीमोडो को देख कर जिप्सी उससे मिलने के लिये उठ दौड़ी। किन्तु अपने हाथों को पकड़ते हुए बोली—अकेला ?

कासीमोडो ने उदास होकर कहा—मैं उसे पा न सका।

युवती ने क्रोध कर कहा—तुम्हें रात भर प्रतीक्षा करनी चाहिये थी।

कासीमोडो ने सिर नीचा करके कहा—दूसरे समय मैं ध्यानपूर्वक उसकी राह देखूँगा।

जाओ—जिप्सी ने कहा।

वह चला गया। जिप्सी उससे खफा थी। वह जिप्सी की

भर्त्सना को सह सकता था, मगर उसे शोकाकुल न बना सकता था। उसने सारी पीड़ा अपने हिस्से में रख ली।

इस घटना के बाद जिप्सी ने उसे न देखा। कभी-कभी वह घंटाघर से उसकी ओर देखता हुआ दिखाई दे देता था, मगर ज्यों ही जिप्सी उधर आँख उठाती, त्यों ही वह लुप्त हो जाता था।

उस कुबड़े की अनुपस्थिति से युवती को कुछ दुख न हुआ। इसके लिये वह उस लँगड़े को अपने दिल में धन्यवाद भी देती थी। बहरे को भी इस विषय में कोई भ्रम न था।

युवती उसे न देखती थी, मगर वह वहाँ था। युवती के भोजन की सामग्री उसके सोने के समय ही पहुँच जाती थी। एक दिन युवती ने अपनी खिड़की पर चिड़िया का एक पिंजड़ा देखा।

कभी-कभी सन्ध्या समय घंटाघर से गाने का स्वर युवतीके पास आ जाता था। वह मानो युवती को सुलाने के लिये 'लोरी' थी। गीत अतुकान्त था, जिसे केवल कोई बहरा ही बना सकता था। उसका मतलब यहाँ दे दिया जाता है—

मुखाकृति पर न भूलो ऐ कुमारी!
(मिटेगी जब प्रणय मद की खुमारी!)
हृदय में पैठ कर सौन्दर्य देखो—
कुरूपों में छिपी है वाँ निनारी॥

सुन्दर युवकों के हृदय सूने पुहुप समान।
रहि न सकत जहँ देर लौं, प्रेम-वास अम्लान॥
देवदारु सुन्दर नहीं पन चिनार को छाँह।
रहत फलान्वित तउ हरो नहि फलन को भाँत॥

सुनाता हूँ मैं क्योंकर यह कहानी?
जगत में रार सुन्दरता ने ठानी॥
हसीनों में ही नित है प्यार होता।
बहार ढाता जिनों पर अबे पानी॥
सुना, सौंदर्य ही सबका खुदा है।
जहाँ पर्दे में है, सबसे जुदा है॥
(जगत रौशन है इसके नूर से नित)
सुना, सौन्दर्य ही सबका खुदा है॥
कागा केवल दिन उड़े, उरुआ केवल रात।
हम उड़त निस दिन मगन, संध्या और प्रभात॥

एक दिन प्रातःकाल, नींद टूटने पर, उसने अपनी खिड़की पर दो गुलदस्ते देखे। एक गुलदस्ता बड़ा सुन्दर था। वह एक काँच के सुन्दर गुलदान में था, पर वह गुलदान फूटा था। उसका जल बह गया था, उसके गुलदस्ते के फूल मुरझा गये थे। दूसरा गुलदान मामूली मिट्टी का था, किन्तु उसका जल ज्यों-का-त्यों था—बहा न था, उसके फूल ताजे थे।

इजमेरल्डा ने मुरझाये हुए गुलदस्ते से एक पुष्प उठा लिया। वह उसे दिन भर अपनी छाती से लगाये रही। मैं नहीं कह सकता कि उसने जान-बूझ कर किसी मतलब से वैसा किया।

उस दिन मीनार से संगीत नहीं सुन पड़ा। उसे कोई चिन्ता भी न थी। वह 'दजाली' को पुचकारने में, गाडेलोरियर-महल की ओर देखने में, फीवस के विषय में मन-ही-मन बातें करने में और चिड़ियों को चारा चुगाने में अपने समय को काट लेती थी।

उसने कासीमोडो को न देखा, न उसकी आवाज ही सुन पड़ी। मालूम होता था, जैसे अभागे ने गिरजा छोड़ दिया हो। किन्तु एक दिन, जब उसे नींद नहीं आ रही थी और जब वह फीबस को याद कर रही थी, उसने अपनी कोठरी के पास एक आह सुनी। डर कर वह उठी और चाँदनी रात में उसने कोठरी के दरवाजे के पास ही एक गट्ठर देखा—वह कासीमोडो था, जो खुले पत्थर पर सो रहा था!

चोर-दरवाज़े की कुंजी

इस बीच आर्चडिकन को पता लग गया था कि जिप्सी युवती को कासीमोडो ने बड़े विचित्र ढंग से बचा लिया है। इस समाचार के प्रभाव को वह समझ न सकता था। वह जानता था कि इज़मेरल्डा मर चुकी थी। वह कुछ शान्त हो चला था। वह शोक की गहराई तक पहुँच चुका था।

मनुष्य के हृदय में असीम निराशा को स्थान नहीं मिल सकता। जब 'स्पंज' पूरा भींग जाता है, तब जल समुद्र उसके ऊपर से योंही निकल जाता है—'स्पंज' में उसकी एक बूँद भी नहीं सूख सकती।

इज़मेरल्डा के मरने पर 'स्पंज' पानी से भर गया था। क्लाड के लिये इस संसार में सब कुछ समाप्त हो गया था। मगर यह जानना कि वह जीवित है और फीबस भी जीवित है, नया आघात सहना था, भाग्य की उथल-पुथल में गोते खाना था।

इस समाचार के पाने के पश्चात् उसने अपने-आप को अपनी पढ़ने की कोठरी में बंद कर लिया। वह अब गिरजे में प्रार्थना के अवसर पर भी नहीं जाता था। कई हफ्ते तक वह इसी प्रकार पड़ा रहा। लोग समझते थे कि वह बीमार है, और सचमुच वह बीमार था भी।

उस एकान्त में वह क्या कर रहा था ? किन विचारों में वह युद्ध कर रहा था ? क्या वह अपनी भयानी लालसाओं से अन्तिम युद्ध कर रहा था ? या, वह जिप्सी को मार डालने और फिर अपने मरने का उपाय सोच रहा था ?

वह दिन भर अपनी खिड़की पर खड़ा रहता था। वहाँ से इजमेरल्डा को देखा करता था। उसने उसे कभी बकरी के साथ, कभी कासीमोडो के साथ देखा। उसने कासीमोडो की आज्ञाकारिता तथा सद्व्यवहार को भी देखा।

एक दिन उसे एक सन्ध्या की बात याद आ गई, जब कासीमोडो ने बड़े ध्यान से नाचती हुई इजमेरल्डा को देखा था। उसकी स्मरणशक्ति बेशक अच्छी थी।

ईर्षा करने वालों के लिये स्मरण-शक्ति असाध्य रोग का आक्रमण है।

कासीमोडो ने किस लिये इजमेरल्डा को बचाया था ? उस युवती तथा उस बहरे की गोष्ठी उसे कोमलता-पूर्ण जान पड़ने लगी। उसके हृदय में एक अपूर्व ईर्षा जाग उठी। वह सोचने लगा कि कैप्टेन की बात बुरी थी, किन्तु इस म्लेच्छ की बात तो—उफ़।

उसे रात को नींद नहीं आती थी। उसकी विषय-वासना आत्मा के विरुद्ध खड़ी हो गई। यह सोच कर कि जिप्सी इतना समीप रहती है, वह अपने बिस्तर पर लोटा करता था—छटपट किया करता था। रात भर इजमेरल्डा के चिन्तन में पड़ा रहता था।

चोर-दरवाज़े की कुंजी

इस बीच आर्चडिकन को पता लग गया था कि जिप्सी युवती को कासीमोडो ने बडे विचित्र ढग से बचा लिया है। इस समाचार के प्रभाव को वह समझ न सकता था। वह जानता था कि इस्मेरल्डा मर चुकी थी। वह कुछ शान्त हो चला था। वह शोक की गहराई तक पहुँच चुका था।

मनुष्य के हृदय मे असीम निराशा को स्थान नहीं मिल सकता। जब 'स्पज' पूरा भींग जाता है, तब जल-समुद्र उसके ऊपर से योंही निकल जाता है—'स्पज' मे उसकी एक बूँद भी नहं सूख सकती।

इस्मेरल्डा के मरने पर 'स्पज' पानी से भर गया था। डाँ के लिये इस ससार मे सब कुछ समाप्त हो गया था। मगर यह जानना कि वह जीवित है और फीबस भी जीवित है, नया आघात सहना था, भाग्य की उथल-पुथल में गोते खाना था।

इस समाचार के पाने के पश्चात् उसने अपने-आप को अपनी पढ़ने की कोठरी में बद कर लिया। वह अब गिरजे में प्रार्थना के अवसर पर भी नहीं जाता था। कई हफ्ते तक वह इसी प्रकार पडा रहा। लोग समझते थे कि वह बीमार है, और सचमुच वह बीमार था भी।

उस एकान्त में वह क्या कर रहा था ? किन विचारों से वह युद्ध कर रहा था ? क्या वह अपनी भयानकी लालसाओं से अन्तिम युद्ध कर रहा था ? या, वह जिप्सी को मार डालने और फिर अपने मरने का उपाय सोच रहा था ?

वह दिन भर अपनी खिड़की पर खड़ा रहता था। वहाँ से इजमेरल्डा को देखा करता था। उसने उसे कभी बकरी के साथ, कभी कासीमोडो के साथ देखा। उसने कासीमोडो की आज्ञाकारिता तथा सदव्यवहार को भी देखा।

एक दिन उसे एक सध्या की बात याद आ गई, जब कासीमोडो ने बड़े ध्यान से नाचती हुई इजमेरल्डा को देखा था। उसकी स्मरणशक्ति बेशक अच्छी थी।

ईर्षा करने वालों के लिये स्मरण शक्ति असाध्य रोग का आक्रमण है।

कासीमोडो ने किस लिये इजमेरल्डा को बचाया था ? इस युवती तथा इस बहरे की गोष्ठी उसे कोमलता-पूर्ण जान पड़ने लगी। उसके हृदय में एक अपूर्व ईर्षा जाग उठी। वह सोचने लगा कि कैप्टेन की बात बुरी थी, किन्तु इस म्लेच्छ की बात तो—उफ़।

उसे रात को नींद नहीं आती थी। उसकी विषय-वासना आत्मा के विरुद्ध खड़ी हो गई। यह सोच कर कि जिप्सी इतना समीप रहती है, वह अपने बिस्तर पर लोटा करता था—छटपट किया करता था। रात भर इजमेरल्डा के चिन्तन में

सब घटनाएँ, एक के बाद दूसरी, आकर उसके सामने चित्र की तरह खड़ी हो जाती थीं। सब घटनाओं में इज़मेरल्डा उपस्थित रहती थी। इन चित्रों को देख कर वह नख से शिख तक काँप उठता था। यहाँ तक कि एक रात को इन चित्रों ने उसके मस्तिष्क को गर्म कर दिया। वह अपने तकिये को दाँत से काटने लगा। फिर वह अपने बिस्तर से उछल कर उठ पड़ा। कोठरी में बाहर आ खड़ा हुआ। उसके हाथ में दीपक था। वह जंगली पशु की तरह दिखाई दे रहा था। उसके नेत्रों से तरलाग्नि निकल रही थी। वह जानता था कि मठ से मीनार तक जाने के लिये कुंजी कहाँ मिलेगी, क्योंकि जो चोर दरवाजा मठ और गिरजे को सम्बद्ध करता था, उसकी कुंजी सर्वदा उसी के पास रहती थी।

फिर चोर-दरवाज़े की कुंजी

उस रात को इज़मेरल्डा सुख की नींद सो रही थी। वह तीरस का स्वप्न देख रही थी। उसी समय मालूम हुआ कि उसने कहीं शोर-गुल सुना। वह चिड़िया की नींद सोती थी, साधारण खटके से भी जग पड़ती थी। उसकी आँखें खुल गईं। रात अँधेरी थी, तो भी दीप-प्रकाश में अपनी खिड़की पर उसने एक चेहरा देख लिया। जब उस चेहरे ने यह देखा कि इज़मेरल्डा उसकी ओर देख रही है, तब उसने दीये को फूँक कर बुझा दिया। तो भी युवती ने उसे देख लिया और उसकी आँखें भय से बंद हो गईं।

ओह—उसने धीमे सुर में कहा—पादरी!

विद्युत् गति से उसकी सारी विपत्तियाँ फिर उसके सामने आ गईं। डर से वह अपने बिस्तर पर गिर पड़ी। क्षण भर के बाद ही उसे किसी के हाथों के स्पर्श का अनुभव हुआ, जिससे वह क्रोध के कारण चौंक पड़ी।

पादरी उसके पार्श्व में आ गया था। उसने युवती को अपने भुज-पाश में बाँध लिया। वह चिल्लाने का प्रयत्न करने लगी, मगर कर न सकी। भय और क्रोध से काँपती हुई आवाज़ में उसने अन्त में कहा—दूर हो पिशाच! दूर हो हत्यारा!

दया! दया!—धीरे से पादरी ने कहा।

अपनी जिह्वा को उसने युवती के कंधे पर लगा दिया। उसके चुम्बन में बाधा डालने के लिये, उसके गंजे सिर के बालों को दोनों हाथों से पकड़ कर, युवती उसके सिर को अलग करने लगी।

दया!—फिर अभागे पादरी ने कहा—तुम नहीं जानतीं कि मेरा प्यार तुम्हारे प्रति क्या है? यह अग्नि है, गला पारा है, मेरे हृदय के लिये हजारों खंजरों की चोट है।

पादरी ने युवती के हाथ को पकड़ लिया। सुन्दरी ने चिल्ला कर कहा—छोड़ दो, नहीं तो तुम्हारे मुँह पर थूक दूँगी।

पादरी ने हाथ छोड़ दिया। दैन्यपूर्ण स्वर में कहा—जो कुछ चाहो, मेरे साथ करो—मुझे मारो, अपमान करो; किन्तु मुझ पर तरस खाओ, मुझे प्यार करो।

क्रोधी बालक की तरह वह पादरी को पीटने लगी—अपने हाथ से, नाखूनों से, उसका मुँह विकृत करने लगी।

बेचारे पादरी ने फिर उसे अपने भुज-पाश में बाँधते हुए पुचकारना प्रारम्भ किया। कहा—प्यार करो, मुझे प्यार करो, करुणा करो, दया करो।

युवती ने पादरी को अपने से बलिष्ठ पाया। पादरी ने दाँत पीसते हुए कहा—अब इस तरह से काम न चलेगा।

पादरी के भुज-पाश में विवश एवं विजित हो युवती काँपने लगी। पादरी का लम्पट हाथ उसके कोमल शरीर पर फिरने लगा। युवती ने अन्तिम प्रयास किया, 'भूत! भूत!! भूत!!!' चिल्ला उठी।

कोई नहीं आया। केवल 'दजाली' मे मे कर रही थी।

चुप—पादरी ने कहा।

उस हाथा पाई में, फर्श पर पडी हुई धातु की बनी कोई ठटी चीज, युवती के हाथ में पड गई। आशा के द्रुत सचार के साथ उसने उस चीज को उठा लिया और यथाशक्ति जोर से उसे बजाया। सीटी का तीव्र शब्द चारो ओर गूँज गया।

यह क्या है?—पादरी ने चकित होकर पूछा।

उसी समय पादरी को मालूम हुआ कि पीछे से आकर किसी ने अपनी शक्तिशाली भुजाओं से उसे पकड लिया। कोठरी अँधेरी थी, वह इस प्रकार अचानक आनेवाले को देख न सका। किन्तु आगन्तुक के दाँतो की क्रोध-भरी कटकटाहट उसने सुनी। उसे मालूम हो गया कि आगन्तुक वही कासीमोडो है, दूसरा कोई हो नहीं सकता था। उसे याद आया कि कोठरी में आते समय दरवाजे पर उसने एक गट्ठर-सा कुछ पड़ा देखा था।

पादरी जोर से 'कासीमोडो। कासीमोडो!' चिल्ला उठा। वह भूल गया कि कासीमोडो वज्रबधिर है। बस एक ही क्षण मे वह फर्श पर धम से गिर पडा। उसकी छाती पर आगन्तुक का घुटना था। वह कासीमोडो के घुटनों को पहिचानता था, मगर उस समय कर ही क्या सकता था? कासीमोडो उसे पहिचान न रहा था, अँधेरे ने उसे अंधा बना दिया था। शायद यही पादरी का अन्तिम समय था।

युवती शेरनी की तरह दया-हीन हो रही थी। पादरी को

बचाने के लिये वह हिली तक नहीं। कासीमोडो के हाथ की कटारी पादरी के सिर के पास पहुँच गई। एकाएक वह आगा पीछा करने लगा। उदास होकर बोला—रक्तपात ठीक नहीं।

पादरी का पाँव पकडकर वह कोठरी के बाहर घसीट ले गया। सौभाग्यवश कुछ देर पहिले चन्द्रदेव का आगमन हो गया था। इसलिये जब वे चौखट के बाहर आये, तब चाँदनी उन पर आ पडी। कासीमोडो ने पादरी को देखा। उसे देखते ही छोड कर काँपता हुआ दूर खडा हो गया।

युवती द्वार तक आई थी। उसने उन दोनो को नाटक के पात्र की तरह पार्ट बदलते देखा। वह आश्चर्य मे डूब गई।

अब, पादरी धमकी दे रहा था और कासीमोडो हाथ जोडे खडा था। पादरी ने क्रोध पूर्वक कासीमोडो को हट जाने का इशारा किया। बहरा अपना सिर नीचा करके, घुटने के बल बैठ कर, कहने लगा—मेरे स्वामी,! पहिले मुझे मार डालिये, ' फिर जो जी मे आव सो कीजिये।

इतना कह कर अपनी छोटी-सी कटारी उसको देने लगा। पादरी उसकी ओर दौड पडा, मगर युवती ने उस समय पादरी से भी अधिक फुर्ती दिखलाई। उसने कासीमोडो के हाथ से कटारी छीन ली। तब पागलों की तरह हँस कर कहने लगी—अब आगे बढो।

उसने उस तेज कटारी को हाथ में लेकर ऊपर उठा लिया था। पादरी कुछ निश्चय न कर सका। युवती अवश्य उसे मार डाले होती। तडप कर बोली—कायर! तेरी हिम्मत कहाँ गई?

फिर पादरी के हृदय को वेधने के लिये अकरुण दृष्टि से देखती हुई वह कहने लगी—मैं जानती हूँ कि फीबस मरा नहीं है।

पादरी ने एक लात मार कर कासीमोडो को गिरा दिया, और दौड़ते हुए नीचे उतरने लगा। वह क्रोध से अन्धा हो रहा था।

पादरी के चले जाने पर कासीमोडो ने सीटी उठा कर युवती को दे दी, और वह भी वहाँ से चला गया।

युवती उस दृश्य से अति श्रान्त हो निस्तर पर पड़ कर रोने लगी। उसके हृदयाकाश के क्षितिज पर फिर काले बादल छा रहे थे।

पादरी टटोलता हुआ अपनी कोठरी में पहुँचा। वह कासीमोडो से ईर्षा करने लगा। उसने धीरे से यह घातक वाक्य कहा—दूसरा कोई उसका स्वामी नहीं हो सकता!

चौथा भाग

ग्रींगोयरे का विचार-तारतम्य

जब ग्रींगोयरे ने देखा कि नाटक के प्रधान पात्रों के लिये फाँसी के अतिरिक्त कुछ और ठिकाने की आशा नहीं, तब वह इस कहानी से दूर ही रहने लगा। वह अब भी बदमाशों के ही साथ में रहता था, क्योंकि उसका विचार था कि पेरिस में वही सबसे अच्छा समाज था, और बदमाशों का गिरोह अब भी इजमेरल्डा को भूला न था। उसने उनके जबानी सुन लिया था कि उसकी सुराही द्वारा विवाहिता पत्नी ने नाट्रीडेम में शरण ली है। इससे वह बहुत प्रसन्न था, मगर उसको देखने का उसे लोभ न हुआ। कभी-कभी वह 'टजाली' के भाग्य के विषय में सोच लेता था। दिन में वह मदारी के काम से रोटी कमाता था और रात को बिशप के यहाँ भेजने के लिये दरख्वास्तें लिखता था।

एक दिन वह एक गली में, विशप की कचहरी के पास, खड़ा उसके दरवाजे की कारीगरी की आलोचना कर रहा था। उस समय उस स्वार्थपूर्ण आनन्द में मग्न हो रहा था, जिसमें पड़कर कलाविद् संसार को भूल जाता है और केवल कला ही को देखता है तथा कला ही में संसार को देखता है। एकाएक उसके कंधे पर एक हाथ आ पड़ा। वह मुड़ा। उसने अपने मित्र 'मास्टर आर्चडिकन' को पहिचाना।

बहुत दिनों के बाद आर्चडिकन से मिलने पर वह आश्चर्यित हो रहा था। क्लाड को देखकर उसके विचार में खलबली मच जाती थी।

पादरी थोड़ी देर तक चुप रहा। कवि ने उसे एकदम बदला हुआ पाया। वह पीला पड़ गया था। उसकी आँखें एकदम धँस गई थीं। उसके केश सफ़ेद हो आये थे।

पादरी ने धीरे से कहा—मास्टर पियरे! अच्छे तो हो?

पियरे ने उत्तर दिया—मेरा स्वास्थ्य तो अच्छा है।

ग्रींगोयरे की ओर ध्यान से देखते हुए पादरी ने कहा—तुमको कोई चिन्ता नहीं है?

नहीं।

इस समय तुम क्या कर रहे हो?

आप देख रहे हैं कि मैं इन पत्थरों पर की कारीगरी को देख रहा हूँ—शिल्प-कला का अध्ययन कर रहा हूँ।

पादरी ने विकृत मुस्कान के साथ कहा—इसमें तुम्हारा मनोरंजन हो जाता है?

यह स्वर्ग है—कवि ने दीवार पर हाथ रखते हुए कहा।

इसके बाद ग्रींगोयरे ने दीवार पर की कारीगरी और मूर्त्तियों की प्रशसा में एक लेक्चर दे डाला।

सचमुच यह काम बड़ा दिलचस्प है—पादरी ने कहा।

कवि ने भीतर के बेल बूटों की प्रशसा की।

अच्छा, तुम प्रसन्नचित्त हो—पादरी ने कहा।

जी हाँ। ईमान से कहता हूँ। पहिले मैं स्त्रियों को प्यार करता था। फिर जानवरों को प्यार करने लगा। अब मैं पत्थरों को प्यार करता हूँ। ये भी, जानवरों और स्त्रियों की तरह, आनन्ददायक हैं और उनसे कम बेवफा हैं।

सचमुच?—पादरी ने आश्चर्य से पूछा।

ग्रींगोयरे ने शिल्पकला के अध्ययन से प्राप्त होनेवाली अपनी प्रसन्नता का वर्णन कर सुनाया।

तुम्हें और कुछ न चाहिये?—पादरी ने पूछा।

नहीं।

तुम्हें कोई अफसोस नहीं है?

न अफसोस, न चाह, मैंने अपने जीवन को सुव्यवस्थित कर लिया है।

मनुष्य की व्यवस्था को नियति अव्यवस्थित कर देती है—पादरी ने उत्तर दिया।

मैं दार्शनिक विचारों द्वारा इसका मौक़ा ही नहीं आने देता—कवि ने कहा।

इसके पश्चात् पादरी ने कवि से उसकी जीवन-वृत्ति के विषय में बातचीत की।

इसी समय चार सरकारी घुड़सवार वहाँ से गुज़रे। उनके आगे एक अफ़सर भी था।

आप उस अफसर की तरफ़ क्यों इस तरह घूरते हैं ?—कवि ने पादरी से पूछा।

क्योंकि मैंने कहीं उसे देखा है।

उसका क्या नाम है ?

शायद फीबस'।

कितना असुन्दर नाम है !—दार्शनिक कवि ने कहा।

इधर आओ, मुझे तुमसे कुछ कहना है—पादरी ने कहा।

सिपाहियों के चले जाने के बाद से पादरी के गंभीर चेहरे पर कुछ अस्तव्यस्तता-भरी भावना खेल रही था। ग्रींगोयरे आज्ञानुवर्ती की तरह उनके पीछे-पीछे जा रहा था। वे एक गली में पहुँचे, जो उस समय सुनसान पड़ी थी। पादरी वहीं रुक गया।

आपको मुझसे क्या कहना है ?—ग्रींगोयरे ने पूछा।

पादरी ने सोचते हुए कहा—क्या तुम उन सिपाहियों की वर्दी को अपने और मेरे कपड़ों से सुन्दर नहीं समझते ? इस विषय में तुम्हारा क्या विचार है ?

ग्रींगोयरे ने सिर हिलाते हुए कहा—मैं शपथ-पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरा लाल-पीला कोट उनकी लोहे की वर्दी से हज़ार-

लाख बार सुन्दर है। उस वस्त्र को पहिन कर चलते समय शोर मचाने में क्या आनन्द आ सकता है?

ग्रींगोयरे! तुमने उन सिपाहियों को योद्धा के भेप में देखकर कभी ईर्षा नहीं की?

महाशय आर्चडिकन! मैं किस चीज़ में ईर्षा करूँ? उनके बल से या उनके कवच से? चिथड़ों में रहनेवाली दार्शनिकता और स्वतन्त्रता ही अधिक वाञ्छनीय हैं। मैं शेर की पूँछ होने से मक्खी का सिर होना अधिक पसन्द करता हूँ।

कुछ सोचते हुए पादरी ने फिर कहा—आश्चर्य है! तो भी सुन्दर वर्दी बड़ी भली वस्तु है।

पादरी को विचार में मग्न पाकर ग्रींगोयरे पास ही के एक द्वार की कारीगरी को देखने चला गया। वह ताली बजाता हुआ वापस आया। बोला—महाशय! यदि आप उन सिपाहियों की वर्दी के विचार में तल्लीन न होते, तो मैं आप से उस द्वार की ओर दृष्टि उठाने की प्रार्थना करता। देखिये, लार्ड आनरी के महल का द्वार ससार में सबसे सुन्दर है।

पियरे ग्रींगोयरे! तुम ने उस नाचनेवाली जिप्सी का क्या किया?—पादरी ने पूछा।

इसमेरल्डा? अजी आप भी विषय-परिवर्त्तन करने में गजब करते हैं!

वाह! क्या वह तुम्हारी पत्नी नहीं थी?

लिये हुआ था। क्या आप आज भी उसी के विषय में विचार कर रहे हैं ?

पादरी को तिरछी निगाहों से देखते हुए ग्रागोयरे ने मुस्कराहट के साथ अन्तिम वाक्य पूछा।

और तुम—तुम उसके विषय में अब नहीं सोचते ?

कभी-कभी मैं दूसरी बातों में निमग्न रहता हूँ। ईश्वर की कसम, उसकी बकरी बड़ी सुन्दर थी।

उस युवती ने तुम्हारे जीवन की रक्षा की थी न ?

जी हाँ।

उसका क्या हुआ ? तुमने उसके साथ क्या किया ?

मैं कुछ नहीं कह सकता। शायद वह फाँसी पर लटका दी गई।

तुम सचमुच ऐसा सोचते हो ?

मैं ठीक ठाक नहीं कह सकता। जब मैंने देखा कि उसे फाँसी मिलेगी, तब मैं मामले से अलग हो गया।

इस विषय में इतना ही जानते हो ?

ठहरिये, मैंने सुना है कि उसने नाट्राडेम में शरण ली है। इससे मुझे बड़ी प्रसन्नता मिली है। मगर मुझे यह पता नहीं लगा कि बकरी बची है या नहीं।

मैं तुम्हें और अधिक सुनाता हूँ।

पादरी की आवाज कुछ ऊँची हो उठी। बोला—उसने सचमुच नाट्रेडेम में शरण ली थी, किन्तु तीन दिन के अन्दर न्याय-विभाग

उसे फिर पकड़ेगा और उसे फाँसी देगा; पार्लमेंट की ऐसी ही आज्ञा है।

कितना दुःख है!—ग्रीगोयरे ने कहा।

पादरी फिर शान्त एवं गम्भीर हो गया।

कवि ने कहना आरम्भ किया—किस पिशाच ने ऐसा क्रूर कर्म किया है? यदि उस बेचारी ने नाट्रीडेम में शरण ली थी, तो इससे कौन-सी हानि होती थी?

संसार में शैतान भी हैं—पादरी ने कहा।

सचमुच यह काम पैशाचिक है—कवि ने कहा।

उसने तुम्हारी जान बचाई थी न?—पादरी ने पूछा।

मेरे भलेमानस मित्र बदमाशों से। मैं फाँसी पर लटका दिया गया होता। उसके लिये उन्हें अब बड़ा अफसोस होता।

क्या अब उसकी सहायता के लिये कुछ नहीं कर सकते?

हृदय से। मगर यदि मैं ही आफत में फँस जाऊँ तो?

इससे क्या?

क्या? आप कितने कृपालु हैं! मैंने अभी दो बड़े ग्रंथों का श्रीगणेश किया है।

पादरी ने अपने ललाट पर उँगली दे मारी—किस्मत ठोंकी! उसके अन्तःकरण का आन्दोलन, प्रयत्न करने पर भी, प्रकट हो जाता था।

तब उसकी किस प्रकार रक्षा होगी?—पादरी ने पूछा।

उसकी किस प्रकार रक्षा होगी ?—स्वप्न देखते हुए मनुष्य की तरह पादरी ने फिर कहा।

ग्रींगोयरे ने अपने ललाट पर हाथ रख लिया। कुछ ही देर के बाद कहा—मास्टर ! मेरी कल्पना अभी जीवित है। मान लीजिए कि बादशाह से उसे क्षमा करने के लिये प्रार्थना की जाय, तो ?

ग्यारहवें लुई, और क्षमा !—पादरी ने आश्चर्य प्रकट किया।

ग्रींगोयरे प्रश्न हल करने का दूसरा साधन सोचने लगा।

अच्छा, आपकी राय हो, तो मैं दाइयों के नाम एक वक्तव्य लेलूँ, ताकि जिप्सी गर्भवती करार दी जाय।

पादरी की धँसी आँखों से आग की चिनगारियाँ निकलने लगीं।

गर्भवती ? दुष्ट ! तुम इस विषय में कुछ जानते हो ?

ग्रींगोयरे पादरी की आँखों को देखकर डर गया। उसने शीघ्रता पूर्वक कहा—नहीं नहीं, मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। मेरी शादी तो केवल नाम-मात्र की हुई थी। मगर इससे समय तो मिल जायेगा।

चुप रहो, मूर्खता न करो, किसी को बदनाम न करो।

आप व्यर्थ बिगड़ रहे हैं। इससे किसी को कुछ हानि न पहुँचेगी। हमलोगों को समय मिल जायगा और दाइयों को कुछ रुपये, जो बेचारी गरीब होती हैं।

पादरी ने उसकी बातें न सुनीं। वह धीरे धीरे कह रहा था—उसे किसी प्रकार बचाना होगा। वह तीन दिन के अन्दर फाँसी

पर लटक जायगी। यदि पार्लामेंट का हुक्म न भी होता, तो भी कासीमोडो । आह, स्त्रियों की रुचि भी कितनी भद्दी होती है!

उसने उच्च स्वर से फिर कहा—मास्टर पियरे! याद रक्खो, तुम्हारा जीवन उसी के कारण बचा है। मैं अपना विचार साफ साफ कहता हूँ। चर्च के चारो ओर पहरा है। उसमें केवल वे ही बाहर निकल सकते हैं, जो भीतर जाते देखे जाते हैं। तुम भीतर जा सकते हो। तुम्हारे भीतर आने पर मैं तुम्हे उसके पास ले चलूँगा। तुम उसके साथ वस्त्र-परिवर्त्तन कर लोगे और वह तुम्हारा ओवर कोट पहिन कर बाहर निकल आयेगी।

यहाँ तक तो बहुत सुन्दर—दार्शनिक ने कहा—इसके बाद?

इसके बाद? वह तुम्हारे कपडे पहिन कर बाहर निकल जायगी और तुम वहीं ठहर जाना। शायद वे तुम्हें फाँसी के तख्ते पर किन्तु वह तो बच जायगी।

ग्रींगोयरे गम्भीर होकर कान खुजलाने लगा। फिर बोला—यह ऐसा विचार है, जो मुझे सात जन्म में भी नहीं सूझता।

ग्रींगोयरे! तुम्हारा इस उपाय के विषय में क्या मत है?

मैं कहता हूँ कि मेरे फाँसी पड जाने में 'शायद' बाधा न डाल सकेगा। निस्सन्देह वे मुझे फाँसी दे देंगे।

इसकी क्या चिन्ता?

शैतान!—ग्रींगोयरे ने कहा।

उसने तुम्हारी जान बचाई थी। तुम केवल अपना ऋण चुकाओगे।

ऐसे बहुत से ऋण हैं, जिन्हें मैंने नहीं चुकाया है।

मास्टर पियरे! यह अवश्य करना पड़ेगा—पादरी ने अधिकार-सूचक स्वर में कहा।

आश्चर्य में डूब कर ग्रींगोयरे ने कहा—क्लाडे! तुम उस विचार को कस कर पकड़ रहे हो। मैं कहता हूँ कि तुम गलती कर रहे हो। मैं कोई कारण नहीं पाता कि दूसरे के लिये मैं क्यों फाँसी पर चढ़ूँ?

इसके उपरान्त पादरी ने एक बड़ा-सा व्याख्यान दिया, जिसका अर्थ यही था कि जिप्सी बाला की कृपा से ग्रींगोयरे साँस ले रहा था, नहीं तो वह कभी का दुनिया से उठ गया होता। क्या यह सम्भव था कि, कवि अपनी रक्षिका की रक्षा न करे और उस सुन्दरी युवती का आदर्श मार्ग न ग्रहण करे?

पादरी ने करुणाजनक शब्दों में ग्रींगोयरे की करुणा को जागृत करने का प्रयत्न किया। ग्रींगोयरे ध्यान से सुन रहा था।

फिर उसने अनिश्चितता का भाव प्रकट किया। वह विचारने लगा कि शायद वे उसे फाँसी पर न लटकावें—शायद वे उसे छोड़ दें, फिर भी मृत्यु सब को एक-न-एक दिन खाती ही है।

वह मृत्यु के विषय में फिलासफी छाँटने लगा—मृत्यु दुःख नहीं है, उससे डरने का कोई कारण नहीं है।

पादरी ने हाथ बढ़ाकर थकथक करते हुए कवि से पूछा—तो ठीक रहा, तुम कल आओगे?

नींद से उठते हुए की तरह ग्रींगोयरे ने कहा—नहीं, फाँसी पर भूल जाने के लिये नहीं।

नमस्कार—पादरी ने कहा, फिर धीरे से अपने होठों के बीच में कहा—मैं फिर तुमसे समझ लूँगा।

इस नर-पिशाच को देखने की मेरी इच्छा नहीं होती—दूसरी ओर जाते हुए ग्रींगोयरे ने कहा। फिर कुछ रुक कर बोला—ठहरो, ठहरो, पुराने मित्रों में मनमुटाव न होना चाहिये। तुम अच्छा करते हो जो उस युवती—मेरी स्त्री—में दिलचस्पी लेते हो। लेकिन उसे छुड़ाने का उपाय मुझे पसन्द नहीं है। मान लो कि मैं कोई दूसरा उपाय बताऊँ, तो? ऐसा उपाय, जिससे साँप भी मरे और डंडा भी न टूटे। क्या यह आवश्यक है कि मैं अवश्य ही फाँसी पर चढ़ूँ?

पादरी ने उसे पकड़ते हुए कहा—तुम कितना बकते चले जाते हो! तुम्हारा उपाय क्या है?

अपनी उँगली को नाक पर रख कर ग्रींगोयरे ने कहा—गुंडों की शूरता तो आप जानते ही हैं। वे उसे प्यार करते हैं। बात की बात में वे उसके लिये उपद्रव मचा सकते हैं। इससे सरल कोई काम नहीं है। नाट्रेडेम पर वे एकाएक धावा बोल देंगे। उस गड़बड़ी में उसे भगाया जा सकता है। कल रात को।

यही है उपाय?—पादरी ने उसके कन्धे को हिलाते हुए पूछा।

ग्रींगोयरे ने उसके कान में कुछ कहते हुए प्रकट रूप में कहा—

सफलता निश्चित है। शैतान भी देखेगा कि मैं मूर्ख नहीं हूँ। आप बता सकते हैं, उसकी बकरी भी उसके साथ है ?

हाँ।

वे उसे भी तो फाँसी देना चाहते थे ?

इससे मुझको मतलब ?

ग्रींगोयरे ने फिर पादरी के कान में कुछ कहा। पादरी ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा—कल।

कल—कवि ने भी कहा।

दूसरी ओर जाते हुए पादरी ने कहा—बड़ा मजेदार सौदा है ग्रींगोयरे। चिन्ता न करो। यह कोई न कहेगा कि आदमी छोटा है, इसलिये बड़े कामों से डरता है।

गुंडा-वृत्ति

लौटने पर आर्चडिकन ने अपने भाई 'जेहन' को, अपनी प्रतीक्षा में, अपनी कोठरी के द्वार पर पाया। प्रतीक्षा की दीर्घ घडियों को उसने अपने भाई के चेहरे का चित्र बनाने में बिताया था। उस चित्र में आर्चडिकन की नाक हद से ज्यादा लम्बी थी।

फ्राडे दूसरे विचारों में तल्लीन था। उसने कठिनाई से अपने भाई की ओर देखा।

भैया!—जेहन ने डरते-डरते कहा—मैं आपसे मिलने के लिये आया हूँ।

पादरी उसकी तरफ देखे ही बिना बोला—कहो।

भैया! आप मुझ पर इतनी कृपा रखते हैं और ऐसी हितकर शिक्षा देते हैं कि मैं बार-बार आपके पास आता हूँ।

क्या?—पादरी ने कहा।

भैया! आपकी शिक्षाएँ कितनी अच्छी थीं। आपने कहा था कि बिना छुट्टी लिये रात को कॉलेज से बाहर न जाओ, किसी से झगडा न करो, मूर्खों की भाँति न रहो, मास्टरों की मार को चुपचाप सह लो, नित्य सन्ध्या को गिरजे में जाकर प्रार्थना गीत गाओ। ओह! कैसे अच्छे ये उपदेश थे!

क्या?

भैया। आपके सामने आज एक पापी, दुखी, दुष्ट, अपराधी, असत्य भाषी तथा पिशाच खड़ा है। मेरे प्यारे भैया! मैंने आपकी शिक्षा को पैरों तले कुचल डाला है। मैं इसका दंड पा चुका हूँ। ईश्वर कैसा न्यायी है। जब तक मेरे पास पैसे थे, मैं अनियमित सुख का जीवन बिताता रहा। ओह! पाप का मुखमंडल कितना मनोमोहक होता है, किन्तु उसकी पीठ कितनी कुरूपा और कुबड़ी होती है। मेरे पास अब एक भी पैसा नहीं है। मैंने अपने सब कपड़े बेच डाले हैं, भोजन का भी ठिकाना नहीं है। छोकरियाँ मुझ पर हँसती हैं। मैं केवल पानी पीता हूँ। मैं लहनदारों के तकाज़ों से बड़ा दुखी हूँ।

और कुछ?—पादरी ने पूछा।

भैया! मेरे प्यारे भैया!! अब मैं पवित्र जीवन बिताने का प्रयत्न करूँगा। मेरा हृदय पश्चात्ताप से भरा है। मैं प्रायश्चित्त करूँगा। मैं अपने पापों को स्वीकार करता हूँ। आपने मुझे कुछ काम दिलाने की कृपा की थी। अफसोस! इस समय मेरे पास न स्याही है, न कलम, न कागज़। मुझे ये चीजें खरीदनी हैं। इन चीजों के लिये मुझे कुछ रुपयों की आवश्यकता है। मैं आप के पास दिल साफ करके आया हूँ।

बस इतना ही?

जी हाँ—जेहन ने कहा—कुछ रुपये।

मेरे पास एक भी नहीं है।

बहुत गंभीर होकर जेहन निश्चय-पूर्वक कहने लगा—बहुत

अच्छा भाईजी ! बड़े दुःख के साथ बाध्य होकर मुझे कहना पड़ता है कि दूसरी पार्टी ने बहुत बढ़िया प्रस्ताव पेश किया है। आप मुझे रुपये न देंगे ? नहीं ? ऐसी अवस्था में मैं गुंडावृत्ति धारण करूँगा।

जेहन अपनी बात का प्रभाव ध्यानपूर्वक देखने लगा। पादरी ने स्वभावत कहा—गुंडा हो जाओगे।

जेहन ने झुक कर सलाम किया, और सीटी बजाते हुए सीढ़ियों से उतरने लगा।

मठ के आँगन में से जब वह जा रहा था, उसी समय उसके भाई की खिड़की खुली। उसने खिड़की पर पादरी का कठोर चेहरा देखा।

तुम चूल्हे-भाड़ मे जाओ !—पादरी ने कहा—यह अन्तिम थैली है, जो तुम मुझसे पा रहे हो।

ऐसा कहकर उसने ऊपर से एक थैली जेहन के पास फेंक दी, जिसके कारण कीचड़ उछल कर जेहन के चेहरे पर जा पड़ा।

जेहन को एक साथ ही रंज भी हुआ और खुशी भी। वह बाहर निकल गया।

चिर-प्रसन्नता

पाठकों को 'मिरेकिल-कोर्ट' भूला न होगा। वह स्थान एक पुरानी दीवार से घिरा था। उस पर कहीं-कहीं बडे लम्बे-चौड़े गुम्बज बने थे। गुँडों ने उन्हीं में से एक को अपना क्रीडास्थल बनाया था। उसी के निचले हिस्से में मयखाना था। उस में सर्वाधिक चहल-पहल रहती थी। जब वहाँ के और-और विभाग शान्त हो जाते थे, तब भी उस गुम्बज के अन्दर शोर मचा रहता था। चोरों, रंडियों और चुराये उडाये हुए बालकों से वह भरा रहता था। आधी रात को भी उसमें शराब का बाजार गर्म रहता था।

एक दिन, जब पेरिस में विश्राम का घंटा बज रहा था, उस गुम्बज में और दिनों से विशेष चहल पहल मच रही थी। उस के बाहर गुँडों का गिरोह धीरे-धीरे बातचीत कर रहा था, मानो कोई गुप्त मन्त्रणा हो रही थी। कहीं कहीं कुछ आवारे हथियारों को पत्थरों पर घिजा रहे थे।

गुम्बज के भीतर उस दिन शराब का बाहुल्य था। प्याले हाथों में चल रहे थे। हर-एक आदमी पीने में मस्त था। मगर हर-एक के पास कोई-न-कोई अस्त्र था—किसी के पास दाव, किसी के पास गँड़ासा, किसी के कुल्हाडी, किसी के तलवार। भीतर

ही आग भी जल रही थी, जिससे चारों ओर प्रकाश फैल रहा था।

वहाँ तीन दल तीन आदमियों के इर्द-गिर्द स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। एक दल तो 'मैथियम हुगेडी'—मिश्र के ड्यूक—के पास था। दूसरा दल 'क्लोपिन ट्रोलोफे' के पास था।

क्लोपिन अस्त्रों की परीक्षा कर रहा था। अस्त्र शस्त्रों तथा कवचों का भँडार उसके सामने पड़ा था।

तीसरा दल एक सबसे अधिक शोर मचानेवाले आदमी के पास था। वह सबसे अधिक प्रसन्न दीख रहा था। दल बहुत बड़ा था। वह व्यक्ति नख से शिख तक कवच में ढँका था। उसकी कमरकस मे खंजर, कटार और छुरे लटक रहे थे; सब के बीच एक बड़ी-सी तलवार भी लटक रही थी। उस व्यक्ति का मुखमंडल गुलाबी रंग का था। उसके बाल अँगुठिया थे। उसके एक कन्धे से एक धनुष भी लटक रहा था। उसके सामने शराब का एक बड़ा घड़ा रक्खा था। उसके समीप के सब आदमी शराब पीने तथा हँसने मे व्यस्त थे।

इन गिरोहों के अतिरिक्त और भी बहुत-से गिरोह थे। वे छोटे छोटे थे। उनमे गुंडे जुआ खेलने में व्यस्त थे। छोकरियाँ शराब की सुराही लिये इधर-से-उधर छमाछम निकल जाती थीं।

इस शोर-गुल में भी एक दार्शनिक, एक तरफ घुआँकस के पास, एक बेंच पर बैठकर, सारा दृश्य बड़े ध्यान से देख रहा था।

क्लोपिन ने गर्जते हुए स्वर में कहा—जल्दी करो, हम एक घंटे में कूच करेंगे।

एक युवती गा उठी।

मिश्र के ड्यूक ने भी अपने आदमियों को साहस बँधाया।

नख से शिख तक सुसज्जित युवक ने कहा—शाबाश! शाबाश! आज मैंने पहिले पहिल कवच धारण किया है। मैं गुंडा हूँ। ईश्वर की कसम, मैं गुंडा हूँ। मेरा नाम 'जेहन' है। मैं जन्म से कुलीन हूँ। भाइयो! हम लोग अभी अभी एक धावे पर चलेंगे। धावा बड़ा ही मजेदार होगा। हम लोग शूर-वीर हैं। गिरजे पर छापा मार कर उसको तहस-नहस कर डालो। सुन्दरी को ले भागो, पादरियों और जजों से उसकी रक्षा करो। मठ को धराशायी कर दो। बिशप को वहीं जला दो। इन कामों में कुछ देर न लगेगी। कासीमोडो को फाँसी पर लटका देना होगा। महिलाओ! आप लोगों ने कासीमोडो को देखा है? वह ठीक शैतान की तरह दीखता है। भाइयो! सुनो, मैं गुंडा हूँ। मैं हृदय से बदमाश हूँ, आवारा हूँ। मेरे माता पिता मुझे सिपाही बनाना चाहते थे। मेरे खानदान के लोग बड़े-बड़े ओहदों पर नियुक्त होते आये हैं। जब मैंने अपने गुंडा होने का निर्णय अपने माँ-बाप से सुनाया, तो वे रोने लगे। जीवन जब इतना अल्प है, तो क्यो न इसे मनोरंजन में बिताया जाय? मेरी प्यारी! और शराब लाओ! [illegible]ा, मगर मैंने सब कुछ स्वाहा कर दिया है, तथापि [illegible] है।

ही आग भी जल रही थी, जिससे चारों ओर प्रकाश फैल रहा था।

वहाँ तीन दल तीन आदमियों के इर्द-गिर्द स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। एक दल तो 'मैथियम हुगेडी'—मिश्र के ड्यूक—के पास था। दूसरा दल 'क्लोपिन ट्रोलोफे' के पास था।

क्लोपिन अस्त्रों की परीक्षा कर रहा था। अस्त्र शस्त्रों तथा कवचों का भँडार उसके सामने पड़ा था।

तीसरा दल एक सबसे अधिक शोर मचानेवाले आदमी के पास था। वह सबसे अधिक प्रसन्न दीख रहा था। दल बहुत बड़ा था। वह व्यक्ति नख से शिख तक कवच में ढँका था। उसकी कमरकस में खंजर, कटार और छुरे लटक रहे थे, सब के बीच एक बड़ी-सी तलवार भी लटक रही थी। उस व्यक्ति का मुखमंडल गुलाबी रंग का था। उसके बाल अँगुठिया थे। उसके एक कन्धे से एक धनुष भी लटक रहा था। उसके सामने शराब का एक बड़ा घड़ा रक्खा था। उसके समीप के सभी आदमी शराब पीने तथा हँसने में व्यस्त थे।

इन गिरोहों के अतिरिक्त और भी बहुत-से गिरोह थे। वे छोटे छोटे थे। उनमें गुंडे जुआ खेलने में व्यस्त थे। छोकरियाँ शराब की सुराही लिये इधर-से-उधर छमाछम निकल जाती थीं।

इस शोर-गुल में भी एक दार्शनिक, एक तरफ धुआँकस के पास, एक बेंच पर बैठकर, सारा दृश्य बड़े ध्यान से देख रहा था। वह पियरे-ग्रींगोयरे था।

क्लोपिन ने गर्जते हुए स्वर में कहा—जल्दी करो, हम एक घंटे में कूच करेंगे।

एक युवती गा उठी।

मिश्र के ड्यूक ने भी अपने आदमियों को साहस बँधाया।

नख से शिख तक सुसज्जित युवक ने कहा—शाबाश! शाबाश! आज मैंने पहिले पहिल कवच धारण किया है। मैं गुडा हूँ। ईश्वर की कसम, मैं गुडा हूँ। मेरा नाम 'जेहन' है। मैं जन्म से कुलीन हूँ। भाइयो! हम लोग अभी अभी एक धावे पर चलेंगे। यात्रा बड़ा ही मजेदार होगा। हम लोग शूर-वीर हैं। गिरजे पर छापा मार कर उसको तहस नहस कर डालो। सुन्दरी को ले भागो, पादरियों और जजों से उसकी रक्षा करो। मठ को धराशायी कर दो। विशप को वहीं जला दो। इन कामों में कुछ देर न लगेगी। कासीमोडो को फाँसी पर लटका देना होगा। महिलाओ! आप लोगों ने कासीमोडो को देखा है? वह ठीक शैतान की तरह दीखता है। भाइयो! सुनो, मैं गुडा हूँ। मैं हृदय से बदमाश हूँ, आवारा हूँ। मेरे माता पिता मुझे सिपाही बनाना चाहते थे। मेरे खानदान के लोग बड़े-बड़े ओहदों पर नियुक्त होते आये हैं। जब मैंने अपने गुडा होने का निर्णय अपने माँ-बाप से सुनाया, तो वे रोने लगे। जीवन जब इतना अल्प है, तो क्यों न इसे मनोरंजन में बिताया जाय? मेरी प्यारी! और शराब लाओ! मैं बड़ा धनी था, मगर मैंने सब कुछ स्वाहा कर दिया है, तथापि शराब के लिये अभी पर्याप्त है।

आवारे बीच-बीच मे तालियाँ बजा-बजा कर उसकी बातें सुन रहे थे। जेहन कुछ गाने लगा। मगर बीच ही में रुक कर बोल उठा—शैतान! कुछ भोजन के लिये लाओ।

लोग हथियारों से सुसज्जित हो रहे थे। एक जिप्सी ने कहा—इस्मेरल्डा हमारी बहन है, उसे अवश्य बचाना चाहिये।

एक दूसरे ने पूछा—नाट्र डेम मे वह अब भी है?

हाँ।

तब तो अवश्य उसे बचाना चाहिये। उस गिरजे में सोने चाँदी के अनगिनत क्रास हैं। मैं उनके विषय मे खूब जानता हूँ। मैं सोना-चाँदी का व्यापारी हूँ।

जेहन का भोजन आया। वह अपने समीप की एक युवती के अंक मे पड़कर बक-बक कर रहा था, अपने भाई आर्चडिकन के विषय में भी बुरी-बुरी बातें कह रहा था।

'क्लोपिन' अस्त्र-वितरण समाप्त कर ग्रींगोयरे के पास गया। बोला—मित्र, क्या सोच रहे हो?

ग्रींगोयरे उदासीनता-भरी हँसी के साथ बोल उठा—मैं अग्नि को प्यार करता हूँ—केवल इसलिये नहीं कि यह हमको गर्म रखती या हमारा भोजन पकाती है, बल्कि इसलिये कि यह चिनगारियों की जननी है। मैं उड़ती हुई चिनगारियों को घंटों-पहरों देखता रहता हूँ। ये चिनगारियाँ एक-एक विश्व हैं।

मैं कुछ नहीं समझता—क्लोपिन ने कहा—जानते हो, क्या समय है?

नहीं—ग्रींगोयरे ने उत्तर दिया।

क्लोपिन फिर मिश्र के ड्यूक के पास गया, उससे कहा—हमलोगों के षड्यन्त्र के लिये यह समय ठीक नहीं है। सुना है, 'लुई' पेरिस में है।

उसके पंजों से बहन को बचाने का यह समय बहुत ठीक है, क्योंकि लुई पेरिस में है—ड्यूक ने कहा।

तुम मर्द की तरह बोलते हो। हम लोग चतुराई से काम लेंगे। गिरजे में कोई सामना करनेवाला नहीं है। पार्लामेंट के मेम्बर कल अँगूठा लेंगे। पोप की कसम, मैं उस सुन्दरी को फाँसी पर लटकते नहीं देख सकता—क्लोपिन ने कहा।

जेहन शराब के नशे में चिल्ला रहा था। क्लोपिन ने मेघ-गर्जन करते हुए कहा—आधी रात।

इस शब्द के साथ ही सब के-सब उस गुम्बज के अन्दर से, अस्त्रों के झंकार के साथ, बाहर हुए। चन्द्रमा अस्त हो गया था।

क्लोपिन ने चिल्लाकर कहा—अपनी-अपनी कतार में हो जाओ।

सब लोग कतारों में खड़े होने लगे। थोड़ी देर के बाद क्लोपिन ने फिर कहा—चलते समय गलियों में कोई एक शब्द न बोले। गिरजे के पास पहुँचने से पहिले मशालें नहीं जलाई जायँगी। बगल में छुरी, हाँ—आगे बढ़ो।

थोड़ी देर में उस जलूस के सामने से पहरेदार सवार भयभीत हो भागने लगे।

नासमझ दोस्त

उस रात को कासीमोडो सो न सका। वह गिरजे के चारों ओर घूम रहा था। जिस समय वह लौह-द्वार को बंद कर रहा था, उसी समय आर्चडिकन उसके पास से निकला, मगर कासीमोडो ने उसे नहीं देखा।

पादरी उस दिन और भी चिंतित जान पड़ता था। जिप्सी की कोठरी की घटना के बाद से वह कासीमोडो को बहुत झिड़का करता था—यहाँ तक कि कई बार उसे खूब पीटा भी, किन्तु कासीमोडो की आज्ञाकारिता तथा धैर्य में तनिक भी न्यूनता नहीं आई। पादरी के अपमान या थप्पड़ को वह चुपचाप सह लेता था। पादरी अब कभी जिप्सी के सामने न जाता था।

उस रात को कासीमोडो उत्तरी मीनार पर चढ़ गया। वहाँ पर अपनी लालटेन रख कर वह पेरिस की ओर देखने लगा। रात अँधेरी थी। उसने 'पोर्ट-सेंट-अंतोयने' के पास केवल एक दीपक देखा। वहाँ भी कोई पहरा दे रहा था।

एकाएक उसके हृदय में एक अनिश्चित भय उत्पन्न हो आया। कई दिनों से वह बहुत चौकन्ना रहता था। उसने भयंकर आकृति वाले मनुष्यों को, जिप्सी की कोठरी की ओर घूरते हुए, देखा था। वह सोचता था कि लोग युवती को भी उसी की तरह घृणा की

दृष्टि से देखते हैं और युवती के विरुद्ध कोई-न-कोई षडयंत्र रचे जा रहे हैं। इसलिये वह कृतज्ञ कुत्ते की तरह रात-दिन पहरे पर रहता था।

एकाएक उसने 'सेन' नदी के किनारे किनारे चलते हुए मनुष्यों की आहट पाई। उसको एक आँख की शक्ति बहुत ही प्रबल थी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह और भी अधिक ध्यान से देखने लगा। शहर की ओर एक जलूस-सा आता दीख पड़ा। वह चिन्ता में डूब गया।

उसी समय उसे ज्ञात हुआ कि नाट्रीडम-स्क्वायर आदमियों से भर गया। उस अंधकार में भी वह समझ गया कि वह भीड़ बहुत बड़ी थी। वह भयभीत हो उठा।

वह जलूस उस अंधकार में चुपके चुपके और भी पास आ रहा था। जलूस का कोई भी आदमी एक शब्द नहीं बोलता था, तो भी उनके पाँवों की आहट से ही काफी आवाज़ हो रही थी। किन्तु वज्रबधिर कासीमोडो कुछ न सुन सकता था। वह इस प्रकार डर गया, जैसे कोई आदमी प्रेतों का मौन समूह देख कर डर जाता है। मालूम हुआ, जैसे अंधकार में छाया चल-फिर रही है।

कासीमोडो को भय हुआ कि कहीं यह प्रयत्न जिप्सी के ही विरुद्ध न हो। वह भावी घटना का अनुमान कर सकता था। उस संकट के क्षण में उसने जितनी शीघ्रता से अपने कर्तव्य का निश्चय किया, उतनी उससे आशा नहीं की जा सकती थी।

जिप्सी को जगाऊँ और उसे भगा ले चलूँ ? मगर किस मार्ग से ? गलियाँ घिर गई हैं। गिरजा नदी के तट पर खड़ा है, मगर भागने के लिये नाव कहाँ है ? केवल एक ही उपाय है— कुछ देर तक सामना करना और नाट्रीडेम के दरवाजे पर प्राण विसर्जन करना। कुछ-न-कुछ सहायता पहुँच ही जायेगी। इज़्मेरल्डा को जगाना उचित नहीं। वह आप ही मृत्यु के सामने जग पड़ेगी।

ऐसा विचार कर कासीमोडो दुश्मनों की ओर ध्यान से देखने लगा।

स्क्वायर मे भीड बढती ही जाती थी। मालूम होता था कि भीड में निस्तब्धता थी, क्योंकि आसपास की सारी खिड़कियाँ पहिले ही की तरह बद थीं। एकाएक भीड में आठ-दस मशालें जल उठीं। उनका धुआँ हवा में जा मिला।

कासीमोडो ने देखा कि भीड के लोग चीथडे पहिने हैं और भीड में स्त्री-पुरुष सभी हैं, हर-एक के हाथ में कोई न-कोई हथियार चमक रहा है। वह सबसे आगे चलनेवाले को कुछ-कुछ पहिचान रहा था।

भीड के आदमी गिरजे के पास खडे होने लगे। कासीमोडो ने अपनी लालटेन उठाई। नीचे की छत पर आ गया, ताकि शत्रुओं को समीप से देख सके।

क्लोपिन ने नाट्रीडेम के वृहत् द्वार के समीप पहुँच कर अपनी सेना को पंक्तिबद्ध कर लिया, ताकि वे चुस्त-दुरुस्त तैयार रहें

और यदि वहीं पकड़े जाते उनका न्यायालय में, जो सड़क से उनका अधिकार कर सके। उस समय इस प्रभाग में यह गिरजे के कुछ भाग के साथ जुड़ा हुआ था।

जिस प्रकार के आश्रम के लिये ये लोग उत्सुक हुए थे, वैसे आश्रम का होना उस समय कोई आश्चर्य का विषय न था। उस समय पुलिस न थी—इस समय जिस प्रकार के वर्तमान अर्थ में। नगर भिन्न-भिन्न अधिकारों में विभक्त था। उनकी अपनी अपनी अलग पुलिस थी। इस पुलिस में आपस में बड़ा विरोध चलता था। धर्माधिकार और राजकीय पुलिस 'एक-दूसरे के बराबर' होती है। सरदार भी बादशाह का हुक्म पालन न करते थे—यदि करते भी थे, तो नाम मात्र को।

मन में बड़ी शान्ति थी। ट्रोविल ने अपनी कर्कश आवाज़ में पैरिस के गिरजे को सम्बोधित करके कहा—जिस प्रकार पादरी के लिये गिरजा पवित्र और रक्षणीय है, उसी प्रकार हमारे लिये इस मैत्र्या भी पवित्र और रक्षणीय है। यदि तुम भला चाहते हो, गिरजे की रक्षा चाहते हो तो, इस्मेराल्डा को हमें लौटा दो।

मगर दुर्भाग्यवश कासीमोडो उसकी यह बात न सुन सका।

जवानो! आगे बढ़ो, अपना काम देखो—ट्रोविन ने आज्ञा दी।

तीन हट्टे-कट्टे जवान आगे बढ़े। उनके पास हथौड़े और कुल्हाड़ियाँ थीं। वे द्वार की सीढ़ियों पर चढ़ कर दरवाज़े को तोड़ने लगे। शेष लोग उनकी सहायता या उत्साह-वर्द्धन करने लगे। वे भी द्वार के निकट जुटे खड़े रहे। द्वार को तोड़नेवाले पसीने

से सराबोर हो चले। क्लोपिन उन्हें साहस बँधा रहा था—पारितोषिक का और लूट के माल का लोभ दिखा रहा था।

थोड़ी देर में ज्ञात हुआ कि ताला टूट जायगा; किन्तु ठीक उसी समय ऊपर से एक लकड़ी की भारी शहतीर गिरी। तब तो क्लोपिन के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, क्योंकि उसके गिरने से दर्जनें आदमी कुचल कर मर गये, कितने ही घायल हो इधर-उधर पड़ रहे गिरजा गूँज उठा, मानों तोप की बाढ़ दगी हो। तोड़नेवाले द्वार से दूर हट गये। किसी की हिम्मत न पड़ी कि फिर एक भी हथौड़ा चलावे। क्लोपिन भी कुछ दूर जा खड़ा हुआ।

मैं बाल-बाल बच गया—जेहन ने चिल्ला कर कहा—मेरे पास से शहतीर निकल गई है। इसकी तेज हवा मेरे कानों में घुस आई है।

भारी शहतीर के गिरने से सेना में आतंक छा गया, उसका चित्र खींचना असम्भव है। वे भय तथा आश्चर्य में डूबे रह कर कुछ देर तक निस्तब्ध खड़े रहे। वे बादशाह की बीस हजार सेना से भी उतना भय न खाते। उन्हें उसमें कुछ जादू का हाथ मालूम हुआ, नहीं तो उस समय वह शहतीर कहाँ से गिरती।

द्वार की सीध में, चर्च की छत पर, कुछ नहीं दीख रहा था, क्योंकि मशालों की रोशनी वहाँ तक पहुँच नहीं सकती थी। घायल कराह रहे थे। शहतीर रास्ते में लम्बी पड़ी थी।

प्रथम आतंक के कम होने पर क्लोपिन ने फिर आज्ञा दी—तोड़ दो, तोड़ दो!

उसी समय आसपास के मकानों की खिड़कियाँ खुलीं। लोग अपने हाथों में मोमबत्तियाँ लिये दिखाई पड़े।

खिड़कियों को बन्दूक का निशाना बनाओ—क्लोपिन ने चिल्ला कर कहा।

धड़ाधड़ खिड़कियाँ बन्द हो गई।

तोड़ दो—सब बदमाशों ने दुहराया।

मगर आगे बढ़ने का साहस किसी को न होता था। वे आश्चर्य भरी निगाह से गिरजे को देख रहे थे।

अपना अपना काम चेतो विप्लव कारियो!—क्लोपिन ने चिल्ला कर कहा।

एक बुड्ढे ने उत्तर दिया—हथौनियाँ व्यर्थ हैं, द्वार लोहे का बना है।

क्लोपिन ने शहतीर पर चढ़ कर कहा—ईश्वर ने स्वयं हमारी सहायता की है। इस शहतीर को उठा कर इसीसे द्वार को तोड़ो।

लगभग सौ आदमी झटपट उसे उठाने में लग गये। उसे उठाकर उन्होंने द्वार पर धमाधम पटकना आरम्भ किया। उसके पटकने से भयंकर शब्द होने लगा।

अब भी द्वार न टूटा! सम्पूर्ण गिरजा काँप रहा था। उसी समय ऊपर से बड़े-बड़े पत्थरों की वर्षा होने लगी।

शैतान! मीनार हमारे सिर पर तो नहीं टूट-टूट गिर रहे हैं!—जेहन ने चिल्ला कर कहा।

सेना और भी उत्तेजित हो द्वार को पीटने लगी। पत्थर उनके

सिर को फोड़ रहे थे। पत्थर एक-एक करके गिर रहे थे। मगर दो पत्थर एक साथ ही आते थे—एक तो घायल के पैर पर, दूसरा उसके सिर पर।

बदमाशों की सेना, पत्थर की चोट से, पागल को तरह क्रोधित हो उठी। उत्तेजित हो वे शहतीर को द्वार पर भिड़ा कर भयंकर धक्के देने लगे।

पाठकों ने समझ लिया होगा कि शहतीर गिराने और पत्थर बरसाने की भीषण क्रिया कासीमोडो द्वारा सम्पन्न हो रही थी।

जब वह मीनार के नीचे की छत पर उतरा, तब वह घबराहट से कुछ समझ न सका। वह कुछ देर तक पागल की तरह मूर्त्तियों की गैलरी में इधर-उधर दौड़ता रहा। उसने सोचा कि घंटा घरपर चढ़ कर घंटे बजाये, ता कि सहायता पहुँच सके, मगर फिर उसने सोचा कि जब तक वह खतरे का घंटा बजायेगा, तब तक तो बदमाश द्वार को तोड़ डालेंगे। एकाएक उसको याद आया कि राजगीर दिन में गिरजे के दक्खिनी मीनारों की मरम्मत कर रहे थे, वहाँ पर पत्थरों और लकड़ियों का ढेर लगा होगा। वह बड़े वेग से दौड़ कर दक्खिन के मीनार पर चढ़ गया। वहाँ पर नाना रूप के गढ़े-अनगढ़े पत्थर और लोहे-लक्कड़ पड़े थे। राँगे का बना छज्जा भी पड़ा था। यह देख कर उसके मन में बड़ी आशा बँधी।

नीचे हथौड़े तथा कुल्हाड़ियाँ अपना काम कर रही थीं, समय खोने का मौका न था। उस समय आकस्मिक आपत्ति के कारण कासीमोडो की शक्ति दसगुनी बढ़ गई थी। उसने फिर एक भारी

शहतीर को उठा कर, एक खिड़की से, द्वार तोड़नेवाले बदमाशों पर छोड़ दिया। १६० फीट की ऊँचाई से नाचती हुई शहतीर आकर बदमाशों के सिर पर गिर पड़ी। सब तिलमिला उठे। कासीमोडो ने उनकी घबराहट को देख लिया। उसने पत्थरों को इकट्ठा कर लिया। फिर जब वे द्वार को शहतीर के धक्के से तोड़ने लगे, तब वह उनके ऊपर पत्थरों की वर्षा करने लगा।

उस समय कासीमोडो को देखने से भय उत्पन्न होता था। वह विद्युत गति से झुकता और उठता था, रेलिंग पर झुक-झुक कर पत्थर चलाता था।

इधर दुष्ट, चोर, बदमाश भी हतोत्साह नहीं हो रहे थे। शहतीर के धक्के के भयंकर शब्द से गिरजा काँप रहा था। अतिशय भयंकर प्रतिध्वनि हो रही थी। किवाड़ों से चिनगारियाँ निकल रही थीं।

कासीमोडो को मालूम हो गया कि आखिर द्वार टूट जायगा।

वह सुन नहीं सकता था, मगर धक्के की भीषण प्रतिध्वनि उसके कानों के परदे पर बड़ी कठोरता से टकराती थी। गिरजे के साथ ही उसकी आत्मा भी काँप उठती थी। उस समय वह सोचता था कि यदि हम दोनों (कासीमोडो और जिप्सी) उल्लू होते, तो इस अँधेरी रात में भी उड़ कर अपनी जान बचाते। किन्तु अफसोस! पत्थरों की वर्षा से भी शत्रु न हट सके।

उसी समय कासीमोडो ने नीचे की छत पर दो पनालियाँ देखीं। उनका मुँह ठीक गिरजे के द्वार पर था, इसलिये उनका

पानी द्वार पर ही गिरता था। बिजली की तरह एक विचार उसके मस्तिष्क में दौड़ गया। वह तुरत दौड़ कर अपनी कोठरी से एक बोझ पुआल लाया। कुछ लकड़ियाँ भी इकट्ठी कीं। पनालियों के ऊपरी मुँह के सामने, छत पर, उसने आग जला दी। धधकी आग में राँगे के छज्जे के टुकड़ों को उठा-उठा कर डालने लगा।

पत्थरों की वर्षा बन्द हो जाने से द्वार तोड़नेवाले ऊपर नहीं देख रहे थे। डाकू द्वार पर एक-पर-एक चढ़ रहे थे। धक्का बढ़ता ही जाता था, क्योंकि प्रत्येक इसी प्रयत्न में था कि वह द्वार के समीप में रहे, ताकि सबसे पहिले घुस कर भीतर के सोने चाँदी के असबाब को लूट सके। उस समय वे लूट के विषय में अधिक और इज़मेरल्डा की रक्षा के विषय में कम सोच रहे थे।

ठीक इसी समय, जब वे अपनी सारी शक्ति लगाकर अन्तिम धक्का देने जा रहे थे, उनके बीच में भयंकर आर्त्तनाद हो उठा। वह आर्त्तनाद गले हुए राँगे के गिरने से हो रहा था। दो पनालियों से, गला हुआ राँगा, पानी की धार की तरह, उनके ऊपर गिर रहा था। डाकू वहाँ से दूर भाग कर खड़े हुए। जिनके ऊपर तप्त राँगा पड़ा था, वे कराह रहे थे, एकदम शान्त हो गये थे। उन्होंने हिम्मत छोड़ दी। वे भाग निकले।

सब-के-सब चर्च के ऊपरी हिस्से की ओर देख रहे थे। उन्हें उस दृश्य से बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने छत पर एक अग्नि-शिखा देखी, जिससे भयंकर चिनगारियाँ निकल कर आकाश की ओर उड़ रही थीं। तप्त राँगा नीचे गिर कर नाली की तरह बह चला।

अग्नि शिखा के प्रकाश में गले राँगे की नालियाँ साँपों की तरह टेढ़ी मेढ़ी चलती हुई दिखाई पड़ रही थीं—उस रात को, उस प्रकाश में, वे भूतों से भी अधिक भयंकर दीख रही थीं।

आवारों, चोरों, गुंडों और बदमाशों पर भी एक धार्मिक भय का आतंक छा गया। गिरोह के नेता, गाडोलियर-गृह के छज्जे के नीचे खड़े होकर, मंत्रणा कर रहे थे।

भीतर घुसना असम्भव है—धीरे से क्लोपिन ने कहा।

इसमें कुछ जादू है—मिश्र के ड्यूक ने कहा।

बाइबिल की कसम, यह काम कासीमोडो का है—क्लोपिन ने कहा।

पहिले भी गिरजों ने इस प्रकार अपनी रक्षा की है—किसी दूसरे ने कहा।

एक बार फिर प्रयत्न किया जाये—किसी तीसरे ने कहा।

औरों ने अपना अपना सिर हिला दिया, किन्तु क्लोपिन ने कहा—हाँ, एक प्रयत्न और किया जाय। जेहन कहाँ है ?

शायद वह मर गया, उसकी हँसी नहीं सुनाई पड़ती—किसी ने कहा।

क्लोपिन ने कहा—बुरा हुआ। उसके कवच के अन्दर एक साहसी हृदय था। खैर, मास्टर पियरे-ग्रागोयरे कहाँ है ?

वह भाग गया—किसी ने कहा।

क्लोपिन ने क्रोध में आकर कहा—वह हम लोगों को भड़काता है और फिर छोड़कर भाग जाता है। कायर है !

वह देखो, जेहन आ रहा है—किसी दूसरे ने कहा।

मगर वह अपने साथ क्या लाता है ?—क्लोपिन ने प्रसन्नता से पूछा।

जेहन अपने कवच और एक लम्बी सीढ़ी के बोझ से दबा हुआ, यथाशक्ति दौड़ता हुआ, आ रहा था। सीढ़ी को वह हाँपते हाँपते घसीटते हुए ले आ रहा था।

विजय ! शैतान की जय-ध्वनि करो !—जेहन ने चिल्ला कर कहा।

क्लोपिन उसके पास जाकर पूछने लगा—सीढ़ी से क्या काम लोगे ?

जेहन ने उत्तर दिया—मैं जानता था कि सीढ़ी कहाँ है। एक छोकरी है, जो मुझे पूरा कामदेव समझती है। उसकी मूर्खता से लाभ उठा कर मैं इस सीढ़ी को ले आया हूँ। उसने मुझे अन्दर ले जाने के लिये यह सीढ़ी लगाई थी।

यह तो ठीक है, मगर अब इससे करोगे क्या?—क्लोपिन ने कहा।

उस समय जेहन आनन्द तथा दर्प से फूला न समाता था। क्लोपिन को उसने उत्तर दिया—तुम जानना चाहते हो कि इससे मैं क्या करूँगा ? ऊपर वह मूर्त्तियों की पंक्ति देख रहे हो ?

हाँ। तब ?

वह फ्रांस के बादशाहों की गैलरी है। उसका दरवाजा मिट कनी से बन्द रहता है। मैं उस पर चढ़कर गिरजे के भीतर चला जाऊँगा।

मुझे पहिले जाने दो।

नहीं, सीढ़ी मेरी है तुम मेरे पीछे आ सकते हो।

मैं किसी के पीछे न रहूँगा— क्लोपिन ने कहा।

क्लोपिन! तब तुम अपने लिये दूसरी सीढ़ी खोजो—ऐसा कह कर जेहन सीढ़ी के साथ गिरजे के दूसरी ओर तेजी से दौड़ गया।

एक क्षण में सीढ़ी, नीचे की गैलरी की रेलिंग से सटाकर, खड़ी कर दी गई। चढ़ने के लिये बहुत-से दुष्ट वहाँ इकट्ठे हो गये। मगर जेहन सब के ऊपर था। गैलरी बहुत ऊँची थी। जेहन धीरे-धीरे चढ़ने लगा। जब छज्जे तक पहुँचा, तब तालियाँ बज उठीं। छज्जे पर चढ़ कर वह खुशी से चिल्लाने लगा। उसने एक मूर्ति के पीछे कासीमोडो तथा उसकी चमकती हुई एक आँख को देखा।

एक दूसरा गुंडा भी सीढ़ी से चढ़कर छज्जे के समीप आ गया था। सीढ़ी बदमाशों से लदी थी। मगर दूसरे आदमी के ऊपर चढ़ आने से पहिले ही कासीमोडो दौड़ा और सीढ़ी के ऊपर का हिस्सा पकड़कर दीवार से दूर फेंक दिया। सीढ़ी पर चढ़े हुए डाकू चिल्लाते हुए स्क्वायर में जा गिरे। साहसियों के भी छक्के छूट गये। सीढ़ी से नीचे गिर कर कितने ही मर गये, कितने ही कराहने लगे। दर्द और क्रोध से शोर मच गया। कासीमोडो चुपचाप रेलिंग पर झुक कर नीचे का तमाशा देख रहा था। उस समय वह काकुल सँवारे हुए किसी राजा की तरह दीख पड़ता था।

जेहन बड़ी बेढब दशा में पड़ गया। वह अकेला ही उस भयानक कुबड़े के साथ था। अपने साथियों से वह दूर जा पड़ा था।

वह द्वार की ओर दौड़ा, मगर वह बन्द था। इसलिये वह एक मूर्ति के पीछे छिप रहा। वह साँस लेने का भी साहस न कर सकता था, क्योंकि वह एक भालू के सामने था।

थोड़ी देर तक तो कासीमोडो ने उसकी ओर ध्यान ही नहीं दिया। मगर अन्त मे वह आँख फाड़-फाड़ कर उसे देखने लगा। उसने पहिले ही जेहन को देख लिया था। किन्तु फिर भी घूमकर देखने लगा।

जेहन भी मुकाबले के लिये तैयार हो रहा था। उसने मूर्खता पूर्ण काम किया। धनुष पर तीर चढ़ाकर कहा—कासीमोडो! मैं तुम्हारा नाम बदलने जा रहा हूँ, अब से तुम सूरदास कहे जाओगे!

तीर हवा में सन-सन करता हुआ चला। मगर वह कासीमोडो की आँख मे न लगकर उसकी बाई बाँह मे घुस गया। इससे उसको कुछ भी घबराहट नहीं हुई। उसने अपने दाहिने हाथ से तीर को निकालकर तोड दिया। तीर तोड़ने के बाद वह उछलकर जेहन के ऊपर जा चढ़ा, और अपने बायें हाथ से ही उसे पकड़ लिया।

जेहन ने निराश हो कुछ बाधा न डाली। दाहिने हाथ से कासीमोडो ने उसके सब कवच उतार लिये, उसके हथियारों को जमीन पर पटक दिया।

अपने को उस भयंकर आदमी के हाथ मे नंगा पाकर जेहन बोलने की भी कोशिश न कर सका। कासीमोडो ने उसे अपने दोनों हाथों से ऊपर उठाकर गिरजे की छत से नीचे फेंक दिया।

किन्तु जेहन दीवार से टकरा कर एक निकले हुए छज्जे पर जा गिरा—वहीं मर कर लटक रहा।

नीचे के आदमी भय से चिल्ला उठे। क्लोपिन ने भी चिल्ला कर कहा—बदला! बदला!

तोड़ दो! गिरजे को ढहा दो!—सब ने एक स्वर से कहा।

जेहन की मृत्यु ने सबको क्रोध में अंधा कर दिया। वे लज्जा के कारण और भी क्रोधित हो उठे। सीढ़ी को फिर दीवार से लगाकर सब चढ़ने लगे। कासीमोडो ने देखा कि बदमाशों ने कई सीढ़ियाँ जुटा ली हैं। जिनके पास सीढ़ी न थी, वे रस्सी से चढ़ने लगे। अब रक्षा की कोई सूरत न थी। डाकुओं के चेहरे पर क्रोध साफ झलक रहा था। कासीमोडो घबरा गया।

उसी समय स्क्वायर में हजारों मशालें जल उठीं। चारों ओर प्रकाश छा गया। आकाश की ओर प्रकाश उठ रहा था। जान पड़ा, जैसे सारा पेरिस जग पड़ा है। चारों ओर नगर में खतरे के घंटे बज उठे। बदमाश शोर मचाते हुए ऊपर चढ़ रहे थे।

इतने शत्रुओं के विरुद्ध अपने को असहाय पाकर कासीमोडो उस जिप्सी युवती के लिये भय से काँप उठा। वह ऊपर की ओर हाथ उठाकर ईश्वर की प्रार्थना करने लगा।

ग्यारहवें लुई का प्रार्थना-स्थान

पाठकों को याद होगा कि कासीमोडो उत्तरी मीनार से सारे पेरिस नगर मे केवल एक ही रोशनी देख सका था। वह रोशनी प्रसिद्ध बैस्टीले जेल की एक कोठरी की खिड़की पर जल रही थी। वह 'ग्यारहवें लुई' की मोमबत्ती थी।

'लुई' पेरिस में बहुत कम रहता था। वह केवल दो दिन के लिये पेरिस में आया था। वह सर्वदा अपने पास शरीर-रक्षकों की सेना रखता था। पेरिस में वह अपने को सुरक्षित नहीं समझता था। विशेषकर राजमहल में उसे तनिक भी आराम नहीं मिलता था, इसलिये वह उस दिन बैस्टीले की छोटी-सी साधारण कोठरी में सोने के लिये चला गया था। बैस्टीले की दीवारें राजमहल से अधिक मजबूत थीं।

जेल के ऊपरी भाग में वह कमरा बना था। उसमें कोई सजावट न थी। 'लुई' भी बहुत साधारण कपडे पहिने था। वहाँ पर केवल एक कुर्सी बादशाह के लिये थी, इसलिये 'गिलोमे राइम' तथा 'कोपेनोले' को खड़ा रहना पडा था। कोपेनोले खडा होने से घबरा रहा था।

लुई वृद्ध था। उसके कपडे गरीबों-जैसे थे। स्वभाव का झक्की भी था। उस समय खजानची ने सेना की वर्दी का खर्च पेश किया

था। बादशाह अधिक खर्च होने के कारण झिझक रहा था कि सेना विभाग अपव्ययी हो गया है, पहिले राज्य के व्यय इतने अधिक न थे। मगर अन्त में बादशाह ने कागज पर अपनी मुहर लगा दी।

उस दिन लुई केवल सोने ही के लिये वहाँ नहीं गया था, बल्कि एक पींजड़ा भी देखना था। उसने वह पींजड़ा बहुत खर्च करके कैदियों को रखने के लिये बनवाया था।

लुई का हजाम 'ओलिवर' भी वहाँ था। वह इधर-उधर की बातें कर बादशाह का जी बहला रहा था और सुअवसर देखकर अपने भाई-भतीजों के लिये नौकरी की भी दरख्वास्त देता जाता था।

लुई और ओलिवर की बातें बड़ी दिलचस्प होती थीं। बीच-बीच में लुई आये हुए पत्रों और दरख्वास्तों पर हस्ताक्षर करके यथोचित आज्ञा देता जाता था।

उनमें एक पत्र एक गाँव के कृषकों का था। उस प्रार्थना पत्र में सेना के सिपाहियों के अत्याचारों की शिकायत की गई थी।

बादशाह ने ओलिवर कहा—एक पत्र अभी सेनापति को लिखो। जल्दी करो।

ओलिवर कागज-कलम-दावात लेकर बैठ गया।

बादशाह बोलने लगा—सिपाहियों का शासन शिथिल पड़ गया है। वे गरीब कृषकों को सताते हैं। मैं यह सब कुछ जानता हूँ। मेरी इच्छा अपनी प्रजा को सब तरह की चोरी डकैती से बचाने की है। सिपाही मखमल और रेशम के कपड़े पहिनते हैं,

सोने की अँगुठियों में सुसज्जित होते हैं। ईश्वर की दृष्टि से ये सारी बातें घृणास्पद हैं। मैं—जो सर्वोच्चकुलीन हूँ—केवल कोट से, सो भी साधारण कोट से, काम चलाता हूँ। सेनापति! सब मामलों को दुरुस्त कर दो। यही मेरी राजाज्ञा है।

लुई ने ज्योंही पत्र समाप्त किया, त्योंही कोठरी का द्वार एकाएक खुला। हाँफता हुआ मास्टर जेक़ु आ पहुँचा। बोला—जहाँपनाह! पेरिस के निवासी विप्लव मचा रहे हैं!

लुई के चेहरे पर अनेक प्रकार के भाव झलक उठे। उसने शान्त भाव धारण करके कहा—गप्पी जेक़ु! तुम एकाएक मेरे पास चले आते हो?

जहाँपनाह! यह विद्रोह है।

बादशाह ने उठकर उसका हाथ पकड़ कर उसके कान में कुछ कहा। बादशाह तिरछी निगाह से फ्लैंडर के निवासियों की ओर देखता जाता था, और कहता था। धीरे-धीरे बोलो जेक़ु!

जब विद्रोह के विषय में जेक़ु कुछ बता चुका, तब बादशाह ने कहा—हा हा! इसी बात को धीरे-धीरे कह रहे हो? उच्च स्वर से कहो! मैं अपने फ्लैंडर के मित्रों से कुछ नहीं छिपाता।

जेक़ु ने बदमाशों की सेना को 'मिरेकिल कोर्ट' से निकलते देखा था। उसने आकर फौरन खबर दी कि बादशाह ने यदि तात्कालिक सहायता न दी, तो न्याय भवन और उसका अध्यक्ष, दोनों, धराशायी हो जायँगे विद्रोहियों की संख्या छ हजार के लगभग है।

बादशाह ने कहा—कल देखा जायगा, आज पर्याप्त सेना नहीं है।

इसके बाद बादशाह सोचने लगा—इन्हीं सरदारों के कारण पेरिस विभिन्न विभागों में बँटा है। शासकों की गड़बड़ी है, शासन विभागों की अव्यवस्था है। फ्रांस में एक बादशाह—एक न्यायाधीश—होना चाहिये, जैसे स्वर्ग में एक ईश्वर है।

प्रजा को शाबाशी देते देते बादशाह ने रुक कर कहा—अच्छी बात है, सहायता दी जायगी।

खुदावन्द, मैं भूल गया कि उनमें से दो विद्रोही पकड़े गये हैं। अगर हुजूर का हुक्म हो, तो वे खिदमत में हाजिर किये जायँ।

मैं उन्हें देखकर प्रसन्न हूँगा, ऐसी बातों को न भूला करो, दौड़कर उन्हें मेरे सामने उपस्थित करो—बादशाह ने कहा।

ओलिवर ने दो आदमियों को हाजिर किया। पहिला बेवकूफ पियक्कड़ जान पड़ता था। वह फटे-पुराने चीथड़े पहिने था, उसके घुटने झुके थे। बादशाह ने उससे पूछा कि वह क्यों विप्लव मचाने गया था।

सब लोग गये थे, इसलिये मैं भी जा रहा था—दुष्ट ने कहा।

तुम इस विद्रोह के कारण के विषय में कुछ जानते हो?

नहीं। मैं इतना जानता हूँ कि वे किसी को लूटने जा रहे थे, मैं भी साथ हो लिया।

यह छुरी तुम्हारी है?

यह छुरी उसके पास से छीनी गई थी। उसने कहा—हाँ।

बादशाह ने उसे जेलर के हवाले किया।

दूसरा आदमी लाया गया। बादशाह ने पहिले आदमी से पूछा—यह तुम्हारा साथी है ?

उसने उत्तर दिया—नहीं, मैं इसे नहीं जानता।

दूसरा आदमी ग्रींगोयरे था। बादशाह ने उसका नाम और पेशा पूछा। उसने अपना नाम तो बताया, मगर पेशे के विषय में कहा कि मैं दार्शनिक हूँ।

दुष्ट! तुम उस बुरे गिरोह में कैसे पाये गये ?

जहाँपनाह! मैं दुष्ट नहीं हूँ, चोर नहीं हूँ, मेरा सम्बन्ध उस गिरोह से कुछ भी नहीं है। संयोगवश मैं उनके साथ में पकड़ा गया हूँ। मैं कवि हूँ और हमारी जाति की झक है अँधेरे में टहलना। मैं भी आज टहल रहा था कि अँधेरे में गुण्डों के साथ पकड़ा गया। सरकार मुझे क्षमा करें।

इसको भी फाँसी दी जायेगी ?—जेलर ने पूछा।

इसके विरुद्ध कुछ अभियोग तो नहीं दीखते—इतना कह कर लुई चुप हो रहा।

इसके विरुद्ध हजारों अभियोग हैं—जेलर ने कहा।

ग्रींगोयरे, बादशाह के चरणों के पास घुटने के बल बैठकर, हाथ जोड़ क्षमा प्रार्थना करते हुए कहने लगा—जहाँपनाह! शाहशाह! मेरी कुछ सुन लीजिये। मुझ जैसे नगण्य जीव पर अपने वज्र को क्यों चलाइयेगा ? आप शक्तिशाली बादशाह हैं, एक गरीब आदमी पर दया कीजिये। क्षमा ही शूरों की शोभा है। मैं जोर के साथ अपने बादशाह के सामने कहता हूँ कि मैं

दुष्ट समाज से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखता। मैं आपका आज्ञाकारी दास हूँ। मैं आपकी प्रतिष्ठा के लिये उतना ही चिन्तित रहता हूँ, जितना कोई स्त्री अपने पति की प्रतिष्ठा के लिये रहती है। यदि आप मुझे क्षमा कर दें, तो मैं आपके लिये रात दिन ईश्वर से प्रार्थना करूँगा। मैं निर्धन अवश्य हूँ, मगर ईमानदार हूँ। मुझे मेरे फटे कपड़ों से दुष्ट न समझिये। सभी जानते हैं कि साहित्य सेवा से धन नहीं प्राप्त होता।

ग्रींगोयरे बादशाह की प्रशंसा और अपनी नगण्यता तथा निर्दोषता का वर्णन करते करते थक कर एक क्षण के लिये चुप हुआ। बादशाह ने उसकी ओर देखा और कहा—यह तो भयंकर बातूनी है, इसे छोड़ दो।

इसे छोड़ दें?—जेलर ने कहा—जहाँपनाह इसे थोड़ी देर भी पींजड़े में नहीं रखना चाहते?

बादशाह ने हँसकर उत्तर दिया—मित्र! तुम सोचते हो कि ऐसे ही पक्षियों के लिये इतना खर्च कर पींजड़े बनाये गये हैं? इस बदमाश को दो चार थप्पड़ लगाकर छोड़ दो।

आप कितने अच्छे बादशाह हैं!—ग्रींगोयरे ने कहा।

वह झट वहाँ से भगा कि कहीं फिर दूसरा हुक्म न हो जाये। सिपाहियों ने उसपर धौल जमाये, मगर उसने उन्हें सच्चे दार्शनिक की भाँति सह लिया।

विद्रोह का समाचार पाकर बादशाह बड़ा प्रसन्न हुआ था। मास्टर नेरू ने सुअवसर जानकर बादशाह की नाड़ी देखी। कहा, बुखार है।

बादशाह हँस हँस कर, कभी अत्यन्त उदास होकर, अपने रोग के विषय में बातें करने लगा। जेकू अपनी आवश्यकताओं को बताकर बादशाह से रुपये के लिये प्रार्थना करने लगा।

बादशाह खिड़की से झाँक कर देखने लगा—ओह! यह तो भयकर आग है।

उसने वह आग कोपेनोले तथा गिलोमे को भी दिखाई। वे प्रसन्नता से उछल पड़े। वे विद्रोह के विषय में बातचीत करने लगे। कोपेनोले बता रहा था कि विद्रोह कराना कितना सहज है। उसने कितने ही विद्रोहों का नेतृत्व ग्रहण किया था।

बादशाह हँसता हुआ कुर्सी पर जा बैठा। ओलिवर बाहर गया था, उसी समय भीतर आकर हाथ जोड़ कहने लगा—हुजूर! बुरा समाचार लाने के लिये क्षमा करें।

बादशाह झटके के साथ घूमा, कमरे की चटाई फट गई। ओलिवर से पूछा—तुम्हारा मतलब?

चोट पहुँचानेवाले आदमी की तरह प्रसन्न होकर ओलिवर ने कहा—यह विद्रोह न्याय-भवन के विरुद्ध नहीं है।

तब किसके विरुद्ध है?

आपके, जहाँपनाह!

वृद्ध बादशाह युवक की तरह अपने पाँवों पर खड़ा हो गया। गर्जन-पूर्वक बोला—खुलासा कहो ओलिवर! नहीं तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग हो जायगा।

जहाँपनाह!—

घुटने टेककर कहो।

श्रोलिवर घुटने टेककर कहने लगा—जहाँपनाह! एक जादूगरनी को पार्लामेंट ने फाँसी का दंड दिया था। उसने भागकर नाट्रीडेम में शरण पाई। जनता उसे वहाँ से बल प्रयोग पूर्वक हटाना चाहती है। पहरेदारों के कैप्टेन ने मुझसे यह बात कही है। वह भी मेरे साथ आया है। मूठ-मच का उत्तर-दायित्व उसी के सिर पर है।

ठीक है—बादशाह ने कहा—वे नाट्रीडेम को घेरे हुए हैं। क्यों श्रोलिवर! तुम सत्य कहते हो। वे मुझ पर वार कर रहे हैं। जादूगरनी गिरजे की शरण में है और गिरजा मेरी शरण में। बेशक वे मुझ पर ही चोट कर रहे हैं।

बादशाह भयंकर हो उठा था। वह क्रोध में इधर-उधर टहलने लगा। उसके चेहरे पर अब हँसी न थी। उसने पास ही खड़े एक सरदार को सम्बोधित करके कहा—ट्रीसटन! जाओ, और दुष्टों की खूब खबर लो—जिसे पाओ, मार डालो।

इसके बाद बादशाह ने उसे बताया कि वह कहाँ-कहाँ से कितनी सेना लेगा और पेरिस में कहाँ-कहाँ कितनी सेना है।

ट्रीसटन ने पूछा—ठीक है, मगर जादूगरनी को क्या करूँगा?

उसकी सजा के लिये ही लोग उसे चाहते हैं, मेरी राय है कि उसे भी फाँसी दी जाय—मास्टर जेक ने कहा।

बादशाह सोचने लगा। फिर बोला—अच्छी बात है मेरे गप्पी! जनता के साथ उसे भी फाँसी पर लटका दो।

ट्रीसटन ने फिर पूछा—यदि वह अब भी गिरजे में हो, तो मैं कैसे उसकी पवित्रता को भग कर सकूँगा ?

बादशाह अपना कान खुजलाने लगा। कुछ सोच कर बोला—तो भी उस औरत को अवश्य फाँसी दी जानी चाहिये।

एकाएक किसी विचार के आने के कारण वह कुर्सी के सामने घुटने टेक कर बैठ गया। अपनी टोपी को कुर्सी पर रख दिया। हाथ जोड़कर कहने लगा—ओ पेरिस की रक्षा करनेवाली स्वामिनि! मैं ऐसा केवल एक ही बार करूँगा। दोषी को अवश्य दड दिया जाना चाहिये। राज्य की रक्षा के लिये गिरजे के विशेषाधिकारियों को कुचलना पडता है। मै फिर कभी ऐसा न करूँगा।

वह क्रास का चिन्ह बनाकर उठा। टोपी पहनी। फिर ट्रीसटन से कहा—जल्दी करो, खतरे की घटी बजा दो। जनता को वश मे कर लो। जादूगरनी को फाँसी दे दो। जाओ, मैं आशा रखताहूँ कि फाँसी देने के खर्चे का हिसाब भी तुम मेरे सामने पेश करोगे। यहाँ आओ ओलिवर! मैं आज सोने नहीं जाऊँगा, मेरी दाढी बनाओ।

ट्रीसटन सलाम करके बाहर निकला। फिर बादशाह ने कोपेनोले तथा गिलोमे को इशारे से जाने को कहा।

कोपेनोले जाते-जाते गिलोमे से कहने लगा—मैंने इस खाँसने वाले बादशाह को अच्छी तरह देख लिया। मैंने बरगंडी के चार्ल्स को भी नशे में मस्त देखा था, पर वह इस रोगी बादशाह-जैसा बुरा न था।

गिलोमे ने उत्तर दिया—क्योंकि बादशाहों की मदिरा उनकी दया के घूँटों से कम कठोर होती है!

मगर गिरजे में हमलोग जायेंगे कैसे ?

मेरे पास मीनारों के दरवाजों को कुंजी है।

और बाहर कैसे निकलेंगे ?

मठ के पीछे एक छोटा-सा चोर-दरवाजा है। मैं उसी के सामने 'सेन' नदी में एक नाव बाँध आया हूँ।

याद रहे, मैं फाँसी पाने से बचा हूँ—कवि ने कहा।

जो हो, जल्दी करो—दूसरे ने कहा।

दोनो फुर्ती से नगर में घुसे।

सूना कमरा !

पाठकों को याद होगा कि हमने कासीमोडो को बड़ी बेढब अवस्था में छोड़ा था। वह बार चारों ओर से खतरे में पड़ा था। यदि उसकी सारी हिम्मत नहीं, तो कम-से-कम उसकी रक्षा की सारी आशा जाती रही थी, वह अपनी रक्षा के विषय में ...निक भी नहीं सोच रहा था, केवल युवती जिप्सी के लिये अत्यन्त चिन्तित था। गैलरी में वह पागल की तरह इधर-उधर दौड़ रहा था।

धावा बोलनेवाले दुष्ट नात्रोडेम को वश में किया ही चाहते थे। एकाएक, दौड़े आते हुए घोड़ों से, समीप की गलियाँ भर गईं। आँधी की तरह सवार, अपने-अपने भालों को सामने करके, वेग से दौड़ते हुए, स्क्वायर में आ पहुँचे। मशालों के प्रकाश से चारों ओर प्रकाश फैल गया।

फ्रांस! फ्रांस! सहायता के लिये चातोपर आ गया!

विद्रोहियों को शरण न दो!—चारों ओर शोर मच गया।

बदमाशों की सेना भय से इधर-उधर तितर-बितर होने लगी।

कासीमोडो कुछ सुन न सकता था, मगर उसने नंगी तलवारों, मशालों और भालों को देखा। सवारों के आगे उसने कैप्टेन फ्रीबस को पहिचान लिया। उसने बदमाशों की घबड़ाहट भी देखी।

उसने फुर्ती के साथ उन्हें नीचे ढकेल दिया, जो सीढ़ी और रस्सी द्वारा गैलरी तक पहुँचगये थे ।

जब बादशाह की सेना आ पहुँचा, तबक्लोपिन के दल ने वीरता से लडना आरम्भ किया। उन्होंने निराश हो अपनी रक्षा की। मगर वे चारो ओर से घिर गये थे। उन पर चौतरफी मार पड़ रही थी। वे बुरी दशा में थे।

घमासान युद्ध होने लगा। दृश्य बडा भयकर था। फोबस की शूरता देखने योग्य थी। जो भालो से बच जाता था, वह उसकी तलवार से कदापि नहीं बच सकता था। बदमाशों की सेना के हथियार ठीक न थे, तो भी वे बिल्ली की तरह घोडों पर टूट पडते थे। वे मशाल से सवारों को अन्धा बना रहे थे—उन्हें घोडों से नीचे गिरा रहे थे। जो घोडों से गिरते थे, उनकी तो वे भुजिया बना डालते थे।

एक आदमी के हाथ मे एक बडा-सा चमकता हुआ दाव था। उससे वह घोडों की टाँगों को काट रहा था। घोड़ों के बीच में घुसकर वह अपना काम विद्युत्-गति से कर रहा था। वह साथ-साथ गीत भी गाता जाता था, जैसे खेत काट रहा हो। वह क्लोपिन था। अन्त में उसे एक गोली लगी। वह धम से पृथ्वी पर गिर पडा। जान पर खेल कर लडा।

इस बीच में 'फ्रास! फ्रास!' की ध्वनि सुनते ही आसपास के मकानो की सारी खिडकियाँ खुल गई थीं। चारों ओर की खिड़कियो से गोलियाँ आकर बदमाशो को घायल करने लगीं।

स्क्वायर बन्दूक के धुएँ से भर गया। अन्धकार से सब चीजें अदृश्य-सी होने लगी थीं।

बदमाशों की हार हुई। उनके पास हथियार की कमी थी, तिस पर चारों ओर से चढ़ाई। ऊपर से खिड़कियाँ भी चौतरफी गोलियाँ बरसा रही थीं।

बेचारे बदमाश, शत्रु के चक्रव्यूह से, भाग निकले। स्क्वायर मुर्दों से भरा था।

गुडों का भागना देखकर कासीमोडो घुटने टेक ईश्वर की प्रार्थना करने लगा। वह प्रसन्न होकर जिप्सी की कोठरी की ओर दौड़ा। उसने बड़ी शूरता से उसकी रक्षा की थी। उसके हृदय में अब एक ही भाव था—वह था, सुन्दरी युवती के सामने घुटने टेक कर बैठने का।

किन्तु कमरे को उसने खाली पाया!

घिरी है, शोर ने उसे वास्तविक जगत् का ध्यान दिलाया। उसके भय का प्रवाह दूसरी ओर बह चला। उसने सोचा, शायद लोग मुझे पकड़ कर फाँसी पर लटकाना चाहते हैं। जीवन तथा आशा के विनाश का ध्यान तथा उसी के साथ फीबस को खो देने का विचार झट उसके मस्तिष्क में दौड़ गया। वह अब भी भविष्य में फीबस को जीतने की आशा रखती थी। अपनी असमर्थता, भागने के रास्तों के बन्द होने तथा अपनी असहाय और एकान्त अवस्था के विचार एक ही साथ उसके मस्तिष्क में बाढ़ के पानी की तरह आये। वह घुटने के बल बैठ गई। उसका मुँह बिस्तरे में छिपा था, हाथ उसके सिर पर पड़े थे। वह भगवान से प्रार्थना करने लगी।

इस प्रकार वह बहुत देर तक पड़ी रही। वह काँप रही थी। जनता के शोर में वह ठंडी पड़ती जाती थी। वह उस शोर के अर्थ को न समझ सकती थी। वह कुछ न समझती थी कि क्या हो रहा है। केवल वह भयकर परिणाम का ध्यान कर रही थी।

उस पीड़ा की दशा में उसने समीप ही आदमियों के पाँवों की आहट सुनी। उसने पीछे मुड़कर देखा, तो दो आदमी खड़े दिखाई पड़े। उनमें एक लालटेन लिये था। वह जब कमरे के भीतर गया, वह चीख उठी।

डरो मत, मैं हूँ—उस आदमी ने कहा।

उसका स्वर परिचित सा जान पड़ा।

कौन हो ?—युवती ने पूछा।



पाँचवाँ भाग

छोटी जूती

जिस समय बदमाशों ने नाट्रीडम पर धावा मारा था, उस समय इज़मेरल्डा सो रही थी।

क्षण-क्षण बढ़ते हुए शोर के कारण उसकी बकरी जागकर मैं मैं कर रही थी। पीछे वह भी जग गई। जागने पर उठकर बैठ गई। ध्यान से सुनने लगी। वह शोर और रोशनी से भयभीत हो बाहर निकली। स्क्वायर के दृश्य को देखकर वह अत्यन्त डर गई। बचपन ही से जिप्सी-जाति के विचित्र अन्ध—विश्वासों में उसका विश्वास हो गया था। उसे मालूम हुआ, जैसे परियों और प्रेतों की यह अद्भुत लीला है, इसलिये वह भय से भागकर फिर अपनी कोठरी में चली गई। तकिये में अपना मुँह छिपाकर पड़ रही।

धीरे धीरे उसे ज्ञात हुआ कि वह प्रेतों से नहीं, बल्कि मनुष्यों से

घिरी है, शोर ने उसे वास्तविक जगत् का ध्यान दिलाया। उसके भय का प्रवाह दूसरी ओर वह चला। उसने सोचा, शायद लोग मुझे पकड़ कर फाँसी पर लटकाना चाहते हैं। जीवन तथा आशा के विनाश का ध्यान तथा उसी के साथ फीवस को खो देने का विचार झट उसके मस्तिष्क में दौड़ गया। वह अब भी भविष्य में फीवस को जीतने की आशा रखती थी। अपनी असमर्थता, भागने के रास्तों के बन्द होने तथा अपनी असहाय और एकान्त अवस्था के विचार एक ही साथ उसके मस्तिष्क में बाढ़ के पानी की तरह आये। वह घुटने के बल बैठ गई। उसका मुँह बिस्तरे में छिपा था, हाथ उसके सिर पर पड़े थे। वह भगवान से प्रार्थना करने लगी।

इस प्रकार वह बहुत देर तक पड़ी रही। वह काँप रही थी। जनता के शोर से वह ठंडी पड़ती जाती थी। वह उस शोर के अर्थ को न समझ सकती थी। वह कुछ न समझती थी कि क्या हो रहा है। केवल वह भयंकर परिणाम का ध्यान कर रही थी।

उस पीड़ा की दशा में उसने समीप ही आदमियों के पाँवों की आहट सुनी। उसने पीछे मुड़कर देखा, तो दो आदमी खड़े दिखाई पड़े। उनमें एक लालटेन लिये था। वह जब कमरे के भीतर गया, वह चीख उठी।

डरो मत, मैं हूँ—उस आदमी ने कहा।

उसका स्वर परिचित सा जान पड़ा।

तुम कौन हो?—युवती ने पूछा।

पियरे ग्रींगोयरे।

नाम सुनकर उसका डर जाता रहा। उसने आँखें उठाकर उसे पहिचाना। किन्तु उसकी बगल में एक काला आदमी खड़ा था, जो नख से शिख तक काले वस्त्र से आच्छादित था। वह चुप हो रही।

भर्त्सना करते हुए ग्रींगोयरे ने कहा—दजाली ने मुझे तुमसे पहिले पहिचान लिया।

सचमुच बकरी पहिले ही, ग्रींगोयरे के आते ही, उसके पास जाकर अपना मुँह उसके घुटने पर रगड़ने लगी थी। कवि भी उसे सहला रहा था।

तुम्हारे साथ वह कौन है?—युवती ने धीरे से पूछा।

डरो नहीं, मेरे एक मित्र हैं—कवि ने उत्तर दिया।

ग्रींगोयरे अपनी लालटेन फर्श पर रखकर दजाली की देह को सहलाने लगा—उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करने लगा।

मगर काली पोशाकवाले आदमी ने आगे बढ़कर उसके कंधे को ठोंका। ग्रींगोयरे चौंक उठा—मैं भूल गया कि जल्दी है। मगर तो भी आदमियों के साथ इस प्रकार रुखाई से बर्ताव नहीं करना चाहिये।

इसके बाद युवती से बोला—मेरी प्यारी! तुम्हारा और दजाली का जीवन खतरे में है। वे तुम्हें फिर फाँसी देना चाहते हैं। हम तुम्हारे मित्र हैं, तुम्हारी रक्षा के लिये यहाँ आये हैं। हमारे पीछे-पीछे आओ।

क्या यह सही है ?—युवती चिल्ला पड़ी ।

हाँ, बिलकुल सत्य । जल्दी आओ ।

मैं चलूँगी, मगर तुम्हारा मित्र क्या नहीं बोलता ?

क्योंकि उसके माँ-बाप ने उसे चुप रहना ही सिखाया था ।

वह चुप हो रही । ग्रींगोयरे ने उसका हाथ पकड़ लिया । उसके साथी ने लालटेन ले ली ।

युवती भय से कुछ न समझ सकती थी । वह चुपचाप अनुसरण करने लगी । बकरी बार बार कवि के पाँवों के नीच चली जाती थी । वह लड़खड़ाकर गिरने से बच जाता था ।

इसी प्रकार जीवन में भी होता है—गिरने से बचने पर वह हर बार कहता था—बहुधा हमारे सुहृद मित्रों के कारण ही हमारा नाश होता है ।

वे जल्दी-जल्दी मीनार से उतर कर मठ में आ पहुँचे । बाहर की तुमुल ध्वनि के कारण गिरजे से भयकर प्रतिध्वनि उठ रही थी । मठ सुनसान पड़ा था, वहाँ कोई न था । काले नकाबवाले आदमी ने पीछे की ओर के चोर-दरवाजे को कुंजी से खोला ।

वे गिरजे के पूर्व के हिस्से में आ गये, जो छोटी-सी दीवार से घिरा हुआ मैदान था । शोर वहाँ धीमा सुनाई पड़ रहा था । तो भी वे अभी खतरे के बहुत समीप थे ।

लालटेनवाला आदमी सबसे आगे जा रहा था । वे मैदान के दूसरे किनारे पहुँच गये । वहाँ पर नदी में एक नाव लगी थी । उस नकाबपोश आदमी ने ग्रींगोयरे और युवती को नाव पर चढ़ने का

इशारा किया। बकरी भी उनके पीछे-पीछे गई। वह लालटेनवाला आदमी सबसे पीछे नाव पर चढ़ा। वह नाव पर बैठकर ताबड़तोड़ नाव खेने लगा। वहाँ पर 'सेन' की धारा बड़ी वेगवती थी, इस लिये वहाँ से निकलने में उसे विशेष परिश्रम करना पड़ा।

नाव में युवती ने कवि के पास ही स्थान ग्रहण किया। कवि, बकरी को गोद में लेकर, खेलने लगा। उस समय वह बड़ा प्रसन्न था। वह दर्शनिकों की भाषा में बोल रहा था।

नाव 'सेन' के दाहिने किनारे की ओर चली। युवती खेने-वाले की ओर गुप्त भय से देख रही थी। वह नाव पर प्रेत की तरह दौड़ रहा था। वह अपनी शक्ल को अब भी छिपाये हुए था। वह एकदम चुप था। उस समय केवल डाँड़ खेने का शब्द हो रहा था। वह शब्द पानी की कलकल-ध्वनि में मिल जाता था। काली पोशाकवाला आदमी तो बुलाने पर भी नहीं बोलता था। वह नदी की तेज़ धारा से लड़ रहा था

ग्रींगोयरे एकाएक बोल उठा—हाँ मास्टर! जब हम लोग गिरजे में जा रहे थे, आपने देखा न कि आप का बहरा मित्र किसी की खोपड़ी तोड़ रहा था? उस अभागे को मैं नहीं पहिचान सका, क्योंकि मैं करीब की चीजों को नहीं देख सकता। आप बता सकते हैं, वह कौन था?

वह आदमी अब भी चुप ही रहा, उसके हाथ शिथिल पड़ गये। डाँड़े उसके हाथ से छूट गये। उसका सिर उसकी छाती पर लटक गया। वह आह भरने लगा। इज़मेरल्डा काँप

उठी। उसने इस प्रकार का उसाँस लेना पहिले भी देखा था।

कुछ देर नाव योंही बहती रही। फिर उस आदमी ने होश सँभाला। नाव को फिर खेने लगा।

ग्रींगोयरे बोल उठा—मास्टर! यह देखो, वह महल कैसा सुन्दर है। उस पर चन्द्रमा कैसा फूटे अंडे की तरह दिखाई पड़ रहा है। वह महल बहुत ही सजा हुआ है। उसमें एक बड़ा रम्य उपवन भी है। उस उपवन में एक छोटी-सी सुन्दर पोखरी है। जंगली जन्तुओं के रहने का एक स्थान भी है। वहाँ पर एक वृक्ष है, जिसे 'प्रेमियों का एकान्त' कहते हैं, क्योंकि किसी समय उसी वृक्ष के निचे फ्रांस की एक सुप्रसिद्ध राजकुमारी और एक पुलिस कामटेबल का मिलन हुआ था। मनुष्य जीवन, बड़े और छोटे—सब के लिये, भले बुरे का सम्मिश्रण है। सुख दुःख हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं। मास्टर! मैं तुम्हें इस 'बार्बो' महल की कहानी अवश्य सुनाऊँगा। कहानी दुःखान्त है। सन् १३१९ की बात है, फ्रांस में पाँचवें फिलिप का राज्य था। कहानी से यही शिक्षा मिलती है कि इन्द्रियों की वासनाएँ हानिकर तथा पाप-पूर्ण होती हैं। अपने पड़ोसी की स्त्री की ओर बहुत न देखो, नहीं तो तुम्हारी इन्द्रियाँ निरंकुश हो जायँगी। वह सुनो, वहाँ का शोर बढ़ता ही जाता है।

नास्त्रेडेम के पास का शोर बढ़ता ही जा रहा था। वे ध्यान से देख-सुन रहे थे। उन्होंने जयध्वनि सुनने के साथ ही गिरजे पर बहुत-से सिपाहियों को हाथ में मशाल लिये देखा। वे बादशाह

के पहरेदार थे। समस्त गिरजे पर उन्होंने कब्जा कर लिया था वे किसी को इधर-उधर खोज रहे थे। 'जिप्सी जादूगरनी ! जिप्सी की मृत्यु'—ये शब्द स्पष्टतया सुनाई पड रहे थे।

अभागिनी युवती ने अपने हाथों से अपने चेहरे को छिपा लिया। वह अपरिचित व्यक्ति यथाशक्ति नाव को दूसरे किनारे की ओर खेने लगा। ग्रींगोयरे बकरी को गोद में लिये युवती से दूर खिसकता जाता था। युवती उसे अन्तिम आशा जान कर उसके पास सटी जाती थी।

ग्रींगोयरे इस चिन्ता में पडा था कि बकरी भी उस समय के कानून के अनुसार फाँसी पड जायगी। बेचारे के शरीर पर दो फाँसी पानेवाले जीव लटक रहे थे, मगर उसका मित्र युवती का सारा भार उठाने को तैयार था। वह युवती तथा बकरी को मन की तुला पर तौल रहा था—आह ! मैं दोनों को बचाने में असमर्थ हूँ।

नाव किनारे से टकराई। शोर अब भी सुन पडता था। अपरिचित व्यक्ति उठ कर युवती को जमीन पर उतारने के लिये सहायता देना चाहता था; मगर युवती ने उसे ढकेल दिया। वह ग्रींगोयरे का हाथ पकड कर उससे सट गई। वह तो बकरी के साथ व्यस्त था। इसलिये बिना सहायता के ही नाव से जमीन पर कूद गई। वह कुछ न समझ रही थी कि वह क्या कर रही है। एकाएक उसने देखा कि वह अपरिचित व्यक्ति के साथ अकेली रह गई है। ग्रींगोयरे नाव से उतरते ही बकरी के साथ कहीं छिप गया।

अभागिनी उस आदमी के साथ अपने को अकेली पाकर काँप उठी। वह ग्रींगोयरे को पुकारने का प्रयत्न करना चाहती थी, मगर उसकी जिह्वा उसके तालू में सट गई।

उस अपरिचित का हाथ युवती की कलाई पर पड़ा, वह शीतल और बलवान था। युवती के दाँत कटकटा रहे थे, वह पीली पड़ती जाती थी। अपरिचित व्यक्ति बिना एक शब्द बोले उसे खींचने लगा। युवती को पकड़ कर वह 'ग्रेव' की ओर जल्दी-जल्दी जाने लगा।

युवती ने अपने को भाग्य पर छोड़ दिया। वह अपने वश में न थी। वह चारों ओर देखने लगी, मगर कोई दिखाई न पड़ा। हर तरफ सन्नाटा था। सहायता की आशा जाती रही। वह असहाय और निराश हो, मूक अपरिचित के पीछे पीछे घसीटी जाने लगी। कभी-कभी वह साहस करके पूछती थी—तुम कौन हो? तुम कौन हो?

इस प्रकार वे आगे बढ़ रहे थे। चन्द्रमा चमक रहा था। वे 'ग्रेव' स्क्वायर के बीचोबीच आ पहुँचे। युवती 'ग्रेव' को पहिचानती थी।

वह आदमी खड़ा हो गया। युवती की ओर घूमकर अपने चहरे से उसने कपड़ा हटा दिया।

मुझे विश्वास था कि यह वही है—भयातुरा युवती ने मन ही-मन कहा।

वह पादरी फ्राँडे था। वह प्रेत की तरह दमक रहा था।

के पहरेदार थे। समस्त गिरजे पर उन्होंने कब्जा कर लिया था वे किसी को इधर-उधर खोज रहे थे। 'जिप्सी जादूगरनी ! जिप्सी की मृत्यु'—ये शब्द स्पष्टतया सुनाई पड रहे थे।

अभागिनी युवती ने अपने हाथों से अपने चेहरे को छिपा लिया। वह अपरिचित व्यक्ति यथाशक्ति नाव को दूसरे किनारे की ओर खेने लगा। ग्रींगोयरे बकरी को गोद में लिये युवती से दूर खिसकता जाता था। युवती उसे अन्तिम आशा जान कर उसके पास सटी जाती थी।

ग्रींगोयरे इस चिन्ता में पडा था कि बकरी भी उस समय के कानून के अनुसार फाँसी पड जायगी। बेचारे के शरीर पर दो फाँसी पानेवाले जीव लटक रहे थे, मगर उसका मित्र युवती का सारा भार उठाने को तैयार था। वह युवती तथा बकरी को मन की तुला पर तौल रहा था—आह ! मैं दोनों को बचाने में असमर्थ हूँ।

नाव किनारे से टकराई। शोर अब भी सुन पड़ता था। अपरिचित व्यक्ति उठ कर युवती को जमीन पर उतारने के लिये सहायता देना चाहता था, मगर युवती ने उसे ढकेल दिया। वह ग्रींगोयरे का हाथ पकड कर उससे सट गई। वह तो बकरी के साथ व्यस्त था। इसलिये बिना सहायता के ही नाव से जमीन पर कूद गई। वह कुछ न समझ रही थी कि वह क्या कर रही है ! एकाएक उसने देखा कि वह अपरिचित व्यक्ति के साथ अकेली रह गई है। ग्रींगोयरे नाव से उतरते ही बकरी के साथ कहीं छिप गया।

अभागिनी उस आदमी के साथ अपने को अकेली पाकर काँप उठी। वह ग्रीगोयरे को पुकारने का प्रयत्न करना चाहती थी, मगर उसकी जिह्वा उसके तालू में सट गई।

उस अपरिचित का हाथ युवती की कलाई पर पड़ा, वह शीतल और बलवान था। युवती के दांत कटकटा रहे थे, वह पीली पड़ती जाती थी। अपरिचित व्यक्ति बिना एक शब्द बोले उसे खींचने लगा। युवती को पकड़ कर वह 'ग्रेव' की ओर जल्दी-जल्दी जाने लगा।

युवती ने अपने को भाग्य पर छोड़ दिया। वह अपने वश में न थी। वह चारों ओर देखने लगी, मगर कोई दिखाई न पड़ा। हर तरफ सन्नाटा था। सहायता की आशा जाती रही। वह असहाय और निराश हो, मूक अपरिचित के पीछे पीछे घसीटी जाने लगी। कभी-कभी वह साहस करके पूछती थी—तुम कौन हो? तुम कौन हो?

इस प्रकार वे आगे बढ़ रहे थे। चन्द्रमा चमक रहा था। वे 'ग्रेव' स्क्वायर के बीचोबीच आ पहुँचे। युवती 'ग्रेव' को पहिचानती थी।

वह आदमी खड़ा हो गया। युवती की ओर घूमकर अपने चेहरे से उसने कपड़ा हटा दिया।

मुझे विश्वास था कि यह वही है—भयातुरा युवती ने मन-ही-मन कहा।

वह पादरी क्लाड था। वह प्रेत की तरह दारख रहा था।

सुनो—पादरी ने कहा।

युवती उस विनाशकारी शब्द को सुन कर काँप उठी। वह जल्दी जल्दी हाँफते हुए कहने लगा—सुनो, हमलोग अपने ल. य स्थान पर पहुँच गये हैं। यही हमारा भाग्य निर्णायक स्थान है। नियति ने हम दोनों को एक दूसरे से मिलाया है। तुम्हारा जीवन मेरे हाथ में है और मेरी आत्मा तुम्हारे हाथ में। इस स्थान के—इस रात के—परे सब अंधकारमय है। मैं तुमसे इतना ही कहता हूँ कि मुझसे अपने फोबस के विषय में कुछ न बोलो। यदि तुमने उसका नाम लिया, तो मैं नहीं जानता कि मैं क्या कर बैठूँगा। बड़ा भयंकर कांड हो जायगा।

वह युवती का हाथ पकड़े इधर-उधर टहल रहा था। टहलते-टहलते एक जगह रुक कर कहने लगा—अपना मुँह न फेरो, सुनो, यह आवश्यक कार्य है। मैं तुमसे बताता हूँ कि क्या हुआ है। आह! मुझे याद दिलाओ, मैं क्या कह रहा था? पार्लमेंट का फरमान निकला है कि तुम्हें फिर फाँसी दी जायगी। मैंने जल्लादों के हाथ से तुम्हारी रक्षा की है, तथापि वे अब भी तुम्हारी खोज में हैं। देखो—

उसने अपना हाथ नगर की ओर फैला दिया। खोज अब भी जारी थी। शोर समीप आता जाता था। सिपाही चिल्ला रहे थे—जिप्सी! जादूगरनी! उसे मार डालो! मार डालो!

तुम देख रही हो, मैं झूठ नहीं बोलता। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। अब जुबान न हिलाओ। यदि तुम कहना चाहती हो कि तुम

मुझ से घृणा करती हो, तो अच्छा है कि मुझसे बोलो ही नहीं। मैंने तुम्हारी रक्षा की है और अब भी पर्णतया रक्षा कर सकता हूँ। तुम्हें दो में से एक को चुनना है—फाँसी को गले लगाओ या मुझको। जैसा तुम चाहोगी, वैसा ही मैं करूँगा।

वह युवती को पकड़े हुए फाँसी के तख्ते के पास ले गया। टिकठी की ओर इशारा करके अपनी ओर उसका ध्यान आकृष्ट करते हुए बोला—दोनों में से किसी एक को चुन लो।

युवती ने झटके से अपने को उसके हाथ से छुड़ाया। वह फाँसी की टिकठी के पास ही गिर गई। उसने टिकठी के खम्भे को दोनों हाथों से पकड़ लिया। उस समय वह 'पवित्र कुमारी' की तरह दीख पड़ती थी। पादरी निस्तब्ध खड़ा रहा।

युवती ने कहा—यह तुमसे कम भयकर है।

पादरी निराश हो जमीन की ओर देखने लगा। आह! यदि ये फर्श के पत्थर बोल सकते, तो वे भी कहते कि यह कितना दुखी मनुष्य है।

युवती चुप थी। पादरी भी शान्त सा ही था। उसके कठोर चहरे पर कोमलता की रेखाएँ खिंच आई थीं। वह फिर कहने लगा—मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। क्या उस अग्नि की—जो मेरे हृदय को जला रही है—एक भी चिनगारी तुम्हें नहीं दिखाई पड़ती? प्रेम मुझे रात दिन जला रहा है—पीड़ा दे रहा है—सता रहा है। आह! मेरी पीड़ा दयनीय है। दया करो युवती! मैं तुमसे कोमलता पूर्वक बातें कर रहा हूँ। मैं प्रयत्न करूँगा कि तुम मुझसे

ज़रा भी न डरो। यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को प्यार करता है, तो उसका क्या दोष? मेरी सर्वेश्वरी! क्या तुम मुझे क्षमा न करोगी? बस यही अन्तिम है? तुम्हारी इसी उदासीनता ने तो मुझे कठोर बनाया है। तुम मेरी ओर देखती तक नहीं। जब हम दोनों अनन्त के किनारे खड़े हैं, तब भी तुम दूसरे के विषय में सोच रही हो। मैं तुम्हारे पाँवों के नीचे की धूल को चूम सकता हूँ—सिर-आँखों पर चढ़ा सकता हूँ—अपना हृदय फाड़ कर दिखा सकता हूँ कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ। तुम्हारा हृदय कोमलता से भरा है, विनम्रता और सुशीलता से तुम चमक रही हो। तुम सुन्दरी हो, सहृदया हो, दयावती हो, मोहन मन हो। अफ़सोस! तुम केवल मुझ पर ही कठोर हो। आह! यह भाग्य की करतूत है।

उसने अपने मुखमंडल को हथेलियों से छिपा लिया। युवती ने उसकी सिसकियाँ सुनीं। उसने आज पहिली बार पादरी को रोते देखा। वह अभागा, दुःखी और हताश पादरी कुछ देर तक योंही रोता रहा। फिर आप-ही आप शान्त होकर युवती से दीनता पूर्वक कहने लगा—मैं अपने भावों के प्रकाशन के लिये शब्द ढूँढ़ता हूँ, मगर मुझे कोई उचित शब्द नहीं मिलता। तो भी मैं अच्छी तरह सोच रहा हूँ कि तुमसे मुझे क्या कहना चाहिये। मैं काँप रहा हूँ। इस निर्णय के क्षण में मैं असमर्थ हो रहा हूँ। मालूम होता है, जैसे कोई विलक्षण शक्ति मुझे घेरे हुई है। यदि तुम मुझ पर दया न करोगी, तो मैं तुम्हारे ही ऊपर गिर पड़ूँगा। दो जानों का मर्म-

नाश न करो। आह! यदि तुम किसी तरह जान लेतीं कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ—मेरा हृदय कैसा प्रेमोन्मत्त हो रहा है! हाय! मैंने अपने सारे धार्मिक कृत्यों को तिलाञ्जलि दे दी है। विद्वान होते हुए भी मैं विज्ञान की दिल्लगी उड़ाता हूँ—कुलीन होकर भी अपने नाम को हँसाता हूँ—पादरी होकर भी वासनाओं के तकिये लगाकर सोता हूँ। सचमुच मैं ईश्वर का अपमान करता हूँ। किन्तु क्या करूँ प्यारी मोहिनी! यह सब तुम्हारे लिये है। इतने पर भी तुम मुझ अभिशप्त को दूर हटा रही हो! आह! मुझे कहने दो—अभी और कहना है, वह बड़ा भयकर है—

इतना कहने के साथ ही वह वन पशु की तरह चीख पड़ने लगा। कुछ क्षण चुप रह कर फिर आप ही कहने लगा—हत्यारिणी! तूने मेरे भाई का क्या किया है?

फिर कुछ क्षण चुप होकर वह आगे बढ़ा—हे ईश्वर! तुमने उसका क्या किया? मैंने उसे अपनी गोद में पाला था। मैंने उसे अपने हाथों से खिलाया था, खेलाया था। मैं उसे प्यार करता था और मैंने ही उसको मार डाला! हा मेरे परमेश्वर! मेरी ही आँखों के सामने उसका सिर तुम्हारे मन्दिर की दीवार से टकरा गया है। ऐसा मेरे ही कारण हुआ है—इस औरत के कारण—इस औरत के कारण—

उसके नेत्र क्रुद्ध बनैले सुअर की तरह हो रहे थे। वह आगे न बोल सकता था। वह बार-बार यही कहता था—इस औरत के कारण, इस औरत के कारण!

उसके होंठ अब भी हिल रहे थे, मगर उसका स्वर सार्थक न था। एकाएक वह जमीन पर बैठ गया। उसका सिर युवती के घुटनों पर पड गया। युवती ने धीरे से अपना पाँव उसके सिर के नीचे से हटाना चाहा। पादरी सचेत हो गया। वह अपनी भींगी अँगुलियों की ओर आश्चर्य से देख रहा था—क्या मैंने आँसू बहाये हैं?

युवती की ओर तेजी से घूमकर उसने कहा—इस प्रकार शान्त हो तुमने कैसे मुझे रोते देखा है? निठुर लडकी! तुम नहीं जानतीं कि ये आँसू क्या हैं? क्या जिससे हम घृणा करते हैं, उसकी दुर्दशा भी हमको पिघला नहीं सकती? तुम मुझे मरते देखती और हँसती हो! केवल एक शब्द—'क्षमा' का एक शब्द! मुझ से यह न कहो कि तुम मुझे प्यार करती हो—केवल इतना ही कह दो कि तुम मुझे प्यार करने का प्रयत्न करोगी। बस, इतना ही पर्याप्त है, फिर तो मैं तुम्हारी रक्षा कर लूँगा। जल्दी बोलो। समय भगा जाता है। मैं हाथ जोडता हूँ। जिन वस्तुओं को तू पवित्र और प्रिय समझती है, उनकी शपथ देकर कहता हूँ कि देर न करो, मेरे फिर पत्थर होने तक कुछ कह दो। सोचो हम दोनों का भविष्य। अन्त मेरे हाथ है। मैं पागल हूँ—यह कितना भयकर है! सोच लो। मैं सब को ढकेल दूँगा। हम लोगों के नीचे अतल खड्ड है। अभागिनी! उसी खड्ड में मेरे साथ तेरा पतन होगा। अनन्त के गर्भ में तू मेरा अनुसरण करेगी। केवल एक शब्द—'दया' का एक शब्द—केवल एक ही शब्द।

युवती ने उत्तर देने को मुँह खोला। पादरी उसके सामने घुटने

टेक कर बैठ गया। वह उसके शब्द सुनने को लालायित हो उठा था। युवती ने कहा—तुम हत्यारे हो।

पादरी ने उसे अपने भुजपाश म बाँध लिया—वह पैशाचिक हास्य का आनन्द लेने लगा। फिर बोला—अच्छा हाँ, मैं हत्यारा हूँ,और तुम मेरी हत्या करनेवाली होगी। तुम मुझे अपना दास नहीं बनाती, तो तुम्हे मुझे अपना स्वामी स्वीकार करना होगा। तुम मेरी होगी। तुम मेरी होगी। मेरे पास एक माँद है, मैं तुम्हे वहाँ घसीट ले चलूँगा। तुम्हे मेरे पीछे पीछे चलना पड़ेगा, अन्यथा म तुम्हे पुलिस के हवाले कर दूँगा। या तो तुम मरोगी, या मेरी होकर रहोगी। किसी की होकर रहो—चाहे पादरी की या अधर्मी को या हत्यारे की, मगर इसी रात को। सुन रही हो? आओ, आनन्द मनाओ, मेरा चुम्मा लो। मूर्ख बालिके। उधर कब्र है, इधर मेरा बिस्तर—पृथ्वी का अक या मेरा पर्यङ्क।

पादरी की आँखों मे क्रोध तथा वासना की किरणें तीक्ष्ण निकल रही थीं। उसके अपवित्र होठ युवती की गर्दन को लाल बनाने लगे। बेचारी उसके भुजपाश मे छटपटा रही थी। वह उसे लगातार चुम्बनो से व्याकुल कर रहा था।

शैतान! मुझे न काटो—युवती ने चीख मार कर कहा—घृणित विषैले पादरी! मुझे छोड दो, जाने दो, नहीं तो मैं तुम्हारे भूरे बालों को नोच डालूँगी।

पादरी पीतवर्ण हो गया। उसने युवती को छोड दिया। युवती अपने को विजयी समझ रही थी। वह कहने लगी—मैं तुम से

कहती हूँ कि मैं अपने प्यारे फीनस की हूँ, मैं केवल फीनस को प्यार करती हूँ, मेरी दृष्टि मे केवल फीनस ही सुन्दर है। तू पादरी बुड्ढा है, खूसट है, कुरूप है, गन्दा है। हटो, चले जाओ।

वह चिल्ला उठा, मानो गर्म लोहे से दागा गया हो। दाँत पीसते हुए उसने कहा—तब मरो।

युवती भागने की कोशिश करने लगी, मगर पादरी ने उसे पकड़ लिया—झकझोर कर पृथ्वी पर दे मारा। उसको घसीटते हुए वह 'तोर-रोलैंड' की ओर अति वेग से जाने लगा। युवती की ओर घूम कर उसने पूछा—अन्तिम बार! तुम मेरी होओगी?

युवती ने जोर देकर कहा—हरगिज नहीं।

पादरी चिल्लाकर बोल उठा—गुदुली! गुदुली! यह देखो, जिप्सी युवती यहाँ है, अपना बदला लो।

युवती को मालूम हुआ, जैसे किसी ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसने घूम कर देखा—एक दीवार के छिद्र से आकर एक मजबूत हाथ ने लोहे के पंजे की तरह उसे पकड़ा था।

इसे जोर से पकड़े रहो—पादरी ने कहा—यह भागी हुई जिप्सी है, इसे छोड़ना मत। मैं पुलिस बुलाने जाता हूँ, तुम इसे फाँसी पाते देखोगी।

दीवार के दूसरी ओर से पागल की तरह एक हँसी आई—हा—हा—हा!!!

पादरी पाँट-नाट्रेडेम की ओर गया। उधर से आते हुए घोड़ों की टाप सुनाई देती थी।

युवती ने एकान्तवासिनी को पहिचाना। भय से उसाँस लेती हुई वह अपने हाथ को छुड़ाने का प्रयत्न करने लगी। वह निराशा तथा पीड़ा से अपने वदन को सिकोड़ लेती थी, मगर वह किसी तरह अपने को छुड़ा न सकी। एक स्त्री के हाथ ने उसे अस्वाभाविक शक्ति से पकड़ा था। उस स्त्री की उँगलियाँ एक जंजीर से भी कड़ी तथा मजबूत थीं। मालूम होता था कि दीवार के अन्दर से सजीव सँड़सी ने निकल कर उसे पकड़ लिया था।

युवती थक कर दीवार पर अचेत पड़ रही। मृत्यु का भय उसकी आँखों के सामने नाचने लगा। वह जीवन के, जवानी के और आकाश के सौन्दर्य पर विचारने लगी। उसे प्रकृति तथा फीबस के प्रेम का ध्यान आने लगा। भूत, वर्तमान, भविष्य, पादरी, जल्लाद और फाँसी के तख्ते उसकी आँखों के सामने से नाचते हुए आने-जाने लगे। भय से उसके केश खड़े हो गये थे। उसी समय उसने एकान्तवासिनी का विकट स्वर सुना—हा—हा—हा !!! तुम फाँसी पाओगी ?

युवती ने खिड़की के छड़ों के बीच से उसके चेहरे को देखा निर्बल स्वर में कहा—मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

जिप्सी युवती ! जिप्सी युवती ! जिप्सी युवती—एकान्तवासिनी कह रही थी।

इज़मेरल्डा ने सोचा कि वह मनुष्य नहीं थी, इसलिये उसने अपने लम्बे केशों से अपने चेहरे को छिपा लिया।

एकाएक वृद्धा बोल उठी—मानो अब तक युवती का प्रश्न

उसके मस्तिष्क में घुस न पाया था—तुम पूछती हो कि तुमने मेरा क्या बिगाड़ा है ? आह ! जिप्सी ! सचमुच खुद तुमने तो मेरा क्या बिगाड़ा है, मगर सुनो, मैं तुम्हें बता दूँ, मेरी एक पुत्री थी—बड़ी सुन्दरी थी—मेरी प्यारी ऐगनीज़ !

अँधेरे में वह स्त्री किसी चीज को चूम रही थी।

फिर कहने लगी—जिप्सी ! सुन रही हो ? जिप्सियों ने ही मेरी पुत्री को चुरा लिया, उन्होंने उसे खा डाला। बस यह तुमने मेरा बिगाड़ा है।

मेमने की तरह निर्दोष युवती ने उत्तर दिया—शायद उस समय मैं पैदा भी नहीं हुई थी

ओह ! हाँ—एकान्तवासिनी ने कहा—तुम अवश्य पैदा हुई होगी। इस माँद में रहते मुझे पन्द्रह वर्ष हो गये। पन्द्रह वर्ष में विपत्ति झेलती और ईश्वर-प्रार्थना करती रही हूँ। मैं सच कहती हूँ कि वह जिप्सी ही थी, जिसने मेरी बच्ची को चुराया था। जरूर उसमें तुम्हारा भी हाथ था। तुम बच्चे का प्यार जानती हो ? सोचो तो उस आनन्द को—उस प्यार को, जब बच्चा तुम्हारे पाँवों पर खेलता है—तुम्हारा स्तन पीता है—तुम्हारी गोद में सोता है। वह कितना असहाय है ! कितना निर्दोष है ! मेरे ऐसे ही बच्चे को जिप्सियों ने चुरा लिया और मार डाला। अब मेरी बारी है, मैं जिप्सियों का खून पीऊँगी। यदि बीच में ये छड़ न होते, तो मैं अभी तुम्हें काट खाती ! अरी जिप्सी-माताओ ! तुमने मेरी बच्ची को खाया है, अब आओ, इस अपनी पुत्री की दशा देखो।

इतना कहकर वह स्त्री हँस पड़ी। उसका हँसना और दाँत कटकटाना एक-सा था।

उषा का आगमन समीप था। फाँसी के तख़्ते अधिकाधिक साफ़ दिखाई देने लगे थे। दूसरी ओर से घोड़ों की टाप के शब्द आ रहे थे।

भद्रे!—पीड़ा से व्याकुल युवती ने कहा—भद्रे! दया करो, करुणा करो, वे आ रहे हैं! मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा। क्या अपनी आँखों तुम मेरा मरना देख सकोगी? मेरा विश्वास है कि तुम दयावती हो। मुझे जाने दो, छोड़ दो, दया करो, मुझे इस प्रकार न मरने दो।

मेरी पुत्री को लौटा दो—एकान्तवासिनी ने कहा।

दया! दया!! प्राणों की भीख!!!

बस, मेरी पुत्री लौटा दो।

ईश्वर के लिये मुझे जाने दो।

मेरी पुत्री लौटा दो, चली जाओ।

युवती अतिशय थकावट के कारण अचेत सी होकर दीवार के सहारे अड़ गई। उसकी आँखें मुर्दे की आँखों की तरह उलट गी थीं। मन्द एवं स्फुट स्वर में बोली—अफ़सोस! तुम अपनी माँ को खोजती हो, मैं अपनी माँ को खोजती हूँ।

जो हो, मेरी लड़की को लौटा दो। तुम नहीं जानतीं कि वह कहाँ है? तब मरो! जब तुम्हारी माँ तुम्हें खोजती हुई आयेगी, मैं टिकठी की ओर इशारा कर दूँगी। ठहरो, मैं तुम्हें दिखाती

उसके मस्तिष्क में घुस न पाया था—तुम पूछती हो कि तुमने मेरा क्या बिगाड़ा है ? आह ! जिप्सी !, सचमुच खुद तुमने तो मेरा क्या बिगाड़ा है, मगर सुनो, मैं तुम्हे बता दूँ, मेरी एक पुत्री थी—बड़ी सुन्दरी थी—मेरी प्यारी ऐगनीज !

अँधेरे मे वह स्त्री किसी चीज को चूम रही थी।

फिर कहने लगी—जिप्सी ! सुन रही हो ? जिप्सियों ने हा मेरी पुत्री को चुरा लिया, उन्होंने उसे खा डाला। बस यही तुमने मेरा बिगाड़ा है।

मेमने की तरह निर्दोष युवती ने उत्तर दिया—शायद उस समय मैं पैदा भी नहीं हुई थी

ओह ! हाँ—एकान्तवासिनी ने कहा—तुम अवश्य पैदा हुई होगी। इस माँद में रहते मुझे पन्द्रह वर्ष हो गये। पन्द्रह वर्ष में विपत्ति झेलती और ईश्वर-प्रार्थना करती रही हूँ। मैं सच कहती हूँ कि वह जिप्सी ही थी, जिसने मेरी बच्ची को चुराया था। जरूर उसमें तुम्हारा भी हाथ था। तुम बच्चे का प्यार जानती हो ? सोचो तो उस आनन्द को—उस प्यार को, जब बच्चा तुम्हारे पाँवों पर खेलता है—तुम्हारा स्तन पीता है—तुम्हारी गोद में, सोता है ! वह कितना असहाय है ! कितना निर्दोष है !. मेरे ऐसे ही बच्चे को जिप्सियों ने चुरा लिया और मार डाला ! अब मेरी बारी है, मैं जिप्सियो का खून पीऊँगी ! यदि बीच में ये छड़ न होते, तो मैं अभी तुम्हें काट खाती ! अरी जिप्सी-माताओ ! तुमने मेरी बच्ची को खाया है, अब आओ, इस अपनी पुत्री की दशा देखो !

इतना कहकर वह फिर हँस पड़ी। उसका हँसना और दाँत कटकटाना एक-सा था।

उषा का आगमन समीप था। फाँसी के तख्ते अधिकाधिक साफ दिखाई देने लगे थे। दूसरी ओर से घोड़े की टाप के शब्द आ रहे थे।

भद्रे!—पीड़ा से व्याकुल युवती ने कहा—भद्रे! दया करो, करुणा करो, वे आ रहे हैं। मैंने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा। क्या अपनी आँखों तुम मेरा मरना देख सकोगी? मेरा विश्वास है कि तुम प्यार करती हो। मुझे जाने दो, छोड़ दो, दया करो, मुझे इस प्रकार न मरने दो।

मेरी पुत्री को लौटा दो—एकान्तगामिनी ने कहा।

दया! दया!! प्राणों की भीख!!!

बस, मेरी पुत्री लौटा दो।

ईश्वर के लिये मुझे जाने दो।

मेरी पुत्री लौटा दो, चली जाओ।

युवती अतिशय थकावट के कारण अचेत सी होकर दीवार के सहारे अड़ गई। उसकी आँखें मुर्दे की आँखों की तरह उलट गई थीं। मन्द एवं स्फुट स्वर में बोली—अफसोस! तुम अपनी कन्या को खोजती हो, मैं अपनी माँ को खोजती हूँ।

जो हो, मेरी लड़की को लौटा दो। तुम नहीं जानती कि वह कहाँ है? तब मरो। जब तुम्हारी माँ तुम्हें खोजती हुई आयेगी, तो मैं टिकठी की ओर इशारा कर दूँगी। ठहरो, मैं तुम्हें दिखाती

हूँ, यहाँ मेरी पुत्री की जूती है। तुम जानती हो, इसकी जोड़ी कहाँ है? अगर तुम जानती हो, तो बताओ। मैं उसे लाने के लिये पृथ्वी-मण्डल के उस पार तक जा सकती हूँ।

मुझे वह जूती दिखाओ—युवती ने काँपते हुए कहा—मेरे ईश्वर! मेरे ईश्वर!!

इसके साथ ही युवती ने अपने छुटे हाथ से अपने गले की छोटी गठरी को खोला।

यही है! यही है!!—एकान्तवासिनी ने चिल्लाकर कहा—मेरी पुत्री!

युवती ने उस प्यारी जूती से ठीक मिलती-जुलती हुई दूसरी जूती निकाली। वह एक कागज में लपेटी हुई थी। उस कागज पर लिखा था—जब तुम्हें इस जूती की जोड़ी मिलेगी, तब तुम्हें माता का अंक प्राप्त होगा।

एकान्तवासिनी ने बिजली की तरह फुर्ती से दोनों जूतियों को मिलाया। लिखावट को एक क्षण में पढ़कर वह स्वर्गीय आनन्द में मग्न होकर बोल उठी—मेरी पुत्री! मेरी पुत्री!

माँ!—युवती ने आकर्षण-भरे स्वर में कहा और अपने हाथ को खिड़की में डाल दिया। एकान्तवासिनी उसे पगली की तरह चूमने लगी। साथ-साथ वह रोती भी जाती थी। वह अपने हृदय की अँधेरी गुफा से आँसुओं की धारा बहाने लगी। उस धारा में उसकी विपत्तियाँ पन्द्रह वर्ष से मिट्टी की तह की तरह बैठी थीं।

सन्यासिनी एकाएक उठी—अपने बालों को पीछे फेंक कर

खिड़की के छड़ को शरनी की तरह हिलाने लगी, पर वे निश्चल थे। फिर अपनी कोठरी के फर्श मे एक बड़ा पत्थर उठा कर उसने छड़ पर दे मारा। छड़ टूट गया। दूसरी चोट में खिड़की के बीच का फ्रेम भी टूट गया। उस समय उसके हाथों मे अलौकिक शक्ति जान पड़ती थी।

खिड़की में रास्ता बन गया। इस काम मे उसे एक मिनट से भी कम ही लगा। उसने अपनी पुत्री को कमर पकड़ कर उसे अपनी कोठरी मे खींच लिया, फिर छोटी बच्ची की तरह उसे अपनी भुजाओं मे बाँध कर पगली की तरह उस कोठरी में नाचने लगी। आनन्द मे वह गा उठती थी, चिल्ला उठती थी, अपनी कन्या को चुम्बनो से ढँक लेती थी, उससे बातें करने लगती थी, हँस पड़ती थी और कभी-कभी रो भी देती थी। कभी तो आनन्द विह्वल होकर कहने लगती—मेरी कन्या! मेरी कन्या! मैंने उसे पा लिया! यह देखो, मेरी पुत्री! ईश्वर ने कृपा करके उसे लौटा दिया है! वह कैसी सुन्दरी है! मेरे ईश्वर, तुमने उसे पन्द्रह वर्ष मुझसे दूर रक्खा, क्या उसे इतनी सुन्दरी बनाने के लिये? जिप्सियों ने उसे खाया न था? मुझसे ऐसा किस अभागे ने कहा? मेरी छोटी बच्ची, एक चुम्मा तो दे! तुझे देख-देखकर मेरा हृदय भीतर-ही भीतर कुछ कट रहा था। मेरी प्यारी! मुझे क्षमा कर, क्षमा कर बेटी! तू मुझे बहुत कठोर समझती थी? मैं तुझे प्यार करती हूँ। आह! तेरे कन्धे पर वही चिन्ह अब भी विद्यमान है। मैंने ही तुझे ये तनारे नेत्र दिये थे। मुझे चूम ले बेटी! मैं अब किसी की परवा

नहीं करती । अब जो माताएँ मेरे सामने आवेंगी, उन्हें मैं तुझे दिखाऊँगी और कहूँगी कि देख लो, मेरी हसीन लडकी के बहुतेरे प्रेमी होंगे । तेरे लिये मैं पन्द्रह वर्ष तक रोई हूँ। मेरी सारी सुन्दरता तुझे प्राप्त हुई है । एक बार मुझे चूम ले रे।

माता इसी प्रकार बकती गई। वह युवती को चूमते-चूमते थकती न थी । युवती के सारे अगो को उसने चूमा। युवती कुछ बाधा नहीं डालती थी, केवल असीम माधुर्य के साथ बोलती जाती थी—माँ ! माँ ॥

माता उससे कह रही थी—हम लोग यहाँ से दूर चले चलेंगे और 'रेम्स' नगर में जा बसेंगे। वहाँ पर मेरी कुछ सम्पत्ति भी है।

वह युवती से उसके लडकपन की बातें सुनाने लगी। युवती ने अन्त मे कहा—जिप्सी स्त्री ने तुम्हारे विषय में मुझसे कहा था कि तुम मिलोगी। एक हमारी जाति की वृद्धा वडी ही दयावती थी, वह पार साल मर गई, वह सर्वदा मेरी रक्षा करती थी, मानो वह मेरी धाई थी। उसी ने इस थैली को मेरे गले मे बाँधा था। उसी ने इसकी रक्षा करने को कहा था, क्योंकि इसी के द्वारा तुम मिलने को थी। उसने पहिले ही कहा था कि तुम अपनी माँ को अपने गले में पहिने हुई हो।

सन्यासिनी ने फिर अपनी पुत्री को अक में भर लिया—आह! तुम्हारा कोकिल-कठ कितना मधुर है। जब हम अपने देश को चलेंगी, तो इन जूतियों को ईसा के लिये गिरजे में दे देंगी।

'तुम सगीत की तरह बोलती हो बेटी ! आदमी किसी चीज से नहीं मर सकता, क्योंकि मैं खुशी के मारे न मर सकी।

वह ताली बजा बजाकर कहने लगी—मैं कैसा सुखी होऊँगी।

उसी समय 'पाट-नाट्रीडम' की ओर से आती हुई लोहे की झनकार तथा घोड़ों की टाप की आवाज सुनाई पडी।

युवती, माता की गोद में छिप रही। वह आभ्यन्तरिक पीडा से व्याकुल हो उठी। अत्यत भयकातर हो बोली—माँ! मुझे बचाओ, बचाओ, वे आ रहे हैं।

हे ईश्वर! यह क्या कह रही है? बेटी, मैं तो भूल ही गई थी कि लोग तेरा पीछा कर रहे हैं। तुमने क्या किया है?

मैं कुछ नहीं जानती, मगर मेरी फाँसी का हुक्म हुआ है।

फाँसी का? फाँसी का?—वृद्धा एक टक से अपनी पुत्री का मुँह देख रही थी।

हाँ माँ—निराश पुत्री ने उत्तर दिया—वे मुझे मार डालना चाहते हैं। वे मुझे पकड़ने के लिये आ रहे हैं। रक्षा करो, रक्षा करो माँ।

वृद्धा निस्तब्ध खडी थी। फिर वह अट्टहास पूर्वक कहने लगी—मैंने पन्द्रह वर्ष के बाद अभी अभी अपनी पुत्री को पाया है, और ये लोग फिर उसे मेरे पास से हटा ले जायँगे? जब वह इतनी बड़ी हुई है—मुझ से बोलती है—मुझे प्यार करती है, तब वे उसे मेरे सामने ही खा डालेंगे? माता के सामने! कभी नहीं। यह हो नहीं सकता—ईश्वर इसे सह नहीं सकता।

थोड़ी दूर पर एक स्वर सुन पड़ा—इधर, इस रास्ते से मास्टर ट्रीसटन ! पादरी ने कहा था कि वह 'चूहे की माँद' के पास मिलेगी।

घोड़ों की टाप सुनाई देने लगी।

अपनी रक्षा करो, रक्षा करो, मेरी प्यारी पुत्री ! अब मुझे याद आया, तुम सच कहती हो, तुम मरने जाती हो, अपनी रक्षा करो। खिड़की के पास से युवती पुत्री को खींच कर हटाते हुए वृद्धा माता ने कहा—ठहरो-ठहरो- चुपचाप पड़ी रहो, साँस तक न लो। चारो ओर सिपाही घूम रहे हैं। उजेला है। तुम कहीं जा नहीं सकती। वे आ रहे हैं। मैं उनसे बातें कर लूँगी। तुम इस कोने में पड़ी रहो। वे तुम्हें न देख सकेंगे। मैं कह दूँगी, कि तुम भग गई हो।

माता ने अपनी कन्या को एक कोने मे बिठा दिया। बाहर से वह कोना नहीं दिखाई देता था। उसने उसके सारे अंगों को उमा के कपड़े से ढँक दिया। उसके आस-पास घड़ा, पत्थर आदि रख दिया। फिर शान्त हो कर ईश-वन्दना करने लगी।

उसी समय पादरी की आवाज सुन पड़ी। उसकी पापमयी जिह्वा कह रही थी—इधर, इस तरफ, कैप्टेन फ्रीबस !

इस नाम को सुनकर इजमेरल्डा उठने का प्रयत्न करने लगी।

हिलो-डुलो नहीं—माता ने कहा।

बाहर की ओर भीड़ जमा हो गई। लोग हथियारों से लैस थे। माता झट उठकर इस प्रकार खिड़की पर खड़ी हुई कि भीतर का हिस्सा बाहर से दीखता ही न था।

ग्रेव स्क्वायर में भी उस दिन बड़ी भीड़ लग गई थी।

सैनिकों का सचालक घोड़े से उतर कर उधर ही आया। पूछा—ऐ बुढ़िया, हम लोग एक जादूगरनी को, फाँसी देने के लिये, खोज खोज रहे हैं। पता लगा है कि तुमने उसे पकड़ा था।

अभागिनी माता ने तटस्थ की भाँति कहा—मैं नहीं समझती, तुम क्या कह रहे हो?

वह पादरी क्या कह रहा था? वह कहाँ है?—किसी दूसरे ने कहा।

वह गायब हो गया—तीसरे ने कहा।

झूठ न बोलो बुड्ढी! तुम्हारी रखवाली में एक जादूगरनी रक्खी गई थी, वह कहाँ है?

एकान्तवासनी 'नहीं' न कर सकी, नहीं तो उस पर शुबहा हो सकता था। उसने साधारण रीति से कहा—यदि तुम्हारा मतलब एक लम्बी युवती से हो, तो वह सही है। वह मेरे हाथ को काटने लगी, मैंने उसे छोड़ दिया। मेरा शांति न भंग करो!

झूठ न बोलो बुड्ढी! मैं बादशाह का मिस्टर ट्रीसटन हूँ, सुनती हो?

तुम शैतान ट्रीसटन हो सकते हो—गुदुली ने उत्तर दिया—मैं अधिक कुछ नहीं बता सकती, न मैं तुम से डर ही सकती हूँ।

वह किधर भाग गई?—ट्रीसटन ने तब पूछा।

गुदुली ने अनसुनी करके कहा—मेरा विश्वास है कि वह उधर गई।

ट्रीसटन ने अपने आदमियों को आगे बढ़ने का इशारा किया।

वृद्धा का हृदय कुछ हल्का हो आया।

एक सिपाही ने पूछा—यह छड़ कैसे टूटा है ?

वृद्धा ने उत्तर दिया—यह बहुत दिनों का टूटा है।

कारण पूछने पर वह असगत बातें बताने लगी।

जिधर उसने इजमेरल्डा का भागना बताया था, वह भी गलत निकला। ट्रीसटन का सन्देह बढ़ता गया। उसने कहा—इस वृद्धा को ही फाँसी दो।

उसने सोचा, डर से वह सच-सच बता देगी, किन्तु वृद्धा चलने को तैयार हो गई, चिल्लाने लगी—मुझे फाँसी दोगे? चलो, मैं तैयार हूँ।

वह सोचती थी कि इस प्रकार उसकी पुत्री बच जायगी। वह बहुत जल्दी कसम खाकर बातें करने लगी। लेकिन यही उसने गलती की। लोग समझने लगे कि वृद्धा झूठ बोल रही है।

मैं इस पगली की बात नहीं समझता—ट्रीसटन ने कहा।

सचमुच पगली है—एक वृद्ध पहरेदार ने कहा—यदि इसने जिप्सी को छोड़ दिया, तो इसमें इसका कुछ दोष नहीं है। यह जिप्सियों से बहुत घृणा करती भी है। मैंने इसे उन्हें शाप देते हुए सुना है

सब पहरेदारों ने इस बात को सत्य बताया। शहर-कोतवाल ट्रीसटन ने सोचा कि वृद्धा से कुछ पता न चलेगा। वह अपने घोड़े की ओर बढ़ा। बोला—आओ, चलो, उसे खोज निकालें, उसे बिना फाँसी दिये मैं सो न सकूँगा।

मगर वह घोड़े पर चढ़ने से पहिले आगा पीछा करता था।

गुदुली जीवन और मृत्यु के बीच काँप रही थी। उसने शिकार को सूँघ लेनेवाले कुत्ते की तरह ट्रीसटन को आगे जाने से इनकार करते देखा।

अन्त में शहर-कोतवाल ट्रीसटन अपने घोड़े पर कूद कर चढ़ गया। सिपाहियों के चले जाने पर माता ने अपनी कन्या की ओर देखा। वह वहीं कोने में पड़ी थी। वृद्धा ने धीरे से कहा—बच गई।

इजमेरल्डा मृत्यु के भय से चुपचाप पड़ी थी। माता की मानसिक पीड़ा की स्पष्ट प्रतिध्वनि उसके हृदय कन्दरा में बार बार हो रही थी। वह अब साँस लेने लगी।

इसी समय युवती ने एक आवाज सुनी। ट्रीसटन से कोई कह रहा था—कोतवाल साहब! सिपाहियों का काम जादूगरनियों को फाँसी देना नहीं है। वहाँ जनता अब भी क्रोधित है। आप अपने उपायों से काम लीजिये। मैं अब अपने दल में जाना चाहता हूँ, वे इस समय नायक विहीन हो रहे हैं।

यह आवाज फीवस की थी। उसे सुनकर युवती का हृदय अनेक प्रकार के भावों से उद्वेलित हो उठा। उसका मित्र, उसका रक्षक, उसका प्रेमी, उसकी शरण, उसका फीवस वहाँ था! तुरत उठी और माता के पकड़ने से पहिले ही खिड़की पर आ कर चिल्ला उठी—फीवस! मेरे फीवस! सहायता करो!

किन्तु फीवस वहाँ न था, वहाँ से चला गया था, मगर ट्रीसटन अभी वहीं था।

एकान्तवासिनी वृद्धा, शेरनी की तरह, कन्या पर टूट पड़ी—

उसे भीतर की ओर घसीट कर रख दिया। शेरनी अपने बच्चे को खतरे में देख किसी चीज का विचार नहीं करती, किन्तु समय हाथ से निकल गया था। ट्रीसटन ने युवती को देख लिया था। उसने हँस कर कहा—अहा-हा! एक ही पिंजड़े में दो चुहियाँ! अच्छा, हेनरी कहाँ है?

हेनरी सिपाही न था, पर वह सर्वदा ट्रीसटन के साथ चलता था।

मैं समझता हूँ कि यही है वह जिप्सी युवती, जिसे हम लोग खोज रहे हैं, इसे फाँसी पर लटका दो—ट्रीसटन ने कहा।

अच्छा, इसी टिकठी पर न?—फाँसी के स्थान की ओर इशारा करके हेनरी ने पूछा।

हाँ।

तब तो दूर न जाना होगा—पशु की तरह हँस कर हेनरी ने कहा।

वृद्धा ने कन्या को कोने में मुर्दे की तरह छिपा दिया। वह आप खिड़की पर आ कर खड़ी हो गई। हेनरी के वहाँ जाने पर वह इस प्रकार देखने लगी कि वह डर कर पीछे हट गया।

किसको फाँसी दूँ सरकार!—हेनरी ने कोतवाल से पूछा।

युवती को।

मगर हेनरी की हिम्मत खिड़की तक जाने की न हुई।

क्या चाहते हो?—वृद्धा ने पूछा।

तुमको नहीं, युवती को—हेनरी ने उत्तर दिया।

यहाँ कोई नहीं है, वह चिल्ला पड़ी।

जल्लाद उस कोठरी के भीतर जाने की हिम्मत न कर सका।

ट्रीसटन ने कहा—जल्दी करो।

वह वहीं घोड़े पर बैठा था। उसके सिपाही वृद्धा की कोठरी के चारों ओर खड़े थे। वृद्धा एक टक उनकी ओर देख रही थी। उसकी सारी आशा जाती रही।

ट्रीसटन ने कुल्हाड़ी से खिड़की को तोड़ने का हुक्म दिया। हेनरी कुल्हाड़ी लाने चला गया। फिर कोतवाल ने कहा—बुड्ढी, चुपचाप युवती को हमारे हवाले कर दो।

वह यों देख रही थी, जैसे कुछ समझती ही नहीं।

तुम क्यों उसे फाँसी पर नहीं जाने देती? नहीं जानती, इसमें बादशाह को खुशी हासिल होती है?—ट्रीसटन ने कहा।

वह मेरी कन्या है—वृद्धा ने कहा।

मुझे दुःख है, यह राजाज्ञा है—कोतवाल ने कहा।

वह मेरी पुत्री है, मैं बादशाह को नहीं जानती—वृद्धा बोली।

खिड़की टूट रही थी—यह देखकर वृद्धा अपनी पुत्री के चारों ओर जंगली जानवर की तरह टहलने लगी। उसके नेत्रों से आग की लपटें निकल रही थीं। सिपाही उसे देख कर त्रस्त हो रहे थे।

वृद्धा ने एक पत्थर उठा कर खिड़की तोड़नेवालों पर दे मारा, मगर पत्थर जमीन पर गिर पड़ा। तब भी वह दाँत पीस रही थी। वह अपनी कन्या के पास उसे ढँककर बैठ रही, जैसे अपने बच्चे को चिड़िया अपने डैनों के अन्दर छिपा लेती है। युवती धीरे धीरे

'फीवस ! फीवस !' कह रही थी। वृद्धा उसे जोर से अपनी गोद में दबाती जाती थी। खिड़की को टूटते देखकर वह वेग से उठी और कान के परदों को फाड़नेवाली आवाज में बोली—ओह ! यह कितना भयकर काड है ! तुम लोग डाकू हो, तुम मेरी कन्या को छीनना चाहते हो ! मैं कहती हूँ, यह मेरी पुत्री है। अरे जल्लादो ! कायरो ! क्या तुम मेरी कन्या को छीनोगे ? तब लोग जिसे ईश्वर कहते हैं, वह कहाँ है ? ट्रीसटन ! तुम मेरी कन्या को छीनने आये हो ? सच मुच वह मेरी कन्या है ! तुम बच्चे का प्यार जानते हो ? यदि तुम्हारे भी बच्चे हैं, तो क्या उनका रुदन तुम्हारे हृदय को पिघला नहीं देता ?

युवती को पकड़ लो—कोतवाल ने पत्थर की तरह कहा।

कोई न हिला। तब फिर कोतवाल ने क्रोध कर के कहा—सिपाहियों ! तुम एक स्त्री से डरते हो ?

सिपाही आगे बढ़े। वृद्धा घुटने के बल बैठकर आँसुओं से नहाने लगी। उसके अश्रुजल से कोठरी का फर्श तर हो गया। वह मधुर एव विनम्र शब्दों मे—करुणा-जनक स्वर में—प्रार्थना कर रही थी कि वे उसकी कन्या को छोड़ दें। वह उन्हे अपनी कहानी तक सुना गई। वह केवल यही चाहती थी कि वे उसकी इकलौती बच्ची को छोड़ दें। उसकी करुण प्रार्थना को सुनकर सग दिल ट्रीसटन को भी कई बार अपना आँसू पोंछना पड़ा। वह किसी प्रकार अपने मनोगत भावों को दबा कर बोला—यह राजाज्ञा है।

धीरे से उसने जल्लाद के कान में कहा—जल्दी काम तमाम करो, देर न हो।

जल्लाद अपने आदमियों के साथ कोठरी में घुस गया। माता ने कुछ रुकावट नहीं डाली। वह अपनी पुत्री के शरीर पर पड़ रही।

पुत्री ने सिपाहियों को आते देखा। मृत्यु के भय से वह काँप उठी। अत्यन्त करुणापूर्ण स्वर में बोली—माँ। मेरी माँ। वे आ रहे हैं, मेरी रक्षा करो।

मेरी पुत्री। मैं तुझे बचाऊँगी—क्षीण स्वर में माँ ने कहा, और उसे अपने भुजपाश में बाँध कर उसे चूमने लगी।

दोनों पृथ्वी पर पड़ी थीं। उन्हें देखकर दया को भी दया आती थी।

हेनरी ने युवती का कन्धा पकड़ लिया। वह चीख मार कर बेहोश हो गई। जल्लाद उसको रोते हुए ही उठाने का प्रयत्न कर रहा था। उसने माता को पुत्री से अलग करना चाहा, किन्तु यह असम्भव था, इसलिये वह युवती को घसीटने लगा। युवती की माँ भी उसके साथ ही घसीटी जाने लगी। दोनों के नेत्र मुँदे थे।

उस समय सूरज निकल आया था। लोग इकट्ठे होकर इस दृश्य को देख रहे थे। आसपास के घरों की खिड़कियों पर कोई नहीं दिखाई देता था। सुदूर नार्ट्रडेम के मीनार पर—जो ग्रेव के समीप था—दो आदमी दिखाई दे रहे थे। शायद वे भी इस दृश्य को देख रहे थे

फाँसी के तख्ते के पास पहुँच कर जल्लाद ने युवती के गले में फाँस की रस्सी डाल दी। युवती को रस्सी का स्पर्श मालूम हुआ। उसने अपनी आँखें खोलीं और फाँसी के तख्ते को देखा। उसकी

माता का मुँह उसके कपड़े मे लिपटा हुआ था, वह उसे बार-बार चूम रही थी।

जल्लाद ने वृद्धा के हाथ को युवती से अलग कर दिया। वह चुप हो रही।

इसके पश्चात् जल्लाद ने युवती को अपने कन्धे पर उठा लिया। जल्लाद के कन्धे पर वह अत्यन्त सुन्दरी दीख रही थी। फिर उसने सीढी पर चढने के लिये पाँव उठाया। उसी समय माता ने अपनी आँखो को खोला। बिना कुछ कहे-सुने वह कठोर भाव से उछल पडी। जगली जानवर जैसे अपने शिकार पर टूट पड़ता है, वैसे ही वह जल्लाद पर टूट पडी—उसके हाथ को दाँतों से काटने लगी।

बिजली की चमक की तरह यह काम हुआ। जल्लाद असह्य पीडा से चीख उठा। सिपाही उसकी सहायता के लिये दौड पडे। कठिनाई मे उन्होंने जल्लाद के घायल हाथ को वृद्धा के दाँतो से अलग किया।

वह निस्तब्ध हो गई। सिपाहियो ने उसे कठोरतापूर्वक पाशविकता के साथ ढकेल दिया। वह खुले फर्श पर जा गिरी। उसके सिर मे घातक चोट लगी।

सिपाहियों ने उसे उठाया, पर वह फिर गिर गई। वह तो मर चुकी थी।

जल्लाद युवती को लेकर सीढी पर चढने लगा।

सर्वनाश !

कासीमोडो ने कमरे को खाली पाया। जिसे वह बचा रहा था—जिसकी रक्षा कर रहा था वह वहाँ न थी। तब वह अपने बालों को नोचने लगा, आश्चर्य और क्रोध में वह पृथ्वी को पैरों से पीटने लगा। बाल नोचते हुए, उच्च स्वर में चिल्लाते हुए, वह अपनी मालकिन को गिरजे में खोजने लगा।

उस समय बादशाह के सिपाही जिप्सी को खोज में गिरजे में प्रवेश कर चुके थे। कासीमोडो ने बिना सन्देह किये उन्हें मदद पहुँचाई। वह उनके घातक मतलब को न समझ रहा था। वह यही जानता था कि बदमाश ही जिप्सी के शत्रु थे। वह सिपाहियों के आगे आगे चल कर जिप्सी को खोज रहा था। यदि उस समय युवती वहाँ होती, तो निश्चय कासीमोडो उसका विश्वास घाती मित्र साबित होता।

सिपाहियों के चले जाने पर भी वह खोजता ही रहा। थकावट तो वह जानता ही न था। सारे गिरजे को उसने ढूँढ डाला। जंगली जानवर भी अपनी संगिनी के खो जाने पर उस तरह क्षुब्ध नहीं होते।

जब कासीमोडो को अच्छी तरह से विश्वास हो गया कि जिप्सी नहीं है, तब वह धीरे धीरे मीनार की सीढियों पर चढ़ने

लगा। जिस दिन उसने उसे बचाया था, उस दिन किस प्यार से उन सीढ़ियों पर चढ़ा था! वह चुप था। उसकी आँखों में आँसू न था, न उसके फेफड़े में साँस थी। वह उस कोठरी के पास गया, जिसमें जिप्सी कई सप्ताह उसकी संरक्षकता में सोई थी। जब उसने कोठरी को—उसके छोटे दरवाजे को देखा, उसका हृदय धड़कने लगा। वह गिरने के डर से एक खम्भे से सट कर खड़ा हो गया। उसने आप-ही-आप कहा—हाँ, वह सो रही है या प्रार्थना कर रही है, मैं उसे बाधा न पहुँचाऊँगा।

अन्त में वह अँगूठे के बल—दबे पाँव—आगे बढ़ा, झाँका और कोठरी में घुसा। खाली! कमरा सूना था!! वह इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। बिस्तरे को उठा कर देखा, मानो वह चटाई और फर्श के बीच छिप सकती थी! वह शून्य दृष्टि से देखता हुआ खड़ा रहा। फिर एकाएक अपने पाँव को पटक कर अपने सिर को दीवार पर दे मारा। बेचारा मूर्च्छित हो फर्श पर गिर पड़ा।

होश आने पर वह बिस्तर पर लोटने लगा—उस स्थान को चूमने लगा। थोड़ी देर तक वहाँ मुर्दे की तरह पड़ा रहा। फिर स्वेद-बिन्दुओं से भरा वह उठ पड़ा, अपने सिर को बार-बार दीवार पर पटकने लगा। वह दृश्य भयोत्पादक था। ज्ञात होता था कि अपने सिर को फोड़ डालने का उसने निश्चय कर लिया है। दूसरी बार वह फिर मूर्च्छित होकर गिर पड़ा।

होश में आने पर वह घंटों वहीं छत की ओर देखता हुआ पड़ा रहा। वह निस्तब्ध था। कभी-कभी सिसकियों से उसका

सारा शरीर काँप उठता था। अन्त में सोचने लगा—जिप्सी को चुरानेवाला कौन हो सकता है ?

उसे आर्चडिकन का खयाल आ गया। याद आया, केवल क्लाडे के पास ही उस मीनार की कुंजी थी—युवती पर आधी रात को उसी ने धावा किया था।

उसे हजारों बातों का ध्यान आया। उसे इस विषय में कुछ भी सन्देह न रहा कि निश्चय ही यह काम क्लाडे का है। किन्तु पादरी के प्रति उसकी श्रद्धा, कृतज्ञता और भक्ति इतनी प्रगाढ़ थी कि ईर्षा तथा निराशा उसके पास फटकने भी न पाई। यदि दूसरे किसी पर उसे सन्देह होता, तो वह उसके खून का प्यासा हो उठता, पर क्लाडे के कारण वह खून की प्यास मर्मान्तक पीडा में परिणत हो गई।

उसी समय, प्रातःकाल के प्रकाश में, नाट्रीडेम के सर्वोच्च छत पर, उसने किसी को चलते हुए देखा। वह आदमी उसी की ओर आ रहा था। वह आर्चडिकन था।

वह गंभीर भाव से धीरे-धीरे कासीमोडो के पास आ रहा था, किन्तु उसकी आँखें 'सेन' के दाहिने किनारे की ओर लगी थीं। वह कुछ देखने के प्रयत्न में अपने सिर को सीधा उठाये था। उल्लू कभी कभी इस प्रकार चलता है—वह शिकार की ओर उड़ता है, मगर दूसरी ओर देखने का बहाना करता है।

इस प्रकार पादरी, कासीमोडो को बिना देखे, आगे बढ़ गया।

कासीमोडो ने उसे उत्तरी मीनार के द्वार में घुसते हुए देखा। वह भी मीनार पर चढने लगा, ताकि ऊपर जाकर देखे कि क्लाडे क्यो वहाँ जा रहा था। वह धीरे धीरे चल कर देखता जाता था कि पादरी कहाँ है। पादरी रेलिंग पर झुक कर खड़ा था, उसकी पीठ कासीमोडो की ओर थी, वह नगर की ओर देख रहा था। कासीमोडो चुपके चुपके उसके पीछे जाकर देखने लगा कि वह क्या देख रहा है। पादरी को कासीमोडो के आने का कुछ भी सन्देह न हुआ।

पेरिस का दृश्य उस समय बड़ा ही सुन्दर था। बाल-सूर्य की मधुर-कोमल किरणें प्रकाश फैला रही थीं। प्रभात की निर्मल शान्ति से आकाश स्वच्छ था। तारे धीरे-धीरे अदृश्य हो रहे थे—इने-गिने इधर-उधर टिमटिमा भी रहे थे—हाँ, पूर्वीय क्षितिज पर एक तारा चमक रहा था। कहीं-कहीं छतों से धुआँ निकल रहा था। नदी का जल रौप्यवर्ण हो रहा था। जल-प्रवाह का कल कल निनाद बड़ा सुहावना लग रहा था। नगर के बाहर का दृश्य कुहरे मे विलीन हो रहा था। अर्द्ध-जाग्रत नगर मे नाना प्रकार के शब्द हो रहे थे। पूर्व दिशा मे मन्द पवन के झोंके के साथ शुक्ल वर्ण के छोटे छोटे बादल के टुकड़े उड़ रहे थे।

गिरजे के चारो ओर का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा मनोरम हो रहा था। चिड़ियाँ पेड़ो पर चहचहा रही थीं। प्राकृतिक सुषमा चित्त को मधुर शान्ति प्रदान कर रही थी।

मगर पादरी इनमे से कोई चीज नहीं देख रहा था। उसके

लिये न कोई दर्शनीय दृश्य था, न कोई पक्षी, न कोई पुष्प। उसकी आँखें केवल एक जगह लगी थीं।

कासीमोडो पूछना चाहता था कि उसने जिप्सी का क्या किया, मगर मालूम होता था कि पादरी ने संसार को बहुत पीछे छोड़ दिया है। वह उस बेढब हालत में था, जब आदमी अपने पाँव-तले की पृथ्वी के खिसकने का भी ध्यान नहीं रखता। उसे निस्तब्ध देख कर लजीला कासीमोडो उससे कुछ पूछने का साहस न कर सका। वह उसकी तीक्ष्ण एवं एकाग्र दृष्टि को देखने लगा। इस प्रकार उसकी आँखें भी 'ग्रेव' की ओर जा पड़ीं। उसने समझ लिया कि पादरी क्या देख रहा था।

फाँसी के खम्भे के पास सीढ़ी लगी थी। वहाँ कुछ लोग इकट्ठे भी हो गये थे। जल्लाद को उसने सीढ़ी पर चढ़ते हुए देखा और उसके कन्धे पर एक औरत को भी देखा। औरत के कपड़े सफ़ेद थे।

कासीमोडो ने उस स्त्री को पहिचान लिया। वही जिप्सी युवती—सुन्दरी इजमेरल्डा—थी।

जल्लाद तख्ते को ठीक करने लगा। पादरी झुक गया, ताकि ठीक से देख सके। जल्लाद ने अपने पाँव से सीढ़ी को हटा दिया।

कासीमोडो ने देखा कि युवती रस्सी के सिरे पर लटकती हुई नाच रही है। ज़मीन से वह कुछ ऊँचाई पर थी। जल्लाद उसके कन्धे पर खड़ा था। रस्सी नाच रही थी।

कासीमोडो ने जिप्सी के शरीर को काँपते हुए देखा। पादरी गर्दन को आगे निकाल कर सब कुछ देख रहा था।

उस भयानक क्षण मे एक पैशाचिक हास्य सुन पडा। आदमी के लिये वह हँसी असम्भव थी। वह हँसी पादरी के पीले होठों को भेद कर निकली थी।

कासीमोडो ने उसे हँसते हुए देख लिया। वह कुछ पीछे हटा, फिर एक बार उछलकर क्लाडे को ढकेल दिया। पादरी चिल्ला उठा—नरक!—और गिर पडा!

नीचे की पनाली के निकले हुए भाग ने उसके पतन को रोक लिया। वह उसे निराश हाथों से पकड कर झूलने लगा। वह चिल्लाने के लिये मुँह खोलना चाहता था, मगर ऊपर रेलिंग के पास कासीमोडो देख पडा। कासीमोडो का चेहरा भयानक हो रहा था। पादरी चुप हो रहा। उस भयानक दशा में न वह बोल सका, न साँस ले सका। वह ऊपर चढना चाहता था, मगर चढ न सका, न उसके पाँवों को ही कुछ सहारा मिला।

कासीमोडो चाहता, तो अपना हाथ बढा कर उसकी रक्षा कर सकता था, मगर उसने क्लाडे की ओर देखा तक नहीं। वह 'ग्रेव' की ओर एक-टक देख रहा था, वह फाँसी की ओर देख रहा था। और, देख रहा था जिप्सी युवती की ओर। वह रेलिंग पर—उसी स्थान पर, जहाँ पहिले पादरी था—झुककर उस दृश्य को देखने लगा। उसके लिये संसार में उस दृश्य के अतिरिक्त और कुछ न था। उसके उस नेत्र से, जिससे अब तक केवल एक बूँद आँसू निकला था, आँसुओं की धारा बह चली।

इस बीच में, पनाली का निकला हुआ हिस्सा—जिस पर

पादरी लटक रहा था—टूटता-सा जान पड़ा। पादरी उस विचित्र दशा में उस ऊँचाई से अपने पतन का अन्दाजा लगा रहा था।

लोग तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गये थे। उसे पागल समझकर कह रहे थे—यह अपनी गर्दन तोड़ डालेगा।

अब, कासीमोडो रो रहा था।

पादरी क्रोध से अन्धा हो रहा था। उसने एक बार प्रयत्न करने का विचार किया। मगर ज्योंही उसने पनाली के ऊपर चढ़ना चाहा, वह झुक गई। उसी समय उसका ऊपर का कपड़ा, जिसके सहारे वह लटक रहा था, फट गया। उसकी आँखें बन्द हो गईं। वह नीचे गिर पड़ा।

कासीमोडो ने उसे गिरते देखा।

पादरी चक्कर खाता हुआ, एक घर की छत से टक्कर खाकर, अपनी हड्डियों को चकनाचूर करता हुआ, नीचे आ रहा।

कासीमोडो ने अपनी आँखों को ऊपर उठाया। उसने जिप्सी को मृत्यु की पीड़ा से अन्तिम बार काँपते हुए देखा। फिर उसने पादरी को—नीचे नाट्रीडेम स्क्वायर के फर्श पर—मरा हुआ देखा। वह एक लम्बी साँस के साथ, जिसने उसके शक्तिशाली वक्षस्थल को हिला दिया, कह उठा—ओह! सब कुछ गया! जिसे मैंने इस संसार में प्यार किया था, वह—

फ़ीवस की शादी !

उसी दिन, शाम को, कासीमोडो न जाने नाट्रीडेम मे कहाँ चला गया—इस विषय में बहुत-सी किम्वदन्तियाँ फैल गई। लोगो के विचारानुसार कासीमोडो शैतान था—डाडे को ले जानेवाला प्रेत था, इसमें किसी को सन्देह न था।

लोगो ने समझा कि शैतान ने झाडे की आत्मा को छीनने मे उसके शरीर का विध्वस कर दिया, जैसे बन्दर गरी खाने के लिये नारियल का विध्वस कर देता है। इसलिये झाडे कब्रगाह में नहीं गाडा गया।

ग्यारहवाँ लुई आगामी वर्ष—सन् १४८३—के अगस्त मे मर गया।

पियरे ग्रींगोयरे ने बकरी को बचा लिया। उसने दु खान्त-नाटक लेखक की हैसियत से कुछ नाम भी कमा लिया। बहुत से बेवकूफी के पेशों से हारकर उसने सब से बडा बेवकूफी का पेशा—दु खान्त नाटकों के लिखने का—अख्तियार किया।

फीबस का अन्त भी दु खान्त ही हुआ। वह भी बरबादी मे फँस गया—उसने अपनी शादी कर ली।

छप गया !   बाज़ार में है !!

वे तीनों

रशियन उपन्यास !   मूल्य दो रुपये ।

संसार

के कथा-साहित्य मे नवयुग उपस्थित करनेवाले विख्यात रशियन-क्रान्तकारी मैक्सिम गोर्की का उत्कृष्ट उपन्यास ।

पृष्ठ-सख्या ४५०

प्रकाशक

